कृपि की उन्नति के लिए द्वितीय पंचवर्पीय योजना में राजकीय सहयोग ^{व स} ऋण के रूप में :--— लागन की आधी रकम तो ४०००० नये कथां के खोदने के लिए श्रधिक नहीं होगी। लागत की आधी स्कम जो १००० है कथों की मरम्भन के लिए नहीं होगी। मशीन की लागन की त्राधी १६२ परिया भैद के लिए — लागन की आधीरकम देवदर व सम्बन्धित सरीद के लिए - ३००) प्रति एकड़ के हिमाद से रहट के लिये ट्रक या है कटर मय होती की कोनी नगरपालिका की कस्पोस्ट विनरण - दो हजार रुपये जहां समाई-स्वार के जिये प्रयम्य हो स्वीर रूपये ३६००) रहे पंचायती की भैने बनाइ बनाने के शहबाग है। हमयम्या का प्रवन्ध नहीं हो। न के रूप में :----- चाट चाने से एक रुएया प्रति सन तह हैं। चार्यंत दीत अवाहन के जिल માલ વામાંજી સમાર્થનથ - बीमत का एक चीताई - इ.स. ४ सीच तह एह रूपा पहिर्देश F 75 75 बार्यपट कार्न ऐत्राने के विश्वादे प्रमे कविक पर या रहता विति हते w fair -- (का) संज्ञा चड़ी में लगे तर होते हैं। श्र-मारुत वे निर्दे द्यादर प्रतिशास लेकिन यह इस गारा प्रति नहीं Red of the iniet aet eine mie't ! (व) शत व शे के साल जय श¹र इंग्डिं कान तेत्रक सह प्रश्नापत धाँच सकत् में अ 49 1 8. 40 MILE 2 1 fett eine en martid at ber gebon तु क्षानुष्टा हुए के के कर के तक का जा है। का इस अपने काल के कारण है जिसे स्थिति the members were seen after marked to the street we are the firm of a major or marger. As on the same the description of the firm

कृषि की सफलता पर द्वितीय पंचवरीय योजना की सफलता निर्मार

वाल व रोलर त्रियरिंग, स्टील वालस रोलर स्पिंडल इनसर्ट्स एक्सल वोक्सेज

*

[रेल्वे लोकोमोटिव एण्ड वेगन्स]

के

.

निर्माता :

नेशनल इंजीनियरिंग इंडस्ट्रीज लिमिटेड

जयपुर (राजस्थान)

की

हार्दिक शुभ-कामनाएं

२-आयुर्वेद विभाग का अप्टांग आयुर्वेद के रूप में विस्तार । ३-जयपुर और उदयपुर में आयुर्वेदिक कालेजों का उन्य-म्नरीकरण के फल-स्वरूप २५० झात्र प्रतिवर्ष शिचा पा

१-३२५ नवीन ऑपधालय

रहे हैं।

४-आयुर्वेद परीचा बोर्ड का निर्माण, जिसके आधीन भिषमाः । तापं, भिषम्बर, धात्री कत्यद और श्रत्यास्मरण पाठाकम की परीचाणं चाल हैं। य-जीधपुर और भरतपुर में शास्ता रमायनशाला की स्थापनाणं। तृतीय पंचवर्षीय योजना में : १-एक बरोड एक लाय की योजना रसी गर्दे हैं, जिनमें शिखा श्रीवदण, रोग-नियन्त्रण व कमिरतरी स्थानों में

आरोग्य वेन्द्र स्थापित होंगे। २-रेग्ट्र की रात प्रतियान गरायता में जयपुर एवं उरवपुर हें करिलों के अंतर्गत स्तायु, बाल-प्रलाघात, वर्ष गेंग एवं हैं मेंप्रती गेंगों पर अनुसंधान होगा।



७० नवीन ऑपधालय खोले गए।

द्वितीय पंचवर्षीय योजना में : १-३२५ नदीन औपधालय २-आयुर्वेद विभाग का अप्टांग आयुर्वेद के रूप में विस्तार ।

३-जयपुर और उदयपुर में आयुर्वेदिक कालेजों का उन्य-

म्नरीकरण के फल-स्वरूप २५० ह्यात्र प्रतिवर्ष शिचा पा रहे हैं। ४–आयुर्वेद परीचा बोर्ड का निर्माण, जिसके आधीन भिष्गा-नार्य, भिषम्बर, धात्री कलपद् और प्रत्याम्मरण पाट्यकम की परीचाएं चान् हैं। ५-जोषपुर और भरनपुर में शासा रमायनशाला की स्थापनाएँ। तृतीय पंचवर्षीय योजना में : १-एक बगेड़ एक लाग की योजना रूपी गई है, जिन्में शिया प्रशिच्या, शेग-नियन्त्रण व कमिर्निय स्थानी में धार्मम्य केन्द्र स्थापित होंगे । नापनात महायता में जयपुर एवं उदयपुर है कार्नाठी के अंतर्गत स्नापु, याल-प्रचायात, वर्ष गेंग एवं है संबद्धी गेंगी पर अनुसंधान तेंगा २-रेन्ट्र में रात प्रतिरात महादता में जयपूर एवं उरपपुर



माननीय थी मोहनलाल मुखाडिया मुक्र वर्षे, राजस्थार मध्यम, प्रदेशास्त्र समाम्य सम्बद्धाः

प्रयान मेराद्य रा॰ देवराज उराध्याव Asia tirilis द्यापार्वं थी पुरागेत्व 'उत्तम' शी मारावए भी मयस वि

लें रार्थ सरहत

 शे राम निराम गाह शं चार बुमार 'गुड्मार'

३. थी रिधान सान 'रिमनर नेथी '

भ. भी कार्या नात निध



माननीय थी मोहनलास सुखाड़िया मुश्य प्रयोत, राजस्थात प्रथम, उश्यादन महारोह, नृशीय साहित्य मेमिनार



प्रकाशकीय

रा अस्पान का नाम धाने के माथ ही घात्रों से संप्रपथ ग्रीर सहस्रुहान हो जाने के उपरान्त ो, बीरो के मुस्काते मुखमण्डल एवं माय की घू-घू रती ज्वातामी में घिरी, मधूर हास्य से युक्त र-बानाए हमारी पाँको के पाने विरक्ते लगती । जिससे यह भ्रम हो जाता है कि यह केवन क्ति और माहम काही केन्द्र था, परन्तु हम यह न जाते हैं कि इन रैलाफो में ग्रमिट रंग भरने

मरता प्रदान की। इसके साथ-माथ हमको यह त्य भी दिना हिचक स्त्रीकार करना ही होगा कि जतभी ब्याति इसने वीरता के क्षेत्र में ग्राजिन की तनी प्रतिभाने क्षेत्र मेनही वर पाया। वारण पष्ट है कि यहा के राजा, महाराजा नवा सामन्त प्रपत्नी प्रशस्ति गायन के हेन् जिनने उत्पन्न रहे. उतने शाहित्यक वैभव को प्रकाश में नाने के निए रही । प्रपनी बीरता के बखान के लिए इन्होने बेतन भोगी धनेक इतिहासकाः नियुक्त किए धीर धगर हुछ वृतियों वो भी राज्याध्य दिया तो वह वेदल इस ही निए कि ये उनके माध्यम से भी अपने बहस् री मुल्ति वर सर्वे । इसके बाददूद जैन नायुषो, नती अवका नोर.

ानी बृद्धि भीर प्रतिभा ही थी, जिसने इनकी

वियो वे द्वारा यहां साहित्य की सरिता धन-गृति से प्रवहसान रही । सद वह समय सा पट्टैवा है कि इस सरिता-भनित को हम हमारे मानम-सर मे एकत्रित कर भाव–भूमि का सिवन करें। "सुज्ज वैना; नाम मे इस मेमिनार नाविनिदर (स्मारिका) का प्रकाशन हम इस भागा भीर विष्यान के साथ शर ध्हे है कि इसके द्वारा राज्यवान में बनी बारडी हिन्दी जगत के प्रसिद्ध समानीनक डाक्टर देवराज उपाध्याय ने प्रान्त के विद्वान लेखकों, कवियों, नाटक-कारों एवं कहानीकारो की कृतियों का सम्पादन विया है। यदि यह प्रकाशन राजस्तान के प्राचीन एवं धर्वाचीन साहित्यिक बैभव को चैतन्य पाठक के ध्येतन मानस पर कुछ भी स्थान दिना सका को हम

इसे सफल समस्ये।

माहित्यिक गतिविधि की किचिन् जानकारी स्थून रूप से प्राप तक पहुँचा सकें। इस स्मारिका मे

का सभाव है जो बिना हानि—पाम की भावना के साहित्यिक प्रकाशन के कार्य की प्रपते हाथ में ल सके। राजस्थान को स्टोइकर धनेक धान्तों से इस तरह के दग्ट भीर प्रकाशन मण्डल हैं जो भ्रपने २ प्रान्त के प्राचीन साहित्य को नए दंग मे प्रकाशित

वैमे माज राजस्थान में इस तरह के प्रकाशको

कर, उसके गौरव को पून: मंस्पापित कर रहे हैं भौर उदीवमान लेखकों की रचनाओं के प्रकाशन डारा देश भौर समाज को प्रेरणा दे रहे हैं। हमारे प्रान्त में धन्य प्रान्तों की धरेशा किमी भी हाजन मे माहित्यक धक्तिवनता न कभी यो घौर न घभी है। बल्कि हम यह बड़ें सो कोई प्रस्पत्ति नहीं होगी कि मस्कृत माहित्य में पूर्व तथा बज भागा ने साहित्यिक न्य को स्वीकार करने तक शामन्यान ने माहित्यिक

क्षेत्र मे एक छत्र साधियत्व रन्ता है सौर उस कान

नो हम स्वर्ण युग के नाम से सम्बोधिन कर सकते

है। इस काच में साहित्य की प्रबन्ध (महाकाम्य मीर लग्ड बाव्य) मुलक (रम तथा नीति) एवं गीति बादि सब वियाची में प्राह्त, बरफ्रांश मौर डियर भाषा में नर्जना की गई है। परन्य समी तक इम साहित्य के प्रकाशन की सम्बक्त ब्यास्था नहीं हो पाई है। माहित्य-महादर्ने बहुत समय ने इस मारित्य

के प्रकारत के विषय के विकार कर पढ़ाबा। इस न्सन्ति। के साध्यय से इस उस पर कृत्र रोगरी शनने का नव प्रशास कर गरे है धीर कर रस



2000 किए

उपनिपदों ने ध्ये धपने जीवन की समृद्ध तथा तार्थक करने का एक साधन बतनाया वा 'धारमानं-विद्धि'। प्रोक मनिवियों ने कहा 'l\u00e4now thysolf' प्रामे क्व कर तो नीतिकारों ने यहां तक बढ़

रिया ।

म्रारवर्षे धनं रहेतृ दारातृ रहेतृ धनेरिय ।

म्रातानं मनतं रहेतृ दारेरिय धनेरिय ।

मर्वार् प्राप्ति कान के निये धन की रहा।

करनी चाहिये, धन का नाम कर भी वसी की

प्रस्त करनी चाहिये । पर वब माराम के रहा का

प्रस्त हो नी वहा पती एव धन के भी बनिवान की

प्रस्त हते ने वहा पती एव धन के भी बनिवान की

प्रस्ता हती करनी चाहिये । धनस्थान की पुन
धनकों, नेतामी, विचारको नया माहियाकों के माय

वस्तित हो करन करनी मारी अटिनमामी के माय

वस्तित हो कर जरन माग रहा है कि इस माने

प्राचीन गौरन-पादा भीर परम्पा की रहा। करने

हए, दर्नमान ज्ञान-दिज्ञान की विरुखो को

प्रात्मगात कर भविष्य के निर्माण में तत्परत्य

में बाम में पहें है।

राज्ञण्यान के निये इस प्रस्त का एक विशेष
महरह है। बहा जा महता है कि माधीन आंदल का
इतिहास एक तरह में बिहार का इतिहास है,
स्याद, जब इक्त पुढ़ करी कि स्ताद का इतिहास
है। सम्ब सुरीत भारत का इतिहास में सरी, जनार,
हुर्मास्य के राज्ञ में स्वत्यान के स्वत्यान कि इतिहास
स्वाद है। दर राज्ञण्यान की सम्बी पर निवा
स्वाद है। दर राज्ञण्यान के नाम्य की विकासना हो

परिस्थितियों में यहाँ धन्य आन्तों का सम्बन्ध प्रयति-

सीन तथा उपायक नायों में बनाये रूमा उनके

उन्पुक्त रहे वही राजस्थान की सबसे घनन रह कर ही घरना जीवन बादन करना पड़ा । उत्तराधिकार के रूप में हमें जो कुछ भी बीरता, मिक्त, प्रेम, मोर्ट्य की कप्पति उपनस्य थी उसे ही चाट-चाट कर हम जीने रहे । इतना हो नहीं। चंकि बाहरी

. - . डार नूनन ज्ञान-विज्ञान के मनय संघार के निये

इतिया में मध्यक हूट जाने के बारण जीउन को सबाह एक तरह से सबबढ़ या घता महुत मी विक्रितिया भी था गई थी। कहा ही है 'बहुता पानी निर्मेग, बंधा गंदा होया' हम दुनिया में ही घनन नहीं थे। हम स्वयं बारम-विभाजित थे। हम स्वयं बारम-विभाजित थे। हम स्वयं बारम-विभाजित थे। हम स्वयं बारम-विभाजित थे। स्वारं के स्वयं कर स्वारं के स्वारंग कर स्वारंग कर स्वारंग के स्वारंग कर स्

कोई भावस्थक नहीं था। बाज कल के मनौवैज्ञानिक

Multipule personality की बात करते हैं। बहुते हैं कि एक नतुत्य में एक पिक मीर परश्च रिवारी व्यक्तियों की महाधिक मीर परश्चर विरोधी व्यक्तियों की महाधिक मीर विराज कि की जीवन की विद्वत कर दे मीर मंगठित विकास में बायक हो। इन मनोर्देशानियों के निये Multipule personality का उदाहरण राजस्थान में मन्द्रा नहीं मिन गरना। जयपुर, जोधपुर, उद्यक्ष्य, कीम मिन गरना। जयपुर, जोधपुर, उदयपुर, कीम, हुंदी एक ही राजनवान-

बया है ?

उपनु-निया गोमीजी तथा भारतीय स्वातन्य संवाद के त्यार सराहर देश की हुया से यह यह वीरिक्टीय हुए हैं में हैं। प्रथम की नाई भारत की विदेशी शासन में शुक्ति दिवाई। दिवाद के राज-स्वात के जिस्से शासी की संदर्भर राज्येतित पृत्र में दिवों कर एक माना के रूप में उपनिज्ञ कर दिया। एक बृहर राज्यात प्यारी बाहुरी सब प्रथ के साह सामने साथ। हज ही क्या भागी हुनैया है। हमने कर पर सुन्द है। यह रुपती सेट तथा उसके हुन्य प्रयोग की सेट स्टर्डरी स्थ कर हैन

र्गे हैं। हा, बुद्ध र्रवायु औं हैं पर के देश हो रहे

व्यक्ति के भित्र-भित्र व्यक्तित्व गही तो भौर

तराही भारत के मेरिया के इतिहास में राज-है, हमारा कृतित्व यही है।" प्रश्न गो, समस को, ठीतः भीर नहीं ढंग में सामने रगना भी स्यात के लाओं का महत्त्वपूर्ण मीन छोगा । युनमाने में सहायता देना ही होता है। नाए, माद्री हम द्रिलाम की महाराग करें। बहानी, उपन्याम, बविता संघा धारीका के रेप इत्सिम वे श्रेन को पत्रपाने । समभें, ति इति-में राजम्यान में इधर दन-बारह वर्षों में की हात हम ने क्या माँगता है ? इतिहास हम से क्या उपनि हुई है इनहा चोडा सा भाभाग 'खबानेगा' मात्य है इसे बाद रेना शो जिए भी मोशाइत की पंतियों में मिनेया। क्याप्रो के देगरे के नाज है। नेपा-मगु है, मार्ग-प्रार्थन वापने आपी राजन्यान के तरुए-हृद्य की भारात्मक विर्ी पारिया है, बर्च शास्त्री है, बोजनायें हैं । सब हमें कामी पत्ताचलेला। पत्ताचलेला कि हमारे ^{हा}। बाने क्यांबाकी बाद दिला को है पर एक ही दुरर की भारतामी का रत क्या है, वे तिस्राधि बार नहीं हो रही है। हममें धाने सब्दे स्वस्य की, में बदा मीन रहे हैं ? निद्वा ही 'सुजन-है।।' बै म्मान स्थान को, हमारे Stuff की, हमारी राजस्थान के मानुनिक साहित्य के विकास ^{का} मार्गरण मी, हमारी बाल्या की परवाती से नर्गद्वीता विचल नरी हो सदा है। इस्ते ^{हिं} रागापर होने बारी सन्दि बहुत ही बाय है। यह यभित्रं समय तथा थम की बरेशा है। हम बारी है गाहिल, जिल्हें शहरों लगना के मूच के बोधने मोर से मही कर लक्ते हैं कि हमने मार्गि^{सीनर} ¥े प्रतिका है । दर काप्रदेशिया, धर्य-सामग्री, मापत्ती के सप्टर इस प्रदेश्य की प्रान्ति के निर्दे मर्थ-प्रपान, देशांचि के पान नरी जाना। वेदश की है। प्राप्ती कर्तात कीचे बाह्य के प्रति होती है-वह मारद पादाला दिया होते हुए भी सूचन एव हरा तो नातिय नतात्त्री के ब्रावार्य भी है। यह गेंग नार को हिन्त्रना है जो लादी मानवाय पुरशासको लगा बाप कामुखी के धपुरीय है बहुबर ही 'सूचर ने दा' में दिनी स दिनी बह मैं में बान दोन है। जब भारत तर शता बारेगा, लंबक क्षेत्र व्याप्त है । सारे अर देवता अवा दुरसर रमको वर्णमाना अन्तरे 🖹 नहेगी औ द्वार राज्य पुलवर्गात सारवे प्राप्त लेक्ट इस दिवनह सालीत देवातत है। बहा बाद कारेगी हवारे हरा की हे इस वेर सामन है । हैरानेपान पर मारिन्यहान में adad t ad Admir dyn gad 3 maginz i mel bet इस समापार है । दरकी समी सुन अहै है erro ere le en cla è tenti men l'-करो है अवता हुई वा ने वा सम ह । पर ब पूर्वा है and a danc, de a maded gedage ब एवं है रेबरण करणात्म 'सुपत हेना' से स्टेनर्टिं कर मध्द नकर्ण दल है जा संबद्धक , क्योग्लू , हेर सम्बद्ध । iala # m. waret ut mer \$ i feiner are gir gertrene ten ten Bat Bat anter-Waren atte ball, Betad mila Ber all ever wird Bar war will an क रेड जरार के पर केरड हे हो है हर है अस्पर्ध William Ware du River Ware dan bater na a ant g a h, ta wa pate & f

सदन–गरा

बतना मके - 'माई, हम सोनों ने इतना ही रिज

-देशात उपाध्याम

ही 🛮 । हमत्या प्रारत दिस्साम है वि सध्य सुग की

র কটো জালাল। জুবজা কা অফলত এন ইন্কা ইনলা জ্বাসার জাতেল। ই নিয়ু হয় জানীয়ালন ক

सेमिनार ||

'एक दृष्टि में '

" सत्यं शिवं सुन्दरम्"

गर्गातम्-गरावर्ष	i
लाव पर्वत्रकार	
कालक्षाम् साक्षिपः सराहर्यः	vi
लब दरियद	
Money	ix
induses to this	
at the	XI
Acres de seu la	

2111

पुरिकास के कास्त्री हैं। काकाबार की कारीर एक क्षेत्रक



राष्ट्रपति भवन नई दिली

दिसम्बर २६, १६६० पो॰ ८, १८८२ शाहे

सुमे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि राजस्थान स्ताहित्य जकारमी के तृतीय वार्षिक सेमिनार वे जयसर पर जन्य रोगक तथा उपयोगी विषयों के साथ साथ राजस्थान के साहित्य पर भी विचार विनिमय होगा। में इस सेमिनार की सफतता चाहता है और राजस्थान की साहित्य जकारमी की जपनी युन कामनार मेजता है।

(17-37114







PRIME MINISTER'S SECRETARIATE
NEW DELIET

१= करवरी, १६६१ २६ थाम, १==२ शक

प्रिय महोदय,

श्रापक्षा पत्र दिनाङ्क १२ फरवरी १९६१ पाप्त हुआ।

राजस्थान साहित्य जदादमी दे तृतीय द्यार्विक सेमिनार दे श्वयसर पर प्रधान मंत्रीजो श्रपनी राभ द्यामनार्ये भेजते हैं।

श्रवरीय

Sdj-(प्रारणनाय साही)

प्रवाद संत्री वी ने तिनि सविष

दिनाष्ट्र २३-२-१६६१ त्रिय महीदयः पत्र ने लिए घन्यवाद। मेनिनार को सफतता के लिए युभ कामनाएँ। घाना तो रंमर तरी। रमररा करने के लिए सामारी। मेनिनार की कार्यवाही प्रकाशित हो तो उने रेग्स्स चाहैया । रणस्यवाद । ह०/-(बक्पन) शिक्षा मंत्री भारत नई दिल्ली ३ जनवरी ११९१ विष स्ते. घारका पत्र मिना । मुझे प्रमन्त्रता है कि काजन्यान साहित्य सेमिनाद "सामान्य जन भीर गर्नि एक्सर" जैना रोनर एक महारक्षां विषय नेतर दन वर्ष नाहित्य नवायां, जमपुर में तारापान में हो नहा है भीर दुन अवगर पर " शुक्रन बेगा " नाम से भाग एक सीरिः रियर का प्रकाशन भी कर को है। राजस्थान का शाहित्य सजीवता से परिपूर्ण है भीर यानवर, रिस्टरेर यात्र श्वारे विवे यान्तर साम्बर्ध विद्व ही गरता है। ै चारि बादीबन नदा बहातन की समारता बारता है। भारता

रा दिवगराय 'बरवन'

एम. ए., पीन्एव, दी. (बैन्टब)

हर्ग-(थार गोमापी) Cort of India PRINCIP (** tionistry of H ma atfairs 250,466

4"604, PEST By to also have made by क्षानावर पात्र का नाव बान्य बान्य निताय के विदेश है है है जान है। प्रान्तवर विदेश धाला है है कार शहराप लड़ नियंक्त के निल् थाएकाई है मिनिश्ह की अप रहा की नामग

Rome | Alex from the dig some to brong the service are all applicates and filliants that हरपुर्वको के पुर अपना दानेत्व दार ए १० हरा युक्त और अपने में गुरानाम द्वीप सुप्रान्त सुरूप सुरूप के होती ह

Driver of any car of firm only growings breed

महं हिल्ली fritt ag meeft, geit

विदेश मंत्रालय

नई दिली

साहित्य सदावर्त में



महामान्य थी पुरुषोत्तमदाम टण्डन



माननीय श्री हरिमाउ उपाध्याय दिन्ह्या, राज्यकार मरदार

साहित्य सदावर्तः एक परिचय

श्री कन्द्रेयालाल मिश्र, मन्त्री, साहित्य सहावर्त, जण्युर

मानव समाज के निए ज्ञान सर्वोपिर है। 'ज्ञान'
मी ने ही मनुष्य का घादि काज में नेकूल किया
है। इसी ज्ञान को बिडानों में साहित्य का नेकू सानकर, साहित्य को ''ज्ञान राशि के संवित्त कोष की नंता दी है। इसने स्पष्ट है कि ज्ञान विकासोल्युको जीवन का प्रारम्भ से हो पोषक तल्व रहा है मौर रहेगा। इसे प्राप्त करने के लिए मनुष्य प्रकारी मौर सामृहिक रूपो में प्रयत्न करता है। यही सामृहिक स्वच्य मंस्या के जम्म वा माबार-मत वारण बनता है।

साहित्य मदावर्ष की क्यारता वा श्रीय श्री कमनावर 'कमन' वो है, जिल्हा ने मन् १९३० से कमनाप्त्रमी वी पातन केला से वो विधायियों के निशुल्त निश्चाम के प्रकाश को गरीध विधायियों के ने इस भीतित्ववादी पुत्र में किमी भी ज्ञ्चार के वार्य को स्त्र भीतित्ववादी पुत्र में किमी भी ज्ञ्चार के वार्य को हिता धार्मिक साधन खुटाए पूर्ण के क्ला स्त्रमञ्जत नहीं, तो दुक्त एक स्वयन्त्र है और एमीनिए बावा गोविक्ट्सास धीर धार्मार्थ भी पुत्रपीनम 'उनम' का सहयोग, नावार्य भी पुत्रपीनम 'उनम' का सहयोग, नावार्य की प्रमान भी प्रवर्ण में क्लिकनों के सहस्त्र को स्त्रमान प्रदेश प्रमान है। नन् १९५५ में संस्त्र के जीवन में, भी पुत्रपीनम 'उनम' की क्षिपाशीनमा भीर उदार मनोवृत्ति ने, नई गिन

द्रीश्राह्म स्वरूप :---माहित्व मदावर्ग अपवृद् हो तहीं व्यिषु राज्यपान वा एक बार्स्स निस्तुल्व शिक्षात्म मस्पान है। हिन्दो माहित्व मध्येत्रत्न (हिन्दी दित्त विद्यास्था) प्रयाग बीर प्रजास तथा श्राह्मका दित्त विद्यास्था हो हिन्दी प्रशिक्षकों ने हेरू सिक्षम प्रदान करना 'नदावर्त' का कार्य रहा है। मंदय ये धाने वाना प्रतेक विद्यावर्षी संदया के सभी पारि वारिक सदस्यों से इस प्रकार पुत्रता-मिनता है वि वेते यह प्रदार पुत्रता-मिनता है वि वेते यह प्रारंभ में ही इस परिचार का धार पहुंचा हो धीर यही कारण है कि धान सहारती के विद्यावर्षों को राजस्यान प्रद में पाया जा करता है। इसमें सन्देह नहीं कि सदावर्ष को कई मो बेरने पर है। हिनते ही कहुए, मी है मुनुस सहा वर्ष के दिकास में मुपरित है, तो भी सपने नाले में वा पार्थ के कि दिकास में मुपरित है, तो भी सपने नाले में कर पार्थ के कि दिकास में मुपरित है, तो भी सपने नाले में कर पार्थ के कि दिकास में मुपरित है, तो भी सपने नाले में कर पार्थ के कि दिकास में मुपरित है, तो भी सपने नाले में के स्वारंध ने मिनता में मिनता मिनता में मिनता में मिनता में मिनता में मिनता मिनता

विधार्मी वर्ष को श्रीशिया - मुनिधाएँ प्रधान बरने के हिंदरीय में सन् १९४४ में वे मेन्द्र स्वारित विशे पर्य । प्रथम ने ने क्ष्मानियों में ना रास्ता (विध्यन्तीय सामार्ग, में हिनीय ने ने प्रभानी के दरीयां वे धीर दुर्गाय ने न्यू प्रभानी सन्तानि में रूपा गया। जिनसा सवास्त्र कथारः धी न महात्रद्र विधान से प्रथम प्रभाव प्रभाव स्वार्थ भी न स्वारान्त्र विधान में साहर होना रहा।

विकास में प्रीन महादर्भ में मान्योगी प्रध्यादकों मी प्रास्थ्य से ही आपना पत्री है कि पुनर्पाय प्राप्ता पर विद्याचियों भी पूर्ण हात्र प्रदान नहीं दिया मा मनता गएवं मुल्यों से प्रध्यान-प्रध्यात में मांच ही साथ महादर्भ में पत्र में दूर कर की दूराई में हीत दिखियों को अन्य दिया, जिनके स्थानन हेन्



साहित्य सदावर्तः एक परिचय

श्री कन्हैयालाल मिश्र, मन्त्री, साहित्य सदावतं, अपपुर

मानिव समात्र के निए ज्ञान सर्वोगिर है। 'ज्ञान'
में ही मतुत्य का पादि कान में मेतृत्व किया
है। इसी ज्ञान को विद्वानों ने साहित्य का नेव्ह सामतकर, साहित्य को 'ज्ञान राधि के संवित्त कीय की संज्ञा दी है। इसमें स्पष्ट है कि ज्ञान विकासोस्मुखी जीवन का प्रारम्भ में ही पोपक तस्व रहा है भीर रहेगा। इसे प्राप्त करने के लिए सनुत्य एकानी भीर सामूहिक क्यों से प्रयत्न करता है। यहा सामूहिक स्वत्य मंदया के जन्म का धावार— मृत कारण बनता है।

साहित्य सहावर्त की क्वापना का प्रेस थी कमनाकर 'क्यन' को है, जिलाने सन् १६३७ से जन्मारमी की पावन केला से दो विधायियों के तिगुल्ल शिक्षाला में इसका की गरीय किया था। यात्र के इस भीतिकवादी सुग में किमी भी प्रवाक के कार्य को सिना साधिक साधन चुटाए पूर्ण करना समस्त्रक नहीं, तो दुल्लदान पवस्य है और इमीनिए बाबा गीविन्द्रसास सौद साचार्य थी पुर्योग्नम 'तम्बार सहितों, महावर्त की प्रमति सौद उन्नि में निवन्तनां के महत्त्व को बावतः प्रहेगा कर निना है। नव् १६५५ में सांस्य के जीवन से, भीनुष्योगम 'तम्बा' की विध्याधीनना सौद उद्दार मनोवृत्ति ने, नई वित्

रोशिंगिक रेवरूप: -- माहित्य मदावर्ग व्यवुध हो तहीं धरिषु राज्यान का एक बार्स्स निस्तुत्व रिताल मेरपात है। हिन्दी माहित्य मध्येत्व (हिन्दी दिरह विदानस्य) प्रयान और पंजाब नया प्राज्यान दिरह विदानसो ही हिन्दी परीक्षणों के हेषु रिक्स्स प्रदान करना 'मदावर्त' का कार्य रहा है। संस्य में माने बाना प्रत्येक विवार्गी सेव्या के सभी पार्वि वर्गरक करव्यों से इस प्रकार पुन्ता-मिनता है। में ते वह मारफ्न में ही इस परिवार का मंग् रहा हो मौर यही कारण है कि मात्र सदावर्त से विवार्षियों को राजस्थान भर में पाया ज सकता है। इनमें सलेह नहीं कि सहावर्त को नई मो वर्ग पर है। विजने ही कहुए, मीठे मुनुसन सदा वर्ग के इतिहास में मुपिशत है, तो भी परने कारों को सदावर्त ने कभी रोका नहीं। सदावर्त के जीवन में दन मार्थिक (भी साज भी है) कितारों में मिर्यनका भने हीना दी ही चिन्नु पूर्णत. जब कर के यह समाप्यार्थ कभी इत्तरार्थन हुई है पीक हमारप विवारण है कि न यह हो मरनी है।

विचार्यी वर्षे को धीराणिक-मुनिधार्ए प्रदान करने के दृष्टिकोण में सन् १९४६ में ३ केन्द्र क्याफिन विशे पए । प्रवस केन्द्र फाजानियों का साला (हिन्स्त्यों के बात्यार,) में, जिनीय केन्द्र 'पानी के बनीया' में धीर दृष्टीय केन्द्र 'पानी कानी' में क्या गया। जिनका संकावन क्यार. धी कमनाका कमन', धी पुरस्तीय जनमां मीर धी कमनेवाराक किथ में जान होना हुन।

ियान के इति महावर्ग के मत्योगी प्रध्यापने की मारूम में ही मारूमा पति है ति पुल्तीय ध्याप पत्र किहादियों को पूर्ण हात हात नहीं किया का बादमा लगाई पुल्ताने के स्वयुक्त स्थापने के बाद ही बाद नहादने के दान कई कहात की हीत विभाग का बहुत है होते हैं स्थापन है है हीत विभाग के बाद होता है है



माननीय श्री निरंजननाथ बानाः उगाध्यः। (राजस्थान विधान सभा)

सम्पन्न, सायोजन समिति, सुरीय वादिक साहित्य सेमिनार १७. ,, डा॰ देवराज उपाध्याय १८, ,, स्व॰ प्रो॰ रामकृष्ण शुक्त 'शिलिमुख'

१६. ,, स्व० प्री० रामकृष्या सुकन विशिक्षः १६. ,, गुनाबराय एम० ए०

२०. ,, निरयानन्द 'मृदुन'

२१. 🛮 देवीयंकर तिवाडी

२२ "नदी दक्श 'फलक'

२३. ,, डॉ॰ मोतीनान

२४. ,, गोपानप्रसाद 'नीरज'

२५. ,, गोपानप्रसाद व्याम

२६. ,, मेघराज 'मृतुल' २७, श्रीमती मुतीना देवी नम्बर

साहित्यालीचना (गोष्ठि) परिपद्गरेपणासक एवं मानोचनामक माहित्य को प्रोत्साहन देने के रिष्ट्रनील से दन परिपद् का गठन किया गया। सन् १६४४-४६ में समके प्रारम्भक बान में निम्मादित पराधिकारी रहे हैं —

 क्षी प्रो० रामकृष्ण पुक्न 'वितिशुक'-मध्यक्ष २. ,, बाँ० सरनामसिंह 'मध्या' — मंत्री ३. ,, कपूरकर 'वृतिमा' — संयुक्त मणी ४. ,, महतमोहन सर्मा — प्रचार मर्जा

इस मीदिक के प्रयानी के पानस्वक्षण साहित्य स्वतन का निक्षात हुया स्वक्षण उपनाय होने नया। यह सम कोई १-४ सान तक पनना परा। दमी परिपट्द के तत्वारधान में सम् १६४६ में एस विरोध समार्थात का पान किया नया दिनमें बाह्र पुरावस्था एमंग एक के हारा प्रितृक्षण स्विद्ध प्राचीत्रंप स्वत्य प्रीयास्थल गुरुव सिनियुक्त का प्राचीत्रंप दमें विद्यालिय स्वाचार्या। दिन्तु बाद में कुछ दिनस्थ परिवर्षनिकों और यो गिनियुक्त जो की सावस्थाना ने इस परिवर्ष को गिनियन कर

सन् १६६६ से नदावर्त की सहयोगी

सस्या "संगम मिनित" एवं मर्थभी कपूर्यन्य 'कुनिया' पुरसेसम 'उतमा', रामनितास साह, भीर पद कुमार 'कुमार' के सद्मयलं से राहम कार्य में पुत्रः जीवन संचार हुमा । जिनके परिशाम स्वरूप स्रानीचना (गोदिङ) परिश्त फिर सजीन होकर कार्यरन हुई। संगम समिति ने पपने जन्म में बाज तक कई सहत्यपूर्ण कार्य चिंग है। 'साम मासिक पर्विका का प्रकारन और 'मान मुनि' डारा कवि सम्मेनन में पिठा कवितायों का विश्वना के साम पूर्व प्रकारन संचिति की विभिन्न परप्परा है सिकन चुछ साथियों को स्वय स्वनन की मानीचना में भय होने लगा, फनावस्य कहुता से से हो भीर हमीन हुछ समस्वार नायियों सौर सी हिम्मतवान (मन्मी) ने इस परिश्व के सर्वक सर्वका से सी हिम्मतवान (मन्मी) ने इस परिश्व के सर्वक सर्वका में सिक्न

दर दिया है। महिला हितकारियो परिपद---मात ने युग में ही नहीं वरता भारतवर्ष प्रादिकात से ही नारी और पुरुष के अधिकार और कर्तथ्य क्षेत्र को समान हवि से सनोपता प्राया है। इतिहास साधी है। फिर भी जीवन-कम बीर ऐतिहासिक धटना कम ने नारीवर्ग को कुछ विछा। दिया है, जिनरो समुन्तन करता पुरुष वर्गका प्रथम घोर मनिवार्य बर्नेव्य है। इसी इंट्रिशेश से सन् १६४५-४६ मे "महिना हिनकारित्यो परिषद्" को जन्म दिया यया । परियद ने नारी वर्ष में फ्रानिसारी परि-वर्तन ना दिए, उद्याहराय स्वरूप पर्यान्यवा शा बहिष्कार निया जा सक्ता है। जयगर गहर के जीवन से यह एक सहत्वपूर्ण कार्य हथा है। नारी ने प्रीत नृत्मित विचारों घौर भारताघों भी नद बाराबना बर, महभाव बीर वनेत, ममान्या की भारत प्रतिराहत करने कारी इस परिषद का. बाव की नदर निशामी स्वरण करते ही उनते हैं। नारी क्लिया के लाव हो भाव हर कार्य एव









उपर दारा से बारा

१, श्री दामोदरलाल व्यास प्रध्यक्ष, माहित्य मदावर्ष

२ श्रीमतो इन्द्रुवाला मुखाडिया ज्यान्यक्षा, मोहिन्य मदावर्न

३ श्री वन्हैयालाल मिश्र मन्त्री, माहित्य नदावर्त

ಸ್ವವ ಸಿ—

४. श्री रामिक्झोर व्याम कृत्यति, साहित्य नदावर्न



नोचे दारा से बारा

२. श्री रामनिवास शाह उपात्रार्थ ए४ कोपाध्यक्ष साहित्य सदावर्ग

२. ग्रामार्थे श्री पुरयोत्तम 'उत्तम' प्रयानार्गम, नारित्य नदारर्न

श्री हिम्मनलाल 'हिमकरनेगी'
 श्रव मन्त्री, मान्त्रिय महाद्री







बलाई, बनाई, मिनाई, बनाई बादि हा पूर्ण जान इसन करना दम परिवाह का कार्य रहा है। राप्राचार राज्य गमात्र बन्यास बोर्ड की ब्लापना में राष्ट्र १६१७-१६ में इस परिष्य की

इस बीरह दिया दया । "महिनान्यान एवं उद्योग हाका होर्सीत्" हाम देवर इस परिषठ का कार्य ferent शिक्षा गया । मात्र एमी गर्मित वे हारा हारे कर्राच्या क्रिका^न शेरराम् क्रीर वीविया प्राप्त

कर रहि है। ध्रकाराम करियों --- नेगाव क्षीत क्रवास क्षता का बादे एक दुनरे यह सामानित है, जिन क क्षांत्र नई देशांत्र क्षांत्र ने यो परित्रियांत्रा देश की एनके जानकार होनी राज-दूशने हैं। fere to fir fame at he mun attay erecenter mitigation ह न्यून्तरम् कर्नरक वर्तनम् वर्गन्यकारम् क्रीर

ويواكن فكو لكم لاهو يقا مجارا فالم الماماة Sie viel einen ma annen bir dag metre m gen green by the make agree the with his arms agains where were sign in en are mineral and man countries are acres and \$ 4" T 14 # 4 100 # E"

margere grientlie, gart-areit febrit efte the for marking also from the freely and fine to

ATRIC ME HET DE RE TRIVE graphic to the other south and the and the state was a state of the gar e prome e de de mes deservir de wit & h.m. Es 98 (m. 1, 144 d) med 8

होगी। इस कार्य में हमें भाषित कड़िनाई हा प्रधिक मात्रा में सामना करना पहेगा कहार

करें है। इसी संदर्भ मे धनादमी ने हम यह तिरेत

करना कार्रेने कि वह ऐसे महत्वपूर्ण कामी के निः मस्याची को पूर्ण सहयोग प्रशान करें। ममाज शिक्षा समिति --- नए गमान का निर्माता कर देश को नया कर देना, बोडिन एवं

गारोदिश विशास के माथ मांखातिक परानात को प्रयति के शिवार पर पहुँचाना राही उहें। नी प्राप्ति के नित् भी माधोपुर, रियानगर (रेगारार) रोप, सबसेर, निष्ठाय, पुत्रशा सीर सेवल वर्ण व्याना से समय-समय पर समारोही का मारोडी नदार्श की बोर से दिया गया है। यदि इन कार्र म तम बन्द र त्याची व स्पतियो तदा राज्यी

विष्यान दे मारा सिरो तो तिवचा ही मारी हमें राज प्रतिसाम कार से सितारी । रक्षणायाम - रिप्यो जारियो की अवस्था है र कि एक बेनड रहत्व स्रोत हुई है। प्रयाप्ति ह रण स्थान का कृतिक रिल् दे रहा है। रिल् व न्यान्यमा विश्व नई ना यह शासमह हा जानी

रिमानो ने बादिन तथा प्रत्य प्रतार के लाग

to be that and seed by this a set is मुख्या इ. इ.स.च. अक्षीताल है हरता है। नवर है कोर इस्टरन कराहरे जा हता **गाउँ** है and hid might beit beim beideber al war: करण पर जारिक १६छाडिया करे पूरी मुख्या

uren mad Minnele Reine, mert bat & c. the state disk &

Para Pamina acusa , asiga ta time rees used in may need The big afternoon was in the seal the new big.





निबन्ध-प्रतियोगिता प्रशुत है जिसमे १४७१ प्रतियोगी भाग ते चुके है। किन्तु ७ वर्ष तक बने प्रारहे इस कार्यको "विस्त विद्यानय प्रायोग" को एक पित्रानि के परिसाम स्वस्य एकाएक जन्म कर देना पदा।

संस्था को प्राधिक स्थित:— इस दोव ये संस्था की दिवित समस्वापूर्ण रही है। जो कुछ प्राधिक मन्द्रयोग प्रवाद कर प्राप्त हुमा वह दिवारिक्या प्रदेश क्षात्र कर प्रत्य हुमा वह दिवारिक्या स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप हुमा का हुमा है। इसके प्रतिदिक्त राज्य के दिवार विभाग, समाज क्ष्याय बोर्ड, माहिला क्षकारची एवं केन्द्रीय समाज क्ष्याय हो है भी धार्षिक सहायताएं समाज क्ष्याय राज्य इर्ड है।

सर्पा की प्रव तक की धावर ०४४०६ ०० कठ तदा ब्या ११०४०६ ०० र० है। वर्तमान से संदरा पर ६००० ०० वर्जा है। त्याद हो है कि स्क्या की पोजनाधी की जूर्ण करने से धावक कार्टमाई गतिरोध उत्तर बरनी है। तो भी संका के कार्यक्रतीयों ने पुरने नहीं देते है। धेर्व सोर हिस्मत के बाद प्राति—पद पर बरने वन वरख पाने वराने कार परि

संस्था का वर्तमान स्वक्ष्य.—राज्य के संस्था-निवसोरितयों के सार्वार्थ मध्य पविच्छ होतर सिक्षा विमान हारा मान्यता प्राप्त कर पुत्ती है। तम प्रचाने संस्था का गयानत राज्यका के नाममान्य व्यक्तियों हारा निवित्र संचानत पर्वार्थ हारा है। स्वार्थ मान्यत्र समिति का गयान समिति हारा है। स्वार्य समिति का गयान समिति का गयान का

थी राम दिशीर स्थाम — हुन्दनि ॥ सामोदर नान स्थाम — स्थास धीमती रुदुबाना मुनाहिया — उपाध्यक्षा धी बन्दैयानान मिल

.. पुरपोनम 'उन्नम'

... हिम्मत लाव 'हिमकरनेगी - प्रर्यमन्त्री .. राम निवास शाह - कोपाध्यक्ष ्र चन्द्र कुमार 'सुकुमार' सदम्य .. निरंजननाथ बाचार्य सदस्य .. सहदेव शर्मा सरस्य ,, क्मिन्रमय बाह सदस्य मधी शक्तना धीवास्तव मदस्य थी बहादर्गिह 'सहायक' सदस्य .. कैनान तिवाडी 'विद्रोही' _ सदस्य यह हुए की बात है कि राजस्थान माहित्य बनाइयी (मंत्रम) उदयपुर ने सत्या की संस्वत्यित कर घरना भंग बना निया है। रूखा इस भराहनीय प्रयास के लिए धनाइमी के झस्पक्ष श्री जनाईनराय सावर लगा संबादक हाँ ब्रोजीयाय क्रेसारिया की धन्यवाद देना प्रपना कर्नव्य मानती है।

संस्या की आबी योजना — राष्ट्रभाषा हिन्दी के विस्तार-प्रस्तार हेतु "हिन्दी कानेज" की व्यापना करना तथा मार्तिसक क्षेत्र में मेवा-नार्य करने के द्वेश्य में एक दुर्गत, मार्तिसक पत्रिका का ज्यागन करना, रामके कार्यकर्मायां के मानना में आने कर में बात परी पाराधायां का करन है।

भैने तो 'हिन्दो बादेव' के स्टब्स को साति बानेव के कर में असावर्त प्रारम्भ ने मंबादित बच्ना बा रहा है, किन्तु नमस्यामों के उदिव समायानी को स्वतस्या की कभी के बारण पूर्ण विकास कर सभी हम नहीं दे पाए हैं।

भितावर्ति के पान धाना कहे निजी स्थान धीर बदन नहीं है। यह भी प्रति में एन बापा की है। बिन्यु निकट केंद्रिया से ही साहब नरकार द्वारा सूनि प्रान कर अबन







उद्रघाटन के शब्द

उपस्थित देवियो भौर सज्जनी,

हम मेमिनार के धायोजको ने इसका जिचारणीय विषय परिस्थिति के धायन्त धनुकून रखा है→ "सामान्य जन भीर साहित्यनार" । भगर सबमुच क्ता जाय तो यह मामान्य जन का यूग नही है, सामान्य जन को मान्य बनाने का दिन है। माज तक राजा लोग मान्य थे. राजा जिसको सान्य करे. वह मान्य बनता था। भ्रव सामान्य लोगो को मान्य बनाने का दिन मा गया है, स्वराज्य वा दिन मही है, लोक राज्य का दिन है। स्वराज्य हो पुका है, बद कोशिश करके लोक राज्य बनाने का दिन भागगाहै। हम जिनके हाथ में भारे राज्य को देने वाले हैं, उनको नैयार करने का काम दी दर्गों के हाय में ब्रा गया है-एक है याजनैतिक प्रस्य. जिसके हाथ में ब्राजनन सारी मता है और दूसरा है साहित्यकार, जिसके हाथ में प्रेरणा देने का श्रविदार है। इन दोनों के प्रशल ने जो कुछ होगा वह होगा। साहित्यदार में भी दो पक्ष हो गये हैं-एक साहित्यवाद वहता है, बया नीति धीर बया दर्म ? ये सब बातें प्रांती हो गई है, हम तो प्रवा कारंजन करेंगे, जिसमे जीवन की प्रशिष्यकि हो हम, जीवन मे दिलनी शुद्ध रच्याएं, बाबालाएं, बामनाएं होती है, उनकी जागृत बरेगे। इन सब बासनाओं को कातृत करने के निए जिनने सीग प्रयत्न कर सकते हैं, वे करें। यही लोग पिर वहने है कि इस समाज के गुद्द है लेकिन ये दोनो बार्ने साय-भाष नहीं चर संवती। या तो बाप रंजन बरें, हा किर लोगों की उच्चामिनाया या हीना-भिवासाधी, दोनों भे में एवं की जाइति का अवस्त

करें। दूसरा साहित्यकार है, उसमे मबके जिए स्थान है, सद समाज कान कार्य उसके पास है, औरन भी प्रेरणा देने का काम भी उसके पास है, ओरन भी प्रेरणा देने का काम भी उसके पास हो। अक्त उसार से अवाद न हो, इसके निष्णो प्रेरणा देनी है, उस प्रेरणा को देने का काम माहित्यकार का है। इसके निष्ण उसके अपने जीनन में साधना करती होगी। हगारी तरफ न देखिये, हमारा साहित्य कैसा है, उसनी तरफ देनिये, यह कहने की मौजन नहीं वानो वाहिए। जिनना हमारा माहित्य उसा है, इसमें भी हमारा जीनन उसन बने, इसके निष् हमें बाचन करनी चाहिए, इसना तो कम में नम हम वर्ष हों।

सरकार दो बान कर महनी है-जनता को मधर जान भौर राज्य के मधिकार । ये दोनी सनरनाक चीजें हैं। सोगों को बोट के ब्रियक्तर मिन । यात्र वोट वी सना है, मात्र मगर वोई वाम था सकता है तो यह बोट है। योड जिसको बाहेवा बह भादेवा, जिमको बाहेवा हटायेवा । ट्रमरा बशर शान है, वह भी बनानार है, अनमें न्या पढेंगे ? क्या नहीं पढेंगे ? यह धारने हाप की बात है। धाप मो हो को पढ़ाने की मना दे चुके है। इसमें ने बया क्वाई होगा, यह पता सही हो सबता। डिमोजेंसी के बादने हैं "act of faith" जिन मोगों के हाथ सर्व सना देने बाते हैं, वे बांट धीर प्रक्षर जान वाने बद गूर कर रनको व्यर्षे नहीं बरेंगे, ऐसे विश्वाम से मारी मना उनके हाथ मे देनी है। भारते प्रदेश की समन्या ही में । इस प्रदेश में सम्बद्धात में बादने हिनाब ने प्रशास दिन तर रहते की वोशिश की। जैसे कभी वर्ष के दिन बढ़ जाते हैं, उमी तरह मध्यकान ने धपने हिसाब में ज्यादादिन रहने की कोशिश की । इस मध्य-गान की जिल्द बाध देनी है, वर्तमान को मजबूत बनाना है भौर भदिष्य कात की स्वाई बरना है। रमरी सारी परिस्थित का धारती बालांक जान है भीर भारके पास दीर्थ हिन है. ऐने साहित्यहार हमें मिनें तो सब बल्याल होता। सेविन धगर सोन पर्टेनि धारके संत. धारके ऋषि, धारके धुनि महारमाधी ने संखाई के बाठ इतने पहाये हैं कि हम मन ऊन गये हैं। भाज हम रहतंत्र हो गये तो गरहे है कि सब अरत भीग विवास का सनुसर करने दीजिये । भोग दिलाग बातन्द ना बीज है, इतना नीन शिरोध नरेंगा ? मगर वह नन्याएकारी है. दिल्ली नहीं है। नेदिन या देना नवाहै वि जो मीय जनता के भीग विकास की जया देते हैं, यह का ही बनियान निया जाता है, यह एक ऐतिनाधिक निवस है। इस बार्ड नार्गाणकार या म समये कि बाज बगर हम लोग भीग विशास जाता हैये सी इशारी बाली बचुर ही जायारी व नेवित जब तक क्षेत्रमाना देवने नहीं कारेगा, क्षेत्र कोई क्रमत कारत करि होत्ता नव तक भी देश करेगा, उसके eit ft beit wider i Et beit fe mirt fe man beine bid ton mana den men Linen ma men fert urm fin & und unt mit were git a which \$ arent all mad graft melyn a क्षेत्रक क्षेत्र अने कृत्य बन नहीं है जह बान है, जनते हरू greef met exigen meere & for \$; my men के के रहरते कर कर ने में में देश कर अर्थन में स्वर्ध कर कर to the date of better \$ " an die die prive \$4.5 and the \$ and stated door show 東京東大学の中の東京では まい かいがっ さっぱい ger Kint f. "ret # anni ani ay tagia

धौर भरए । चारों विषयों मे साहितनार ने का प्रतिभा दर्गोपी। प्रेम सनाउन निपय है, रार्प नये नये धन्वेपणु होते रहते हैं। मृह्य के इास रे प्राप्त होता है वह सजीब है। भीरत गा*री* मराग्रहै। सारने की क्या हर एवं को भाग नी होती, जो मार सकता है यह मर भी तरा है। मरने की कता बायरे पास है, वह जीवन के 👫 सभी को प्राप्त होती है। मरने की दूगरी हत ऐसी है, जैसी बहारमाची के पास होती है. है समस्ते हैं, जीवन ये दूसरों की तेवा करते की मीता मिनता है। सरने ने बाद भी गेरा करों का मौडा मिने तो एक शए। के भन्दर मुख्य ^{दर्गा} कीपा है जिल्ला सारे जीवन में नहीं अ^परा है िंगनी सारी जीवन में सेवा की, बहु मरते दे हारी ची । इस तरह चार सनापन स्विप रहे हैं। इह नया पुर था गया है, इसके सन्दर प्रेम का कार^{नर} होता चाहिए सब नोगों के प्रति सारियण भ^{र्ग} करक चारिए । सब लोगों के प्रशिक्षाणिक मार्ग के मायह है-देश श्रम श्रीर देश हात्री कुमवार केर पारी दोनों की गेबर करें, यह नहीं मारे । सार्थ न्यान माने । सापश्चे बहिन्छ से मामाप मार्थ क्ष्या बर्गाम । जिल्ला प्राप्त कृते बादा है, है बाध का, इसके दिल इन्हें में बार करता कर् प्रकरी है । पुरार जनत्व स चर्मा मा महा स रण g afen Sant aft mat indlient fe tang f and wit what district abut t en en a se et a me ganeram Many to S. Stat. St. Nat. Salling Wh. S. C. प्रकार के जातर के हुएए का लाने क्षीर अन्तरका है क्षण म बर्ग बहार हा हरका हा बुन् इस्ती

करने जो भी भावत्यक है, वह साहिय हैया।

भाज तक साहित्य के विषय थे-प्रेम, पीर्न, पी

*** * ** *** *

मब भाषा का सवान था सकता है, भाषा ऐसी होनी चाहिए कि असमे जीवन के मृत्य था आर्थे। मैं पूछनाहं कि जब हिन्दी बोनने वानो की संख्या, भीर भाषा बोतने वाली की संख्या से भार पाच गुनी है, दस गुनी है, तो आधा क्यों म ऐसी हो कि जिनको जनना को समझने मे दिइस मही हो। इस वास्ते राजस्थान के जो साहित्यकार साहित्य सूजन कर रहे है, उनकी हिन्दी ऐसी हो कि सब लोगों की समक्र में बाजाये, तब लो लोग समभेंगे कि सपनी बात है। घव पाडित्य पूर्ण आपा मही चलेगी। मगर प्रापकी जनता की सेवा करनी है तो जनता समक सके ऐसी बादा बोनें। राज-स्थानी में शब्दी की भरमार है, हिन्दी में ऐसे राजस्यानी दादर लायें जिन्हे लोग समभ सकें. ऐसी हिन्दी का भाविष्यार करना होगा। साथ ही देश की रशा कैमे हो, यह बताने वाना भी साहित्य हो । मैं पूछना हुँ कि हिन्दुस्तान की रसा के लिए क्या २ करना चाहिए, इसके बारे मे एक भी दितान निली है ? धनी चीन भीर भारत के मधिकारियों की बात हुई, उसकी दियोई भंगे जी मे निली है। सभी तक गाय हिन्दी का

नहीं है, नही तो भारत की रक्षा के लिए, सारे हिमानय की क्या हानत है, इमकी रिपोर्ट ग्रंग्रेजी मेन दी जाती।

साहित्यकारों से प्रार्थना है कि पिछड़ी हुई जनना कर एक भी बारमी पिछड़ा हुए। बारके प्रदेश में रहता है घोर एक भी बारमी सपमानित होता है, को बारणी नाक कर गई। मैं चौर प्रदेश को बान नहीं करता, राजस्थान में पिछड़ायन बहुत है और स्विधों की बया हानत है, केवच ११ महिनार्थे दिवान सभा धीर लोक समा के निए है। उनके बारे में भी विचार करें।

मुक्ते धापके बीच वे माने का धरमर मिना, मैं इतार्य हुपा। मुक्ते दिवसत है पान जो जनना का सुन युक्त हो गया है, उत्तरों प्रतिप्ता बत्त करना स्वामान्य जन की तैवा करने समानरार माने के निष् धाप प्रयत्न करेंचे। मुक्ते मामा है जनता भीर सामान्य जनता की एकनिन्छ नेवा करने का बन लेकर आप नेविनार ने पापिम मोर्डेग।

21-2-51

...काका कालेलकर

"संचालक- की ओर से"

ब्बाइरणीय काका साहब, साहित्यकार बन्धुयो, एपरियत सन्त्रनों घोर महिलाघों। एक प्रस्त है धान साहित्यकार घोर कनता को बोक जिनती दुरिकाये वधी हो गाँ हैं उनके जिए उनस्पायिक किसका है? रासने पहुँच में तह उनस्पायिक काहता है कि बया सक्युक जनता घोर साहित्यकार के विशेवन को प्रावस्थकता है? कनना ने करूर वा उनस्पायिक साहित्यकार का है! इतिहास की हिंह में देला ज्ञाय तो एक सकार की जिनाने हैं.

वैदिन नान से कांप क्याएं गाने ये, राजा और सराध्याओं ने पास बेटने ये, उनने बोन हुए गाम वर्ष में नाम पर प्रयासन निये जाने थे। सेनिन उनने बाद सर्ट मी देशने है कि का रान्दिरों ने हाथ में बन बाता माँ सैडिड वर्ष या नाहिन्दार सम्पन्न बन नद एदने नाता श्याप्त वर्ष जा हिन्दान प्रमाणित बटना है कि उस समय धर्मा है या है और मोरों ने बहुबब दिया कि यह धर्मा मान वी प्रस्ति नामा करना है। इसनिए नियम की तियान बने मोर उसमें स्था नि वे भीय मांग नर पानन करे ताकि स्थाम की दिल्ला न हो। हमारे मामन्त कान में यह मर्थाम भी रही है कि जब माहिएकार माना था तो राजा उसकी पानती नो क्यो पर तेकर परना चा। मान मह दुवेशा है कि उसे उत्तेर भीर तनाह दी नागी है। यह परी, मह न करो। मह द्वाचित्र विभाग है ? क्या उपका है जो जनता के नाम पर उनका गीवण करा है ? कीन कर कहा की नाम पर महिल्लाका प्रदान की से में

बंध्य का बाबमण गाँउ तथा है। दी ग्यार. **इ.**ध्री हजार वर्ष पर दे भी ये/रे यो । उस परस्परा et er/हातरार ने मधुन्त रण है। शिलामात्र सर इंदर रिना बह गई है। गारियकार संशी नर रिमा बर गर्द है, साधना र वस्ते की बोज रति रति, जो पारे पी। भारपार्थ स सायजा क्रमण्या राजी में जगारी, तर वैदिशीयराम सुन देश हर बिगा र पर की असी रहा और और अरना इंग्लिश की शक्ता करी जिल्हा के बारे के उपना ever fem mitt bit min grift & fmilt ft unt Die meltigmer gilb greib ger bie ein per per eft alle gurt, profe fi for gent who williames wille by be been breed to on alter a recall on the edge alter all di me de and and de fem comme where there we was given gift it to gan mer ein alleger bis wermerfin ererer It to grand it only a world it and ·克莱·西西西西西亚州 中一田田 中田田 y grown parameter to the

जो ऐसा बहुते हैं कि साहित्यकार मातर के 🖰 को स्थापित करे, उन व्यक्तियों ने उन महतों की ह को मुना या नही । हम नहीं जानते उसने बारण का व्यवसाय भी बहुत गनता रहा, उसके बारत के ने धर्म धीर मोध को धोर नहीं देखा, इसी इसी बाद काफी उत्यान और पतन देगे गरे। मेरी भाज भी मानव का गौरत देखना है तो सा^{(्नार} के पाम श्री जाना पड़ेगा । उसके माने दो प्रा.र है नाहित्यकार हो गये, एक तो वे को दरता^{है है} चते गये और दूगरे वे जो सापना मेनी थे। जो दरवारों में चले गये वे जीवन को, वर्ष हो नवा संस्कृति भीर इतिहास की नहीं समस्त्र वरे। नेविन किर भी ऐने साहिएस्तार पहे वो मार्ग नापना में नमें रहे, जनमें ने महानदि वातीरा^{त हो} नाम सामने बाता है । उनकी महार द्वीत को देवी ने बादनगा है कि साहित्यसार हा दौरा वर्ड नरी हुमा है, राज्य उसरो माता नरी हे नर^{ना}। जिस दिन शांक की साहा के जार मा^{लिएक प} ने सारित्य सूत्रका की, प्रमाणि प्र^{मणी होती} न्द्र शो बारमा । पुत्र मेलक है को दे^{ग बर्ग} रिक्ते हैं, में समयक्त हुँ हिं नेतायां की हैं ^{(स्त्} ने प्रत्या गया बाट रिया है। बचा प्राप्ते या बार वा वि देश दी या चर्ने दी बाप लिए । में पुरुष वरण हुँ कि देश थी, खर्ज का बाक कर दिलों की की mint de mast elem in singliet aus बहरूको की बहर मरून्छ है। सरेर सार्वन्तर कण बदन करून न्यांच तह हिलों हुई बला है। Mir Ban mant ! Bieten eitfaldelt al. ung 00 - 9 .

***5*

ar emailed

राजस्थान की साहित्यिक संस्थायें

कुमारी कमला धाकड, जयपुर

"राजस्थान के साहित्य जगन में साहित्यिक संस्थामो का महत्त्रपूर्ण स्थान है। सामूहिक रूप में साहित्य के धनुसंधान, प्रचार, प्रकाशन एवं प्रांत के जन-मानस में साहित्यिक धांभविक उत्पन्न करने मे संस्थामी का प्रशंसनीय योगदान एहा है। इतना ही नहीं साहित्य के निये पाठक सैयार करने में इन संस्थामो ने जो दशना प्रकट की है साहित्य जगत को निरियन ही घामार दिया है। सायन मौर वाताहरण के सभाव में सनेक प्रतिभागें बुष्टित हो जाती हैं किन्तु संस्थाधी के सहयोग से प्रान्त की प्रतिमार्थे काफी मात्रा में कु ठित होने से बची हैं। हम यहा प्रान्त की कुछ महत्वपूर्ण संभ्यामी के बारे मे संकेत देते हुए निवेदन करेंगे कि मतीत की मुरक्षा, वल मान के परिष्कार और अविष्य के विकास के लिये जनता, राज्य धीर कप्पन्न लोगों के साय २ प्रान्त के साहित्यकारों की भी इन केन्द्रों को महभावनापूर्ण योग देने मे सत्पर रहना चाहिये ।

प्रान्त की प्रमुख रंकाओं वे 'वाहित्य मनवान वहरवपुर', हिन्दी साहित्य मिर्मान अरुपुर, बावक इसेरा साहित्य परिवाद हुं 'वापुर, कानकारिती कुमान सौरासती, हिन्दी विचय सारती धीवानेर, राज्यवान माहित्य सौर्याद परिवाद, भारतेन्द्र सर्वित नोटा, सौर 'साहित्य सम्बन्ध' नीव्हारा बादि वा मनेना-मार वरिवय यहां देने हुंग निवेदन करेंगे वि पाज-च्यान करेंगे में समनवें कहें हैं एनर्यं समा याच्या करेंगे हैं।

साहित्य संस्थान उदयपुर -- की स्यापना स॰ १६६= मे प्राचीन साहित्य की प्रतुसंघान एवं प्रकाशन सथा धर्माचीन माहित्य के सूजन धौर प्रचार की दृष्टि से हुई। तब ये यह संस्थान निरन्तर साहित्य मेवा में शंतप्त है। शंस्पात के प्रत्यांत चनने बाबी प्रवृतियों में प्रमुखतः प्राचीन साहित्य के धनुर्मधान को महत्व देते हुए प्राचीन साहित्य-विभाग का गठन राजस्थान के प्राचीन साहित्य की प्रकाश में लाने के उद्देश्य में किया है। इस निभाग के द्वारा मनेक प्राचीन कवि भीर प्रत्यों का परिचय धनेक प्रसिद्ध और अधिकारी विद्वानी के द्वारा भाहित्य जगत को प्राप्त हुन्ना है। र्रस्यान का दूसरा विज्ञान है राजस्पानी प्राचीन साहित्य । सन् १६४४ तक इस विभाग ने कृत बठारह हजार पान मी गीता को संग्रहित किया है जिसमें १९५६ तक महाराखाची के गीत, बुडायती के गीत, राजन्यानी दोहे भादि का सपादन किया जा चुना है। इसके नाय ही 'पृथ्वीराज रातो' वा मपारत भी इस विभाग का महत्वपूर्ण कार्य है।

मंत्रवान, मोर नाहित्य, धारिवामी माहित्य धोर राजव्यानी लीर मीर बादि में मेरह धीर प्रशास में नियों जिल्ला प्रशासीय रहा है। मेरह मी मेहारब ते बात, मानवी नागते धीर गुज्यानी लीर सीमी में में बहु, इस दिवास का प्रशास है।

संस्थान प्राचीन साहित्य के साथ २ प्रवाचीन साहित्य के प्रवादान के निर्दे की निरम्नर प्रयानाही के कहा है जिससे भीत्याजी के निवन्त्यों हैं। सहस्र और भी जनार्दन कांच नाहरू के प्राचार्य कांगुकर (नाटन) ना प्रकारत महाजूर्या है। इसके साथ ही मंद्रा में धन्तर्गत घोष मंग्यान ना नार्य भी महाय-पूर्ण किया है दिसमें दूर २ में घोष-स्ताक घोत नित्य माते हैं। इसी दिसाम के धन्तर्गत घोत परिसा ना क्यानन भी हमा या। साहित्यक धामनो में। परमस्या भी मंग्यान नो धनती उतन है। जिसने धामनों में। परमस्या भी मंग्यान नो धनती उतन है। जिसने धामनों में। स्वारता नी गई है जो निरस्तर इन दिहानों पर विचार विसर्ध नहरू ने

स्थिति का पुरस्कारण काठी कारण है । दिकार ६० विकास देवसा की सम्बद्ध स्थान हजार पुरस्त कर्मा का देवार कार्योगीना पुरस्ति और साठ द्वार कर्मात्म कार्ये साथ है। सभी ६६ की स्थान स्थान कर्मात्म पुरस्ति कुम्मान्य सा विको सीव सर्वी १६६० नवीं पुरस्ति कुम्मान्य सा विको सीव सर्वी १८६० नवीं सुन्दे सुन्दे

ক্ষিতিক বৃত্তিক ক্ষিত্তিক কৰে। কুকু ক্ষু কৰে। ইত্যাত কৰিছে তিনাৰ কৰিছে বিশ্বাস্থ কৰিছে ক্ষান্ত কৰে। কুকু কৰিছে বিশ্বাস্থ কৰিছে কৰি

संस्था की मातीर्वाद दिया है। संस्था है से 'स्वर्ण जयन्ती' महोत्सव मनामा है बिसने रार्ण इप्यानन (उप-दाय्युपति) ने प्रधार कर संस्था में साधीर्वाद दिया।

बागड़ प्रदेश साहित्य परिपद्, दू गरपुर 😁

परिपद् की स्थापना सं० २००१ वर्गान प्राम्मनाने को हुँदै थी । सभी से संस्था बागड प्रोम है गिरिय के प्रकार एवं प्रमार के निर्म प्रमानी को विश्व प्रमान के निर्म प्रमान के सिंदी प्रमान के दिया प्रमान के प्रमान

सालप्रशिनोय मुसार साहित्य परिषद् नीर्वी सा रांचा प्राण की सानी-सानी सेलाई। प्रणादिक से माहित्य के प्रीच की प्राण्य करी के प्रहित्य में केन प्रमण्य दुश्य की भीवाई के प्रणादि गढ़ मानवारित दुश्य की नीर्वाच के प्रणादि गढ़ मानवारित दुश्य की नीर्वाच के प्रणादा गढ़ मानवारित करेश प्रतिवाधित की की केन से दश्य करेश की की सामित्य की प्रणाद प्रणा की की का प्राण्य की माहित्य स्वित्य प्रणा करते के दिन केन्द्र मानवारित का प्रप्राप्त की है। याई दिल्ला करते के दिन केन्द्र मानवारित का प्रणाप की है। याई दिल्ला केन्द्र साम्यानित का स्वाप्त की सामित का प्रणाद का स्वाप्त का स्वत्य की प्रशास की स्वाप्त की प्रशास की प्रशास की स्वाप्त की है। परिवार को स्वप्त की प्रशास की सामित गद जि-

मे भौर हिन्दुरतान में तथा उसने बाहर, हैदराबाद दैहनी, बेंगनीर, घनकता और शामीतों का फिकि द्वीरा समृद्ध में हैं। परिपद देश के विश्वित्र प्रसिद्ध विद्यानी की बुदा परने प्रियेशनों की प्रध्यक्षता के द्वारा उनने ज्ञान से प्रान्त के जन-मानग को सामान्तित करती हैं।

राजम्यानी शोध संस्थान, चौपासनी ---

चौपासनी शिक्षा गमिति जोवपर द्वारा राज-स्यानी साहित्य के शोध और प्रकाशन के महत्वपूर्छ कार्य के लिये १४ सगस्त १६५५ को द्योध संस्वान की स्थापना की गई थी। तब से यह दोख सक्यान प्रान्त के साहित्य वैभव को बंदित करने में संसम्ब रहा है। त्रैमासिक शोध पत्रिका 'परम्परा' के प्रकाशन के द्वारा संस्थान ने जो प्राचीन साहित्य भीर लोक साहित्य, रमज पाठको के समक्ष प्रस्तृत क्या है, प्रधंसनीय है। 'परम्परा' हारा प्रकाशिन प्रमुख प्रसारान है लोक गीत, गौरा हट जा, डिगन-कोष, बेठपेरा मोरठा, राजस्वानी बात संग्रह. रम राज धादि है। इसके चतिरिक्त अस्यान के द्वारा 'साहित्य बौर समाज' (थी विजयदान देवा) 'साहित्य संगीत और कला (कोमन कोटारी) वीर्यक दो निबन्धी की पुस्तकों का भी प्रकाशन हमा है। संस्थान का सहितीय और प्रशंतनीय वार्य है 'बृहनु राजस्थानी बाब्द कीय' का प्रकाशन । इस श्राद कोच में लगभग एक लाख परकीस हजार प्रद होते। सन्द बीप बार भागी में प्रवादित होगा-जिसका प्रथम भाग शीम ही पाटको के हाथ मे क्षाने वाला है। यह बार इजार पृथ्वो में द्योगी। बास्तव में हरदान का यह कार्य राजस्थानी आका का समरत्य और साहित्य ने गौरव में कृति नारने काना होगा , इस बार्स से थीं सीनाराय नावन लगे हुये हैं।

सस्यान हरनानिबन प्रन्यो, लोच-गीनो, वियन

गीतो, राजस्थानी धातो, पुराने-नियां एवं हिरात के कवियों की जीवनी के श्रेष्ट्रों में भी संतान है। मब तक क्रमदाः पात्र सी हत्तितित ग्रन्त, ५०० तोक-गीत, २००० हिरात गीत व घरट, सो सी राजस्थानी बाते, एक सी बीम वित्र भीर एक सी जीवनिया सथहित कर पुरा है। हिन्दी विद्य भारती, बीकानेर:—

शहरना पथक भारता, वाकानर:—

भारता के लगापना बीकानर: माहित्य सामंत्रन

हारा २६ जून १८१७ को हुई यी। तब से दिरवभारती, श्रीकानेर के जीवन से साहित्यक स्निप्तरी

वराज करने से प्रयत्नाधीन है। सिमिति के सन्तरीत

वनने वाची प्रवृत्तियों से धनुसंधान विभाग, समाज

वनाया विभाग, सन्तर्राजुँची विभाग, समाज

व वाधनानय तथा औड सिमाण एवं समित्रात

विभाग वनते हैं। ये विभाग नान एवं कमेंठता

ने गाय धनने वाची संनान एवं कमेंठता

ने गाय धनने वाधी संनान एवं कमेंठता

ने साय धनने वाधी संनान एवं कमेंठता

है विपित्रन कर से होने वाधी स्तुत्यान गृहं

विवार पोरिक्या। ये घोषिक्या मन्तराह से दो बार

पिवार पोरिक्या। ये घोषिक्या मन्तराह से दो बार

पिवार प्रसिद्ध दिश्वरों के सायगु तथा निवस्य

पाठ होने रहने हैं।

राजम्यान माहिस्य समिति, विमाजः--

सीनी की स्वारता १२ समान १३१३ कि वो हुई थी। तब से सीमित प्रवाद, प्रशासन और समे के सीमित प्रवाद, प्रशासन और समे के सिम्प्री के सार्वित के सार्वित के सार्वित के सिम्प्री के प्रवासकारी के सिम्प्री के प्रवासकारी की सिम्प्री के सिम्प्री के

भारतेन्द्र समिति, कोटाः--

समिति की स्वापना धाज में नगमग ३५ वर्ष पूर्व कोटा नगर तथा हाडोती प्रदेश हा हिन्दी प्रवार को नश्य मानकर सन् १६२६ में हुई थी। उसी ममय ने मीमीत, साहित्व ने प्रकार, प्रशासन एवं नरीत प्रतिमामी को प्रांसाहत देने के कार्य मे र्मनान है। नाइको का समिनय, करि कम्मेनन, निकाय प्रतियोगिता, बहानी सम्मेनन, साम्य मापा के स्थान पर हिन्दी का अवार और सटारी की इतिन्हों है ही। हिसा की काराया करना नवा द्रांबद्ध साहित्यारों की क्यानिया और साहित्यर प्रकारी की बाराजित करना गरियति की प्रमृत प्रवृति परी है। लागी ध्वाशिया गमा बामी gur it efult erefun ? abe ererein-रिदारीय के नाम में द्वार बालीय एक द्वा स्थान बारी है को कि रिक्षण बेखा की बाहरता बारी ₹ ६ वर्गीत मुधील के मारित्य का अपर्शास करने के हिंद परिति दिश्य कर स प्रत्यन्ति है। बारा है की लिए बॉस्स व ही सम्बन्ध है। करि इ करिने व काचा दशहरण हिन्नम् की

س ئۇنىڭلىن ئىندۇ يىدۇپىنا वरहर की क्षणांका चलका सुकता ब्रह्माच de titte et ere erre et gerete e et E smale abreiter fie ft feine gefe बरण हरा हार से का रहना है।केरीर entres de rements desertes (C.S.) \$" rose \$4" i And Mit met Lad Mette.

क्ल कॉलर कड़ क्रमेरचन क्राचीत क्रमांका नह

est to atamo ance different of \$1

a me ha good or their trials that their

engine from al sal \$1

मनी विषयी पर ल मण्डन के पुस्तकात

में भी दैतिहा, स करीय ५५ झाने है मान है। संस्था वे वे दाक सरस्य थी

के जिए ध्रम-रत र प्रयान से सस्या उपर्यंक संस्था धनकर, मुखाकर गरि

गमिनि स्वादर का इस भागि श सरवादे श्राम के सा

बनाये रात्ते व निये भी प्रशी प्रसार की यदाय गति से बढ

नापता की कमी के दन में धनमर्ग १/ निरेद्ध है कि धाय

पाथारा में वर्ष । BUT THE E MY स बोर प्रस्ताप हो। mounty first bit and

mind at jikin meand, & \$145 ty A Kall mellen A

*** \$ 1 24 4-44 0 34 43 W E1718 the section with the

SAME A MARKET

\$. 4" \$ 63-49

राजस्थान की साहित्यिक

	ŧ
ग्रान में—	•
नेन्द्रत-माहित्यं ः व्हिश्रामं	¥
त्रीक हरिशम माया माया माया प्रतिस्था प्रवृत्तियां प्रतिस्था मार्थिय मोर जमनी मुख्य प्रवृत्तियां प्रतिस्था मार्थिय मोर्थिय हा हिस्सी हर्गिय है।	ţŧ
t.mm	7.0
हैन-गारित्य औं ग्राह्मकार नारता सामाना प्रवृक्ष सीर वाहरसानी करायती से प्रवृक्ष सामाना प्रवृक्ष सीर वाहरसानी करायती से प्रवृक्ष	te
रभावतात्रा' गद्ध गीत प्रार क्यारक क्यारक	3\$
दिराम सर्गित्य संग्रेतिक के कर्मन्या	13
क्षेत्रकातिम्ब भी द्वारकादे विकासम्बद्धः स्थानकारकार्यः	41
अस् मुद्राम् १ वर्षाः स्थापः	7'
As along the mind	41
And have alman of such	fK
Sent the state of the state	ts.
الما المامة المامية	13
कुर्यान्य क्षेत्रकार एक क्षेत्रकार्यः कुर्यान्य क्षेत्रकार एक क्षेत्रकार्यः	VI.
かく かけまれる マンセル ラーテル major safe 4	

संस्कृत साहित्य

प्रो॰ हरिराम ग्राचार्य 'ग्रभिताभ' राम रा., वंस्तृत विभाग, महाराजा कालेज, जापुर

प्रतस्थान की वीर प्रसाविनी घरती थे जहा एक पोर बलिवानी वीरो का जम्म हुम, बढ़ी होर बार के स्वार हुम, बढ़ी को बलम हुम, बढ़ी की सिहार के सिहार की प्रमान की सिहार के सिह

मुख सीमाणों तक यहा के राजामी वा सहयोग एवं माध्य भी संस्तृत तेलत के लिए करायानय रहा । यहांप पुद्रास्त्र होने वे बारण राजस्यान के रावदूत राजा संस्तृत के स्तृत्य संवी के सवय वी -यदस्था की सीर ध्यात नहीं है पार्थ, किर भी ति.स्ह भाव ने रचता बरने वाने यदिनों सी वर्ड इस्ततितित रचताई अंदारी, मंदिरों बोर जैन राजध्यों में बड़े यन से गुरीशन रही है। राजस्यान से हरतितितन प्रतियों के जान-अंदार साहित्य-संतार सर्व विदित है। वीकारेग, जीकारेग, सागार, खा-रु सादि के चेदानार विदेशी विद्यानी तब के निए सावर्दण से बेट रहे। इस्तिशित प्रतियों की प्रतियोध सामा से उपनिध्य स्वानेर से होते से प्रतियोध स्वान से उपनिध्य स्वानेर से होते से इसरे देनी करीब २० हमार प्रतियां से मेड़ हैं। उसने बाद असलसर वा स्वान है जहां दिश्ली विदाल भी० बूलर (Buhler) को "गउडबहो" जैसे सुप्रसिद्ध प्राइत महाराज्य भीर महाकवि विद्हुल चीचत "विकासन देवचरित" महाकाव्य जैसे दुर्भीय सम्यो की प्राप्त हुई थी। संस्कृत के मुहतो च्वाचारों के साथ २ जन महामाना विके मुनियो की भी हमें ऋएगी होना चाहिए। जिन्होंने सपने सरकृतानुराम के बारल कई दुर्नीम एवं विस्तृत संस्कृत सप्यो की सपनी यसतामयी क्षोड के स्थान देकर जन्हे कान के सर्पनर परेशों में भीर इतिहास की सुन्वार तलावारों से बयाये राजना ।

यह बहते हए हमे वर्ष होता है कि "शिग्रपास वध" के प्रखेता महाकृषि माप ने राजस्यान की श्रमिको बारने जस्म से बार्जुन किया था। भीत-नान (थीमान) नगर बापकी जन्मभूमि थी। बन: हम वह सदते हैं कि धाब से सगमग १३०० वर्ष वर्व ही माथ ने बुश्तवयी में परिगुणित होने बाते महाबाध्य की रचना करके राजस्यान में संस्कृत-साहित्य-सर्वेत का प्रथम दौसनाइ कर दिया या। उनने बाद भी बई साहित्य सुष्टामी का सम्बन्ध राजस्थान के साथ जोड़ा जाना है किन्तु उनके विषय में पर्यात गतभे रहे। लेकिन भाव के बाद "तिनवर्मवरी" नामक सुप्रसिद्ध धन्य के रविधना महावृत्ति धनपान वे राजस्थात-निशामी होने के श्तिरिचन प्रमान् हमे जिनते है। धनपान यद्धी बारानवरी के निवामी काळण प्रवा राजा भोड (११०० ई०) वीसवा के पहिलों में ने में। पर भोड राजा हारा "तिवसमंत्ररा" दत्य को समिन शरण कर दिये जाने पर क्षमेन्त्र होकर के मारकार ग्रम के मांबोर नामक स्थान में धाकर रहते नये। (वैक #तिरिक्त लगभग १०वीं घती में यहां सुप्रसिद्ध र्तिसामय जैनम्तियाँ को मेलनी से घनेरानेक संस्कृत द्रम्य प्रमृत हुए हैं सीर प्रत्येक सुग में होते हि है। इनमें में निम्निनिसित मुख्य है।

१, 'बाध्यानुमानन' के रश्रविता मेबाड निवासी राम्बर १

a, शुविस्तात दार्शनिक जैनावार्थ शरिमद्रगृहि (बिगीर)।

1, 'बरम्परी-सापतर,' की उसकि से दिस-दिन दिनदम् एरि ।

प्र. १५ वी बारी में 'सम्मीत महावादा के इच-दिला सम्बद्ध गुरि ।

इन्दे लया प्राय वर्ष जैन-विद्वारी के धीन याच यात्र भीत यानाचेशारी के श्राप्तित है. रिस्टे दिविष विकास को साहत आहा के रिकट रिया गया है ह मात्र के बाद शामग्राप छ र्शंदन अतर न सर्गान्य का यन यात्रात परिवर्त साम Fife'e et ud bie en feen ?, meb feen के सर्वेदय करा करा अर सक्ता है । हिस्सा सक em till at felty fent an av face mad g ben fr mad ant grant batha Me Elmi B THE PER A P. STITE OF PERSONS AS elect truck dians t done state to 41 7 .

tient menter

STERR PER DE MERMER ME 48 2 4 5 4 C 24 C 24 C 24 C 24 C

4 85- 44 14- 64 5-446

the state of the second second second second second second section in the second section secti

होती हैं-(१) परंपरा का मनु ... नयी विधाओं की प्रतीहा । इस पूर्व में प्रायः 🖽 प्रचलित साहित्य दौलियों पर शिक्षतों ने हेर चनाई-टीका, काव्य, इतिहास, नीति, पर्य, र गवास्थान, तथा अनुसद और गुन्दर रूप गये। राजस्यान प्रान्त के विभिन्न राग्वों के ६% माने २ क्षेत्र हैं। सीमित रहतर भी सारत हाराप पर निगने रहे। जयपुर इनकी प्रमुख बीडा-वर रही है, बन्य राज्यों (तरशनीत रजनों) है। प्रायः यह श्रांगाता बनी दती है, उगरामं र

परिषय प्रस्तुत्त है।

सन् १००० से १६२० ई० के समया प्रस् में सपार्व माधीसिहती सामातीत रहे। वे प ने नेपक व संया और योगात ने भण थे। प्रा राज्यकात से जहां एक बोर पैंड संदर्भी गर्प ग^{रा} हार्रिक, पंक बुल्लामास्त्री तथा दर्गादमार दिहेरी बिरहर "मूर्वदेशियो का शीलाम" शिका, श मते र पञ्चापनीताच सारणी प्राप्तिक में ^(कार्ड) बुलगार.'' नाम थे संस्कृती भारत का प्रतिनात शि स स पंत्र पुर्योदनात है होती ते, जो सीप प्रेर^{िज} थे. निर्णालावर प्रेप से feter मार्श धीवर ! प्रतिक्ष सामित्य स्तित श्रहत काशी के सर्गा Gira (Somes) fereft, fant ebe 121 बहारी कर बेलार्डशर कुछा । इत्तर के अध्यक्ती बाद वंदिए दुर्वाचपहर है कहा ब्रधादक बाव हिंही face andice field backetenant mengelmat giebe mit mit eine g Side Parkers where a grant to arrive to a and to a miter a fin feit fire fire संस्कृत राज्य संप्रदेशका । सः विकास द्वारी The state of the s

रमती हैं। पंठ ममुमूदन रजित-वेदो वा विज्ञान भाष्य, वैदिक कोस तथा इन्द्रजिवय काव्य झादि काको उपरिय एवं मुन्दर कृतियाँ हैं। वैज्ञा के माई पंठ हरितन्त्रमत्रों ने भी 'वयननगरंपकंत्रणतेन नोह्नान' प्रन्य नित्या। इनके साथ हो पंठ शिवयत दापीच तथा श्री वेचन्यसम्बो ज्योजियों के नाम भी उन्नेतनीय हैं।

साहित्य-लेखन की इस परंपरा में दी व्यक्तियो की नाम विशेषतः उल्लेखनीय हैं जिनकी वरदा निखनी कई दशको की बायक साधना के बाद माज भी धनवरत गति से सुजन-पथ पर अग्रसर है, काल की दुर्दम्य दाति भी जिसे क्रेटित नहीं कर पाई है। वे सहामना सुरुती रचनावार है-महामहोपा-ध्याय पंठ गिरधर दार्मा चतुर्वेदी तथा भट्ट थी मधुरानाच शास्त्री । पठ गिरधर शर्मा सात्र भी राजस्थान के बारिन्ड साहित्यवारी में धवनण्य हैं भीर भारतीय दर्शन तथा संस्कृति के साथ २ वेदिक बाट्सम के प्रदितीय विद्वान हैं। प्रापके द्वारा निःसित 'प्रमय-पारिजात', 'विषवा धर्म मीमाला' आदि धनेक ग्रंथ विद्वासमात्र के लिए वरशन गुल्य है। भट्ट मधुरानाय शास्त्री के नाम के साय छोटे-बडे लगभग २० ग्रंथो की मुखी बनुग्यून है, जिनमें में प्रायेक उनकी पारगामी विद्वारा का परिवादक है। संस्कृत भाषा पर भट्टजी का पूर्ण स्थिकार है और सरल सुबोध भाषा में असाउपूर्ण एवं सनित रचना करने में वे सिद्धहरत है। संस्कृत के प्राचीन खेदी है प्रतिरिक्त उन्होने वजभाषा वे दोहा चौराई बादि प्राय: सभी सुदो पर, उर्दू भाषा के कननो पर धीर लोक सँनी के भावनी धादि की सैनीपर र्गस्कृत में विपन साहित्य का शुक्रन विद्या है। रसर्गताधर, नाया सप्तराती तथा कारम्बरी की बिह्नापूर्ण टांबामी के मनिरिक साहित्य-बेंधव,

जयपुर थेमन, गोविद थेमन तथा भारत थेमन जे विद्युद्ध साहित्यक नाच्यो के मात्र जन्मदाता है। भा इतिहास भट्टनी को एक पुगांत रकारी साहित्य स्पृष्टा के रूप में सम्मानित करेगा। संस्तृत-गाहित्य महार के श्रीबुद्धि में भापका योगदान समूद्ध है भारके सुवीग्य पुत्र भी जनावाय ताहनी, जो स्माप्त समुद्र के सहत्व नवि हैं, मट्टनी से इन प्रदेश की सम्द्रण सरी, प्रो सम

इनके मतिरिक्त पण्डित भीतीलाच गार्स्स विदान के पार्ट्स के पार्ट्स विदान के 1 गीता माण्यवार के हर में तथा गतरम हाह्यए। ने माण्यवार के हर में तथा गतरम हाह्यए। ने माण्यवार के हर में उनने प्रीतिष्ठ है। उनने ज्येष्ठ भाता पँ० रामनाच गार्मी के वयो में प्रतिकृत्वा तथा वान्यासम्बता का गुन्दर संगम मिलता है। श्रुपि प्रतिकान, रामनीमा, प्रशियोग-पिनव्ह माण्य भादि म्राप्ति से हैं। श्रीहरि माण्य भादि माण्ये मीत द्वारी है। श्रीहरि माण्ये भित्र क्षार्यों के रामित्र हैं। श्रीहरि माण्ये परिवाद हैं। श्रीहरि माण्ये परिवाद हैंगी, व्यापापर हिरी माण्ये परिवाद हैं। व्यापापर हिरी माण्ये परिवाद में भीवृद्धि से स्वाप्ति हैं। व्यापापर विदेशी, व्यापापर हिरी माण्ये से स्वाप्ति के स्वाप्ति के स्वाप्ति से से स्वाप्ति के स्वाप्ति से से साम सिंग रामण्ये से माण्ये से मुलिज विद्या की से नाम सिंग रामणीत हैं।

बोधपुर से थी विश्वेरताय हेक में ऐतिहासिक येथ "बार्स विश्वानम्" विला । वं श्वेरतानम्य सारको तिनिव "धावस्तियाच्या स्माप्त्र" सारकीः यद निवाद मा बार गुरुद नाम हो। सार्व भी वर्षा साथार्ज अवसीस चहु एवं पं के स्तिप्रोवर होग बार्स भारता में मुन्तर नागित्र वा गर्जन हो छा है। बोधानेत से पर विद्यास सामग्री में "हिर्सामा-मुण्या" जारक सामितना सामग्री हुन्दर नाभ्य निवा।) उन्हों नेनानी ने यह दिलो एक सोरं नामका

१. विधीय के लिए इष्टप्य-भागारकर रिसर्व इस्टीट्यूट व सार्च न रिसर्व इस्टीट्यूट की स्मिर्ट स



अपभ्र'श साहित्य ऋौर उसकी मुख्य प्रवृत्तियाँ

नेसक—डॉ॰ हरीश, एम. ए डी. फिल, हिम्दी विभाग, महाराजा कार्यज, जयपुर

अपिक साहित्य का परिवार बढा विद्याल है। इस साहित्य का बहुत बडा बंदा बंधी जैन-प्रजैन भंडारों में गुरक्षित है। घद जैन भडारो की पर्याप्त शोध हो रही है। मतः इस साहित्य की समृद्धि में उत्तरोत्तर वृद्धि होती जा रही है, नहीं तो शीध के सभाव में एक बार प्रसिद्ध अर्मन विद्वान पिशल को बहनापड़ायाकि ''सपक्र'स वाविपूल माहित्य को गमा है।" वास्तव वे उस समय सम्बक् शोध की कठिनाइया चरम भीमा पर थी। साप ही जैनी सोग भी सपने भंडारो को दिलाना सपना प्रपान समभते पे । सौभाग्यवदा शव ऐसी बात नहीं है। राजस्थान, गुजरात, दिल्ली, जयपुर, नागीर, बीवानेर तथा जैसलमेर के भटारों ने अपभंग की धनेको इतिया मिली और मिलती जा व्ही हैं। का श्रीरालाल जैन ने बार्रजा के जैन अंडार से उपलब्ध सनेक दृतियों की शृचना देकर तथा उनसे से बुद्ध का सम्पादन करके अपध्यंता भाषा मे रिरमित साहित्य की सम्पन्नता को निभाव निद्ध कर दिया है। प्रपप्र'श के इस बसाधारण साहित्य भी रक्षा भारते का साराधीय जैन अंडांटी की है।

सपप्रांत भाषा ने साहित्य ना उद्भव स्थित दिहानों ने चोदी-जीवनी स्वातान्यों में तीन १००० कर निर्मादित निया है परन्तु सान्त्रक से दम माहित्य का तिहादचीचन नप्ते पर यह जान हो जाता है कि उद्भवकान में उपनय्य स्वताएं सहुत पुट प्रतीत नहीं होतो । सदस्यां माहित्य के परियोजन के निय हमने हिन्दुमा को दो नागी से विस्तानिया जा नहता है। १. प्रारंभिक याच (सन् ५०० ६० से ६०० ६० तक)

२. स्वर्णनाल (सन् ८०० ई० से=१४०० ई० सक)।

स्रवार्थित, १ वी में व वी सतारी ना स्राम्न स माहित्य ठीक में उपनाय नहीं हो पासा है। १ तन्हा तार्थ्य वर नहीं है कि इस कान में साहित्य रचना हुई हो नहीं स्थितु इसके निय एक जीवड दूर्यों स्थी मतारों का उपनाथ साहित्य ही हमारे सम्यवन का स्थापा वन जाती है। यो तो मन्नां माहित्य सारे देव में विस्ता यथा, वरन्तु विसेच का में इत्याः स्वजन राजस्थान, पुजरान, वरन्य और महाराष्ट्र में ही स्थिक हुया। इस साहित्य का विभानत सरोग है दिन्दे में रच वर इन सकार दिना जा सरगा है:

- (१) राजस्थान, मानदा ग्रीर गुजरात मे विर-वित ग्रामधीय माहित्य।
 - (२) नहाराष्ट्र में विश्ववित संदक्ष स नाहित्य ।
- (१) मगष तथा भिविता में विशेषन माहित्य । (४) उन्तर्ध बदेगों में विशेषन प्राप्तां स माहित्य ।

हम माने प्राप्त लेख से राजाबात के साम्रांध साहित्य पर ही प्रकाश हायेंगा थो तो साम्रांध साहित्य देश से जन्मती तक रका साता हता है, परन्तु गक्तवात संविद्यंत्व यह साहित्य साम्रांध के ब्यान्तान के तम्ब्यंत है। साहित्य साम्रांध के ब्यान्तान की तम्ब्यंत है। साहित्य हेट हम बी शताली तर राज्यान में घरश्रंत की म्बित रही इसी पर प्रमुख रूप से यहा विचार

त जा पटा है। १४ मी धनाब्दा सन राजस्थान न माहित्व रचना की हरिट से विद्यार प्रदेश

है। इन: इस बार में एउसा तथा मानत

इत्यत्र प्रदेश प्रस्था स गरियो का साहित्व भी प्रा ता है। प्रस्तुत निस् में स्थितनर संबंध से के उन्हों

विद्यों के गारित्य की पर्वाहै जो इन अदेशों से

कर गारिए सुरुत करों करें। इस समस्त

र्तराच को परितरी सपार्यक्ष के विश्वीता साहित्य पाना गरपा है।

के प्रबंध काच्यों ने राम भीर कृष्ण के श्रीत के नाम्य ना माधार बना कर प्रबंध चार्च (विवास)

महाभारत भीर पुराण इन नविवों के प्राण है रहें । ठीत देनी प्रकार धरधांता ने प्राहत वर दे गमन किया। इन प्रबंधी ने सारीतित कराहे हैं भी नीति स्प मेदाता है। येजन ^{हरा दे}

अपभा रा के प्रवंध तथा खरड कार्यों हैं

चर्चभारतस्या

राजस्यान के अपक्ष'य बाम्यों में क्रीन हार

सया संड बाज्य जिवसात है। संस्कृत प्रोर हर्

बभौटी में देखने पर, इनमें नायक, वर्णन, लक्ष्य, तथा वैविध्य. रम और धन्य सभी बातो गा सम्यक निर्वाह मिलता है परन्तु बोडे-बोडे परिवर्तन के साय । यो मूल मे इनके वर्णन क्रम, कान्य पद्धांतयो घटना विन्यास के द्याधारभूत तत्त्रों में पर्यापन समानता है, परन्तु साहित्य की इस संक्रातिकालीन स्थिति ने महाबास्य को लडखडा दिया। उसमे भीवनोत्पन्न सस्कृत की मूलना में कम हो गया। शंहकृत वी ह्यामोन्मच प्रकृति का प्रभाव पडे विना मही रह सका भौर यही कारण है कि वही कया क्तिया, वही काध्य कृतिया, वर्णन क्रम. परंपरित धटनाक्रम भीर क्या का तारतम्य वही बना रहा। फिद भी उन सबके धतिरिक्त इनमे वार्मिक्ता, प्रचार समाज में सन्दर्क होने के कारण धरभ्र'दा के प्रवधी में लोक जीवन का मंहपर्ज मीन्दर्य, भाष्यारिमवाता, कथात्मकता-कवित, सीन्दर्य प्रवाह सरलता और शृश्वताबद्धता मादि गुए विधमान है। धपभ्र श साहित्य पर योध करने वाले विद्वानो ने बदापि सपभ्रंश नाव्यो की प्रबंधारमनता भीर साहित्यिक सीन्दर्य को सस्त्रत के काल्यों की धपेक्षा दुर्वेल वह वद सदेह थी हिन्ट मे देखा है, परन्तु वास्तव में बात ऐसी नहीं है। इस साहिन्य क्षा सन्यन प्रभी तक ठीक ने ही नही पाया है। सरकृत की परम्परायें को उनमें धवन्य मुरक्तित है

परन्तु ६ वी से १३ वी शनाब्दी के इस संक्रांति काम मे ऐसे सुन्दर महाकाच्यो, खडकाच्यो, रोमोटिक-नाज्यों तथा मुक्तक काव्य गंथो का मिनना हमारे प्राचीन साहित्व की ब्रपूर्व सम्बद्धता का द्योतक है। वर्गान परम्परा काव्यात्मकता, छन्द, धनंकार, रस विसी भी ट्रिटिस ये काव्य कमजीर नहीं पड़ते। हाँ सस्वृत काव्यो में तुनना करने पर इनमें मपेशा-इत दोष-दर्धन का भारोप भने ही लगाया जाता रहाहो । क्या गौर चरित ग्रंथो में स्वयंभूका पत्रम चरित्र, हरिवंश पुराग्तु, महापुराग्त । धनपान की महिस्यल कहा । ? हेमचढ़ इत त्रियरिट शनाका चरित, धवल दिव काहरिवंश पुराख⁸। प्रजैन इतियों वे पृथ्वीरात्र शासों के सप्रश्न'दा के स'दा, रवपू के पदम या अनभद्र पुराणा ४, यश-कीति का पाण्डवपुराल, हरिवश पुराल ^१ तथा श्रृतकोनि ना हरिवंश पुराणा, पुरुद्दत ना अयनुमार चरित्र, जसहर चरिउ , थीर विशे वा जंबूरवामी चरिउ? नवनदो वा सुदमला चरित ^द, ननकामर का करकंड वरित, सागरदमः का जस्त्र हदानी परित है, प्राहत के मुत्राहताह चरित्र, बन्नभ्रांत के साता, देनवद के सलमारशन १० बीर वर्धमान मूरिका वर्धमान चरित, चाहित बाँव का पडमिनिर चरित्र 1, थीधर बविवा वामनाह चरित्र, मुहुमान चरित्र, तवा मुनोबना यरिउ १०, वृति मिह रविन प्रश्चमतु

१. देखिए प्रवश्नं त साहित्य . टा. हरिवंत बोटट, पू. ५३-५४। २ जी. घी. एम. मंत्रादक श्री गी. हो. दलात भीर गुरो तथा हिन्दी के विकास में भ्रमभं दा का मीग १० २२६ हा. नामवर्गित ।

३. दिगम्बर जैन मंदिर बटा तेरह पंवियो का भंडार-जदपुर में सुरक्षित तथा इलाहाबाद युनिविमिटी स्टडीज भाग १, सन् १६२४ में श्रो॰ होरानाल देन का निहुतन।

४. ग्रामेर शास्त्र भण्डार जगपूर । ४. भगभ्रेंग साहित्य डा॰ कोदर, एक ११८-१२३

६. वही, गुरु ११०-१२६ ७. माधेर सास्त्र मण्डार--देन सीच मंग्यान, जपपूर । देशिये—मंगभ्र रा प्रकास पुष्ठ ३० देवेन्द्रकुमार—प्रकासक वर्गी प्रत्यमाता, कासी ।

सपद्धंत प्रवास पृष्ठ ६६-३० देवेन्द्रवृमार एम ए. प्रवासक बाली सन्यमाना, वामो ।

१०. वही ११. मपभ्र में नाहित्य, पूछ २०७-२०६ हाव कीयह १२. वही, सामर भण्डार, जनार

त ै सम्मदेव इत रोमिस्साह चरित, बाहुबली
रेंड, तथा यदाणीति वा चंद्रपहें चरित व तथा
गूना गुरोस परित, सम्मति नाथ चरित तथा
ह वो स्तारित से मर्स्साति नाथ चरित तथा
ह वो स्तारित से मर्स्साति नाथ मुगाँत लेखा
रेन स्था धौर भी धनेक ध्यवनातित रचनायें,
पा चौर सम्मत्यां के साहित्य वी सौध
राउस्प हुई है धौर जो धन्यभंत वी भीड
स्थायना। वी प्राप्ति है। सुगन सेत बी प्रक

रंड (प्रजूप्त परित) हरिभद्र विरंबित मनस्कुमार

धनपाल की धनक्रांत हैमचंद्र की बाक्षांत के हिं। है। अपता ये स्वयंत्र के बाद तथा हैनचंद्र केहा हए। धनपाल ने स्वयं को---

'सरमङ्बहुनद्ध सहायरेगा'' (सरस्यो गाँ।' नहा है। धनपान का प्रसिद्ध ग्रंप है 'अस्तिन कर'

'स्रवित्यस्य वहा' एक स्थानारी पुत्र व्याप्त की तथा है। इसकी तीन भागों में बोटा वाला है। पट्ने भाग में उनकी सम्पत्ति का वार्णी है। .) नखशिखः—

(१) प्रप्यत दन दीहर पार्थीह, नहमील निरण करीवय सार्थीह । जेपोरव युग्मंतर पानई, मुलियसर्व लिप्मेश परिवासर्व । पोतंतर प्रथ्यित प्रकार प्राप्त , सं रिदर्शति चिह्निय विद्यानर्व । विषयु निर्मेत विद्या विद्यानर्व ।

रेहइ झडाइड कडिल्नेड । रोमार्शन बनि मणि विहायदे, विव पिपीति रिछोनिय नायदे ।

रमलाशम निश्चेषणु सोहइ, विकिश रणसम्मतु मणु लोहइ। समस्वस्त्र विद्यानु विसु सज्यह,

मज्जह कारय प्रदिश्हि गिज्ञाउ । तिवति तरंगदं नाष्टीम्मंडलू, मं प्राप्तता इद्ध महाजलु । पीरमुल्य निविष्टदं यहावहुदः, निष्म वदं हारायनि यहुदं ।

मापद माला कोमल---बाहुउ, रथागु--क्षडय--वेऊर सरगाहुउ ।

(बिस्तार भय से हिन्दी सध्मार्थ नहीं दिया जा सथा)

(३) विरोधाभास चलंबार :—
 चित्रिय तिरिवत्त सदल वर्ग्य वरगणावि,
 मृद्धवि सविवार रजणा नोह निरुणावि ३।

धनहोन (प्रसिरि) होते हुए भी वह श्रीमर्ता (सिरियत) थो । थेंद्ध घयो नानी न होते हुए भी वह सजन वराग (वर्रामना) प्रत्येश्युस्त पयो बानी थो । पुण्या (प्रूर्म) होते हुए भी विचारवान थी । निरंजन होने पर भी वह (रंजण मोह) प्रपत्ति मंजनरहिन धासो वानी परमन्त भोहरू समृती थी ।

- (४) भाषा में सुभाषितों श्रीर लोकोवितयों की भरमार
- (१) कि विड होई विशेलिए पाणिय (क्या पानी का सथन करने से वी हो सक्ता है)?
- (२) बराइन्दियः होति जिम दुश्सदः सहता परिगावति तिह सोश्तदः (जैसे स्वेन्द्रा ने दुःस्य साने हैं वेये हो सहसा सुप्त भी भा जाते हैं)।
- (३) घहो चद हो बोन्ह कि मइन्लज इट्टीर हुव'' (क्या दूरी होने पर भी चंडमा की ज्योत्स्ता मैनी को जासवती है) ?

द्दनी प्रकार के घनेक प्रकारपूर्ण काम्याप्सक क्याने का उप्तेक विद्याला सकता है। यह कृति निर्वेद (बात क्या) में समाप्त हुई है।

धनपाल द्वितीय-

ये ११ वी शनावी के वित ये और माउना से हुए। महाराज भोज के सभावित्त से। धनवाद संस्कृत, प्राष्ट्रत तथा बांधां से के बदाड पंडित से।

बन्होंने बारबांश में प्रतिद्ध वंद 'तिवह संप्रदी' निव्हा । धनराव ने 'महावीर रामार' रे वह गीत

१. वहो सन्य, पु० ३२–३३ २ वहो, (११, ६.१२)

देखिय-पुरचीतमदाम उच्छत समिनन्दन सन्य, पुष्ट ४०६-४११, नियह का "पारिकालोत हिन्दो जैन साहित्य को प्राचीननम इति, कत्यपुरीय महाबीच उत्त्याह घीर उसकी माला सीर्यक नेया," सन् १६६० ।

री राजस्यान में मांचीर सत्यपुर में लिखा। यह तार भागांग का है परन्तु धार्यांश की प्रवाहात्म-त्वा इमनें देशी जा गवती है। धनपान पर स्वर्तन

eप से घटन प्रकाश काता जानशा ।

रयमु :---राज्यात के ब्राधार कति स्वयु ने बनेक

राध्यक्रतियाँ का सूचन किया । स्त्रीने २६६ वहवरी भे पद्माराता शिमा है। देश में राम क्या है, जो

रुपियों में क्रियरण है। जयपुर के ब्रामेर भंडार में

इन बाव्यों के मतिस्तित मनेक मेहन राजस्यान के धपभ्र व साहित्य वे जानंत्र हैं

जिनमें बुध प्रमुख इस प्रकार हैं:--

१. नमनंदी-मुदंशण चरिउ सं • ११ · • वि बाम्य) सक्तविधि निधानकाम्य सं॰ १२००।

२. सिंह पतुष्ण चरित (प्रवृश्न चरित) व **१२०० लगभग (शंड काम्य)**

३. हरिमद सनत्तुमार चरित्र गे॰ १२१६ ४. नगमदेव शोमिगाह परितः ग्रं (४१३) जाहे कंठ रेहत्तय शिक्तिय, संय समुद्दे धुडटु श्लंबिक्तिय। जाहे घहरराएं विद्वासगुणु,

जिसच जेएाधरद कठियानायु । जाहे देसए। केंतिए जियशिष्मन,

सिप्पिहें ते परद्व मुत्ताहल ।

जाहे सास सुरहि मराउ पावड, पवला सेरा छन्जिं विरुधायड ।

जाहे विमल मुह इद सयामए. गियवज्ञा खप्पर व नहि भानदः

(सदमण चरिउ १) " (यदि ब्रह्मा उसकी क्षेत्रावली क्ष्मी सोहे की

भूंखना थी सुध्य मही करता, तो जसके मनोहारी भीर पुर स्तनों के भार में क्या प्रदेश सकस ही भग्न होता। निस्ती मुक्टर पुत्राबों को देत कर मुन्दर हाय क्यों प्रश्नती की आयोक बुध भी इच्छा करता है। जिसके स्तर मापुर्य को सुन कर को दिला प्रपाना हो गई। जिसके यठ की देलाओं ने पात को लिज्यत कर समुद्र के दूबने की बाध्य कर दिया। जिसके होठी के प्रतिम्म पाग ने पर्शाजन होक्ट पिटुम कठोर हो गया। जिसके साठी वी निर्मत परिवित्त वित्त को होटा वी निर्मत छिप गये। जिनके मुखबंद के सामने,चन्द्रमाएक सप्परकी मांति लगताहै।)

· सकल विधिनिधान काव्य

भाषा के अनुरस्तन और विविध वाद्यों की ध्वनिया देखिए---

द्वस्य कट विवाद कियादर वट नुम सु सुंद त्वंद नाजी न्यापि क्वि कु सिंद हु का में सीविद दुधाविद हुव्ह गट किटि किय किय कियात्र हुव्ह मा में सिंदि किया बाद बादि बादि सि पिर स्तूय तन्तु तनु तनु तनु विविद्यितिसिट विविद्यादि साम

भि भि भि पा वा संबोगाँह रे ऐने शब्द नेत्रस मात्र स्वित्रा शब्द समन्तार प्रदर्शित करने हैं।

कं क किए। विटि किए। किटि भावति

टहें ठहें टहें ठहें ठग हुने हुने हमहि

- २. पण्डला वरित्र (प्रयुक्त वरित्र) (निह्) "त्रव मेंचु वरिता जहि वेए म'डू, वर देडु सरोरडू नित मंसेडु।
- नयनंदी राजस्थान (मानवा) के पारा नगर निवासी क्षि है तथा मंदग्य परिज प्रयक्ष वा प्रकाशित होते हैं। दखही तीन हस्तीतीवत प्रतिया धामेर मग्दार में श्री कस्तूरवर कागनीवान की संरक्षता में विद्यमान है। यह काव्य देश मीपियों का है तथा हसता रचनाजान कर १९०० है।
- सह भी घप्रवाशित बाध्य है। इति वो प्रति धामेर भण्डार में मुरक्षित है। देखि पन्ता ३४, १२-१३
- ३ यह कास्य प्रवाशित है। १३ कंपियों में पूरा हुया है। प्रतिचा सामेर बास्त्र मन्द्रार 'जयपुर मे हैं। देखिये प्रति संक्या (पृष्ठ १३१-१३०)। इसके खिद्ध धीर मिर दोती नाम मिनते हैं। रचनाकान १२ वी बाती का पूर्वाई है।



जाहे बंठ रेहलग लिक्जिय. संग समृद्दे बुढडु श्लंबज्जिय।

जाहे महरराएं विद्वामगुणु, शितंत्र जेएधरद कठिएनए ।

जाहे दंसए। कंतिए जियश्गित्मल,

सिषिहें ते पद्दु मुताहल । जाहे साम सुरहि मलाउ पावड,

पवराष्ट्र तेरा उन्ति विष्यावद् ।

जाहे बिमल मृह इ.द नवासए. शियदण अप्परंग सहि भागद।

(सदमण चरित्र १)

शृंतना की सुध्टिनही करता, तो उसके मनोहारी भौर गुद स्तनों के भार ने वटि प्रदेश सवस्य ही भग्त होता। जिसकी मुन्दर मुजायों को देख कर मुख्दर हाथ स्पी पश्चको भी, ससीक कृत भी इच्छा

ं (यदि बहा। उसकी शोमादली क्यी लोहे की

बरना है। जिसके स्वर माधुर्य को सुन कर कोकिया रयामा हो गई। जिसने शठ वी रेखायों ने शंख की सम्बन्धाः समुद्रमे द्वाने को बाध्य कर दिया ।

जिसके होटी के रिताम राग से पराजित होकर विद्रम कठोर हो गया। जिसके दाटी की निर्मल कार्ति से विजित होक्स निर्मन मुक्ता सीरियो से १. नयनदी राजस्थान (मालवा) के धारा नगर निवासी कृति है तथा मंदनगु चरित

मपभंश की मप्रवाशित कृति है। इसकी तीन हस्तिविस्ति प्रतिया मानेर मण्डार मे भी बस्तूरचन्द्र बागलीवात को मेरक्षता में विद्यमान है । यह बाध्य १२ मेथियों का है तया इसका रचनाकाल संव ११०० है। २. यह भी मप्रवासित बाब्य है। कृति की श्रति थामेर मण्डार में मुरक्षित है। देखि पन्ना ३४, १२-१३

रे यह राज्य संप्रकाशित है। १३ लेकियों से पूरा हुमा है। प्रतिसा सामेर गान्त प्रकार जयपुर में है। देखिये प्रति संत्या (पृष्ठ १११-११६)। इसके मिद्र और निष्ट दोनी जाम मितते है। रचनाबात १२ वी बाती वा पूर्वाई है।

सप्परकी भांति लगता है।)

छिप गये। जिसके मृत्यचंद्र के सामने चन्द्रमा।

सकल विधितिधान काव्य भाषा के अनुरसाम और विविध वाद्यो ।

ध्वनिया देखिए---हुए कट ब्रियट कियटर घट गुप सु लुद भार नरने प्रमुमि सि

चु विड हुआ भें धोन्दि दूधान्दि हुरट मट विटि क्रिय क्रिय क्रियात हय हप्पु शुनुगु नु क्रिय क्रिय धरि धरि धरि दि दि सूम सूम

तपुतम् तम् तम् तम्

देने गरे नर गरगा विरिरिविरिरि विरि मरि विरि रापति भं भा भित्ति विटि भित्ति किटि मार्ची टड़े टड्रे टड्रे टड्रे ठग हुने हुने इनहि

भिर भिर भिर्मात्री समित्रीगृहि ^व

ऐने शब्द नेयल मात्र कविना शब्द चमन्द्रा प्रदर्शित करते हैं। २ परमुक्त वरित्र (प्रवृत्त वरितः) (निह ''सय संयुक्तिया जहि वेट क'ह,

बार देइ सरोरत मनि मंगेड्डा



जाहे फंठ रेहसय शिक्तिय, संस्र समुद्दे बुडडु श्लंतक्त्रिय।

.बाहे ग्रहरराएं विद्वुभगुगु, त्रित्तं जेएाधरह पठिएक्तागु ।

जाहे देसए। केतिए जियशिष्मल, मिप्पिहें हो पहटु मुताहल ।

काहे साम मुर्शह मराउ पावड,

· पवत्तु शेला स्थानं विस्थावदः ।

जाहे विमन मुह इ.इ. सथासए. . शिवउस सम्पर्धसमित भासइ।

(सदमण चरिउ³)

 छिप समे। जिसके मुखबंद के सामने,पन्द्रमा एक खप्परकी स्रोति समताहै।)

. सकल विधिनिधान काव्य

भाषा के अनुरुएत और विविध वाद्यों की ध्वनिया देखिए---

> हुण कट ब्रियट कियटर नट मुन सु सु द क्षंत्र नाने पार्गुफ फि कु कि हु भा में घोगेर हुमाग्दि इस्ट मट निट ब्रिय क्रिय ब्रियात्र हम हमु सुसुनु सु ब्रिय क्रिय धरि बरि बरि सि पिर सु स स्प

षरि षरि परि रि परि सनुतगुतगुतगुतगु देने नदेनंद गदगग

स्टिशिसिशिर बिरि यरि बिरि राष्ट्रिंह भंभाभिताल विटिभित्तल विटि मार्थीह टहुंटहुंटहुंटहुंड्ड व्हंडल हुने हुने क्यहि भिक्त कि कि को को संबोगिटि प

ऐसे शहर वेजस साज क्षि का सहर जनकार प्रशीसन करते हैं। २. धरुजुन्य करित (प्रयुक्त वरित) (सिन्न)

'भय संध वरिरिण करि वें ए वं हु, सर वेंदु सरोरटू मिन मसेंदु।

मचर्नदो राजस्थान (मालवा) के धारा नगर निवासो बिंद है तथा मंद्रमण्ड परिड भगभं मं वी भागमानित कृति है। दसवी तीन हम्निर्मानत प्रतिचा धानेर सम्प्रार में श्री वस्त्रपर वागनीवान वो मंद्रसना में विद्यमान है। यह वाध्य १२ मंद्रियों वा है तथा हरता रचनावान ने० ११०० है।

सह भी भगवाधित बाध्य है। इति को प्रति सामेर भग्दार में मुरक्षित है। देशियं पत्ता देश, १२-१३

३ यह बास्य प्रप्रकाशित है। १४ लेकियों से पुरा हुमा है। प्रतिया पासिर सार प्रयुप्त से है। देखिन प्रति लेकिया (पृष्ठ १११-१२मा)। इसके निक्क मौर्ण सिनते हैं। रचनावाज १२ की शती का प्रवृद्धि है।

जीत कारे बाद दिलाह सरीह, ह्य को प्रशादित करना, रोता नवरता, यून्या

धम्यातः सन्द्रमा पात्र भीर । पट्ट गण, मण्य, विस्ता हराः,

बर तरमी चीरो बरावस्य हवा है।

रंग रिएटिए समित हेन्सीम्,

परबार तथापु क्रीत स्थितहरूत।

गर्ति दिएएलेट् वित्र योजलेसु । बाधरणदार हुल् शन हराते.

रिय दिश्ट दिशीर सब् बद्धमाउ,

कृतिक रिरापुत्र कृति कृताकतार ह

होता, ये ये वह बार हार तीवता, बानी की न नग

बारवान अहित संयोध को सोतता साहि सब नार्थ-स्वातारों ने वनशी इयरीय दिवति का कार्यकरण

(मध्यम देव विस्थित)

है) पुण प्रदारण में वारी-दिवल बर्णा की नम मार्विका हुन्य है।

< रोमिराह चरित्र (नेमनाम परित्र)

होता है। वर्तन बना ही रोमांबर है। मोरन सराजा जाही की पीका धरती में गए र तह की नहीं

स्मक समृद्धि हा मनुपान लगामा जा सकता है। इत हतियों का कलार्य परंगे ही दंग का है। इनमें महापुराएं, पुराएं, परित काव्य, रूपक काव्य, क्यासन प्रंमारिक रायदाव्य, सेंपिकाव्य, रास सादि सनेक बाय्य रूप हैं। इनकी कलार्यनता, ऐतिहासिकता तथा काव्य रूपो पर सामान्य जान-कारी इत प्रकार दी जा सकती है। इनको इक प्रकार काव्यों की सामान्य वियोगार्य करें। जा सकती है। ये इस प्रकार हैं:—

राजस्थान के कपभ्रेश कारवें का कतापन्न पातस्थान के धपभ्रंग के प्रवस्थ वास्त्यों वा कताप्ता रहें, धर्मवार, हाटर-चयन भागा धादि सभी वयो मे पुष्ट हैं। ये वृद्धि वस्ता के प्रति वस्त्या प्रेम वस्ते ये। यहाँ तक कि इन अँग विकाश को हता धर्मक प्रेम या कि धर्मक धर्मक विकाश के प्रयोग की भी इन विद्यास के प्रयोग के प्रहित्त रस्ता है। वौड रचनाए, धरहुन रहमान वा गरेश प्रताह तस्ता शैनकरेंद्र पान धर्मक दम बान वे प्रयान करा शैनकरेंद्र पान धर्मक इस बान वे प्रयान करा शैनकरेंद्र पान धर्मक इस बान वे

सारवान की सपप्र'रा नाम्य वहातियों ने दोहा-कीगाँद वहाँत को प्राप्ताय मिना है। प्रपप्त'त काव्यों मे तोटन, सोमक, महिन्स, होना, दहानुष्ता, पद्द-दिया, राम, पुरस्ती, कहनु, व्यान, रहा, रामाहुन, पाराकुनक, पत्रमहिला, व्यान प्रमुख्यान स्वादि सम्बद्ध मिनते हैं। सही नही, स्टरों और कर्नन की काव्य वहातियों ने हिन्दी साहित्य के साधुनिक कार तन को प्रसादित दिया है।

रभी प्रचार बना पक्ष में स्वामादिक धार्मवारों, हाम बदन की प्रदूषानात्मिकता, नादाण्यक्ता तथा व्यत्याप्तकता का प्रमुख्य हट्ट्या है। वेजियों ने होंगे, भनेक प्रदेन कवियों ने भी पाजस्थान क्या प्रमुख्य हें बहुद्द प्रदेश में बच्च एकना नी है। धत इनका कनापश माजपश में निर्वत नहीं है। चंद की चारण हौती में मपभ्रंश के ग्रंशों से इस भाषा नी शमता ना परिचय मिनता है। राजस्थानी व्यवध्य 🗖 काव्यों में काव्य हत भादिनानीन हिन्दी जैन साहित्य मे जिस प्रकार पद्धतियो भीर काव्य रूपो में वैविध्य मिलता है ठीक उसी प्रकार राजस्थान के घपर्श्वा काव्यों में भी नाध्य सपी ना वैविच्य मिल जाता है। चरित, राग, धान्यान, वर्षरी, वहा, संधि, लोव-नया-राध्य मादि मनेक काव्य रूप मिलते हैं। ब्रग्नध्र श के इन वाध्य रूपो का मूल इन पुरानी हिन्दी के काव्य-रूपो में हुध्टि-गोवर होता है। यद्यदि इसमें में प्रतेक साव्य स्थ बरफांश में नहीं मिलते परन्तु उनमें प्रकारान्तर से इनका सम्बन्ध स्पष्ट हो जाता है । बाध्य पद्धतियो में भी बरब वा दी इन वर्णन पद्धतियों का विवस्ता पुरानी हिन्दी वी दवनाओं के सूत में हैं। स्पत्त-

विसेष्टना है। पुरानी हिन्दी में जो मेनसे प्रवाद के बाबय कर मिनते हैं उनमें बैरियर प्रमुत्त करने जी प्रेरण्य धरधों पत्र करों है। साजन्यान के प्रदाय सो निरीहासिका साजन्यान की धरधों प्रचार सिन्दी हैं। साजन्यान की धर्मा प्रचार करों है।

नाय्य, संधिनाध्य तथा चरित—नाप्यो मे ये नात्र्य

क्षप रुप्ट रूप्टच्य हैं । पुत्रतक नाम्यों में नीति,

रतोत्र, स्तरन, दोहा, सम्भाग पादि प्रनेश नाध्य श्रप

मिल जाने हैं। इस तरह वैविष्य भूतक बाध्य वप

बरभ्रांश वीदन कृतियों में देवने को मिपने हैं।

बाध्य क्यो का यह वैदिल्थ्य संपर्धात की संपत्नी

हासिबना का प्रतिपादन भी करती है। इन रक्तामी के द्वारा छत्वानीन भागा, जनाव भीर जन्मीन जे सभी सभी का ऐनिहासिब महत्त्व भावा मा जनगा है। सदस्रोय की क्या बढ़िया, वस्तु दिन्याल, सन्ति

स्टर-रेश

गणका समार्थ तथा संस्कृत की सभी परंपराधों का दिशाँग भारत साथी इत स्वतायों से निवता है। मानी प्राप्त पाठी का ब्रांचान बाब्बांच ने गुर्वतिक

मौर मौत्यर्व की मार्चकता मौर मोश-जीवन मे

काने का बारगह प्राप्त कर गया । बद्धी बर्गन की

में परम्पार मुम्बन में रिटिंग भी परन्तु ऐन्स्ट्रिक

पुरक्षा, बदानी अचा बाद बादाबिक बदकरो से कीचे

कार्यकारिक चेल्लाको के शीच था । माराना चेंबी रता । मापा ने सामग्रेय बंधरा में बार्चेड नियम

मा गरीना देती भारत के शहर शवर्ष में उपन्तित

बाबपुष्टचा। सम के बात, शहर शनियों में

क्षात्राच थे । प्रकृति विकास, साम परियण र क्षीत वियात से बोधित था। बारह बर्भाति ही

म्यरित हो रही थी । समस्य पिता तर्र जात में

बन्धा या, संस्कृत काम्य प्राय के महत्र जनाराण

को शोहतर पाहित्व प्रदर्श तथा धम राध्य

चुरदारीत ये वस्तु बर्लीह सुनिव हो देश था। भीग

बार्च हुमि मेर्ग बन होतर श्वारी हत सी हाथी है भी भी

हो रही थी। शहरशाहके अन्तरे वैभव की मार्थ

हैं परन्तु यहां हम प्रमुख रूप से तीन कवियो के मुक्तक वाच्यो को सोद्धरण प्रस्तृत कर रहे हैं। ये कवि राजस्यान के धपभ्रंदा नापा के मुक्तक बाध्यवारों से प्रतिनिधि बहे जा सबते हैं। ये निम्नांबित है :--

१. जोइन्ट्र---परमप्पमान् (परमाश्म प्रकाश) "

२. मृतिरामसिह--पाहड़ दोहा द

देवसेन शावस धम्म दोहा

इसके क्रितिरिक्त जिनदत्त के उपदेश स्तायन रास (मंट ११८०-१२) हेमचंद्र के प्राकृत व्यावरण

(१२००) के धपभ्र श के दोहे, सोमप्रभाषार्थ का बुभारपाल प्रतिबोध (सं० ११६५) तथा मेरलाह के प्रबन्ध वितामिण(सै० १३६१) बादि के बन्ध न बन्धे

को भी इस प्रसंग में दिस्मत नहीं दिया जा सबता। साय ही घरभ्र'धा के हरियेला के क्याकाव्य धन्न

परिस्ता मं० १०४४ धीर राजस्थान में विरक्ति भागभंदा की झनेक गच इतियों पर भी धपेक्षित रूप ने विस्तार में लिखा जासवता है। जिस पर

हम यथावमर धन्यत्र विचाद करेंगे। यह सब सम्पति रामस्यान में उत्पन्न कवियो भी निधि है। यहा

उरम सीनी शरियो के बाव्य बौधान के बनियय चने हुए झडरण प्रस्तुत वर रहे हैं। ये सथ सुक्तक

१. देखिये वरमण्यमानु-योगिन्द्र-डा॰ ब्रादिनाय नेमिनाय उपाध्ये द्वारा मन्पादिन मन् १६३० रचनावार वा समय थी राहुलजी ने १००० ई॰ माना है। ये हेमचन्द्र के पहने हुए थे।

दनशा जन्म स्थान राहुलजो ने राजस्थान माना है। जोइन्दु जैन मुनि थे। इन र दोनो प्रत्यों के बर्ष्य विषय ज्ञान, समाधि, चलल निरंजन, बारमा परम तस्व, निरंजन योग, पंच, पोधी पत्रो, निन्दा शून्यध्यान, योगभावना धादि हैं ।

२. देखिये पाहर दोहा, सम्पादन-हा॰ होरालाल औन बारेजा सोरोज मन् १६३३ । मनि रामशिह राजस्यात में ये। राहनजो इनका समय सन् १००० ई० मानते है। इतर बण्डे

मादि है। शे॰ होशलाल केन इनशो राजपूताने का मातते हैं। सांद हो देलिके—हिसी बाष्य घारा, थी राहम माहरदायन-विचाय महम इनाहाबाद गत् १८४६

बाज्य है तथा इनके वर्ण्य विषय माध्याहिमक, उपरेश प्रयान वया शांत रम पूर्ण है।

जोइन्द्र:-१. परमणयाम् (परमातम प्रकाश) योगिन्दु १. योगसार

परमप्पयास

(२) बण्णुजिति स्थुन जाहि जिस सण्गुजि गरम म नेदि

बच्च जिदेउ म चिति तृहुं बच्चा विमम्नु मुएवि (2 EX)

(निर्मल स्वभाव बाने उस परमारमा को छोडकर सीर्थ बात्रा, गुरुनेवा तथा तिमी भी

बन्य देवता को सोचना क्यर्य है) (२) जन हरिए बड़ी हियबहर तम् सुनि बंधु वियारि एक्ट्रेडिकेम संगति बड वे संडा परियारि

(15.8.5) (जिनके हृदय में मृतनयनी मुंदरी निवास वरती है वह बहाविचार वैने कर सकता है ? एक

ही ब्यान मे दो तपवार की दह सकती है ?)

(३) वै दिशानुसमयित ते मन्धवित न दिस्ट तें नारति वर थम्यु वरि यति जोज्यति वड

तिह्ड (२.१३२)

विषय-अगतुष्य, निरंजन माधना, धारमा, पासम्ह सम्हेन, गुर महिमा, बाह्याहरवर निरा

हुमीन हो की हो। उपन हमा हो गई द्वीत द्वीतर्ग की क्योंक्स द्वीत केवलकेवर में उत्तर या, जीवत कार हर के गए हैंगा राजा रागरी तरा संस्तृत की समी परितासी का की क्षेत्रक प्रतिक प्रतिक स्वति निर्देश क्षेत्र हा हो हुए उच्छाड़ी है किया है। इत्वेबर्गेस मेराची है जेर हा । जार (द्या बागुल्य साथ गर्ने के कन्ने द्रमें दे^{सी है} क्तरी प्राप्त कार्य का द्विताल प्राप्त में में सुर्वित माज्ञान्त्र में १ प्रकृति विकार, बाद दीनाना है। रूप्त । ब्राप्त के राजराज र्राज्या के ब्राप्ट दिसम्ब वियाल में केलिन का ह स्था मार्ग क्षत्र मार्गान् देशी कामा राजात्र क्षीरणे से उर्राग्यद अमेद्रीय मेद्रीबंद होतर श्रीरारंप ने गरी है। कारे का क्षाप्त प्राप्त का गका । यदि वर्गत की हो रही थी। सारत्या है तमें रेसरी ह द्य प्रकारण सारम्य सारितीतम् वी प्रवाद ग्रिस्टिनिक पुत्रसंबनि ने बरदू बर्टेंट पूर्विन है रह साथ मूल्यों, बराजा तथा द्वार सामाजिस स्वस्था में। मीति रवार्त रक्षांतर रूर, प्रयाप्त या राजिया ने दर्गंद की I want Barrier हैं परन्तु यहां हम प्रमुख रूप से तीन विविधों के मक्तक काञ्यो को सोद्धरण प्रस्तृत कर रहे हैं। ये फदि राजस्थान के धपभ्रांदा माया के मुक्तक बाट्यकारों से प्रतिनिधि कहे जा सबते हैं। ये

निम्नांवित हैं:---१. जोडन्द---परमप्पयाम् (परमारम प्रकास)

२. मृतिरामसिंह-पाहड दोहा

१. देवसेन सायय धम्म दोहा

इसके श्रीतरिकत जिनशत्त के उपदेश रमायन रास (सं० ११००-१२) हेमचंद्र के प्रानृत व्याकरण (१२००) के धपश्र दा के दोहे, सोमप्रभाषार्थ का बुमारपान प्रतिबोध (सै० ११६५) तथा मेरनुह के प्रबन्ध चितामिता(सं० १३६१) ब्रादि के बरफा वा बंदो

को भी इस प्रसंग से विस्मृत नहीं किया जा सकता। साय ही प्रपद्ध देश के हरियेशा के नयाशास्त्र धरम परिवता में १ १६४४ और शाजरयान में बिश्वित मरभ्रं स की झनेक गच कतियों पर भी अपेशित रुप में विस्तार में लिखा का सवता है। जिस वर

हम यथावनर घन्यत्र विचार करेंगे । यह सब सहप्रति राजस्यान में उत्पन्न विवयों की निधि है। यहा उनत सीनो नवियो ने नाध्य नौशन ने नतिएय चुने

हुए बदरण प्रस्तृत भर रहे है। ये बंध प्रत्तक १. देशिये परमण्याम्-योगिन्द्--हा० ब्रादिनाय नेभिनाय उपाध्ये द्वारा गम्पादिन गन् १८३०

दनका जन्म स्थान राहुलजो ने राजस्थान माता है। जोइन्दु जैन मुनि थे। इनके दोता धन्यों के वर्ष्य विषय ज्ञान, समाधि, धलख निरंजन, बात्मा पर्म नन्त, निरंजन योग, पर् पोपी पत्रो, निन्दा शुन्यध्यान, योगभावना बादि हैं।

२. देखिये पाहुड दोहा, सम्पादक--हा॰ होरानान जैन बारीबा मोरोज मन् १६३३। मृति रामितह राजस्यान के थे। राहुनजो इनहा समय सन् १००० ई० मानते है। इनते बर्गर पि अपने निरंजन साधना, धारमा, पायण्ड खडेदन, युर महिमा, बाखाडम्बर निरा î, ेगालाल जैन इनको राजपूताने का मानते हैं। साद हो देखिये- 'र्गयी

रघनाबार का समय श्री राहुलजी ने १००० ई॰ माना है। ये हेमचन्द्र के पहने हुए थे।

काव्य है तथा इनके वर्ण्य विषय बाध्यारिमक, उपरेश प्रधान तथा शात रस पर्स हैं।

जोइन्दः-१. परमण्याम् (परमातम् प्रकाश) मोगिन्दु १. योगसार

परमप्पयास

(२) बण्लाजिति स्थूम जाहि जिस घण्लाजि गरम ਧ ਸੇਵਿ

धवनु जि देउ म बिति तृहुं घण्या विमन्तु मूर्वि (8 8 %)

(निर्मल स्वभाव बाने उस परमारमा को होडकर तीर्थ यात्रा, ब्रह्मेवा तथा किमी भी धन्य देवता को गोधना व्यर्व है)

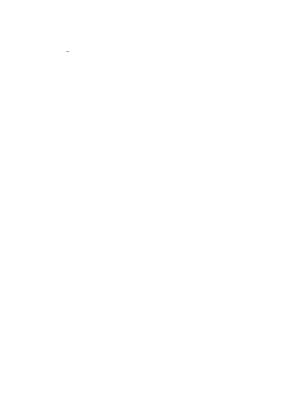
(२) जस् हरिखन्धी हियतकए तम् एति बंध्र दियारि एक्ट्रॉड केम संगति बड वे संदापडियारि (1,141)

(असके हृदय से समनयनी मृदरी निवास करती है वह बहाविचार की कर गहता है ? एक

ही ब्यान में दो दनवार बेने रह शवती है ?) (३) वे दिहानूरम्पमिन ने भन्यविता न दिर्ठ तें कारीन वड धम्म करि भीग ओम्बरिन कड

বিহুত (৭.११२)

गारन्यायन-हिताब सहस हजाराबाद राष्ट्र १६४६



(२) मणु यत्तणु दुल्बहु सहिवि भोयहं पेरिउ जेण दंगण कज्जे कल्पयर पूल हो खंडिज तेण (वही दोहा २१६)

(मनुष्य दुर्जम सन को प्राप्त वरके भी जिसने उसको भागो में लिप्त विद्या उसने ईंघन के लिए करपुटा का समुनोज्येदन कर काना, ऐसा समभी)

इस प्रवार जरत उदरणों ने हम इन इतियों वा शिल्प समक्त सकते हैं। बपभंश की इन रचनायों वी मुख्य प्रवृत्तियों वा विरालेपण सदीत में इस प्रवार वियाजा सवता है।

राजस्थान के व्यपभ्रंश मुक्तक कान्य

उक्त पुराक रक्ताओं ये साम्याधिक रक्ताएं प्रमुख है। इतमे कि के संतार की नरदरता, पुक्ति वा रक्ता का स्वस्त कर कि नदाव के नदाव के स्वस्त की नदाव कि नदाव है। ऐसी रक्ताओं के स्वस्त का गुजर कर्मक विश्व है। ऐसी रक्ताओं के साथ की कि प्रमुख कि

उपरेश रूपान रचनाओं में हुमशा स्थान स्तीन, रनवन मारूपी रचनाओं वा खाता है। खपझांश के सीपाय, समय देवगुरिकृत निष्टण श्लीक तथा वर्षण्टकृति ऐसी हो रचनाएं है। जिनदण कृष्टि में। बचेरी भी स्परित पान तथा बहुति है।

सपभंश में रची कृत्य उपदेश प्रधान रचनाएं बौद्धो धौर सिद्धो की भी मिनती हैं। जिनमे नेवन बौद्ध धर्म के सिद्धान्तों का प्रतिपादम है। बौद्धों में इन मक्तक रचनाओं में बर्मेंगण्ड रुढिवादी दक्तिशेश तथा बाह्यादम्बर की लब निन्दा ही है। इन्हीं बौद्धो में दोहाकौश, चर्यास्त्र तथा नश्मीर दर्गन पर लिले कुछ धौबों के सिद्धान्त भी मिनते हैं। जिनमे वर्ड फटकर पदो से विषय वैविष्य, मानो की सीवता तथा प्रभिष्यजना की शमता मिनती है। इस प्रकार जैन धर्जन दोनो धपश्च दा प्रधान काथ्यो. मे उपरेश प्रधान, धर्म प्रधान, मीति तथा सदाचार प्रधान भावनाए ही मिनती हैं। ये सय उपदेश जनता की सदासारी बनाने के निए जनना की ही भाषा मे लिये गये थे। शत. जैन वृतियों ने धरफ्र'न भाषा को ही धरनाया । क्योकि धपन्न दा उन समय जन लाधारण की बोजकान की आया थी।

अंत वृदियों ने जिलने भी नाय्य निमे हैं उन सभी में धर्म शारापारा के रूप में विद्यमान है। उदाहरणार्थं चरित बाच्यो की शी में इतमे वया-श्यकता, प्रेमास्यान, लोच गायाएं तो एटती ही हैं. कवियो ने उनमें स्थानीय रंग, नमात्र भी परम्परार्ण, देळ तका मोह बचानको की रंगीनियो द्वारा महन बता द्वाना है। धर्म उनके मूच में है। प्रेराणा के क्य में सह धर्म इन रचनामी में विद्यमान है। नहीं बड़ी तो यह धर्म रचनायों की पुतुन्ति तक बन आता है । वर्ष-विपास, पुनर्जन्य धार्दि जैन दर्शन की विविध धाराधी का जन समाज में प्रकार करने के जिल्ला जैन कवि काच्यों से सनेक स्थलों से उपरेका क्षतमा दील पहला है। उपरेग भीर जैन वर्णन के दे तथा उने वृति ने प्रभारत बना देते हैं। बी-कोलड के कदातक की स्वता का बाखार वितियों के हर्य-दिएक का निवास्त प्रतीत होता है। रही की निक्क बरने के लिए जैन वृति प्रतिराम के प्रतिकृत

की जीत कर उसे बोबता में बोड मोड दी थे। ह्या-३ग ك فعد ورود دو الله الله كان أو درام الله الله सर पुरुक्तिसहस् का रहास संसाह । सन्संस चैन कवियों ने महातुमूति यौर हरेन मारित को रेक्स की छिन्नीन प्राप्त वर्ग प्रवार है। देन ऊंचा बतारा है। मनः वाहे ल बार्स का गरे हैं।

वैन मेसर पहल प्रवास्त्र है निर कृति ।

4571

0,

पुलक बान्तों के दिन्त कीरश तथा पुरस ह

पर भवाग बाचा है ह उत्तमें बाहि करियों का तक भी नहीं दिया जा सका है। स्पाप्त से हैं।

की कोक राजस्थाति करियो का माहित्य स

भेटारी सं बाद पता है। राजापात है बाप

वान्त्रिय के बादुर्शकारोत्त्रुक र तानकों के निम् वे हुनार

राप प्रतापा की बहुत कही गुजारण निए केर है। हमादा उसने विस्था मागुत है कि वे देश प्रव also be at state stated at \$1.5 that same

दा का एक द्यारत गांच वर वादारिक है हरी करा रा गवता, ही, कर करा जा गवता है बन्तरंश के गुणक कामर की प्रमुख हि एकारक है, के हुए और जैन कवि में समाब के मही है। मंत्रीय में हमने सामस्यान में दिस्स المناوية المناوية في الما المناوية في دوارية घ वा भागा के हुए। महाकाराती, सामकारा

को १ त्या पर तिलाही को बाब में विशिष कवाहों

हैं " अहर हर हमनाप्ति के क्षा है से मुख्य अहलू-बागमान काम है। दे में नम्मार बाग्य ही

मही है पान प्रकारते का लाग्य सुरक्ष अवन्त

रिक्त का है। दर्द्य दिव भी से क्षांच यह से

कोट साम्द्र के कामार यह सामा है।

can shill als tan at mail

जैन-साहित्य

लेखक-श्री धगरचन्द नाहटा

राजस्थानी जैन साहित्य बहुत विद्यान एवं विविध है। विद्याल इतना कि परिमाण में भेरी भारता के बदमार चारता के साहित्य ने भी बाजी मार लेगा। उसदी मौलिक विशेषताएं भी कम नहीं है। उसकी तबसे प्रयम विशेषता यह है कि वह जन भाषामे लिखा है। अतः वह सरव है। चारखों मादि ने जिस प्रवार संबदों को तोड-सरोड कर धपने पंथी की भाषा की दक्त बना लिया है वैसा जैन विद्वानी ने नहीं विया है। इसीलिए वह बहत घधिक लोगो द्वारा भगमता से भगभा जा सबता है। उसकी इसरी विशेषता है जीवन की उच्च-स्तर पर ले जाने बाले प्राणुवान साहित्य भी प्रचरता। भैन मनियो का औवन निवृत्ति-प्रधान था। वे विसी राज्यमा भादि के माधित नहीं थे, जिससे कि उन्हें बढ़ावर चाटुबारी वर्णन बचने वी बादश्यनता होती। युद्ध में प्रोत्साहित बारना भी उनका धर्म मही था और भूंबार रसीन्यादक साहित्य द्वारा जनता मो दिनासिता की कोर कहत करना भी उनके भाषार-विरक्ष था। मत, उन्होंने जनता के उपयोगी भौर उनके जीवन को जैंबे उठाने बान साहित्य का ही निर्माण विद्या । बारणी वा साहित्य वीररम प्रधान है सीर उसने बाद भूगार यस ना स्थान साता है। भीतः रचनारंभी उनदी बुद्ध प्राप्त है। पर जैन माहित्य मैतिबता धीर धर्मे प्रधान है और शान्त रम की मुख्यता तो सर्वेष पाई जाती है। जैन विद्वानी का उद्देश्य जन-जीवन में बाध्यारितक जातुनि पूजना या । नैतिष भीर असिपूर्ण जीवन ही उन्दा चरम नध्य बी । उन्होंने ब्रापने इन उही इद

के लिए बचानको को विशेष हप मे मपनाया। तत्वज्ञान मुखा एवं कठिन विषय है । साधारण जनताको नहीं तक पहुंच नहीं और न उसमें उनकी रुचिवरम हो भवता है। उनको तो हुन्दान्तों के हारा धर्म का मर्म समभावा जाव, सभी उनके हुदय को वह धर्म छ सबता है। शया--शहानी सबने श्रीवर लोर-प्रिय होने के कारण उनके द्वारा धार्मिक तत्वो का प्रवार यीघ्रताने ही सकता है। इस बात की ब्यान में रखने हुए उन्होंने दान, शीन, तप भीर आवना एवं इसी प्रशार के बन्य धार्मिक वत-नियमी वा सहारम्य प्रयट वारने वाले वधानको को धर्म-प्रचार का माध्यम बनाया । इनके परकान् जैन सीर्थंक्रों एवं बाबायों के ग्रुलुक्लीनामक एथं ऐतिहासिक बाध्यो का नम्बर बाता है। इसने जनता वे सामने महापूरपो ने जीवन-धादा सहज हुए गे उपस्थित होते हैं। इत दोनो प्रशाह के माहित्य में अनता को सरने जीवन को सुधारने से एवं नैतिक तथा धार्मिक मादशों ने परिपूर्ण करने में बढ़ी प्रेरणा दिनी। रावस्थानी-जैन-पाहित्य व सहत्र के सम्बन्ध थे हो अपने उन्नेबनीय है-अध्यम : भाषा-विज्ञान की हरित में अनका सहस्त है, दिनीय : १३ की में १४ वी राजारी तब के बैनेनर रामनानी श्वनत्व ग्रम्भ द्वारस्थ अही है। दवरी पूर्व सम-व्याती-वेत-माहित्य वरता है । धारश्रं ध ने गान-क्वानी भाषा वे. विकास के सूच शाक्तवाती जैत-सारित्य शास हो ब्रान्त होते हैं, पशकि जब में राजस्वानी अचा वे दल्ती का निर्माण जाराज हुमा तह ते



रालावबोध, हेम ब्याकरणः भाषा टीका, सारस्वत रालावबोध।

- २. छंद:---रिंगन शिरोमिंग, दूहाचन्द्रिका, राजस्यानी गीतो ना छन्द ग्रन्थ, वृत्त रत्नाकर बाना-
- रै. चलंकार:— बाग्महालंबार बालावबोध, विदायमुखमंडन बालावबोध, रसिक्प्रिया बालावबोध।

बबोध ।

- काव्य टीकाएं.—अर्तृहरिदातक, भाषा— टीवावय, धमस दातक, लघुन्तव बावाववोध, विमन
- टारान्य, घमर रातन, लघुन्तव बानावबाय, ारनन रुपमणी देलि की ६ टीकाएं, चूर्लाख्यान गयामार, कारम्बरी क्यासार ।
- येगुक:—माधवनिवान टब्बा, सिप्रशत कलिया टब्बाइय, पच्याप्यय टब्बा, खेटाजीवन टब्बा, सातस्त्रीकी टब्बा, जुटबर प्रयोगी के क्षेत्रह तो राज-स्थानी भाषा में क्रवारी पत्र प्रथ्य हैं।
- स्थानी भाषा में हजारी पत्र प्राप्त हैं। ६. गोगित:— लीनावठी भाषा चौपाई, गशित सार चौपाई।
- ५. स्वोतिए —लपुत्रातक वयनिवा, जानव-वर्मयद्वित बालावदीय, दिवाह्यकल बालावदीय, प्रदन दीयर बातावदीय, बालावदीय, दिवाहयकल ब्रह्माँ विकासीया बातावदीय, दिवाहयकल भाषा, परिण्य वाटीती, युंबीग नयन कीताई, श्रवन भाषा, परिण्य वाटीती, युंबीग नयन कीताई, श्रवन
- दीविना चौतारि, संगपुरतन चौतारि, बदैवनावन सन्भाव। दीरकलरा--राज्यानी होहो झादि से यह स्पोतिय सम्मानी स्थलत सहस्वानी सन्ध है। उसकी
- भारिक सम्मानिक प्रमान सहि साह से वह ग्रोतिक सम्मानिक स्वरूपक स्वाहे इसकी एकता संक १६४० में हीएकत्वा नामक स्वरूप रुप्योप प्रेन सिंत ने की है। परासंक्या १००० के नामस १। इस सारामार्ड मिल्वाक नहाड ने हुव-रामी विदेवन के साथ सहमहाबाद से प्रकारित औ वर दिला है।

एक दोहा सार भी प्राप्त है जो बहत सन्दर है।

ह. ऐतिहासिक — मुंहगीत नंगागी की क्यान तो राजयवान के इतिहान के लिए प्रतमीन पण्य है। यह सर्व विदित्त है। मुहगीन मेंगानी मेंन भावत के । मुहगीन मेंगानी मेंन भावत के । मुहगीन मेंगानी मेंन भावत के । महत्त्रीन प्रात्ता के प्राप्तों के समय में एक पीर भी महत्त्रमुण पंध निवा है, जिसकी प्रति उनके बाज कृदयन जो के मनीने कृपराज जो मुगगीत के पात के (एस प्रत्य माजवयक है) मंगानी की स्वाप का नुम मंत्र मुल करने पंच राववयक है। मंगानी की स्वाप का नुम मंत्र मुल करने पंच राववयक है। मंगानी की स्वाप का नुम मंत्र मुल करने पंच राववयों जी प्रार्थित हो। मागों में स्वाप्त में स्वाप्त में हो। मागों में स्वाप्त में स्वप्त में

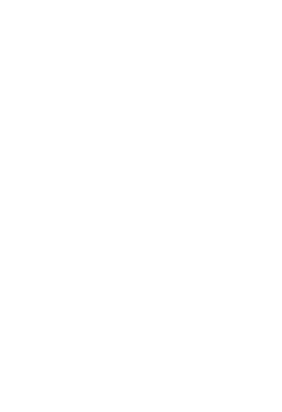
प्रवाधित विद्या है । सभी उनका एक गुग्दर संस्करण राजस्थान पुरानतः मंदिर से छुरा है । । जिस वा सम्पादन भी बदयी जनार जो गिरिया वर रहे हैं। शाडी ह अवस्थित वृत्ते वो साम को समझानीन जैन-वृति निनिन मेरे सबह में हैं। जिसे मैंने 'भारतीय

विद्या' में प्रकाशित कर दिया है। राठोडों की स्थान बीर बंगावित्यों जैन यनियों द्वारा निक्ति प्रान्त हैं। जोषपुर के गांवों की उरव संबंधी हडीकत अयदुर

जोषपुर ने गांधों की उपन मेंबेपी हंदीनत जयपुर ने धीपूर्वियों के पास है, जिसकी प्रतिनिधि मेरे लंधह में हैं। बारमेर ने मित राज्यक्तमों ने सबह में बेरकान्सीय जितसमुहसूरि ऐनित राज्येक-मेंग्रा-

वनी मैंने देशी थी। सुनारत राता, तारावादय बीगाई, जैतबन्त प्रवध बीगाई घादि घन्त विसुद्ध ऐतिहासिक नो नही, यह सोवादवाद के धार्थार में ऐतिहासिक ऐतिहासिक हैं। बर्मबन्द्रवय प्रवस्य बीगाई में बीचा-

ा रिक्त वे नाय सहस्थानाय से अवरित्त भी जेर के बुनिहोंने की नई कार्त निर्देश होती है। र दिया है। जैनावारी, भावती, तीयी, देश नगर वर्गन नंदरी है- प्रथम भाग प्रवासित हो खुवा है। जिल्लीय खुद गया है। शीध्र ही प्रवर्गित होगा।



है जिनमें तीन धपूर्ण हैं। उनमें भी विविध विषयों ना वर्णन बहुत ही मनोहर है। इनना परिषय में स्वतन्त्र तेल द्वारा राजस्थान भारती थे प्रवासित वर पूरत हूं। मुनि जिनविज्ञाजी से १७ भी सतास्त्री के मुक्ति मुस्बन्द्र रचित परेक-

विमाति मामक प्रत्य की एक प्रपूर्ण प्रति प्राप्त हुई है। प्रत्य संस्कृत से है। यर प्रासंगिक वर्णन राज-स्पानी गय से ही दिया है, जो बहुल ढी सहस्वपूर्ण है। प्रत्य की पूर्ण प्रति प्राप्त होने पर इसका सहस्व

है। यन्य को पूर्ण प्रति प्राप्त होने पर इकका महत्व भनी भाति हो विदित हो धवेगा । यद्य में दुरनाय वर्रात, तीत-ताप भर्णन भादि क्षत्राएं प्राप्त है। नगर-देश वर्णनारमक पद्मवद्य क्षत्राएं भी विद्वानो

वी धनेक मिलती है।

(१८) सम्योद:—मानादमंत्रत जैन रचनायों में बहुत सो चा साम्यूय जैन पर्य से नही है। दनवे बहियों ने परनी सुम्न एवं चित्र प्रतिमा का परिचय मन्त्रे क्ये देशा है। मोनी नपासिया सम्बाद, जीभ-कात सम्बाद, माल-बान सम्बाद, उद्यय-बार्य समावद, योवन-जरा सम्बाद, लोचन-बाजन सम्बाद मादि (चनाएँ उद्येश योष्य है।

. (११) देव-देवियों के छंद:—भोशमान्य वर्ष यहा, वित्तवर साहि वह, तितुर साहि देवो वी स्तृतिकर साह, जैन यहियो हारा रिवन बहुन वे निवने हैं। उन देवी-देवनाओ ना बीन-पर्ध ने बोर्ड सन्यय निही है। रामदेव की, साहबी, मुख्यी सीर

समर्शनह की सादि की स्मृतिकत्व की वहूँ दकतान् ।

मिनती है।

(०) सोवदान्धि संदम्भी सम्बद्धान्मीक साहित्य के स्मृत्या के जैन दिहानों की सेवा सहुस्य है। भैनदी नोत का सहुस्य से स्मृति के स्मृति करने से है। भैनदी नोत का सहुस्य स

ना एक में स्टारण में जन बिडाना की सबा सहुत्य है। भीको नोव बानीयों को उन्होंने बान्ने बस्यों से मध्दिन की है। एक २. लोकबानी के सहस्रत्य से संस्कृत एक सोबा बाला से उनने कृत ने बस्क उपनब्ध है। बहुन भी लोक वार्ताएं तो यदि थे : धपनाते सो निस्मृति के पर्भ मे कभी की विजीन ह जाती। यहा राजस्वानी भाषा में रचित फुटर सोक वार्तामों की मूची दी जा रही है—

धंबड घरित कर्ता जिनवसमूद, रूपभन्द्र कर्पूर भंजरी ,, मतिसार शोरा बादल ,, हेसरस्त, सरधोदय चन्द्रतमलयागिरि ,, भद्रमेत, धेमहर्ष, जिनहर्ष

नुमतिहंम, बगोरर्थन, देशेना मार्च , दुरान शाप्त , व्याप्त भाप्त , व्याप्त भाप्त , व्याप्त भाष्त , व्याप्त भाष्त , व्याप्त भाष्त , व्याप्त भाष्त , व्याप्त , होर्चन गा

प्रियमेलक , समयगुन्दर, मानसागर श्रोज-चरित्र , सामदेद, सारम, हैमानरद चुन्नपीर। (देखें जा. प्र. पदिवा में प्रवानित मेरा नेस) विकास चरित्र — मानराजा विकास चीट वान

शीनतां, परात्रम एवं बुद्धिवातुर्ध नीक नाहित्य में सबसे समिक प्रवादित है। आप्तीय प्रायेक भाग में विकास सबंधी की बचामी ना प्रयुद्ध साहित्य उत्तरस्य है। सर-दुर्वेद भाषा में मों करीब प्रभू एकताएं प्राय्त्र हो पुष्टी है। सहां उनमें बोटी भी

विशेष जानने से निए मेरे विक्रमारिय संबंधी जैन साहित्य (विक्रम स्मृति रूप्य में) देगना वारिय । इत्य नाम वर्णने नाम वर्णने नाम इत्य वीराई, हेमसारह, इत्याप्य इत्य दृष्ट कीराई, विन्द्रसम्बद्ध, अस्परियम्ब,

राजम्यानी रथनामी का उन्तेल रिया का रहा है।

লামহর্থন বিহানন অপানী, সত্মখন্ত, হানখন্ত, বিশ্বস্থাত,

हारवच्य, स्टिम्साम

स्वत-नेपा

etel No 12 REO HALL

मारस पोर बोलाई, संब्रहीन, समस्तीम, साम कर्दन । में "जैन हुर्जर बांबियो" भाग १ के परिश्व मीम क्या गुमाची करिएम द्वार यह है :----में इस १८३३ से २१०४ तक में की है। इ भीतारती कोगाई. बंबबगृदि दिन्य हुराननाम की संब्या २४०० के समयग है। जिसे रिया दिलात स्था, के करीब तो राजस्यानी सोकगोती की है। शियानंदगुरि, मासागुल्दर, मानरप्रदर, राजनिंह, जिन-(रेश) जीवारों के मान्य हंची पर हर्षे, बसोरपंत्र । विद्वाना में बुध चंच बताये है जिनका कार्न fairly calibrat मानाची, गारंत विचा जा पुरा है - देवी बागगी, एकाशी الإندية للديداية **हाताबा**ई रामानामु इत्रवं मुक्त है। बीर भी और इंड TT Troops भीतार संबंधी कोगाई, जगानगुर्द रेगानुन्दर, राजकाद मोनोप्रयोगी विषयो पर पुरुष र माहित बहुन लेन बहिबा दास दिला बिन्दा है। जीवांस exi welk dad. FIT EIT कोई भी ऐसा विषय मही जिस वर भेन (राजाव Sanda Lami PERSON PORTERS AND AND क्षक र्वह रवनाः बावारित न मिले । anne abeteit de tief mientite रहमाधारी और दयनामी की शिवसना अन tree see s to the के लिए उर रचनामी की विकित बहरण सेता the first state, while the THEN T METER वर र्ट्ट बारवा ही बाली होता । मान्ति प्रवर्गाल इन मध्यवर्ती ४०० वसों से जैन विदानों ने निरंतर राजस्मानी से रचना को हैं और वे छोटी—मोटी राजस्मित सस्या से हैं। चय—साहित्य के साथ र इस समय में भदा रचनाएं भी प्रदुर हैं। जबकि १७ वो साताब्दी से पहले की जैनेतर गया राजस्थानी रचना स्वतन्त्र रूप से एक भी प्राप्त मही हैं। केवल सवनदास तीची को कचिनकों गया के सोडे से उदा-हरण निकते हैं। जबकि इन ४०० वर्षों में करीय १०-६० पैसी के स्टे-बडे सानाक्षीच राजस्थानी गया में

जैन विदानों के द्वारा निर्मित प्राप्त हैं। खरतरगण्छीय

विद्वात मेशमृत्दर धवेले ने ही २० ग्रंथो पर गर्च

में बालावबोध-भाषा टीका लिखी है। जिनका

परिमाख ३०-४० हजार दलोक के करीब का होगा ।

चारण प्रादि विवयो हारा स्थातो वा नेसन अधवर

के समस से प्राप्त हुआ जिता होना है। गय-बातों से संपिधांस १० की साताब्दी में ही सिल्ही गई है। (२) रक्ताओं की संस्था पर हिट डाकने से भी जैनेतर राजस्थानी साहित्य के बड़े बच्य तो बहुत ही मोड़े हैं। हुटकर कोहे एवं डिनक मोड ही स्थित है जबकि राजस्थानों जैन कंसो, रास स्थादि बड़े रुपयों की संस्था सैनकों है। बोड़े सी दिशन बड़े रुपयों की संस्था सैनकों है। बोड़े सी दिशन

गीत हजारों की संस्था में मिलने हैं। उनका स्थान

भैन विद्वानी के स्तवन, संग्रभाय, गील, भास, यह

मादि लघु शृतियों ने लेकी है, जिनवीं संस्था हजारी

पर है।

(१) विदयों भी संस्था और उनने पीवत माहित में विद्यालाएं में तुनना बरने पर भी जैन माहित में विद्याला में तुनना बरने पर भी जैन माहित में नवर भावत है। उनने पारित माहित माह

होटी २०-३० रचनामों से प्रथिक नहीं दिखी। राज्यवानी झाण का सकत्रे कहा मन्य "दब्बा भारकर" है। जबकि जैन कविमां में ऐने बहुत्त से किह हो गये हैं जिल्होंने बड़े र राग ही काफो संख्या में निल्हें हैं। यहा कुछ प्रचान कविमों का ही निदंस विमा जा रहा हैं:—

(१) कविवर समयसुन्दर:--मार राजग्यान के महावृत्रि हैं। प्राप्तत, सरवृत भाषा में भनेकी रचनाएं निवने के साथ राजस्थानी में भी प्रदुर रच-नाए निर्माण की हैं। फूटकर स्नदन, सन्भाय, गीत भादि की संख्या तो ६०० के लगभग प्राप्त है। बेंगे सीताराम चौराई राजस्थानी 💵 जैन-रामा-थरा है। यह प्रत्य ३७०० इन्होन प्रमागु है। इसके श्रतिरिक्त साम्ब प्रयुगन चौपाई, बार प्रयोग नुधराम नीनावती राम, ननदमयन्तीराम, प्रियमेनर राम, पुष्यसार चीपाई, बल्बलंबीरी राम, राष्ट्रश्रय राम, वस्तुपाल रास, बादक्वा श्रीगई, धुम्लक हुमार प्रबन्ध, चपक थेहि चीताई, गोतमपुरुधा चीताई, धनदका बीपाई, नायुक्तता, युवा ऋषिराम, श्रीवरी श्रीपाई, देशी प्रबन्ध, दानादि श्रीवानिया एवं शमा धनीती, वर्षधनीती, प्रवधनीती, गुरानवर्णन छुनीसी, नवंबाद्यनीसी, बातोपणाद्यनीसी बाहि बादि राजस्वानी में बहुत में पर है। दुख रय-नाएं तो हमारे द्वारा प्रशासित भी हो पुत्री हैं।

(द) जिल्हेंची, स्वतंत्र वीधापूर्व नाम जन-राज बा। यह प्रत्यक्षाने वे वह माधे वर्षि है। प्रश्नेत पूर्वक्षा जीवन में राज्यवाने क्या में बीर पेटे से पाड़न बने जाने वर हुज्यानी विश्वत क्या में ५० के कंधेब पान एवं मैंबरा क्यान बारि बुर-वर पहलाई वी है। प्रश्ने में बहै एन दी बहै न क्या है। ब्राइंडी नवड़ स्वनाई ना बार्वावरण एवं मान वर्षों में बरोब होगा। हदरायको ने जलक जन्दर जनकर लिकाको । तुम तुद्ध के विशाल १४ व न बड़ों, कोर बड़ों तो जलके मत । करें, जनके कर बसने के हरतक रहत हालों। जानक हों जिससे तुम्हें लिक्स तो कुंबराते सकोच न करेंगे । पारते प्राणी हा क्षान्त हों पान से नेजों के दिन ही हैं । जरने वाले ही तुम पर बड़ने और पानों हा क्षान हैं हों के जिस्सों हैं । विशास जानक होंगे वाले पहले और पानों हा हो हरता से कुंबर कुंबर के कि हों हैं । मार सहल बड़कर नीचे आने बज़े तारा है ।

डिंगल साहित्य

हौं। मोतोलाल मेनारिया, संबाहक राजन्यान साहित्य श्रवादमी, पर्यपुर

भारतीय साहित्य मे राजस्थानी साहित्य (जो हिंगुन साहित्य के नाम से अभिद्ध है) का स्थान कितने महत्व का है यह बात साहित्य-प्रेमियो से दिनी नही है। राजस्यानी भाषा के साहित्य मे जो भाव स्पृति भीर उद्देग है वह देवल राजस्थान के निए ही नही बरन सारे भारतवर्ष के लिए गौरव की दस्तु है। बीर-रम की कविता तो इतनी उच्च-मोटि भी बन पड़ी है कि उस लग्ह की कविता संसार के धन्य किसी साहित्य में मिलना दर्लम है। विवि सम्राट रवीन्द्रनाथ ठावुर को एक बार जब चीर रस की ये कविताएं सुनाई गई तब वे अंत— मुख ने हो गये धौर बोने-"अक्ति रम का काव्य तो भारतवर्ष के प्रस्मेक साहित्य में किसी न किसी कोटि मे पाया जाता है। राधाकृष्ण की लेकर हर एक प्रान्त में मंद या ऊरंची कोटि का साहित्य पैदा किया है। लेकिन राजस्थान नै प्रपने रक्त मे जो साहित्य निर्माण किया है उसको जोड का साहित्य और कही भी नही मिलना ।"

गांगवान वे विषयों ने ध्रमणी विवाही हो प्रवाह की भाषाओं में नियों है, विश्व और रियान । दियव राज्याचा की बोच्चावन की भाषा राज्यवानी जा वाहित्यक कर है और रियान की घरेगा खीवक भाषान, स्थित साहित्य समझ स्थान औरन ग्रुल-विधिष्ट है। इसकी उत्पत्ति भपन्न'श में हुई है।

राजन्यानी भाषा का नाम दिगन वर्षों मीर क्य पदा इत विषय में भिन्न र विद्वानों के भिन्न र मत हैं। यहना मन हैं कि "दिगान" ताद का प्रमत्ती वर्ष मनियमन प्रयवा श्रीवार या। यज भाषा परि-माजित थी और साहित्य-साहत के नियमों का मनु-सरण करती थी। यर दिगल दम सम्बन्ध में स्वतंत्र थी। इतनिष् इतका नाम दिगल पदारे। दूसरे मन के विद्वानों का बहुना है कि इस माना वा प्रारम्भित नाम देशकी भी पदा दा में पिना ताहर से तुक विवानों को निष्ठ ताद 'दिगल' पर दिया गया। र

तीमरे मत मे हिरान व 'ह' बगाँ बहुत प्रधुतन होता है [यहां तह यह हिरान की एक विशेषता वही जा तहती है] 'ह' वर्ग की एक विशेषता नही जा तहती है] 'ह' वर्ग की एक विशेषता में स्थान के स्थान के

रे. डॉ॰ एल. पी टेमीटरी (Journal of the Assatic society of Bergal Vol X,No. 10, Fage 376

R. হাঁও ট্যেলার ডিবিরী (Parlamentars report on the operation in search of MS5 of Bardio Chronicks, P. 15.

रै भी गवराव भीमा (शाहरी-प्रवारिती प्रविशा, भाग १४, पुरु १२२)

(1) चेगह जिलसमुद्र सृहिः—हन्तो स रामनानी दं बहुत सं राम, रासन बारि बनाए है दिनहीं परिमान १०-६० हजार शांकों के क्योंक हैंगा। वर्ष रच बहुई विने है। हिने सनावानी विश्वेष कार्या, काल व है।

(४) मेरान्य क्रिक्स हिम्म (४) हर की का है कर एक ही करा दन हमार ग्रीक र्रीमान है को सरावानी बानको बग वाल है।

कारणे क्षेत्र देवणको को किएको में परिकास है काम प्रोकों में ब्रायक का ही होता। (१) बालगी द्वार के बागावशेल माना टीका

कृत्य हात है। स्रोत शास वहिंद्यान है। रेण प्रकार ४०२ विद्वारों के की बारनांच नाम

ित बर्गियम हो बाने हैं हो। रायण हाजाबाड़ी जैन र्णे र का परिकाल है। हेर मान गांच वर्शिय y & and Ministers of Early Educate Modeling Elmeric & Elde & Ladding w En art is & as by Cabilly nationally

assaulten gi alle all midli bi bans दापन करतर है। इक्टब्रू न है सम्बद्धा है है। को बहुद का को उद्देश कारण का द क an elige an bisher gently s an designe fine mineral bir fit

the set of the set of declaring to केंद्र कालक एक केंद्र करकर, काल Ter vent semire 4 agri as all alphan laster since a

ore average green wind an the section of the se A 48 BAN ON THE PARTY

and the area was do be . ,

भी बनाई है। 'किसन रकसरी के'न' नीजिये; इस पर माना बारण प्रतीत जैनेतर नो एक ही जननाम है पर अन विद्यानी हारा र ६-० डीकाएं माना ही युकी है, जिनसे से ही ही

वी संस्त माम में भी है। दवी प्रशाह हि कीर संस्कृत के जीवर संबोधीनी वांबी कर ब वैन विकास ने राजापानी भाषा में टीवान हिन है । वसारतार्थः-मंत्रत के घर्रशेर १००० बयह बार, महातीर, साराहर बारएए छा? वर जैन द्वीचा द्वारा रिक्ट राजावारी रीक्ट

माना है। सर्वहरियान की तो काकार, यहर डेंगन, मच्योरमाथ की वीन टीहार्, हमारे संत म काल है ह हिन्दी देवों में 'एनिक दिला' वर इंग्लब्धीर को बाहि केरकाम के मण विवक राज्यकाती होना जनसम् है। मोर रासन्त यत्री को समा रूपने का धील भी भीत विद्यान का ही है। जैन रामस्याधि सामा के सहत प्रमोत ीने वह कोतीन बांग रहेड होतों की जारात संबन्ध र्रेत्या देव सर्व्यो आस दिवस राजा नीता विश्ववृत्तक क्षेत्र वृति वृति क्षाप वर्ते है। दर्ग

प्रदार तथाने सदय स क्षेत्रपति है पाप है। nex of Magning to deal gives of the व्यान्त्र व्यानक्षत्र है, सर्वात यम वर्ग की सन को अंत्र संदर्भन के चित्रक क्षांत्रपत्तिकों को हान WATER WATER WILLIAM خيصة فأنكه فرغ فرغة وهسطم فسطاء drand have directed by his name bediet, and

a brok de diet ba that he da money. 4+ 2+ 4 4 40 + 4 40 + \$14 + \$1 44+ 50 wild wind bidades an an action by Agen da morar harridg graverse as and mand as solding a planner

आभाण शतकम् और राजस्थानी कहावतों की परम्परा

लेखक--- हा० कन्हैयालाल सहल, पिलानी

तरको निपेवने ? ॥४४ **रा**शस्त्रान की सम्यता और संस्कृति की ध्रमो नम्नस्य मरर्गस्य समझते मे जैन विद्वानी के वची से बडी सहायता मिलती है। सं०१६९६ के पौप मास में बीधन-मस्तके मौतिबन्धनम् ॥५४॥ विजय गणि ने 'साभारत शतवम्' नामक यन्य की ऐहिक समतासीस्यं रचना राजनगर के सभीय उच्छमापुर नामक नगर मे त्यवरवा क: पारनीविकम **पी यो । इसकी प्रनेक बहावतें ऐसी है जो राजस्यानी** सोकोतियो का सनुवाद जान पहती है। तुलना के लिए यहा बुछ बहादलें उद्धत की जा रही हैं:--र्मतः प्रदक्षिलादनः प्रथमा भूवसा भूत ॥४॥ परप्रदारं क्षत तेव विश्लोक्य नयने निने 110०।। गतातिविर्वया पूर्वं बाह्यभीनं च बाब्यते ॥२१॥ पानीयस्य गतिनोंचै: ॥२३॥ रप्टायाः को निजास्तायाः शाबिनीर्दं प्रवाशयेतु ॥२ ॥। पुष्यमित शतो मनिकाधनमपि सरले यथा ॥ न्यातु ॥२८॥ मूपतिः बुदनेइनीति प्रजायाः ना गतिस्तदा ? शहत।

राजा सित्रं न कस्दक्षित्।[१९]।

सूर्वे प्रति रजः शिष्त्रं

स्वच्छवि पतिप्यति ॥४२॥

यत्त्वर्णं वर्णनाटाव द्वा

कटिरचं तनुत्रं यद्वदरस्यं समीहते ॥५६॥ नुग्ये नट्याः प्रवृत्ताया बदनाच्यादनं यथा ॥ (६॥ ववादीयां यवा पादा इस्तियारे महन्तरे ॥३॥। दर्शने अञ्चले बद्धहरिनदस्ता पूपम् पूपम् ॥६५॥ विवाहे बिहिने सम्बद्धाया मि प्रयोजनम् ॥५६॥ धर्मधेजोरतचा दस्ता न विचोष्टा हि भीधनैशहरै। प्रविनदर्श अक्टरेड ११३ २०१ उप्यने बाहर्य धान्य, सूबने नाहर्ग अनै, ॥१६। बरस्यक्रक्राभोके पूर्यस्यक्रमीत क्रिम् ॥१०१॥ पार प्रमारमं नार्वं बारन्त्रच्यारनाश्चम् ।१०२। नत १८६२ वे श्रवण एशियारिक मीनाइटी के जर्नेत में श्री सावबंद विका प्राप्तर ने 'Marwari Weather Proverbs' surfre etti! इसी प्रशास Adums Archibald ने परिवय मारवारी बहाबतो को धारे में। धन्ताद के मान पाडको के समक्ष स्था । ^३

^{1.} Journal of the Royal Asiatic Society 1892 (pp. 253-257).

^{2.} The Western Ramutana States by Adums Arch bald, (pp. 99-97).

-योव हेपासहर विराणी, बन्धार

"भाव-लता "

हैं दिवासकी में परपन्न सुन्दर सुमनप्रद लेकिनाओं । सुम सुदि से विशाल इस प न चर्रे. इ.र. चर्रे सो उल्लोक्त मत । उद्दे, उत्तके कल चराने के हृत्युक स्थूल प्राणी। एस पर चड़ते एउट्टी पुन्हें निर्देशता से कृषणते संकोच न करेंगे । पुन्हारे गुम्लो श जानन्द हो। कुमन ही मेजों के दिन ही है। उड़ने वाले ही सुन पर चड़ने भीर सुम्हरी म्ब करता है हमार्थ है अधिकारी है। कुरता सामन्य क्षेत्रे वाले करते ही कड़ती है ह

प्राप्त है हो है के बार कारते हैं। मार सिट्स चंद्रकर मीचे आमें वार्त संसादन की इत्ता भी पार्ट क्यांजने वाभी से ईरवर पुग्लाने नवा रक्षा करे ।

डिंगल साहित्य

डॉ॰ मोतोलाल मेनारिया, संचाष्टक राजन्यान साहित्य सकाइमी, पर्यपुर

भारतीय साहित्य मे राजस्यानी साहित्य (जो दियम साहित्य के नाम से प्रमिद्ध है) का स्थान कितने महत्व का है यह बात साहित्य-प्रेमियों से छिरी नहीं है। राजस्यानी भाषा के साहित्य से जो भाव स्पृति ग्रीर उद्देग है वह देवन राजस्थान के निए ही नही बरन सारे भारतवर्ष के लिए औरव की वस्त है I बीर-रस की कविता को इतनी उच्च-मोटि भी बन पढ़ी है कि उस तरह भी कविता मंतार के प्रन्य किसी साहित्य में मिलना दर्जन है। क्वि सम्राट रवीन्द्रनाथ ठावुर को एक बाद जब थीर रस भी ये कविताएं सुनाई गई तब वे अंध-मृग्य में हो गये बौर बोने—"भक्ति रम का काव्य तो भारतवर्ष के प्रस्वेक साहित्य में किसी न किसी कोटि मे पाया जाता है। राधाकव्या को लेकर हर एक प्रान्त में मंद या ऊंची कोटि का साहित्य पैदा किया है। लेकिन राजस्थान ने प्रपने रक्त में जो साहित्य निर्माग किया है उसको ओड का साहित्य और वही भी नही मिलना ।"

गाराचान वे वर्षियों ने सपनी विजातें हो प्रवाद वी भाषाओं में निष्ठी है, दिवान कोट विजन । दिगन राज्यान वी बोदयान वी माणा राज्याची वा साहित्यत कप है और जिनव की मोदा संबद मार्थान, संबद साहित्य सन्तर तथा मंबिद मोड-

गुरा-विविध्य है । इसकी उत्पत्ति धपन्न में हुई है।

राजन्यानी माणा का नाम डिगन क्यों थीर क्य पड़ क्य निषय में पिन्न र दिहानों के मिन्न र मत हैं। यहना मन है कि "डिगन्द" धार हा प्रसमी मध्य धान्यक्त क्य वा गंदाक था। बज भागा परि-माजित की और साहित्य-साहन के नियमों का अनु-सरण करती थी। यर डिगन इस सम्बन्ध में स्वतंत्र थी। इतनिल् इतका मार्थ कियान पड़ा है। दूसरे मन के बिहानों का बहुना है कि इस मागा का प्रारिम्स बाथ "इयळ" या पर बाद में रियम साहर से तुक बिनाने के निष्यु धार "डिगन" कर दिया गया। है

सीमरे यत में हिरान थे 'ह' बगों बहुन प्रमुख होजा है (यहां तह यह हिरान की एक विशेषता बहुते जा बनती हैं। यह नगी हो एक प्रमाणता की स्थान में एन नह हैं। रियम ने मास्य पर एम जाना वा नाथ हिरान राज्या गया है। जिस प्रमाण निहारी-स्वार प्रमाण भाषा है उसी तरह हिराम भी हनार मध्य प्रमाण भाषा है। योचायन—हिराम, हिस्स-मध्य ने बता है। हिस वा धर्य दसक की करीन तथा गल वा मंत्रे से सामर्थ है। दसक की क्यांत एन वर्गी वा साहता नरीं है तथा वह बीरों की उम्मणिन नरने वार्ग है। दसक बीर नम के देशना नगांव

र. डॉ॰ एस. पी.टेमीटरी Yournal of the Assatic society of Bergal Vol X,No. 10, Fage 376 २. डॉ॰ हरप्रमाद द्विटी (Patlamentary report on the operation in search of MS5 of

Bardic Cironicles, P., 15]

[🐫] भो गबराब घोमा [नावरी-प्रवाहित्यु पविशा, भाव १४, पु॰ १२२ 🖯

٠.,

4

बदन गई है। बात की मान्यता है कि निश्वी भी
प्रभोमन से जो कविता को जानों है उससे नह इस
पमत्कार घोर बन करवािन हो धा सकता जो कानटा
सुवाय करिवा करने वाने कवियों ने रिकान से
मिनता है 1 यह कपन ठीक भी है; घोर बायद यही
कारण है कि राज्याधित कवियों की कविता से
मान्यानुत्रिति घोर धारत-विष्णृति की सथा बहुव
हमें नहीं दिखाई परती है। चारण माटो से स्वान्त.
मुताय प्रवान: विकां में प्रहि हम्नु ऐसे कवियों
की संस्था एक तरह से का होने के बराबर है।

भाषां—विशव निवात वी भाषा प्रयान वन्य से स्वार सारा दो पाई जाती है। वीर बापा पान के नाय पैसी हो भाषा बहुत सक-व्यक्त, बेवेल है, वो विश्व करा करा है। वीर सारा वह सक-व्यक्त, बेवेल है, वो विश्व करा के प्रयो क्षा पुटवर कविताओं वी भाषा नहुत सुद, संवत पूर्व और है। पिर भी एक तात को विश्व के तभी निवां में समान वर में गाई जाती है, वह है। दावरों वी सम्नावर में गाई नाती है, वह है। दावरों वी सम्नावर में में तोड-वरोंड । यह ती एक सि एक देव से पूर्व की करा करा है। वावरों की मारा कि सात करा करा है। बावर वावरों के भी आधी विश्व का सामान सामान वरणा प्रवात है। अदाहरणाई-व

शस्द	गुढ रूप
बुव िद्ध	मुधिष्ठिर
पथ	पार्व
वेसा	वेदया
भौरमु	भवन
Pf#	444
देवरी	दिल्ली

हुदुद:--डियल में सबने प्रधिक प्रयोग दोहा, ख्य्यय का हमाहै। छप्यय पद्धति का भनुकरण बहत पीछेतक होता रहा है। ध्रापृतिक काल में भी उसका प्रभाव ज्यो का स्था देखा जाता है। इसका गुरूप कारण यह है कि दिगन कविता में बीर रम का प्राचान्य है, जिसका निक्रपण इन छन्दी में प्रधिक सफनता के माथ हो सकता है। दोहा, छापय के विविक्ति मन्दाकान्ता, मुकादाम, भूजङ्गप्रयात, पद्धरी भौर तोमर भादि छन्द भी प्रयुक्त हए हैं। फुटकर रचनाओं में गीत छद 💵 प्रयोग भी बहत हचा है, जो डियम शाहित्य की साम विभीयता मानी जानी है। ध्रुपय को डिगम मे 'कदिस' मीर दोहा को 'दुक्षे' कहते हैं। हिन्दी में दोहा ध्रद एक ही अबार का होता है पर दिवक में इसके दूही, सोर्राठयो दहो, बडा दूरा और नु'बेरी दुरो नार मेर माने गरे हैं।

स्रम्भकार-विश्वम में स्थितित वर्णनिष्मत प्रधान विश्वा है। सन्तर शित्र विश्व में लेखें सम्बद्धिया की स्थीरता एवं भाव स्थेतना की बहाने से सहायक होते हैं। इनकी पुरुषर रचनायों स्रमान स्व स्व से उपसा, उपभात, स्वक्ष भावि सारस्य मुख्य सम्बद्धिया हारित के नियम के सार विश्व है। सम्बद्धिया हरित के दिस्स में सार विश्व है। सम्बद्धिया के कर से परकर भाव भाव विश्व है। सम्बद्धिया हिस्स विश्व से करी भी नहीं दिनाई परती । एक सर्वकार सम्बद्धिया है।

When a past turns round and addresses homeelf to another person, when the expression of his emptions in tinged also by that desire of emblangian expressions up on another mind, then it wasses to be party and becomes elegitizated.

का गांचारण नियम यह है कि किया गईंड के प्रथम वित उन्हें व मूने ! दिगव विशा में बारह है हरर का धारम्म जिल कर्न में हथा हो समकी एत हार के बारवार दिलाई देती है तो जबी मार् प्रनिष्य प्राप्त का कार्यम भी उसी कार्य से होता दूसरे पट्टू में उसकी बीर पानी है। को में ही की वर्षात् । येथा--में नायक एवं नाविका सानी नहीं रगते । येते हैं ग्रामका गरहन ग्रीता, होता गर मानव हवा ।

रिया है बह है बयरा-मगाई। इसे हम हिन्दी में

स्प्रान्द्रस्य हा गुरू भेर बंग सकते है । बयससम्बद्ध

होती कोई दिसीया, करती महत्ता करहरे or ---दरगात्री रस —िंदाप काम्य में की राज्य का बाधाय रेश श्रीतरा, याच साहि साच रही का भी

निकाल निकास है कर बालाहत बहुत कर र

15.53

सक्तान ही सम्बद्ध चार्टिय । हेर्दिन साहार कारिकाय कारणेर जागाया है की दिशा की बोर रह का बाँदरर एक्ट कार्त की जिल्ल क्षारे । इसकर

lene प'रण का तीन भीशार्ट जात बीट रह ही में का न-योग है। विचा में मा बाद दमवा एवं नुदूर

क्षेत्र में बरीसास सौर पूर्णत है। र^{म्}री

कीर शतारिएयों की मौतिक मात्रायों की में उन्हें दे सपनी इचनाओं में सा उताश है जो हैं। माहित्व की डियान के करियों की मार्च दे। हैं।

डियान कराय में बीर रत की प्रवाशी देन कर पुत्त सोगों ने बह निष्वर्ष निवाता है कि ति माना बोर रस के लिये जिल्ली चारुल है उ^{स्ती} र्श्वनार व्याद बाल रहते के शिए मही है जेरिन की रिचार भ्रमानक है बीद दन के स्र^{ाह}िल हैं रेगो की भी वाभिक श्रीसंग्यतिक दिवन करिया है

गये हुए बीर लायक की अनुपत्थिति में उनकी की

पानी की घर घर क्या दशा है। मेदिन दिया है

रोड---

" विळकुळियो बदन जैम झकरयौ, मड्यहि धतुर पुराज सर सन्यि।। ब्रिमन स्वम झाउम छेदरा काजि, वेलिब झराी मूठि ड्रिट बन्यि।।"

योभत्म---

कांपिया उर कायरां अनुभक्तारियो, गाजित नीशाणे गटहै। अजिळिया भारा अवस्थिते,

परनाळे जळ महिर पर्छ ॥

दोप वर्राम — नाध्य में मुख्य धर्म नी अवीति भी हानि पर्मुचाने वाली बन्तु नो दोष नहते हैं। दिनान से दोप ग्यारह बनार के माने गये हैं। ध्रांप, ध्यवळ, हीन, निर्माण, पायळो, जातिबच्छ धपत, नाव छेर, पदनट, बहरी च धर्मनळ।

मंत्रिप्त इतिहास

हिंगल साहित्य वो आधा वे लसागत विशास वी हिंग्ट में घीर उसकी साहित्यिक श्रीहता को ब्यान में रतकर ६०० वर्षों का हतिहाल विभागत विया जाय तो वह तीत भागों में विभक्त हो सकता है—

- (१) स॰ १००० से १४०० तब बारम्भ बाव
- (२) स॰ १४०० से १८०० तर सध्य बात
- (१) में ० १६०० में १६६७ तम अस्य कान

चारम्भ बाल (सं॰ १०००-१५००)

रियत ने सारि नान वी सामसी बहुत स्पृत साता में उत्तरप्र होती है सीर जो है वह भी बहुत मिराम सीर सम्प्रतियत है । इस समय हिम्म ने बहुत से नवियों भी महत्त्व हिन्दी साहित्य ने हर्त-हाम सेनानी ने साने बीर गांदा नान ने नवियों में भी नी है। यर इस समयन से उन्होंने बहा बाला लाया है। इनका मुख्य लाइण है दियल भाषा से उनकी ध्वमित्रका। शिलन भाषा से ही बुद्ध ऐसी विमेयता है कि यह बहुत थीदे भी होते हुए भी बहुत प्राचीन दिलाई पड़ती है। यंग्रमास्तर के सरके प्रवास दम बनन के प्रतास उदाहरण है। ये यंग्र धाणुनिक बाव में लिये होने पर भी माणा से बई धाणुनिक बाव में स्त्रीत होते हैं।

इस बाव के मुख्य विविधों का सक्षिप्त परिचय दिया जाता है। इस विषय में नवीन शोप येंगा ने सहायता नी गई है।

१. दलपत विजय—घनका निक्स मुमागु— समी नामक एक याथ प्रमिक्त है। ये मैदाक के बाजा गुमागु (दूसके) में ममकानीत माते जाते हैं। बता जाता है ये जाति के भाट थे। स्मारकार नाहरा ने जो नंगा निका है जाने समुगार गुमागा ने तो० ८५० में ६०० तक साम्य विद्या था। सनः नहीं नमय वन-पत्र विजय चाति के भाट नहीं बीच तागायन देवार विजय चाति के भाट नहीं बीच तागायन में बीई जैन सार्च में सिन्होंने सब एअ१० में १०६० ने बीच विनी नयम जुसाग सानी दी एका मी यो। उक्त क्वन स्वास को देवने हुए दीत ही है।

२ नरपनि नारह—स्वरी तानि, जम निर्वि सादि वे विषय में निरिष्ण कर में हुए, भी जान नहीं हो बादी है। वोई दारें राम, बोर्ड मार स्वरें बोर्ड साम बाह्मण जनवाते हैं। दिने पर्व दीमन देव सामी वा स्वाद हिसी नारित्य में बहे नरूप का माना जाता है। इसने प्रकार का ने हे स्वरूप में मान्या सामी है। एसकी भाषा की देन कर नी हो है है। सामी में पहुने का मानने को भी नहीं कर ना है। हो। भीराज्य है। एसकी मानने के हमीर बच्च ने प्रवास मान्या माना है हुए हो। मान्य है

सप्रन-देश

चेंद्र ताम का कोई कवि पृथ्वी राज के राज्य क्षा मदादशार नाप्त इत रामी बा निर्माण बात मंद

(४) जल्हण:--ये बाद बाराई के कार्र हा बीरापरेत रायो एत. बर्गुना मन काम्य है जो

ये। इनशा निसा हुमा कोई प्राथ मंत्री तक की 1१६ इस्से में सम्बन्ध हुआ है। इसकी भारत बोच-

चार की राज्यपानी, करिया करूप साधारता तथा

क्या भाग समिक्तर सनैतिहासिक है। स्टा अंग में राजा है कि सायद कोई संद ही ऐसा निवान

मी रूप रिवासी ।

१३६६ के बाग पान टररवा है।

में ह्या ही नहीं !

उली हा जिला हमा है :--

मिता । सेविन प्रसिद्ध है कि पुरुगीरात्र शारे है

तिम्तितिसत कीहे के बार बाजी धेत है, की

बारि बन्त सनि बति सन्, बन्ति हुरी हुरायी

१. पृथ्वीराज:—ये बीकानेर राजवंत में में थे। इतका जन्म विक सेठ १६०६ के मार्गतीय में इमा था। तम्राट् धक्वर के प्रतिद नेनापति महा-राजा रावरित् इनके बडे आई थे। पृथ्वीराज बडे वीर, स्वदेशाभिमानी एवं स्वय्ट मानी थे। ये सहूदय बिंद होने के साथ ही संस्कृत साहित्य, दर्दान, ज्योतिय, घंद साइस, संगीत शास्त्र धारि वई विषयों में भी पारंतत थे। इनकी रचना 'वेली कृष्ण क्वमण्डी थी' विगल साहित्य में प्रृंगार रक्त का सर्वोत्तृष्ट धंव माना जाता है।

समये थी इच्या के साथ रुक्तगारों के विकाह की क्या का कर्युत है धीर भाव, भावन, मायुर्ज, धीन भीर विषय सभी हर्षियों से यह समने पह बड़ा का सम्मित्र है। इनके "स्वारक राजवत," 'बनके-रावदात,' धीर गंड्रालहरी नामक शीन शंच धीर भी है। दनके सिवाय एनके, पढ़े दो छन्य धीर बहे जाने है—पैन सीरिया, धीर श्री इच्या हर्षिमार्गा विरिया

२. दिवरदास--दनना जम्म भारताह राज्य से मादेन मामक गांद से सं० देश्टेश ने हुआ था। ये ये जांति के चारण से में ते तक्ष देशिट ने क्या थे। स्पर्त समय से वे देखता को ताहर पूर्व जाने थे। नोग गरें हैं ''सिरा सो परसेसरा'' वह कर रतना सम्मान वरते थे। दनके संधी के नाम से हैं—-हिर वस, स्रोटा हरि रस, बाच मीना, हुए आपक्त हैंन, पाटक दुराए, हुए। सामम, निद्यालृति, देखियान वैराद, राम वैनाम, समावर्ध, सीर हानों भानों स् । युव्यानमां। राल्शने साम्य और सीर दोनों रसो से रवनाएं सी हैं। दनकी माना स्वाप्त स्वर्थ है। स्वर्थ स्वर्थ है। विराह्म से सी सी स्वर्थ है। सर्थ है। विराह्म से सी सी सी स्वर्थ सी अपक्ष माने सर्श दिस्ता विराह्म करी भी सरिक्षम वी अपक्ष माने सर्श दिस्ता विराह्म करी भी सरिक्षम वी अपक्ष माने सर्श दिस्ता विराह्म करी भी सरिक्षम वी अपक्ष माने सर्श दिस्ता विराह्म से सी भी सरिक्षम वी अपक्ष माने सर्श दिस्ता विराह्म विराह्म सिंहा ।

रे. दुरसाञी—दे धारा गोत ने कारण वे । रुका जन्म सन १६१२ से लगा देशकरान १०१२ मे हुधा। ये राष्ट्रीय वित वे। महाराखा प्रतान की प्रश्नेता से तिसी हुई इनकी 'विषयदहत्ती' का पक्एक दोहा प्रपने डंग का प्रतित्त है। ये कक्त के क्षान्त है। ये कक्त के क्षान्त है। ये कक्त के क्षान्त है। ये कि क्षान्त के क्षान्त के कि प्रतिन होकर भी इन्होंने कभी एक सन्द भी उनकी प्रमाना से न तिसा। सह एक ऐसी बात है जो इस्तानी की सन्यान्त का स्थान के क्षान्त का उत्ती है। इनकी क्षान्त में कि सामान्त सारखीन के स्थान का देती है। इनकी क्षान्त सामान का कहा मुक्दर वितान हुसा है।

सरबर समद सपाह, निंह इबा हिन्दु सूरक । मेवाडो तिला मांह, पोयल दून प्रताप मी ।।

४. मुह्ल्योतनिस्मसी—ये जोषपुर के महा-राजा जबक्तासिह (प्रयम) के दीरान थे। इनका रचना बान १७२० के लगमग है। इन्होंने क्रियन यह में एक इतिहास धन्य निमा है जो "मुह्ल्योन मैल्ली री क्यान" के नाम ने प्रसिद्ध है।

 आन—दनके बंग, माता-पिना के संबंध में बोई जनकारी नहीं है। इन्होंने 'पात्र दिनाग'' नामवा एक दण्य बनाया दिसभी नमाप्ति १७३० में हुई बी। इदिहास धीर काण दोनों हुन्दि से बह दन्य महत्त्वपूर्ण है।

इसके धरिरिक्त मध्य बान ने प्रस्य विश्व बादर, शीधर, मूबो, शिवशन, व्यापशन, हरिशन, बीर आल बन्तानी व करणोशन धादि हुए है।

उत्तर काप (म • १८६०—१११७)

वलीनवी धाताती के आराम में नाम नाम दिशम माहित्य या उत्तर बाम भी आराम होता है। भागा और विषय रोती की हरती में हम बाम में महत्यपूर्ण परिवर्णन हुए हैं। बोममान में राज्यवाती और बजमाना, दिशम पर स्थान। प्रमाद जाती नहीं और जनमाना, दिशम कमा हुए बुध कुछा मीता, एम महिमा हमा सम्म में हर और रोप्टीन्स दिस्सी में मिता। इस मान में दिस और

का पता नगता है। बोरीशम संसूप, सिरा क्षीर मध्यत्रातीन टियल में योडा मा मन्तर है। पारती तथा बज भाग के प्रकार पंति हैं^{ने है} राज्यानी और धर-मापा निधित इस दिवन का नाम

माप ही साथ इतिहास के तुरु बहुत बड़े शरा दे। बन्द दिशास ने " कृषिम दिवात" स्था है, जो ठीक बुन्द, निरंघर विशिव की भातिही बंकीयां घे में चरीर मोस है। इस बार में बाशीयान यादि दी

एक करियों ने की विल्ला दियन में विशासी है

शेरी साच--दे दीकोर के महासमा

maffire के क्षाचित्र के 1 दर्शनि "क्षावराव" नामक

कर पाय कारण जिमका दूगरा गाम 'भागित-

कप्रता भी है। राज्य निर्माण में हे देवन में मान

क्तर राज्य है। इस दल के शाखार वर गारी ग्राप

हिन्द बल्प के एक्टर करि करे जा सकते हैं।

पर क्षानपूर्वक देलने से इनकी भाषा पर उक्त दी

भारतमें का प्रभार क्यार दिसाई परता है।

मृतिकार थे। सुर्यसन्न-दे बु'दी के शार दरशारे व'त रेश

इनहा जन्म भारती की सिथता गाना के दर्ग ^{होत}

हित कुत में विश् सेंठ देवकर में हमा। मुहिनने

द्या दिवाह निये थे पर इतके नोई सन्तार तरी हैं

ये बड़े दिनागी, सदार, तुन्त भित्राच एरं व्यन्त

ब्रहाँड के पुरुष थे। सनुदर करि होते के फार्गरूर

मूर्यसन एक तक्व कोटि के निग्नार भी थे। पर

बग मास्त्रर, बार्चत स्थित, स्था महून की

tt faty fee seine au maine ent viel tf

संत-साहित्य

नेखक—भी रामनाथ 'कमलाकर', राजस्थान सार्वजनिक सम्दर्भ विभाग, जञ्चर ।

मंत मानव जाति के ऐसे जगवगाते रत्न हैं जिनके मन, वाली और कर्म के दिव्य प्रकाश मे मानवता वा पथ भागोवित होता भाषा है। सन्तो नै प्राप्ते नि:स्वार्थं औवन के बादर्श से समाज के ष्ट्रदय में मोई हुई परमार्थ-परक भावना को जाएत घौर विवसित किया है। उनके मास्विक विचायों ने मानव-प्रवस्तियो को अंदा ठठा कर पशेपकार और नि.श्रीयस वी घोर उन्मय विया है। सन्तो वी सीग हितैपिछी प्रवृत्ति से मनुष्य की "बहुजन हिताय बहुजन गुलाय" जीने का संदेदा मिला है। सस्त माहित्य की सुधा ने ईंप्यां, द्वेष और मारकाट ने भरे लोग मे एक मली किया प्रान्ति के अस्टन कानन नी सृष्टि भी है, जहां भटनी हुई, प्रतादित और सतप्त धारमध्यो को जीने का सदल मिलना है। तुमनीदामजी के दावों से सन्त आस के बध की भाति दूसरी के लिए ही पनना-पूनता है। सच्चा मन्त मंनार को देता ही देता है। समार से कुछ सता नही है। महान्या गुन्दरदासभी ने सन्त की देन वे महत्त्व का प्रतिपादन किल्ना झब्छा किया है.-माबो एपरेश देत, भनी रे सील देत.

नाबी उपदेश देत, अभी रे बीख देत, भारता गृहाँद देत, भुमति हदन है। मारता दिलाई देत, आव हा अपति देन, प्रेम की प्रमीति देन प्रभवस अपन हैं। शान देन, भारत देन, सात्य दिलाइ देन, बता की कहाई देन, बता से कदन हैं। गृहादा बहन जब सत्त हुत देत नहीं, भाग अस्त नियान्तिक देशों कहा है। सकार के सतन् से तन् की घोर, प्रत्यकार में त्रकास की घोर तथा मृत्यु ने प्रमास की घोर में जाने वाली सत्त परस्पार भारत में मोट प्राचीन काव में बची घाड़ी है। ततकाणी के उराहरण सर्व प्रयम वेदिक साहित्य में उपलब्ध होने हैं। ज्या-वेद के वित्यय क्यानक सम्बन्धी मूली की घोड़ दिया जाय तो बेस साद्या ज्यानेद सत्तों की वाणी हो है। सामकंद तो ज्यानेद सं के ही मजनों का जुनाव है, जिनकी एक विशेष हम से मानपार्टियों ने क्यर निर्णव ना पर्योगी थी।

वेदों में 'एको बद्धा दिनीयो नास्ति' मर्माप् एकेरकरबाद का प्रतिपादन हुआ है। उदासना के निए उपानक एक ही बद्धा के सिन्न-प्रिन्न कर पसन्द बर सकते हैं---

> एवं सर्विष्टा बहुषा पश्चित् । प्रथ्निर्वयं सन्तरिस्वानं प्राष्ट्र ॥

वेरो वे परवान् सलवात्ती वा दूसरा आविर्धार अगवान बुद वी गायाचे से तथा तीत्रया आर्थित दक्षिण वे धीव धीर वेच्युव आर्था में सित्या है। वेद्यार्थी, बुद्द्यांची धीर वीत्या की सित्यार्थी, बुद्द्यांची धीर वीत्या की सार्थीय ही वह मुक्करों है दिलये में बार वो शांची मार्याय स्लावार्यों वो सदस बारार्थ प्रमुख हुई।

उन्हरं बर्गन की सन्वक्षणी है। जासन्वान की देन विशेष मृश्युप्ति है। यो ना प्रस्त्रान का स्थित स्थान विराण, धीरे और वरावन में निग् बर्गद विभाग है हैं, यहां नन नहिन्द ना सुबन की दुवन आधारे हुआ है। हुनि राजिन, साम द्यादयान, रुप्यदर्थी, बमनशी, बाजिद बी, स्वामी गुःरदाम, बरगुदान, नाओ बाई, दवा बाई, बर्मात

मनि रामसिंह

कीर के अध्यास में पूर्ण कोई निये हैं । सुनियी

का एवं देव पारह होता प्रकृतित हो पना है।

इरकी बाचा बररहा बर्चाट्र बाध्यहा है जो हिसी के

हुई बर्च में में हुए है। इन्हें होंगे में प्रातिपासे

um fafent utbni ft aibre fa umin :

र्दिराप्तर स्वर्गत हुई प्राप्त प्रथम प्रशासन परस्य ।।

की हॉलडों का हा सागर है ---

सर्गा ने राज्यपात की महत्त्वि में बादनी वाली में

हिर्मात मालि के ब्राह्म की ब्राह्म बराई है।

भैत हति रामिति ने ११ भी धाराम्यी में जन्म

रत से तिक्त अनुमृतियों है। इन्हीं भागा भी दरें उदार और जानगर है।

बारने जियान अबु ने को हि हुएर के बारा है

को किनगी 'तानावेती' है---

सरमवासी से पवित्र दिया था। इतकी व^{ार्}

क्योरदाम की बाली के ओड़ की मारी प्र^{मी} है।

अब सावि सेन स दे निवे, परगट विशेष प्रार्थ एक सेव संगति की, यह दुल सहात प्रात्ती

करा करों की विशेषित है सनी देश की है।

निवास करता है सितन न होते के कारण गए

सर्म को बेधने काती सुरमातिसूच्य हिंद्र होर ही?

बहुत जंबी घीर बहुत गहरी है। हाने बच्च है

दाहुरपात ने प्रेमतत्व की जो बर्चवता की हैंग

ज्यंहम तोई स्यंत्र जीरे. हम सोरें पे व नाहि तीरे ॥ इम दिसरें पैत'न दिसारें. हम दिवर पे त' न दिवारे ।। हम मुने ते दानि मिलावे. हम बिह्नु रें मूं घंगि लगावे ॥ तुम्ह भावें सी हम पे नाही, दाइ दरसन देह गुनाई ॥ दाइ सर्वतोभावेन प्रश्न की धारण में रहे-त साहिय में सेवक तेरा.

भावे करवत सिर पर सारि. भावे विकार संबद्धत साहि । किन्तु ऐसी चारणायति वे किनना धानन्द है, बादू ही इसका उत्तर देवे :---

भावै सिरि दै सुली मेरा।

प्रेम लहर की पालकी धानम बेसे धाइ । रादू लेने पीव सी, यह सुश बाद्या न जाइ ॥

रञ्जब जी

मंत दार दयाल के शिष्य एक्जन के दी संबी वीरवनावी "वाणी" और 'सर्थशी"। सब्या से दनकी सासियों ५४२० और श्रंय २४ हैं। इतनी बडी गप्या मे शायह विभी भी धन्य सन्त ने सालिया मही बड़ी। राज्यवरी ने कविल, सबैदे, धरिला मादि मनेश सुरहो में रचना वी है। इनहीं रचना मिपियतर राजस्थाती मे है बीट शत्यन्त ही सरस है। प्रतिशिक्ष सालिया कोर पर बहुत पुत्र है। सालियां उच्च बोटि वी हैं।

राम का रंग रन्थव थर जहारा कार । प्रश्न के देव मे उनकी रहता कीर जनका सर्वत्व समर्थता dair !-

राम रंगीने के रव राजी।

परम पूर्व संगि प्रात्त हमारी मयन गलित मदमाती। बाम्यो नेह नाम निर्मल में गिनत न मोनी साती ॥ इममम नहीं बहिम होई बौठी. सिर धरि करवत काती।

सब विधि मुखी राम ग्युं. राजै यह इस रीति सहाती।। जन रज्जब धन ध्यान तिहारी, बेर बेर बलि जानी अ

वयमाञी

बयनाजी नराएी के निवासी समा दादू दयान के प्रधान शिष्यों में में ये। इनका कठ बड़ा मुरीला था। इनवी ग्रुट शक्ति बडी गृहरी मी। साहित्य वी हप्टिने पद्य रचनाएं उत्हुष्ट कोटि की नहीं है किन्तु भवदान के बरलों में सर्वस्वार्शण की भावना इन्हीं बहुन बड़ी थी। बपनाजी ने दुंदाड़ी में सीचे-सादे शब्दों ने सत्य वर ऊचा निक्पण भीर यालिक के विरत का बड़ा सत्रीय विषया शिया है :-हरि धावे हो कब देशों धांगण म्हारी ह कोई सो दिन होई रै जा दिन चरणां घारै।।

बारा विलयां बोहि बिहाई रील निरामी। बिरहर्मी विनाद वरे हरि दरमन भी प्यामी॥

प्रेम ने व्यक्तार में निर का भौता करना पहता है। निरदेने पर भी प्रीतम निप बाये तो भी बचनात्री की राय से यह भीशा "मुहंगा" ही है। बचना इहि स्यौगर से टोटा मनदून माणि। शिर साटे जै हरि मिने, तब लग महरा जारिए ॥

वाजिएजी

इन बहात के इत्रव में करता का मीत तक उसहा बंध कि यह दिनी बेरन में हिन्दी का लिकार करने काने थे । तीर कमान सीर कर दुरुश तन जीत---प्रेम की धीर पृष्ट गया। बार की प्रिनेजीयोत प्राप्ताव जेगा गरहक प्राप्त हुए। । प्रोते धीरण स्टब्स में प्रोत्त धीरों पर प्रमाद हुए। ए तब कसार प्रवास की । वहां प्राप्त से धीर देश करा है। बसारण धीर देश की मिनिया र हावी रचनां धायर भाग्नणे हैं। देश की जिल्लान स्टब्सी दी साथ देशां --दी दी दीएक बोल सु मिन्दर बीड़ी।

हो हो दीएन जीव सु मन्दिर होते । जारी तेनी तेन पान नहीं घोडते । नेन पूर्वन साहद वि नावा सामगे। हरिता, मानद महें गई निमाण दुर्णा हाम को।। तित पर सामग्र नम्न न्यों यह नाल मी, तार पाना नम्योद द्वानती द्वान मी, तार पाना सम्बद्ध नम्म उत्तराति । तो निव कृप्य होर मो तथी सारमा । मेरे दे ।
यह प्रेम सद्याद्या अस्ति है सिध्य मुनिर्दे सद्द्या के प्रेम सद्याद्या अस्ति है सिध्य मुनिर्दे सद्द्या के प्रेम सद्याद्या अस्ति है । गुन्दरसानकों के अध्यक्षत्रस्य प्रति के दा रव कोई महाद क्यांति ही सामीन हो नहाता है ।
बार सीन सेर साथ बार भीन साम मेरे,
बार सीन बंद साथ बार भीन सी दिशा,
बार सीन संग ना नी बोठ प्रधान है।
बार सीन संग ना भीन सेर प्रधान है।
बार सीन संग ना भीन सेर प्रधान है।
बार सी दिशा को साथ सीन से ना मुनि है।

सोई गुल्देश जाते इत्तरी न बात है है

'नव परिणीता से'-

तुम ऋाई तो

तुम प्रार्ड तो देहरी द्वारे ग्रुज गई शहनाई, कुहुन-कुहुक कोकित कठो ने भ्वर गागर दुलकाई। कन्दिपल इस रुप सुरा को चन्क कर पादिनयां थीराई, मणिल सुपराली स्रतको से अन्यत-तक्क सक्का वार्याक्ष सिंपल स्वाप्तल से पत्को से भादकता ने ली संगडाई, अवा कुनुम से चरणा को छू मागन को माटी सुम्हाई। प्रक्ता तो हरीसगार ने कर-कर पुरुकानें निप्तराई, सरमा उदाशी की खाया को छेड़ गई नटस्ट पुरवाई, स्वम उदाशी की खाया को छेड़ गई नटस्ट पुरवाई, स्वम उदाशी की खाया को छेड़ गई नटस्ट पुरवाई, स्वम उदाशी की खाया को छेड़ गई नटस्ट पुरवाई, स्वम उदाशी की खाया को छेड़ गई नटस्ट पुरवाई, स्वम उदाशी की खाया की छेड़ गई नटस्ट पुरवाई, स्वम उदाशी की खाया की छेड़ गई नटस्ट पुरवाई, स्वम उदाशी की खाया को छेड़ गई नटस्ट पुरवाई, स्वम के स्वस्ती परती किए सामायों में संसुराई। करानी का स्वस्ती की सुनी धीरमा फिर करराई, स्वम तो स्वस्ती हार्यों फिर टग-ठप होलक पराई। क्षेगना खनके विद्वा हार्यों फिर टग-ठप होलक पराई। क्षेगना खनके विद्वा हार्यों कि तर दिवना वी बानी जगधाई।

कु. हेम एम. ए

हुम जहात्र में बाम तिहारों तुम लिल घनत न जाके । में तुम हरि जूमारि निकासो और ठोरलही पाके ॥ वरणवान प्रमुखरण तिहारी, जानत सब संसार। पेरी हंनी सी हंनी तुम्हारी, तुमहु देनु विचार।

सहन्ने बार्षे व दमाबार्षे चरागुडाननी की रिप्याणे थी। इन दोनों सन विवाजियों ने भी संत गारित्य की थीड़ीड़ की हैं। इर सहिया, बेराग उपसादन, जुमिरन स्नाटिस्टेनक संत्री पर इनकी मुन्दर रमनाएं है। राजगढ़ में मामनाथ जो १० वी स्वाधी में एक प्रीमद मंत्र हुए हैं जिल्होंने हरियम, वार्गविया, हरियोचा निवानंक प्रशाम कृष्णर सबद और बीच समयोजी दन्यों मी रचना वी बी।

श्रान्त में यनको पश्चिम करने बाती बागी है समय रचनानार इन श्रीतों के चरगों में झड़ार्यान सर्वेश करने हुन में सहसाबन प्रमय काना हूं।

पूर्वी अंचल का प्राचीन काव्य

निर्मा-चा॰ मोतिलाल गुम, राम. रा., बी. टो., वी. राम. था., राम. थार. रा. राम. वी. राम. था. (एसर) रेट पंपर वीरड मोजुरूट विवार्टरेट स्म हिस्से, थी. महारावस्त्रार साथेष, भी सा साहित्य में इस प्रकार की पुस्तकें बहुत ही कम मिलती हैं।

२. यलभद्र के शिखनल पर मनीराम की टीका--हिन्दी संसार प्रायः यही जानता रहा कि दलभद्र पर सबसे प्रथम टीका गोपाल कवि द्वारा सं०१ ८६१ वि० मे हुई। विस्तृ हमारी स्रोज मे भिलीयहटी वासिद्ध करती है कि गोपाल विवि की टीका में संगक्षण ४० वर्ष पहने हो स० १०४२ में मनीराम कवि द्वारा इस ग्रन्थ-शल की टीका की जा दवी थी-

घट्टाइस ध्यालीस में संबत सर्वासर माम । **रू**च्या पक्ष पार्चे सुतिबि मोभवार परगास ॥

विवि मनीराम की इस टीका की ही बलगढ़

के शिलनाय पर प्रथम टीका मानना चाहिए । वयन विजास—हिन्दी संसार में यह माना जाता रहा है कि देव विवि सनाद्य बाह्य से। हिन्दी साहित्य के प्राय: सभी इतिहाली में इसी बात शासमर्थन किया गया है। विच्नु बल्लावर्रागहजी के ब्राधित वृद्धि भोगीलाल की इस पुरतक से सिद्ध होता है नि देव वृति बाध्यवस्त्र बाह्यल थे. समाद्य मही।

बास्यय गोत्र डिवेडि कृत कान्यवस्त्र कमनीय। देवदल वृद्धि जगत में अये देव श्वराधिया।

 प्रेम रतनागर—राजनुमार रतनपात के भाश्रित देशोदान का निस्ता यह सन्य श्रीम की व्याच्या ११ने गुन्दर बीर वैज्ञानिक इय में करता है कि देवकर धारवर्ष विका होता पहला है। माधारणनया इस प्रवाह के बांच औ हिन्दी साहिन्छ में नहीं मिलते । 'नवीन' का 'नेह-निदान' की कुछ रनी प्रदार का यथ है। यो स के स्वरूप का सन्दर भौर गोराहरण बिरनेयण इस बबार के कीने बांबो 🗏 ही भिर्मनश्ताहै। इसको बाव नश्लो बे---- 'श्रोम को निरुप', 'मीन हैस कादि की प्रेम' तया धन्य धनेक उदाहरण हुप्टब्य हैं।

श्र विचित्र राभायम्—बनदेव वैश्य (संदेन-वाल) जृत यह रामायण वास्तव मे विवित्र है। बालकाण्ड तथा उत्तरकाण्ड के दार्शनिक प्रमंगी की निनात कर येथ क्या का विभाजन १४ मंदीं मे विया गया है। इस ग्रन्थ में कास्य भीर क्या दोनों की प्रतिका मिनती है। स्त्रान-स्थान पर केशव बाभी स्मरण हो बाता है। प्रकृति वर्णन इस बाव्य की एक बीर विशेषता है। ग्रंड कान्य की हुट्टि से यह पुस्तक एक उच्च स्थान की पधिवारियों है।

६. राधामगञ्ज-पार्वती मंगन, जाननी मंगर लचा रशिमणी संगर के नाम को मने बारे हैं दिन्दु बत्स्य के वृति गुनाई रामनारावण ने राधा मंगन उपस्पित करके राधा धौर कृष्णा का विवाह भी विधि विधान से करा दिया है। इस पुरतक में बरुपना का घरसूर प्रयोग है और पन की विवाह पद्धति का सुध्य तथा समीप विकरण किर दूधामानी करवाई । बुहुन की मुंठन बुहुन सवाई ।

ঘৰণা

पूरी तरकारी पातरि भारी बौर नृहारी भाग बनी | बाधी यन प्यारी माय तुम्हारी देनी द्वारी बात बती। थादि को स्थानीय रनिक ही समझ सकेंने 1

७, विरवर विलाम-नवि उत्तवसम निनित्त बह एवं ऐना मन्दर प्रत्य है जिसम शाम के एत्य को बनाने के नाय-नाथ प्रकृति का एक सर्वाप किथ भी उपन्यत विया यदा है। येना बन्दून होते सरता है जैने वृद्धि ने पर्वत, मरोवर, बूल, रह धारि सभी को चैन्ता अक्षत कर दो हो । राज प्रमय द्वारा तो बब वी मोताओं का एक समाना वंध बाता है।

पूर्वी ऋंचल का प्राचीन काव्य

रेयर-- ३० मोनीनान मुप्त, रम. ए., बी. टी., बी. रख. बी., रम. मार. ए. एस. रम. धे. र ("पर्न) हें का विन्दं में जरह विवार्टमेंट इस हिस्से, श्री महाराज्यमार गार्थन, रेपी

रीरापान के पूर्वी बांचन में में 'सत्स्य प्रदेश' को मस्मितित कर रहा है। विसाद सामस्यान बनने में पूर्व बनरस, बरतपुर, बीनपुर भीर करीनी चार रिवालनों में निमित 'मास्य प्रदेश' नाम का एक संघ का, कुन ही दिनों परवात यह संघ राज-राहर का एर म'ता बन स्वाः सैने काली सीप का रिचय इसी प्रदेश के हस्तानिनित्र साहित्य की िला और मत १७१० में मन १६०० के बीच रिण रण्डा पर याना स्थान नेन्द्रित स्था। रामहो बरी साधन थी, निन्तु उसने बुध ही सोध का जायीम कर गका, बीर जमी का एक मंशिया विवरण करी प्रास्तित कर कर है।

मीर में मिरे बन्धी के मामार पर करा जा ररण है दि दम प्रदेश में माहित्यदश्य प्रायः रण्यात्रिक दे। इत्यात् पुण्य सी वेषण भोगी से धीर हुए पुरस्ता बार्ट ने कहें ये जान पास्ट दा, १ वे रिक्टो चकारे थे । यह अपन सामनी परेसी रिकार रजावन नदा उसके विकास संवासाधी र कृत हत्त्व प्रशास महीराज्यामी में प्रमुखनः के प्राप्त के के कार्य के क्षेत्र के के के किए की हैं, के ह इंग्यू देश्य (१ इत्याप), वस्त्रत्य सण्यु सम्मू कार के का प्राप्त शाहर शहर राजात), वीवाह सामान स इ. १ करण कार्य का नवान वाल, शहर-या के र न या किए करि देव काम्पर, हो ए the and program that free are ६ के दुवरा के उन्हें तहह ते के व्याप्त स्वर्ध e seed to a seed and a seed and a seed and a

परिवार के सीग स्वयं भी की के भरतपुर के महाराज बन्देशिंट, धनार है एन बस्तावरसिंह और विनयमिंह, महावर है ए मलीबस्य, करौनी के राजरुमार रणागा भरतपुर की महारानी प्रमुखीर प्रा'र !? माहित्यकार थे । चुछ सात्राणे को स्थाप⁶ । बारे में यह बहा जा सनता है कि शांश है" राजाओं द्वारा होना बहुत बड़ित है, सरा है उनके बाधिए बनियों में उस एक गयों है। रिन्ध धारने धाधयदाता के नाम वर करणा है हमारा यह मनुगान उन रचनामो की उत्तर^{ात है} नारमा ही है बौर इने हम बनुना नान है हैं चारते हैं बयोकि राजायों से भी एक मनी कर द्वार ही सकते हैं और पुराकों थे की वर्गार " हैं जनकी जोशा भी नहीं की कालगों। ^{हा} मार राता ने साय नहीं जा नगी है ^(६ रा) बरेग के राजाओं के रूपा तथा करता करता है मोर बहुत ध्यात दिया। बी सारित है

अगने से कुछ गुरुषों का प्रति कर रणही १ वरण भन्ति सम स्म ^{सम स} मुख्यम के समय के रिकार के रिकार ar am m dangs, earl to be per desait Bad as nat-

मर्वे इव पुरस्कार नरेव^{त हमे}र सरे गरेरा कार को दर मार मारा वार् नव्या साम दोर रा र स

की रशक्ता अस्य अञ्चल कृत बर कहीं

माहित्य में इस प्रकार की पुस्तकें बहुत ही कम मिनती हैं।

२. यह्नप्रदू के शिखनाक पर मनीशंभ की टीका—िहनी संनार प्रायः यहाँ जानना एता कि बनमद पर मन्त्रे प्रथम टीना प्रोयान विद्व द्वारा सं० १०६१ वि० मे हुई। विन्तु हुमाशे लोज में मिनी यह टीका निद्व करती है कि गोपान कवि को टीका में सप्तम्य ५० वर्ष पहले हो म० १८५२ में मनीराम विद्व द्वारा इन यन्य-परन की टीका की बा हुदी थी-

धप्टाइस व्यातीम ये संवत समसिर माम । हृष्या पक्ष पार्चे मुतिथि सोमवार परमास ।।

विति सभीराम को इस टीका को ही बलसङ्ग के शिलनात पर प्रथम टीका मानना चाहिए।

३. वयन विचास—हिन्दी सलाद के यह माना जाता रहा है कि देव विच तनाव्य बाह्यण थे। दिन्दी माहित्य के जाय. तभी दितहमों में एठी बान वा नमर्थन दिया नया है। किन्तु बलावचानित्त्वी के माहित विच भीतीनाल भी रण पुस्तक से विद्ध होता है कि देव विव बायवपुरूत बाह्यल के, तवाव्य तिहास के विवास के विद्यालय के, तवाव्य तिहास के विवास के विवास के विद्यालय के, तवाव्य तिहास के विवास के विवास के विवास के विद्यालय के, तवाव्य तिहास के विवास के विवा

कारयप ग्रीत डिदेदि शुन कान्यपुरन कमनीय । देवदल कवि जगत में भये देव दक्तीय ॥

'ग्रेम को निरूप', 'मीन हंस धादि को प्रेम' तथा धन्य धनेक उदाहरता ह्य्टब्य हैं।

१ त्रिचित्र द्रामायशु—सनदेव संत्रम (तंदेव-वान) कृत यह रामायशु वास्तव में तिबित्र है। बातनाण्ड तथा उत्तरकाष्ट्र के वार्मित्र प्रमंगों की तिवान कर योप तथा का विमानन १५ मंदीमें क्यिम गया है। इस प्रत्य में काल्य मीर क्या दीनों की प्रतिका निन्तती है। स्वान—स्थान पर देशव का मी स्मम्य हो माना है। प्रवृति वर्णात इस बाव्य की एक भीर विसेषता है। युढ काल्य की इस्टि में यह प्रयुक्त एक उच्च स्थान की प्रविकारिती है।

६. राजासग्रास-व्यक्ती मंगन, जानगी मंगन तथा रिसमणी मंगन के नास तो पुने जाने हैं हिन्दु स्वत्य के नहीं दुवाई रामतारावण ने रामा मान उत्तरियत करके राशा और इच्छा का विशाह भी विधि विधास से क्या दिया है। इस गुम्मक में क्यान का सह्चन प्रयोग है और यह में विशाह प्रदेशित वा गुरुस तथा नजीर विकल्प किर हुथानानी करवाई। युट्टन की मूंटन युट्टन नगाई।

- स्व

पूडी तरवारी पानरि आसे और मुहारी भान पनी | बापो धन प्यारी मान नुस्हारी बेनी वार्ग भान बंगी | आदि को स्थानीय स्थित ही समझ सम्बंद ।

७. शिरवर विसाय—स्वीत उत्पराम निविध् सह एक ऐसा मुखर बन्त है दिनमें साम के स्ट्रम्य की बेगाने के माय-माय बहुरि का एक महीस विश्व की उत्पित्त विस्ता बहारी है। ऐसा समुख होने नाता है जैन करिने पर्तन, मरोस्स, कुछ, इस साहि सभी को बेगना बहार कर से हो। साम जम्म हारा तो बड़ की मीताओं का एक तमा बैंद जाता तो बड़ की मीताओं का एक तमा बैंद्र जाता तै। पनित राग रम रमिक्ट निरोमिन,

नागर नगपर नंद विसीर । विरक्त पटन पीन पट अंचन,

मंगन बरन बना बन धीर ।

द राज-करता नाटक, हन्यान नाटक, फरिरावरा क्य क्या-न्ये मीन उदयसम हारा निवित्र 'साइक' को यह है। इनको वैने को नाइक

मानने ये ग्रेकीच होता है किया दलमें को सक्रियता भीर गाँउ पाई जाती है उसने भाषार पर हम इतने नाम की सार्यकता पर स्थान देसकी है। दी दुवरी प्रध्न-साथ के सारव मात्र में तो कोई समृत्रित कात मुझे होती। इन माइको पर शंक्ष के बादकों को सहया है और दिन्ही में एक

मृत्युद्र प्रयोग है। हिन्दी के नाइक नाहित्य पर बाद करने को दिहातों का इन बीर भी स्थात Hand staged &

 अन्य द्याल-इत पुरुष को नाव लक्ष्य की बहु सबने हैं। साम तायण विदिश को लक्ष्म का कर्णन है । इस प्रान्त की निवि परय हिर्दिक है : योच प्रकार के नहीं थें, योच विवृद्धिका वे विके के बाले का निर्माण करते

का क्षेत्र दिशाय कि ह मधान कुन् बूधे। प्रापत दिया र रूप है। अस्परिक्षित संदर्भ) ही हैंदरि भी हरित है इन क् प्रशास बारता भागता । इसके दल दल्य · fielger unt malfe vor # jmit mit mit alle a ge alte a l'agre fect à locat feets l'aten te f vernit tone ne meter ube

मा । बा बन्दर प्राप्त स्थाप के स्थल विद्या स्थापी । केन्द्र कुल रिक्स कर्नन हाई रिन्टल हैन

en eine wire wie nort mit -

इतिहास प्रधान ये दोनों बीर बाग्य दा है विशेषता है। 'सुजान चरित' प्रशक्ति हो हुए है भीर 'प्रजाप रामो' राजस्थान पुरात्त्व मेरिर र'ट मेरे संपादन में प्रकाशित होने को है। इर रो काम्मों में उन्य कोटि की जीस्ता के दर्तन हो है[?] ही हैं साय ही इनमें योगित प्रायः सभी काण् भ्यति, तिथियो सादि इतिहान इति प्रयोग है। मेनामी की संस्थाएं भी ठीक ठीक हो हो है।

११. महाभारत, रामायत मारि के बनुगर-दानी बडी पुन्तको का महानद करता करें नाबारण बाव नहीं है कीर बागामय पुत्रता वे अनुसार करतर तो भीर भी कड़ित होता है। इत प्राप्त के कदियों और पाने प्राप्तार गर्वो का उपलाह देनिए हि इन की की इन्हें हा है समुबार सरम पत में उपस्थित बर दिया।

१२. भाषा-भूषण की हीशा--वावाणा को कई दीवामी के नाम मिनते हैं। है। मी बद की, प्रशासकारिको, दुशद की की दिनी क्षिती क्षत्र पर बारवरायीचा विरद्धिक को रांच का अन्य अही विषया। या हीता के इन्यासिना क्षीत विद्वालतः को देलकर परित पर जन्म प्रशुप्त है। तृष्ट ही प्रदानुसार सार्वजन-१९ ही सा म मार्गद्दा है 417 42 person \$1,87,27, 240 and all क्षीत क्षात्रकृति मुक्त मार्गान् करते हात्र सरवायः वर्ष है। हे बाबार का कारत सात हो अहर कवा कारते बर बान भी बन्त है है । प्राथित राम बनान ना feetfen giet ab ab un far bar 4 ch 45 2 1

THE BUTTON MY MYCH, HEET BYE

wite all present a till t

राजस्थानी लोकगीत

लेखिका-लक्ष्मोकुमारी चूडावत

स्त्रोक साहित्य जन-जीवन का दर्गेण है। जन मानत को प्रावतियाँ, सावनामी तथा वटकामी का स्त्रष्ट प्रतिविध्य लोक साहित्य ने जनगाना पड़ना है। जन समाज ने सन्ते हुट्य के समस्त एक और पीडा को बढेत कर लोक साहित्य से भर दिया है।

कोटि-नोटि मानव ने सपनी सदुपूर्वत धोर सिमयिक्ति को महर-पार्टि हे लोक लाहित्य की पत्ना की। जन मानत ने बही कहा जो जन-जीवन में है। सपनी बामनामां की दिशाया गरि, इप्लाभी की दवाया नहीं धौर न नि मानत की सावक्ष समाया। जो बाहा, जो समझ रण्ट पांधी में बहु दिया। जो महुसूत किया जो बिशा मिनक के सप्तता में पार्टि कहा। मानता की दुर्वनताओं की भी साहत के साय स्वीकार किया। रहम्य वा पार्टि को सावक्ष स्वाधित की साहित्य के सीमें से सदियों से मानव प्रयोग मनोभायों के प्रतिकृत्व देखता सा रहा है। गरी भोक साहित्य की

यों तो दिरव भर वे नातव वे स्तोभाव रूपाएँ, पावांतायें और वाभगायें एव ती होनी है। राग, दिराग, पूछा और अंग नाथी थे है। निमने पर सभी वी धार्थ मेंहाजू में सबस पूर्ट है तथा विश्वदें पर सभी के नाम रीवे हैं। उनस पर धार्मान्य होना पूर्व हुत्स से हिल्म होना भी माजव बीदन वा धंग है। भिन्न र देश एवं प्रदेश ना भोव धार्मिय, गोवसामन दी हुत्स साहनायों वे नृतद भीते परी बी भिन्न र क्यों से सीनमा है। बेंगा वि उपर बहा परा है वि मोब धार्मिय उन-क्यंत का दर्पण है। जन-जीवन के कर्मच्य जीवन में जो परिमिपतियां धाती हैं, उनमें उत्तम्न न जिनाह्यां धावार-विकार प्रवृति प्रदर्श मुक्तिमामां तथा दुर्ति-न्याधां की प्रशृति धौर धिंत्रचित्त मोत्त साहित्य मं स्वतः समाविष्ट होती रहती है। प्रयेक्त प्रदेश की भोगोलिक निपति, वहां की रहन-सहन, ऐतिहा-निक तथा धार्मिक परन्यायाँ, वहां के मोक्त जीवन यं विदायन्द प्रवृत्त को भाषनायों को मूर्त हुन है।

राजरवान की बानी विशिध्द ऐतिहानिक परम्परायें रही हैं। बाताब्दियों तक पुरुष तनवार भी धार से धौर स्त्रियां जौहर भी ज्याना ने नीतनी पति । यहां के जन साहित्य में भोज, बीरता भीर बिनदान की भावनायों का सर्वोत्तरी शोना उचित्र ही है। जन जातियों में भीत बाता विशिष्ट स्थान रखते हैं। सुवनों के सरालार बाजमणी में मेबाड वी रक्षा करने में इनका महत्त्वपूर्ण योग रहा है। इन्होंने क्षरनी बादनायों को लोक साहित्य में बाद वा रूप दिया है। यद होता है। भीव नी से बी वर्षा वर यहे हैं। भीतनिया सैवडों की गरायना पट्टेबाडी है। वे छुटे हुए तीयों की बुन बुतकर, भोनियो में पत्थर भर-भरकर भीनतीरी को न बावर देशी रहती है। ऐसे हमय उनके हरप पटन पर अवित हो जाते हैं। उन अवस्तों की बाद दिना ऑननिया भीनों को या बाहर उप्तारित करती ग्हर्ना है। ब्रास्त्रची दिनार के सरनाव बहादर भीको की भीकतिया जब महती से बाड़ी है. हच्य 924 3541 F ---

हो रंगीया मीन जो मोनबी की हुटी मानडी सिरदार्थ से द्वा सेन हो रंदीना बीनबी - ... रंगीने भीन, यहां माउडा ने की मन्दार काटने है। हमें तो मेबार के पहाओं में से बनी। पार्वत्य

बीरश की बाद की में का बारे हैं

PROPERTY AND INC.

मानविये ग्हांने मांखर सारे,

द्रंगरिया से बात रंगीना भीत जी

प्रदेश के नाम १ मेजाह के पहाड़ों से उनका बंध परगरानत मीत, बिर चन पहाडों के नाय-नाथ

मागर भरा है । परेन, राजा बनने को प्राती हैं।

धक्ति बमाकरसो थी। येसः सनोः कर

मॉयने सने ये। पटेस, तुम 'मारे आपोने। ही

तुम सारै वाशोवे। इस समय तो तुम्हारे पिर

बन्देगी हजा में भीने सा रही है। तुम्हारा

ऊँपा है। पर हमारे हाप से युद्ध में बारे जाने

देशने नहीं, यह राखाओं 🕶 देश मेशाह है। 🕫

पर अंचे र जनके मुरोने हैं भीर मीचे वीनी

को सोट दो, धारना पुराति। संवा तेरीका सम्मानी । इसी वें तुम्हारा कायश है । एश का के नातच में तुम हमारे हाप में मारे बामेंगे।

थीरस्पती राजस्पान सोक साहित्य थे पण पण पर उत्तर प्रेम की गामाधी घीर गीती का मिलना नितान्त स्वामायिक है। यहां के बन साहित्य का दाता है:—

"मारू पारे देश मे, नीयने तीन रतन, एक दोनो, दूनो मालएा, तीनो क्यूमन रंग।"

इस देश मे तो तीन रत्न पैदा होने हैं—सब्बा प्रेमी, प्रेमिया और तीमरा क्यूमल रंग जो बीरत्य भीर प्रेम का प्रतीक है।

सूमन के मारक सीन्दर्य की मुपन्य में समूचा राजस्थान महक उठा था। वन्तर में के दुनुभ की सूमन को प्राप्त करने को में के हृद्य कियन हो उठे। महेल के बीरान बारेद गाँध पर मक की उन पहुंचे मुन्दर्य का हृद्य रीक्ष मध्या। सूमन कोंट महेलू की प्रस्प गाया को कोंटि र कंठों ने गाया। किया यहे हुए सदियों से राजस्थान खाड भी उसी नेहें कोंद उमंग से गाया है। इन लोक शीख की स्मित में हैं वांदिया नारा है। मुनने वाना आहुक हृद्य विर मुनने काता है।

नाळी रे नाळी बाजिळ्या थी रेक्सी रे हाँ भी नाळीशे बांग्ळ से समर्थ बोजळी ग्रासी बस्मा री प्रमन हामें नी सानीजा रेटेल ग्रामी मूमन मायनियो रे केट नूं हो जी बरियों तो राज्या नूमन देलडा ग्रासी जय मीठी मूनन हानें नी सानीजा रेटेल सीतहत्ती मूमन रो सालय नाळेळ अनूं हां भी नेशहता मारेथी या बालय नाळेळ ग्रासी ज्या स्तानी मूमन हानें नी सम्प्राण रेटेल नावस्ती मूमन यो साला यी सार ज्यूं हांग्री सामग्रस्था प्रमाण ये साला ज्यूं हांग्री सामग्रस्था प्रमाण ये साला ज्यूं हांग्री सामग्रस्था प्रमाण यो साला या साला ज्यूं म्हारी वापरत नर मुसन हाते वी रमीता रे देस होठहना मूलन हा रेसिमयां तार ज्यू हा जो रे साहहना बनळदंती रा दाइम बीज ज्यू म्हारी हरियाळी ए मूलन हाने नी रिसेवा रे देस पेटबली मूलन रो पीयळिये रो पान ज्यू हाजो रे हिवहतो मूलन रो सीने बानियो म्हारी नायुक्को मूलन हाते नी धनराज़ी रे देस जाववली मूलन को देवळिया गा पंत्र ज्यू होनी बावळहो गरीठी पीढी पानळी म्हारी माडोची मूलन हाते नी धनराज़ी रे देस बीहे रे मूलनवी ए नोडवाज़े रे देस में हाजी रे वाला रे मूलन हाते नी धनराज़ी रे देस में

प्रकृति देवी इस प्रदेश से विशेष प्रसम्म नहीं रही। एक धोर बाजुनायय घनन्त मह नागर दूसरे छोर पर बधावनी की पक्षीनी पहाडियां । यहां का जन जीवन वटीर थमनाध्य रहा है। यहां के पूर्य वर्ष को व्यवसाय के निवित्त और यह की चाहरी वे विशेष कर बाहर ही रहता पत्ना। पीछे ने दिर-इलियो ने प्रशानी पति की बाद में, उन्हें द्वरानम्ब देने शीध वर था जाने की विननी करने हुए न बाने शितना साहित्य रच शाता । शोर्यराल सक वियोगियन से जनते हुए घपने मानम की समन्त वयर स्पृति और विक पीश की मोहगीनों में भर बर बन्त और शिव की ब्रंट वे पैती छी और विवाती हो। इसी बबाद धौर मार्यपट एक नै दश के लोक्टीओं को वर्डीयक बना दिया और उनमें हृदर को किमोडिए करने की धन्ति भर दी। किर-हिंगी को ब्राप्त बाना है । किन्ता नन्दर बीर स्वा-मारित विवाह है उनका-

हजन-जना

रतो हो मादी सस्य मुत्रवरहो जी म्हारा राज ।

'इंडरो हो मोडम्यो मोरी रा पांव रो जी

उनामें देग्या मंत्रदती ने बाउता जी

ोर्टमाचै पचरंग ए जी पान भिनवत एजी समाप

त्ता में मीमी प्याची प्रेम से जी शक्त मोबरम्यों भेदर जो से मबदी जी

ोई येळी ठमत्रो एकी एकेव ोरी है बांगल शहरों कुछ वियो जी

रीपरी बाधी अंबरती टाल में जी

पता स्थारया माण्डी मेर हैं औ

गम तथ में को भी रवें में बढ़ संद्रा की

कार्र भोग्या बाग स बजर विश्वास

लॉब्ट्र का से बीवनलंड की औ

हर प्रश्ने संस्कृति हो।

a Law and meet to any

mint diret mig ab

ar derd weren beneite

ie wieriger Inmag

48 | 4 | 4 | 6 | 4 | 4 | 85 | 4 | 4 | 4 | 4 |

क नदा दापाण सूच वर्ष औ

A Derfemant area

। हिन्द बहरी बबनहरू

पीर का घनत्व

-श्रीयती रेगा वर्षा

रामदुरी, रामग्यः, रिप

यह पास की साती पड़ी देसों

मीन हैं जैसे कि इसको बास हो से सामियन

मृग वी भोशा हो

मह-सदन में भर बार्ट मौते हैं घीर नीने

मारवेट मे प्रापान-धानियाँ हो वैमे वाज

हो चाने मेर

कि जाने कीन 'हारर' है

वंता भी होते ही ?

पोटा भी विक्ती ही होती है

मीर पान के रमरे में

मध्यपन, मध्यापन की ध्वतिगाँ है

'सभी' का परन्य करा होता है

एर बान है सिरम् उत्तर है

रेपप है मौता

mer bieft dierrift

पहेंचीर देव बता हो है

97 47 27 3

mar prairie fe fe fit

13 for gent ent 1

*: *** * * * * * * *

10 p (*** 4** * *

राजस्थानी साहित्य : परम्परा और प्रगति

श्री रावत सारस्वतः, रुंपाइकः, मरुवालीः, मीरामार्गः, बनीपार्कः, जयपुर ।

राजस्यानी साहित्य की परम्परा का बादि सूत्र सगभग एक हजार वर्ष पहिले के उस अधकार यूगीन काल में द्विमा हवा है जब भपन्न शींसे देश भाषाधी का जन्म हो यहाया। सस्वामीन कतिएय जैन ग्रंथों में आचीन राजस्थनी के फूटकर इहे प्राप्त हए हैं। खौदहबी राताब्दी तक प्रारम्भ के चार पांच सी वर्षों में राजस्थान, गुजरात भीर मालका के विद्याल मुभागों से बोनी जाने वाली इस धनामदेवा लोक भाषा की विशेष उल्लेखनीय सामग्री सभी प्राप्त नहीं हो सबी है। यर पंडहबी से जलीसकी के मध्य तक की कार-पाच दालाव्हियो में पुनरात, बाठियाबाट, मारबाट, मेबाट, हुंबाट मादि विभिन्न प्रदेशों में इस भाषा के विभिन्न रूपों में विद्याल साहित्य की सुष्टि हों। गुजरात कीर राजस्थान की भाषाये इस संयुक्त परिवार से मोलहबी शताब्दी में ही पृथव होती आरम्भ हो नई षी भीर मनेक प्रकार के साम्य के रहते हुए भी मात्र गुजराती और राजस्थानी दो प्रथम आयाव है। राजन्यानी ता यह समुद्ध परिवार श्रद्धायक रूप ने वजनहत्, पंजाब और सिथ की आचाओ पर भी धपना स्पष्ट प्रमाव धोवता धावा है। राजस्थान के देशी राज्यों के धाउँजों की शासना रदीकार कर राजनैतिक हरिट से निश्चिम्तता प्राप्त की तभी से राजस्वानी साहित्य की ब्राधोतनि कारम्ब हुई, भव राजामी की न तो और योज शुनाने काले भारतो की बाबरयकता यी और व असि बाहिन्य को पहने-मुनने के ही शंतकार उनमें दह कदे थे। घंडे जो के मापूर्व में उनकी बादनीयना उन्हें कोड

रही थी और पूरे पारवात्य सम्यता मे रंगे हुए वे साहित्य और कला को प्रथम देने की सपने पूर्वजो की परम्परा भी स्थाप रहे थे। राजस्थानी भाषा भीर साहित्य का यह सुपुष्ति कान सक्तू ११३० तक प्रायः देइमी वर्षी तक वनता रहा। धनजान देशो धौर भाषाधो की स्रोज करने वाने बोरोरीय विद्वान संस्कृत साहित्य के चमत्कारों से धारपित होकर भारत की सोर भाने गुरू हुए। उसी समय वर्नन टॉड के 'राजस्यान इतिहाम' गे प्रेरित होकर देश-विदेश के पुरानत्व वैता राजस्यान की भोर भी भूते। इसी समय ने राजस्वानी के पूनर्जागराम 💶 बाल प्रारम्भ होता है, जो एक कोर रागा शामा बीर प्रनत्त की बागे कर भारतीय राष्ट्रीयता ने पुनर्मस्थापन के प्रयत्नी भीद दूमरी बोर बंदेंबी के स्वाद पर हिन्दी की प्रतिध्वापित करने के बान्दोलन से सनद होकर बानी परिधि के विस्तार में धनेक दोत्रों के स्पितियों की सम्मिन्त वर चरा या।

पानस्थानी नाहित्य वा नामिक्शन मान में मुख्य पानन के नामानाना बराज प्रधान है। जिस समय मध्य एपिया में उट्टर धारी हुई एसामी प्रतिभाग एवं के बार एक भारत के स्पृत् स्था भारतार ने नामादित हो 'वर्ष पूर्व करती हुई धा पी वी, जन नमय पानपान के राज्या मुख्ये के धार्थितन उत्था नामाना बाने करता बोर्ड इयरी धार्म कर्म करती स्थान करता करता करता करता करता करता नाहित्य पांच हो। नाहित्य के बार्य पर्म करता

श्वन-वैता

विषय सम्मितित थे । ग्रंपों की टीकर है है यम के गीत मुनने की कामना रमञाचा भीर उनके निए मुद्र भीर दान में बीरता दिसाने के निये प्रदलगीत भी रहता था। दियन का यह मुक्तियात माहित मंस्त्व माहित भी परम्परा से प्रमावित होते ही भी मारने मार में एक मनिनव प्रयोग था। राका महना मनय संद विधान भीर मसंबार शास्त्र भी दा । दिगन ना यह माहित्व वीर धीर धांत्र की की प्रवत्त भारामी में प्रवाहित हमा । आये ित के पुढ़ों में बीर रम का माहित्य सदना सहित्तरक प्रमाणित कर पुता या।

गई जिनमें बोड़ी गय तथा शेष पद वें दी। १६ मलंबार धीर बीच चंचीं वा निर्माण भी दिसारा। राजनीति के प्रमान से प्रानः प्रपृप्त है। साहित्य का स्वयन कार्य राजाबार बीर हुरान

के उपाधनों भीर भाग भंडारी को समान करण भा रहा था। साप ही राजस्थात के दूसरे म^{ीन}

के संस्ताल का कार्य भी इन भग्यारो हाए विश जा रहा था। येन निहानों के उसी प्राप्त दे*वा* राजग्यान हराविशित देव घोर वित प्रार्थ हर

शिनोद राग्य के जिस २ इहुन में सध्यापक बनकर
ए वहीं उन्होंने राज्यपानों के विविधों की नहीं पीध
एक्प की। उनकी रिष्य परम्परा में साज भी
गेनेक मध्ये किसे हैं। बीकानेन से बढ़ वह नह
गोपपुर गई जहां राजनीति के दोक से नोक भाषा
गो गहींय सान्दोनन के गीतों की वाहिनी के
ए से पहिने भी सम्मान मिन धुना था। फिर भी
एन बहर में नह रेचनायों की प्रराह्म पानि । सिर्फ भी
एन बहर में नह रेचनायों की प्रराह्म मिनी। सामु
नव काम का इहरा गुन भी भेपराज 'पुनुक' की
नैनागी' में प्रारम्भ हुमा जिनने राज्यपानी के प्रति
नगरींक प्राहन में। पुनुक में प्रेरित होकर सनेक
रोवों के वित्त सामने साए। प्रमुक का प्रेरिता सामने
साम्यान का इतिहास पा सो उनके बाद साने वाच
राज्यपान का स्वीतान पा सो उनके बाद साने वाच
राज्यपान का स्वीतान पा सो उनके बाद साने साम
राज्यपान का स्वीतान पा सो उनके बाद साने साम
राज्यपान का स्वीतान पा सो उनके बाद साने साम
राज्यपान का स्वीतान पा साम साम सामि की
राज्यपान सामि साम सामि साम
सामिय स्वावा ।

दम मापुनिकता से पूथक एक्वर आभीन राज-ग्यानी वा प्रवाह भी भंद गति में चलता रहा। मेंहे, भीत भी दायर मादि मेंद निष्कं जाने रहे। रम प्राधीनता की नया बाता परितान कोने राज-ग्यानी के प्रयाम शास्त्राध्यान कि भी बाजिन के वा बादळी का जो समार मारतीय बिजानी जाय हुए। जाने राज्यानी विवयो वा उल्लाह कह बला। दिगान में प्रेरणा केरर उपर जीधपुर में नारायणीतिह में नुग्दर रचनाएं की। नारायणीतिह से नर्वत-मेरे पुरानन का मानित्र सम्बद्ध है। उनकी भीत पुरान का मानित्र सम्बद्ध है। उनकी भीत पुरान के मानित्र का स्वस्त्र स्वस्त्र स्व स्वारन के सी को सोनकर दिन्मया। भानावार के रघुनार्थानत हाडा ने घपनी निराजी ही दहा मे मति सुन्दर रक-नाएं प्रमृत्त की। हाम्य रम के भी दुस कि माने ने माएं जिनने विपनेश नी रचनामे का ध्यंप नरा-हनीय है। 'दलतार' भीर सुमनेत ओशी की रचनार्थों मे उनके राजनैतिक जीवन का नोश मुन्तरित हुया। मनोहुर शर्मा की सपनी शेती उनके मनेक कार्यों मं ठेठ राजस्थानी जीवन की फानियां प्रमृतु। करने नगी।

बहानीकारों से मृतिकरात्र पुरिष्टित, मुरणीयर व्यान, वीतात्र कोशी, सोधार्गास्त, रातीकप्री दुनारी, हामोदर प्रमाद सार्दि सनेन नाम उल्लेबतीय हैं। सनुत्यान के देश के भी नरोसमदान स्वामी, सीता-राम सावा, स्वयस्वत्र नाहरा, बार सोतीनान सेना-रिया, वन्देयानाव सहन, सनोहर सार्ग प्रमृति विद्यानी ने राजस्वानी की विर्मेशमां की हिगी जगन ने नामने प्रमृत्य विद्या।

बाद राजस्थानी का क्षेत्र पहुंचे में कई हुन।
बाधिक किरनून है। राजस्थानी का प्रनोतन
हमने दूर एने वाले किराओं को भी भीन कानो
से बपनी घोर सार्विकत कर एहा है। राजस्थानी का
कुटन कोष कन थहा है तो भारत की मभी भागाओं
से एक स्वाहनीय करनू कर कर रहेगा। राजस्थानी
से एक साहतीय कानू कर कर रहेगा। राजस्थानी
का अविध्य कार्यन्त कर कर हो। राजस्थानी
आवाधी और सहर्ति को औत्माहन देने की बोर
कुन का भान जा एए। है बीर बाँद बहाँ गीन पहीं
ली कह दिन दूर नहीं जब पारक्षानी को बचना
कोशा क्षान करना करना।

आधुनिक राजस्थानी पद्य की प्रवृत्तियाँ

श्री भुरतिराम साकरिया, बोधपुर

परिस्थितियों के कारण राजस्थारी को देन है न्तरार और स्थम का गुन्दर मधन्या शामन्यान वि को सामी मार्ग्यानक शिक्षाच्या है। एक सोर संविधान में मान्य चौरह बाजीन भाषामें है थे स्यान नहीं मिन सका है किंगु बारी ही प्रेरीन क्षत्री राज्यात ने बयरिंडर वरिंडानो द्वारा मार्गाय के इस युग में भारती गौरपणारीत बरतारपूर रक्तकता का दीवर निरुत्तर प्राथित रहा है. राष्ट्रहित के निये मानी भागाका बांस्टा प बहु दूसरी और शाहित्य नियोग के क्षेत्र में भी राजस्यात ने घरनी किर विदेश उद्यागा वा प्रे बर बदारी दश है। हिरी माहित्य के बादिकान (बीर मारा कात) का सराया गारा ही गारित्य

चय दिमा है। दाना गर दुत होरे हरे थे थे

प्रवृत्तियों पर ही प्रकास कानना है इमितये हमारा मालोज्य कान विगत ४० वर्ष सर्वात् प्रथम महायुद्ध की समाप्ति के बाद का ही है।

(१) बीर काव्य प्रवृत्तिः—

"राजस्थान की चन्पा चन्पा मुनि वर्गापीनी है।" (रनस टाह) ऐसी बीर प्रमुता मुमि में बीर-पुजा का विरोध महत्व है। शाजस्यान में शावद ही कोई ऐसा बीर, जमार या सती हुई है, जिनकी पुष्प स्मृति में एकाथ सुन्दर गीत की रथना नही हुई हो. एकाथ दोश नही लिला गया हो । समय राजस्थानी साहित्य इस प्रवार बीद साहित्य की मलूट सान है, जिसने बायुनिक नेता पं नदन मोहन मानवीय और महावृति रवीन्द्रनाय पर मपनी समिट छाप छोड ही । भपनी इस शानदार परम्परा को राजस्थान का बाधनिक कवि पूर्ण उत्तरदायित्व से निभाये जा रहा है। साहित्य मे 'रजदट' की प्रेरका देने वाले बहाकवि सुरजमल मिथ्रण्^व के पद चिन्ही पर चलते हुये धनैवानेक परिष धौर प्रशस्ति येथो का निर्माण विधा गया है। रव॰ हिंगलाजदान बविया कुछ 'मृगया महेन्द्र' एक ऐसा ही उत्हच्ट काथ्य संब है जिसमे विव ने

बचने माथयदाता ठाकुर नैर्रावह द्वारा ततवार मे किये गये सिंह की शिकार का सुन्दर वर्णन निया है:-सर्वि सास्टूळ हावळ सबळ, जीम बबत गाथे जही । बहुकाय मैसा हूंतां विचा, चन्नम पर तब्ति पदी ।।

सोन्यास्त्रा के स्व॰ वेशरीसिंह बारहठ नै प्रतार चरिन, राजसिंह चरिन, दुर्गाशस चरिम, स्वी रानी स्रादि भनेक चरित-सम्ब्री द्वारा स्व प्रतुत्ति को पुर-बनावा है। श्री मनोहर सम्बर्ग इत 'स्पाननी की स्रात्मा' सौर श्री नारमणांत्रह आटी विरक्षित 'दुर्गाशस' जैसे प्रसारत-सम्बर्ग द्वारा सेसक्टय में इसी परम्परा को सांगे बहावा है। जाति भेर सौर क्यार्थ रहिन परस स्वामित्रक दुर्गाशान की प्रसार वर्ष ने सामुनिक युक्त-धंद से इस प्रसार गारी हैं—

वि ने बायुनिक बुक्त-दिश में इस प्रशार गायी थीरन न इती धारे हिन्नों के सामरा चारो जन बरमाऊ प्रवेच माही, विद्यान के सामरा चारो जन बरमाऊ प्रवेच माही, विद्यान के स्वीत्यों ने हिन्तों के से सम्पन्त माही ? बोबरा जुला चारा दुर्गायान ? बोबरा जुला चोकरा नुम्क सीवरा न हिन्ता हैन हम पाहिया, न हत्त्व बारस्य कारपी मांची,

१. (प्र) संसार के साहित्य मे उसका निराला स्थान है। बर्गमान काल में भारतीय मक्युवका के लिये तो उसका अध्ययन अनिवार्य होना चाहिए। —मानवीयओ

⁽द) में तो उनको (शबस्थानी बीद गीनो को) संत साहित्य से भी उन्हास्ट नममता है। "मुझे शिनिमोहन सेन महायाय में हिन्दी कास्य का प्राथान मिना था, पर पात्र तो मेंने पायी है वह बिनकुल नवीन वस्तु है। """काब मुझे माहित्य का एक नवीन मार्ग मिना है।

महावि मूरजमल के प्रमुख कार प्रत्य से हैं - (१) केशमान्वरः (२) बीर मनगर्द (३) बनवन्त विनास भीर (४) छेटीसमृख ।

यागोत-यागरा-दुर्गादास । हवं पाहिया-युद्ध में घोडों को काट निरादा । बाहवा-काटने । बाहाळी-जनवहर

महार्षां मित्रात विश्वित 'बीर गामर्ड' की एगरा को धी शाहरात सहियादिया ने बीद,

रस मेरता मामी मामीर-

थ्या ही मुध्यत बर्णन विकास है.-

गरी भोरत मागमां चंच हाळी ॥

परम्या का शबह दिस्य है । बीरता में क्षीत-

" शर्वाण्यः के द्रोर्व का इस देग्ने से सहावति

भाषी है कोड़ी नाड़ी, मीचो लेहन कन ।

दे रेट्रांटी पासमा देवी भाव बाउर !!

र्धरतामी, तथा कायशे मादि के हरमसत गुरम में का बाजी भीर गामई' से बड़ा ही विरादवर्गन गा है । धोतो का पुरस्तासक सम्ययन कीर कास्य

€जन-देश

(रेपन वेपानुसा से ही सांध्यत देव तिल बीर के रस्प्रूमि में प्रत्यात करते ही शिलास ह

न्योताहर है है

यन जाजा है:---

सच्य में रस बर बीर पानी बहती है कि दिए। वेरत वरत धारण कर और हात में शी थे

उनकी इस वेद्यापुता पर किशो ही मोर करक

यीरता का धापाय करने काना दही की

समय परिवर्तन के साथ बहिसक बीरण हारेंगे

रेए पहिंचा पर पट्टियो, ब्राइप निरोध हैंग।

जिन हैंदा पट ऊपसे बाह' बदार देवा।

यरवादि स सेवर मातुमुमि के हेनू युद्ध में पूर परे:

सीरों में प्राप्तान, होका हराव हातायों । किम हाता बुळरागा, हरवात साहां हाविया ।। निर्माद पह नवरांगा, मुक करणी मरसी विवा ।। निर्माद पह नवरांगा, मुक करणी मरसी विवा ।। सबस्य विवाद सेगा, दाने परम जिलारों दिनों । रळणों पंग्रा राह, धार्व किम तीने फता ।। पीर रस प्रवार एक बार पुत्र: हमारे नेवो के समझूव महाराला प्रवार और पुत्रवीराज राजीक के पत्रों में वर्षीयत हराव हो साकर विवाह कर दिवा है।

बन्धेयानान सेठिया ने "धानळ घोर घोषळ" मे इसी इत्य को हमारे मामने नई प्राप्त घोर नई चेनना के नाम स्वाभिमान के प्रशेष स्वय्य इस प्रवार जनाया है"—

पीषळ, के विस्ता बादळ ही,

को रोते पूर उपाळी नै।

निर्मा री हारळ सह लेहे,

बा पूर मनी कर रागळी नै।

परती रो पाणी विदे स्पी चारत री भू क बणी कोनी।

पूरत री कृंग्ण जिले,

रिती हार्गी काल मुन्ती कोनी।

सारा से तलकार करां,

भूगा श्रीव की वेट रक्षपूरी। स्थानां दे बदनी बैदशा है, द्यापा से देवेली सूती॥

(२) शष्ट्रीय धारा —एक प्रांतीय रूप के भागव में जन जागरण की वेता में राजस्थान पिस्टडारहा। उसकी समूह भावता की प्रेरणा न मिल सबी भौर उमत्री शक्ति सुन्त तथा विशृंखन रही। देशी राज्य इस मार्ग से बाधक बने । जनता दी पाटों के बीच में घुन की भाति विमक्त भी भाह न बर सक्तीची। ऐसे समय मे भिन्न २ राज्यो वे स्वापित प्रजासंहलो भीर प्रजापरिचरो ने संजीवनी मा नार्य निया । राष्ट्रीयता की वह उन्मत लहर जिसमें सारा देश प्रवाहित हो रहा था, राजस्थान ने धनेश बनिदानों से सङ्गित दोग दिया। फलस्यमप जब मारा देश स्वतन्त्र हथा तो राजस्थान की हहीग रियामतो का विश्वीनीकरण होकर एक प्राप्त का रूप धारण करना, बन्दड भारत की एक क्रांतिकारी घटना थी । स्वतन्त्रता-धान्दोलन के साथ एक भागा था महत्व भी राष्ट्रीय नेतायां घीर जनता ने समभा। परिलाम स्वरूप हिन्दी का राष्ट्रीय स्वरूप विश्वमित हमा। पर राजस्थान के नेतामों को यह भाषने में तनिक भी देरी न लगी कि यहां की अनता के पान पहचने ना माध्यम हिन्दी नहीं है। यह तो राम-श्यानी है धीर इमीलिये यहा के ब्राचनच्य नैनाधी में सर्वे थी मान्त्रिययशय वर्षा, जपनारायानु व्याम, हीराशाल ग्राप्त्री प्रमृति कवि हृदय राजनैतिक नेनायों ने राजस्थानी आया में बोल व गावर जन-जीवन में चेतना कृषी। मेशह ने दिनाती की उर्बोदित करते हुये भी क्यों ने गापाः---

वे बुरमी पर थू द्वादा में, वे दादी पर चूं बृतानाय,

⁽१) रम ऐतिहासिक मान्यता को कि पृथ्वीराज राटोड ने महारागा प्रतार को एक जिल्ला था. वर्ष रिमहासवारों ने रिनहास किरड टहणवा है। (ध) महारागा प्रतार पु॰ ११६-१११ (मिं) बांच एमंच धार चार्या। (ब) Mewar and Mughai Emperora-by Dr. Gopintus Sharma.

पूं पर्या मुनै गताम नहें, रिस्स ने नहीं उठावें जहां हाय, प्रास मीजां पर मीज चड़े, प्रास होजां पर है सामरेंग, पठावर पूंटिंगने की पमटे, मठारें पातानळ-मी भाग, पास होराजां में साव नहीं, वे सोव उडावें हैं पहचार,

व राज कराय है पहरा घर द्वा बढ़ाओं दूरतो होग्यों, बड़ी में ज है आयोगात है जार न बार सामहें,

गर्था पर लाह लोग रियांग । बेगार्वे हुम इपरो लहु बरमाग ॥

रामधार के गुण्युर्व कुख मणी थी हीशायात सामग्री में तानकारों म मायवाडी मोद निविद्य, पर स्थाद शांत कारी जामेदिरी में साथ कूंबते हुवे कड़ा :-----

लवरीन की दीवारी परेड चरा, पुरानापा निमा हिस्सारी अस्त, बढ मूं द दिनाड हिस्सा चरा, कर भाग में बाग नामारे प्राया, बृहरीमाम कराड हस्सा, बरोग बर कराज हिस्सा परं,

दिवासी सहस्ता की दूर संस्था सेरास देश गांग समाप्ता अस्ता है।

मार्थ देना बी बन मनगरामुक्तारा आहे. आंचा में में भारती के गरम्पार के बाद जिल्हामुझ की की स् भागी में भागी जिल्हामा राज्या संस्थान में बात में भी में भी जिल्हामा राज्या संस्थान में बात स्रोशेनन री साथी साई, उनहीं है बर्किट हैं सारत होड़ी संदेशें, धे बार्ग हुने हैं, गीरा बरराजा हां है, गोरा बरराजा, दमन करण सा साम सम्मानक गीरा बरराजा

महात्मा गांधी की महानता घीर पाने व वार्य का बारहरू केरारीमिंह में इस प्रकार हैं। विचा है:---

की बोर किया थी, तोई वर तहता. याथी हु में लीधी गरब, आदए से दुर्गा तो थी जरवहात जरबल ने हम बनार !---बरमा थीन करेड, वहाँ हैंगी बोनी वारी. दिस गांधी से देन, असी असीनी, बांडा

(व) प्रमानिवादी धारा--एशिव वार्ग धोर नम की कार्ति में यथान वारणामें में वा व्यादिवादी धाल्यों को बच मिना। मीधी गोवित धोर पीड़ित इचक धौर सब्दुर्ग (सी कांश प्रतिका प्रकृति धाराप को धौर हु। कांश प्रतिका प्रकृति धाराप को धौर हु। नाम सर्विका प्रकृति धाराप वार्मिय को बी स्वा 'वन्यारनमां की प्रतिकार में बां रहा 'वन्यारनमां की प्रतिकार में बां रहारान में बारिका प्रतिकार है में रहारान में बारिका प्रतिकार है में

विषा है... श्रवन्त्रन जान बाच्या दर्शन गर्ने हिंदी कृष्ण सार बद्दियां भाषी हो. सहे नाका नम्पान है है

यह स्वयं प्रस्ता कार्याः प्रदेश है कर्मा स्वर्धे हैं वे कर्मा का क्षाप्रा कार्य देवका दुवन राज्य है है है । वे कर्मा का क्षाप्रा क्षेत्र देवना सुन्ता का रह की है ।

र कार्य र प्राप्त के प्रत्यवस्थानम् व अस्य मुक्त क्षेत्र कर्य है। लाहे जरणकरताहरू हेपाक्षणहरूमा हैका रे मा वा भोळी हैंसी जिला के सरती वेळा बार्व हैं।

रे मा नागरा काळी जहर जिका बाडों में इमरत लावे हैं।

इस धुंधाधार रैबाचळ इक जोत जगे है जगमगती, प्रधार घोर बाधी प्रचण्ड,

मा घुं माथार घर घर करती। मार्चे है जर में माग तियां गढ़ कोशं बंगतां नै बहती ॥

विद्रोह का मंद्रा कहा करने हुये थी गर्नेमीनाव 'उन्हाह' भगवान धीर कि में किमानो धीर सब-दूरी की दलनीय क्या का कारण पूपने हैं— भी क्या कि मुंग किया कह से क्ष्नू 'मूनां मरित ? विद्याला है एसो म्यानो है थे, शहुर सी | ये हरजालो है, से परी कमाई सार्व सर्पर रोजन उच्छाई

बयु जग माथैश सोष्ट क्यां से वहिया

प्रगतिनाही धाय विविधे में सर्वधी भीम पहचा, त्वन मनुज देशवन, प्रमचन्द रावळ, वार्तानह भाटी, विमनेता, मूर्वतावर पारीक सादि प्रमुख है। थी भीम पब्या 'दिवन' री जोठ' में दीवक से साम्य-

प्रधान का देने को प्रार्थना करता है :— हिंदरलें पी कोण ! कि पि कुंपदिया जूं नयट उटा है ! क्यों के जूं नगा प्रपेटा महता पी कोटी पहुंचा है ! क्या जोन निरम्यण ही नीटा महता है जून कां पीठ्या है वांरी काकी नींट तोड कूँ मेतो सब नरानी रहनें । से दिवनें री जोत ! सर्वे कूँ एक सरोसी जपती रहनें ॥

(४) प्रकृति काज्य धाराः—प्रश्ति नै स्वाना सबयुंकत उत्तर दिवा है। स्वतने मच्चे सारापको को पाकर जमने सपना संदेश देशोकरत, सरानत स्वतम उत्तरे सामने रच दिवा है। उत्तमानों के नये ही रच-हारों को चहिन, नई सज्जा कोर नये सानावन ने, जब वह इन परा पर उत्तरी तो 'मेंडिया' का 'जैत-हमों प्रकृति देवी का स्वानत करने को प्रस्तुत हुमा:-

न्हारे मुख्य हो है नांची
मुत्र पुत्र साथी नीतव्यो, वे
तिनां में मेरे रिष्ण दिखा करे.
है करती शानी गीतक्यो।
धानू पी ने जीएते सीक्यो
धेव जयन से सेक्यो,
ने मिट जानी दिखा समर
है थेना एक ज्वान से सेक्डमो।

ऋति वास्य वी इस परमारा में एक से एव बहतर बास्य संग्रंद व सुनक प्रवासित हुए है। वंतिह वी 'बारहों' और पूर्म' वर्षों मेर योध्य वा व्यासपित विकरते हैं। पूर्व वेदरीयत विरोधनाओं वो स्रवित करने में वर्ति स्थापन सफल प्राहे। बह रवद हो स्थाने वीनु वेदे काल रास्त्रित में सान है, पर स्थाने ईस्सीतृ स्वास्य वी क्या के वारत स्थान स्थान स्थानी की मिनने नहीं देती!

शाप भर्ने हिरम शोद में एवं है तीनों ताह ।

^{ै.} स्यानी-धर्म बनलाना गृल्यो सुलकाना । २. क्षेत्रकानी-अंत्रको, धर्मी वृत्त । १. निर्मा-प्याना । ४. सु-प्रमियो से चलने बानी गुण्क और गर्म हवा ।

योही से तोही सनी E17-317 सूचा किसड़े स्वाह ॥ दिर भी भूत की भवंबर तस्त्र भीर उनके मन्द्रवितों द्वारा कवि ने पनूर्व क स्तार स्टारार को महत करते हुए भी कवि को है। ११४ होती में हांच्या-पुरस्ती दि । में बाता ही है बतादि में दूधों हो की बरमात कार्यक्तामें होता कृति में प्रा को बहुते द्वाती हैं बना निया है। 'सीमा' में सीमा दीतर को बाते बाकर में जिसके को हः— जुरातिक दिवनी सम्बद्ध सीट

वे राज्याम बार्वाळ्या, योगू कीराज पाय मन मुक्तां बाज) हिन्तुः , गुरुपर गरमी साज र

बागबान की बीट बांगी नवाचे राजकानी हरत को का कारणा करता है। उसके निके-राहे के पूर्व किया बीचन है, बरसा है

^{मारे} पुरुष चीन्त्री, बंग्डी बार्गळ्या ह द्वार हे दे बाहार बहु है संस्थित है।

र है, प्राचानकार व नापकार की नाजाय rie-t able faire & Bird anter bi to much about the to the family and the first हित्त हे उर सम्पन्न संबद्धि संबद्धि सम्बद्धि स्टब्स्ट स

and I till at time taking to be bein beilie 41 4472- 68 4- - [427 \$ 1 8 1781] 47 W177 the learner & m.

terraiste face telestrations Act 2 2.6 345 4.260 4.64 8.3 To you river y transfer the distance

dia giverna di erre un mesi di di the end of the manifest year.

agen. Charles de la lace de la conservación de la conservación de la conservación de la conservación de la conservac La conservación de la conservación

बहरा के महत्रहा सराहर की मह m entiten te bat debe dentem d व्यव च्या प्रवास है स्व engrant can delice 7.28 41.28 x 24, 4 24 2660 4

निरसारा बाई की मंगार घटवती वस्ती धीमी बार,

पुळकता मैला मुरमी मार ।

पर दोल्ड रमने या रही है।—

नार मु रिस्ती सांबळ हो।

भागो नीहा पर मारे हुए पोटनो है करत म ना जैह बार में बार बार हो हो

टमक मूं नाई हिच्छी बाह

उश्रह भीते हुत्री पात.

धुवानी भन्ते से धाननार ॥

यान्तः विद्यक्षादा हो सेकार, * स छ ४: छ। स संसार ।

कर मुहसारी क्या हो।

मरा हेन्य-देन सा महसार म

र्मध्या हो गई है कीर गांत की क्वी

41 9 48 18 48 82 83 448 48 3 money of \$1 to \$ 4 to the \$4 to

a mercan de la mergina de elle

मोर मोनिकता है। राजस्वान के करा-नाम में जनको प्रारमीयता है:— रोही रोहो भारतो, मेतो मोटा थार । बितार्ड में प्रान नहीं खें भीजी रो धमवार ॥ वे सोमीर्या रो देसहतो धार्ने भेजे देस-स्तेनहतों वे धरती रो रणत विशासा में

क्षीवल शो द्वाज धरेसहतो ॥

रै मन धुला ही में उठ जाली है दो नहीं है टोड टिकाली,

रे मन धुण ही में उठ जाणी।

ऐसा प्रतीत होता है मानो ज्ञान की शम-मीट-दिया में से प्रसाद बाटते हुये क्योंड कोल रहे हो ।

सन की गर्म्सारना और विद्वित्तवन की जिकार भीर पोरटकाई की उपसा क्रिक्ती कवनी है :--- नारक तो कहतो किरै, हस्तीनै हतनाक। जारी ह्वै व्हीनै कहै, हिथै निमाको राजा।

इत परम्परा में सर्वश्री धमृतनाज मापुर की
'मारावाडी गीत रामायण', मनीहर पानी की 'परा
बत्ती की धारमा', भोमराज के 'पू' या मोनी', मानेबात पहुँचेंदी की 'मराज के 'पू' या मोनी', मानेबात 'पूडमार' तथा महींद काल हुत 'पुण्येती
धादि मुन्दर पण्य है, जिजमे समाज मुगार, घोर उद्योधन मादि पर जहा एक घोर घें हु गूतियां है तो दूसरों चित्त-गंगा में तमजिजन करने की प्रका पत्ति। 'पूडसार' में उदयराज उज्जवन सामधिक चेनावती हैने हैं —

धार नियो नह घेक उत्तम पुण घंगरेत्र रो । धौगण गृह्या घनेक निरदारो नीजो समक्त ॥

भोगराज 'मंगप' दुर्जन और बाटे की तुनना बरने हुवे नहने हैं — बगड़ो देवें जाड़, मंगळ बाटो बाड रा। दर्जन बरें बिसाड, भाषो रहने मंगळा ।

शांति सम्बन्धां थी सांवेतात चतुर्वदी की मृति का स्मास्त्रास्त्र की सिंथे —

नवटी नद वा वै कई, सबो बसामें तेता। वाले २ सहक वे वई, सेवर वै नारेळ ॥

ध्याय धारेने धार य सारत धीर मुधारत दाती धीनयो ना धीपनायत हाता है। नीधी में बने चात ती वानवायत न सार भर मारे हैं, पर ध्यापनागा ने ने चात धारीना नहीं भरेंगे हुएनी धार रव्यत डोवर मनुष्य म बायुनबुन परिवर्गन ना देता है। शामचानों से प्रायस्थ में ही धाय बार्जियत बन्द रहा है, जिसमेन नेवनन धार धर्मिन ना भन्ननार स्वया धर्म सामीर्थ है। एट्ना है, पर मुख्यन सम्मा

१. रोही-जंगम । २. मोने यो धमवार-महाशामा बनाय । ३. मनेमहनो नादेगा ।

मोही में वोही मनी

E HE STATE OF A

के पूर्व ही वी बस्तात की कर की बाने बांबन के लिएने बा

क्ष्मा द्वार की मान करते हुन भी कृषि की क्ष्मा दिया है। 'सीमा' में मीना'ने

दिर भी भू की भन्दिर तस्त और जमके

पूषा किसहै जाता।

समन-नेना

र्मा की 'धरती री धून' इस दिशा में बढ़ी लोनै प्रिय ही है। श्री मनोहर शर्मा के 'कुर्जा' के अतिरिक्त ी सर्वशंबर की 'जीव समकोतरी' और 'ग्रलमाळा' भो सफलताप्राप्त की है। बहना नही होगाकि स मोर कवियो वा ध्यान मार्वायत करने मे भारत सिद्ध लोक मृत्यवार श्री देवोलान मामर वा बडा । य रहा है। सोजगीतो पर बाधारित उनके गीत ।। ह्या रंगमंत्र पर वही सफलता ने प्रदर्शित विये ाये हैं। भी सनोहर प्रभावर भीर चन्द्रसिंह राठीड वोदित गीतकार है। हमारे ये गीतकार हमें बरवम राचीन गीतो ^९ नी छोर शीचले जाने हैं, जो भारतीय तिहास की विस्मत वहियों को ओडने में बढ़े ही पामप्रद रहे। १८,००० डियल गीनो के विद्याल संग्रह के बाद भी अनेक संस्थाए और साहित्यकार इस कार्यको पूर्णमही कर सके है। राजस्थान की सम्यता, सस्तृति सौर इतिहास को समभने के लिये दनका वैज्ञानिक सध्ययन सावस्यक है।

प्रगतिकार को छोरकर विविध बारो के पबड़े में गर्दी का की कही पड़ा है। छात्रावाड, पत्रावन-बार और प्रशिवचार की एकाण क्वाना को छोड़ कर यहा विशेष प्रगति कही हुई है। नारावाण्यांक्त की 'सोभा' में छात्रावाड की हुछ भनक है को बा गर्वाई है। प्रोठ गण्यतिबंह भागि की करिता 'मिनवरणे हो बाल्ड प्रगीवचारी प्रकृति का कराहरण है।

(७) अनुवाद प्रशृति:---

(स) संस्कृत सै:---राज्यवानी से सनुवाद व टीवामी की परम्पता १४ की समादी से निरंतर वर्षी सार्फी है। परमु साम्रीत कात स सनुवाद प्रवृत्ति का प्रारंभ महाराज चतुर्सिंह की भगवर् योता समस्तोती, गंगावली टीता भौर भागीरयी, टिप्पणी में होता है। फिर तो धडाधड मनुबाद होने लगे । भगवदगीता ने चार धीर धनवाद सर्वधी हीरानान बास्त्री, रामवर्ग्य श्रामोगा, मागेनान चनुर्वेदी भौर विमनेश ने विथे हैं। दर्गा सप्तशनी' धौर 'महिम्न स्तेत्र' के सुन्दर बनुदाद थी विरघारीचान शास्त्री ने विथे हैं। महाकृति कानिदास हुए 'मैप-दन' के अब तक प्रशासित चार अनुरादी की मुदि-भूरि प्रयोगा सर्वत्र हुई है। सनुदारक है गर्यथी नारायरासिंह भाटी, मनोहर हार्मा, मनोहर प्रभावर व मांगेवान चनुवेंदी । 'रष्त्रंत' धौर 'तृमारमंभव' वे अनुवाद कवा; श्री चन्द्रसिंह और श्री दिगोर बन्यनाबात कर रहे हैं। अर्च हरि के 'श्रीगार शतक' के धनुसद का कार्य की मनीहर प्रभागर ने परा शिया है।

धन्य प्राचीन भागायां से पानी ने 'धामपार' भौर प्राचुन ने 'धाषा गन्धामी' ने मुग्दर प्रमुद्दार समग्र थी मनोहर रामा भीर मन्द्रित राजाह ने निये है।

- (स) हिन्ती में विचारित की 'पदावती', तुरती की 'वरितावती', रमवात के मकेंगे' तथा सुरदाक के कीत्रक पत्ती' और जयमंत्रक जमाद की 'बामावती' के सदुसाद कमार मर्ज थी गोमात कमा कप्पा क्यान, सीमात्रक को, मांजितह सौद देशमात कारण के महत्त्व कि में हैं।
 - (स) इतर भाषाम्यो से —महाक्षति हतीय-ताथ देवीर की 'मीताच्चती' का गुन्दर परादुक्तर समनाव क्यान ने तिया है । पार्वे से ते 'मितित'
- रै. राजस्यान भारती पूठ ७० वर्ष वे चंद्र २ दिवार गोलों ने विवाद में एक बदरोबसार स्वाहर दिया नहते हैं, 'बियान ने मीन गृद का चारिक संस्कृत माहित्य में भी नहीं है, 'मारत की मन्य भारामी' की तो बात हो बचा र माहित्य संतार को दिवल की बात बहराय देन हैं।'

में हुमकरों धौर नीकीनियों का प्रचीन एक धीर सम्बन्धेना क्या मारा को मण्डिक वा छोत्रह तो है ही, वहां इमरी कार क्यान प्रमाद बानने में इनका बढ़ा बात्तविकता तो यह है कि बीरा। भीर इंच हैंग है। व है। वेने सो नोडिन्ह्यों होट्टों में सामारणाज्या को एक ही सम्बुट में बंधकर यहां साहित्र रात्रं भीता काम होता ही है, पर बहुक बारियों को यह का मनोरंजन किया गया है। बीर रन के जुला र निराय विरोधा कर नारी है। महत्त्व व अवस्थान के निये नहीं एक बीर दौर, भवानक बादि स्ते हे माना कारावात कर की है। किरोने कडिएस कीर्यों क्यांस के मानार वर मुन्दर केमा की शिक्ष काम निवा गना है तो श्रीमार, हमन बीर हन मान मानाहरू देवारी को कारा-कमा में और रमों के बादा इन प्रेनास्थानों को मोठ पर्गाः हर्रोंक द्वारा दिस्ते में बंबाने का मसान किया है। दनश भाग रा बाळ गढर १६१६ के मयान विया गया है। बायुनिक युग में इन बसारा। है इतिम वर एक मुन्ता स्वाद है। सामगुर्वती समस्य रनाति प्राप्त कवि है शी मेचरात्र 'मुहुत', दिला' में बाद बादुबचा की देख कर उस्तीने करा वा --नेनानी विवत समर ही गई है। हुनीली र हो हरू है कायरा, आहा हरू कर क्षेत्र ह करने बोहदरम की में बहती है :-राहर हे हाला हिन्दू, मात्र म बार्च मेम ॥ बोंनी रेनेद्रागु, नाच, बाद वे मंगी वणारी राज्यान

ि राष्ट्रिक केंद्री

गलकार बनाची में जात्यू, ये बूझे वेर शंबर बन

रिपोद्यप्त हो जाने पर भी प्र'बाबन को होन है। में जो है और बहु एक विवाही को विवाही करें है

काद की हुन बर्दिया वह 'बनसार बसायाप'

to vert stir fa...

वर्मा की 'धरती री धून' इस दिशा मे बढी लोकेश्रिय रही है। थी मनोहर दार्म के 'बुर्जा' के श्रतिरिक्त श्री सर्वशंदर की 'जीव समस्रोतरी' और 'युणमाळा' में भी सफलता प्राप्त की है। बहना नहीं होगा कि इम धोर मवियो ना ध्यान धार्वायत वरने में भारत प्रसिद्ध लोक नृत्यकार थी देवी ताल मागर का बडा हाय रहा है। लोबगीत) पर शाधारित उनके गीत नाट्य रंगमंच पर बड़ी अपनता से प्रदक्षित किये गये हैं। श्री मनोहर प्रभावर धौर चन्द्रसिंह राठौड नदोदित गीतवार है। हमारे थे गीतवार हमे बरबस प्राधीन गीती । की घोर छीच ले जाते हैं, जो भारतीय इतिहास की विस्मृत कृष्टियों को ओडने से बढ़े ही लाभप्रद रहे । १८,००० हिमल भीतो के विद्याल संप्रह के बाद भी धनेक संस्थाएं छौर साहित्यकार इस वार्यको पूर्णतही वद शके है। राजस्थान की सम्बता, संरकृति धीर इतिहास को समधने के लिये रनदा वैज्ञानिक प्रध्ययन प्रावदयक है।

प्रगतिवार का लाहकर विविध कारों के पवडे में गर्द का कि नहीं पड़ा है। छायाबार, वनावन-बाद और प्रगीरवाद की एवाव पड़ा। को लाहे कर यहाँ कियेव प्रगति नहीं हुई है। नतावलाहित की 'सामा' में छायाबाद की मुद्दा भनक देखे। बा सकती है। प्रो० गएवतिबंद भड़ारी को किया 'मिनवपणे से बाढ़ प्रगीकवारी प्रवृत्ति का

(७) अनुवाद प्रदृतिः—

(क्ष) संस्कृत से --- राज्यकानी में अनुवाद ब रीनाओं वी परण्यता १४ वी जन्मारी में निस्तर वर्षी आरही है। परमुद्र आप्रतिब नाव स अनुवाद प्रवृक्ति का प्रारंभ महाराज चतुर्गिह की भगवर् गीता समस्तीकी, मगावली टीका और भागीरयी, टिप्पणी में होता है । फिर सी धडाधड मनुवाद होने लगे । भगवद्गीता के चार धौर धनुवाद सर्वधी हीरानान धाम्त्री, रामकर्ण घाषोरा, मांगेनान चनुर्वेदी भौर विमनेश ने क्रिये हैं। दुर्गासप्तशनी' भीर 'महिम्न स्तेत्र' के सुन्दर धनुवाद थी निरधारीचाच दास्थी ने विये हैं। महास्थि कानिदास का 'मेप-दत' के सब तक प्रताशित चार सन्दारी नी भूरि-भूरि प्रशंसा सर्वेत हुई है। धनुशास्त्र हैं सर्वे श्री नारायणुनिह भाटी, मनोहर शर्मा, मनोहर प्रभावर व बांगेताच चनुर्वेदी । 'रचर्चंश' घोर 'रूमारमभव' वे बनुवाद क्रमगः थी चन्द्रमिह घौर थी विगोर बन्यनाबात कर रहे हैं। अपूरित के 'शूंगार शतक' ने धनुवाद का कार्यशी मनोप्रर प्रभाकर ने पूरा शिया है।

बस्य प्राचीन भाषायों में पानी ने 'परमगद' स्रोद प्राइन ने 'पाचा नप्तानी' ने नुग्दर सनुगद समग्र थी सनोहर शर्मा स्रोद चन्त्रमिंह राजीह ने निये हैं।

- (व) हिन्दी से विद्यार्थन को 'पदावनी', पुत्रमी की 'विश्वितावनी', रमनान के गर्वेचे' तथा मुस्सान के विश्वव 'परी' धीर ज्यमानर बमाद की 'पामानती' के खुन्तार जनता नर्वे थी गोमान कुम्म बन्ता, सीयरन को, मारतीनर सीर देशवान पारत ने अपना किया है।
- (स) इतर भाषायों से —महारवि रहीलः नाथ देवार की 'पीटाश्रती' का गुलर परादृश्य रामताब स्थान ने क्या है। यह रोजे 'पिट्टा'

पारम्बान भारती पुरु ७० कर्य दे धहा च हिरान सीमी ने बियद में दक बहरोबमार सार-रिया बहुते हैं, "बियन ने भीन सहस बाज जेना सीमून माहित्य में भी नहीं है, जारत की मन्य भाषामी की मी बात हो बचा? माहित्य कराह की हरता को उस प्राप्त देते हैं।"

written in a country church pard का 'तोकतंत्र' के नाम में भी क्वितानिह चीहान सजन-वेना ने बहुवार क्या है। जबकि जमर शीमम की स्वारमी है हो हुन्दर बनुसार थी मनोहर समी व थी समर-पड़ी चाकरी पुक्त पछी वर पड़ी देवार कर पुरे है। मुरती कामण गीड़ रामनिरि का ह हिन्तासक सम्मान की हरिए में नीवे विद्ये. वनक-पुना है स्तान वेष रो निस्ता । संदर्भ हुउगह के मान उन्दर्भ दोनो में ही बिस्सी होटि जान न कर काल र्शातों की जमसीनाम' की स्वाद की जारती है। दुतार को क्लिका है कि कोनों से के किसी ने बामरा के तम प्रक बारती मान बहुई सो करे भी बाराहुराए पर स्थान म देवर आसनुसार पर एक बरम की से देगेंटी कोई यह त्या करे शं हर हिन है। विसती की बीळी हैं जा में रामांगरि मा कार करते Analest for morping in the Four of Night धीतामाम के स्टारण में जाने कळ में इव बर्हें। Has the transfer to the terms that And to I the former of Law Institute (1) a tomored to the manual to the तंत क्या सत्त्वानुह बद्दाने सामन ही हैगा करने later and का व्यासी की मुख में जोती करी भूत को कर Tring towns of Highla देश निष्ठाळी मित्यो दंड वर रायनिति मार्ग्यः वर्ड गयन तर तांह पुष्प कवा बनक मार्गी रो कर्न (41) IT BUTTO

उदू साहित्य

म्रज मोहम्मद इपितलार भलो शमीम मधीक्षक, राज्य केन्द्रीय मुहरापय, उप्पर

क्रह बात बिल्इन जाहिए है कि हर शदब के निये जबान धौर हर जबान के लिये धडब लाजिय व मलदुम चीज हैं। राजस्थान नाम है दश्रीय खुद मुखतियार रियामतो के रक्षे भीर माविका सुवे धजमेर मेरवाडा के रक्षे के मजमूर का । इस बात काभी बार साहिबान को इतम है कि हर खद मुस्तियार रियासत का जो बदीन हो या जदीद क्सि न किसी तरह मुगलिया सानदान के बादगाही में ताल्लुकरहा है भीर धनमेर तो राहाने वक्त मा जियारत गाह भी था भीर वराहेरास्त गाही दरबार से मुतास्थिक भी । जिहाजा उर्द जिनकी रबनदा दिल्ली में हुई या दक्कन ने या पुजाब ने, गारी राजधानी में राइज होने के दिन्त से राजस्यान में मुख दूर मही रही। सुधे इसी जवान ने बदव मी बाबत मुख धर्ज ब इता है । असबत्ता नामनासिब म होगा बगर पहले यह बार्ज करद कि खबान की तहरीरात गरने वालों ने धपनी बोशियों धौर ग्रांतबीन का मैदान या दिल्ली का बताकर हजरत भनीर लुनरों को उर्दुका कादा बादम माना है या गाहमहानी सम्बद्ध को जिसको उर्दु ए सुधानता कहा जाता था । इराजा हमनिनामी भरतम ने महीद त्रेराधीह वरते हुए इक्टरत महबूब इलाही सुबनान निजापुरीन सीनिया के हुक्स ने सभीर शुनरी सीर रामदेव को रगवा गुण्डीद बरार देवर न्यानिक दारी को इस महत हा सँगे बुनियाद बहार दिया है। दरवन बानों ने हजरत स्वामा सैदद मोहन्यद रैमू रराष्ट्र बन्दा नवाज के जनाने तक इसका नाह निवास है यानी हैंग्यी कीवासी सही ।

में विचा गोडे तारदीर नह सबता हु रि. राज-स्थान ने देसिसान चौर कोहिसान में पहुँ के सान मोनी तथात करने वी लेमी बादिये मेहनत नहीं वी गयी। वर्ना पुनांवन या चौर है ति बहुँ वा चौदा स्थी गरनमिन में कुटना साबिन होता या हो जाये। इन्तिये कि हम्मरत बाबा माहद मोगूल के बाता बीर नामानारीय नहास धनमेरी सा स्ट्री के जमाने के चुदुर्ग हमरा धुन्वानुस्वास्थीन ब्लास समोदित मानीरी ही सादये बचन कारनी थी चौर पुनांगी नोग दमने नामुक्तिक ये। निहास यह दुर्ग मिन सम् नामुक्तिक ये। निहास यह दुर्ग मिन सम् नामुक्तिक ये। निहास यह दुर्ग मिन स्पनं में स्वास यह स्वस्त स्पन्न स्पनं । यह दिन भी स्वस्त पह स्वस्त समस्त में। यह उर्थ भी दनस्त है।

दल दिन्नी कदर लच्यों तमहीद से मेरा सक्तर यह है कि राज्यान जिय तरह जवान के बारे में एत का सरतार हानिक तरह जवान के बारे में एत का सरतार हानिक वर मकता है, उसी तरह क्षमा उहूँ माहित्य भी बहुत पुरात है। जिसके महत्त में निर्माण का प्रति है। कि प्रति के स्थान में माहित्य का प्रति है। कि प्रति के स्थान का प्रति का प्रति के स्थान का प्रति के स्थान का प्रति का

कोर बुनाइस में मारह राग्ने वाने को बननोम है हि हिनी राज्यकानी ने पार न दी बन्ति जनको महत-बेता रकात वह करते हि यह होता सतको र स्त है। प्रताम क्षेत्रक में हमरे क्षान हिना मान परने पर श्रुमी है, जिनमें उर्' होर क्षांसारम् कुन्त्र-म क्षांसा के बाद नज्म कीर नम् के नमूरी कीदर है। मार्थ क्रिं। क्षेत्र क्रिका बारिएकाराने कार बड़ी धीर होते मादिस हिस्स टार को रण को टोर है कि पुषानी हिन्तुस्तान वार्रजा निया जाये तो करूत का करमाना व के त्युं कार का यह पत्रमा कुममा है। सब यह हो बन्ता है। बन्धेस होस्त हो देवता लड़ माहर है, ब्लीएड को बॉलड़ है मीर वहरीवन वैचार है और वजिंदाने होता । करा तक हरी बचनीवन का वालुन है हम पर भी तीनार होने बाता है कोर भागारह है ले रिशंव की जा करते हैं। इसकी समाप्त में बहती, का काम जारी है। वार १ द्वारी शहर बाह हिला के बारताव कतान हो है की कर करना या साहण कर वादिर है कि जिल्ले में मह उत्तर तो बाद है। बाद की जह तरानीवारण ह कीर देगरा सरक्षीचारचा करवेरी प्राप्त हैंने एक बरीस सागर सिनी महनर में हैं कि हैं। का पता विकास है, जो बाद तको बोद के हरता वे । वह मीर जह के बादर वे की हो हरते ।

वहिं भी है। स्तवा बीसर क्रमें - ।

स्ती तरह दिल्ली, सकतऊ, मूं ती० धौर दीगर मुकामात के कसीर राजस्थान में याये जाते हैं। पूर्व जमाना पुजरता बाधा धौर उद्व बजान माक होती गयी, रंजस्थान के दायरों के योर भी साक्षान में साक्षान जूर में दनने संगे। उद्व घटन की सब में बडी तिपन्त यह ही है धौर होनी चाहिये कि वह झासान जवान में मान फैडम हो धौर इन हास्त में पपना रंग कायम एवं। चुताचे राजस्थान के सन्द पुराने शायरों के एक-एक हो—दो सेर इन बात के सबुद से मुनाहिजा करावारों:—

- (१) मीर वाजिद सनी शयुकता कहते हैं :--रंजी गम बट जायेंगे दो चार दिन नी बात है यह भी दिन कट जायेंगे दो चार दिन की बात है
 - (२) भीनाता तस्त्रीय करणाते हैं— स्या भरीता है जिल्ह्यानी का दिन सगर से निया तो रात नहीं सपना सपना सपना दे स्वी रोना सोई हम से यह नायनान नहीं
 - (१) मीर १९८ हमन ज़बी व यत्ता— भी उस गुन के बही नगे वा चर्चा निवन धादा चमन मे साम मुंद गुन्यों वा हनना सा निवन सादा रही वे हमिसाह ने जन मे जाहिर वी मेरी चान बसोने मुद्दे में मुद्रमा सरना निवन सादा
 - (४) पेडित शिवनाव केण-निनशी मोठे जुदा है जनने केण, बाम कोई बुदा नहीं होगा। धार्दाधी नम का कमाना ताथ है कित का देता यह जमाना ताथ है (४) साहज्ज्ञामा सहयर धनी को दीनक-पत से होता है करने समादा है। दार का है बारन सनाहत है।

(६) मिर्बी माइन---बल्ताह दुरमती है बडी प्रावस के साप जाना विश्वी के दर ये किसी प्रार्ज्ज के साप स्ववादयां उठाई घोर मद्रुपा न निकला दिन के सिवा विश्वी को जब राउदा बनाया

(७) अस्तर मिर्जा अस्तर— सायद के मेहदे कि हवा प्रमको लग गयी दोवाना काम करने लगा होशियार का साई बहार आए, शुनी क्या बहार की अन्त्राम जानते हैं जो होगा बहार का

(६) आग्नुरु हुनेत धनहर--कर देने तो विया भाजा परेशां होतर
नुम पर्मेयां न करो मुझती परेशां होतर
दिन से पैकां तो कने आने हैं मेहमां होकर
दिन से धरमान निकतने नहीं पैका होकर

उर्दू साहित्य ने हिम्मए मन्य पर एक एतपार सह विया जाता है कि इसके प्रकारने मनाने को इसनो दुन बूटे सावे जाते हैं या नवाधी के भीतन से विदेशी परकान नदर माने हैं। यह ऐतपार सन हर कर तो दीर है कि ऐसा नवाधि हुआ है सगर यह कि हिन्दुस्तानी कुत्र कल और मित्रुस्तानी स्थिमी रहाज मेंने देने बॉब्स स्टिट्ट कर्म की रागवर्ते और वादिसात्र ने दुन महिल्य नाली हो कि दुन्त रुपता है। विदास सारे कोत के महुत से इस योग बाराया हुनेन साता सरहस निकार, दुनार कांग्र बोपानेर वी मक नाली नम्य से मैं तीन कर तेम सरो है कि जो उन्होंने नुक्योगन कीर शायाया पर निसी की। वहते हैं



षृजन-चेतना ||

"प्ररसिकेषु कवित्व निवेदनम्— जिरसि मा निष्त, मा निष्त, मा निष्त।"

—"મવસૃતિ"

ET.			
संद्र्य का मान पहुंचिता गीत मेरा काल - नेदी माना पित हुमैं जा की है बाठ मीत हिंत कीद मान हिंत कीद मान सामा के की हैं हैं। जाना और जाने हैं बाज बार बहारा का पुरु को का का का का का का का का का पुरु को का का का का का का का का का पुरु को का का का का का का का का मान का का का जा का	दा में देमा दीव जना दी कमानी थाँड दो मेरे हिंग ने मुक्तमे क गीन यह मेरी है मारा मा बार यीव विराज गीप दी मारा माना का प्रपान गांक वर्षा वर्षा माना का प्रपान गांक का दोग मों का देश या कमान्य दी मारा का नाम भी का दे के बात है कर वह दी परा का कमान वारा दुक्ती विकासी दिस्स यह का वर्षा वारा या कमान्य वार या कमान्य वारा या कमान्य वार या कमान्य वार या कमान्य वार या कमान्य	न सन्दर	
top.	Tr gwg		
	र्वेष्ट अपायम् रेपट विन्हत्वे अपायम्	क्षेत्रकृत्यः विद्युकृत्यः क्षेत्रकृत्यः	

TT. . TT

माननीय श्री हरिज्ञाऊ उपाध्याय, वित्त संत्री, राजस्थान, जगपुर

अनुराग कहे मधु है, रसने-बैराग्य कहे हरजा, हटजा। अनुराग विराग ये इन्द्र छिड़ा-अस कहना है बहुजा। बहुजा। असान की बाह यही जय मे-मुख साधन में सणजा, नया। पर जान पुकार कहे मन मे-प्रश्न के रग मे रगजा, रगजा।

प्रेम बहे में रस देता, बागोस है सिनती बादर ने । प्रत-पृत्तों में रस है अरना, जीवन मिनता है सामर में । तन में तन मन जब मिनता है, तब प्रेम उने सब बहुते हैं। पर जब मन ने मन जुड़ता है, तब धादर, सागर, गागर में । जब नारी नर वा जोड़ा है, रस प्रेम पृहार बरमता है। भगवान वा ध्यान रहे उनमे, भगवान है सादर बादर में । भीतो या इतना मान, ध्यान से सुन तेते, भावो का इतना मान, हृदय मे गुन तेते । मपनो का इतना मान, सुग्य जन पर होते. मह्यों का इतना मान, विवासों में मेरी।

कोई सोनो को कमी बाद कर ना लेना, भावो को कोई भाव कड़ाचित हो देना: सम्मोहन में मधने सचने हो रह जाते, कक्तनत्व सबर में उनर बरा तक मान्^{ते।}

चतुष्पदियाँ !

तम कोई तम न रहासीर त्यो त्यो नारती। एक तुम्ही तुम रहे कि सब कोई तुई न रही। मेरी हर तहैन हर तबर में बमे हो जैने। मुक्तमें जीते हो तुम्ही मेरी विज्ञान न रही।

अपूर्व माजी विरस्ता से नवत की बीधा । कृतुम-करात से बारों जे जमत जो बीधा । कृता सुरुरासी है कि जात-शूच से खरसी में । वीच-क्षीसे से खात सकते कियत से बीचा

नगरन बनवाग काजै सने स्थान से सामी। नगन्दी वर्णना नगाजै सेनी नजन से सामी। भीत साथ ना सर्गादिक सामी। बरजानी ने जानपर जैननी सन से सामी।

making print

"ਸੀਰ"

श्री ताराप्रकाश जोशी

फूनो को सौरभ का बंदी बनकर मै बीमार हो गया। बगिया बालो। मुमे छोडदो काँटो का चुम्बन करने दो।।

> संद किया है मेरे सन को शोश महल के दालानों ने। मन पर पहरेदार बिठाए शुगारों ने मुस्कानों ने।।

फिर भी मैं वेचैन बहुत हूँ मुख के सारे उपकरकों में । सब परदे हटवा दो सुभक्तो बोडा के दर्शन करने दो ।।

> घरती ने जाया है मुक्तको पाम इसी मे रज कमा के हैं। बुटियामों ने पाना सुमको पाम उन्हीं वी धडकन के हैं।।

युगो युगो में मेरे मन भे मान बहुत भेरी मिट्टी का। मोने की भूरत हटवा दो मिट्टी का पूजन करने दो।।

> मेरे गीतो के मेघी को भाज क्षितिज पर हो मन टोको। उन्हें शुमहते दो फिरने दो उन्हें बरमने से मन रोको॥ हुनियाँ का है यह मारी हुनियाँ।

मैं इस सारी दुनियाँ वा है यह वारी दुनियों मेरी है। भात्र मुने जन जन वे सन वी बाहो वा वीर्लन वरने दो॥

मेरा स्वप्न : तेरी माया

• थी शान भारित

मेरे द्वार रूप दम दिन या भीत मौगने माया, मैने मपने स्नेहन्सर्य ने उसमें प्रात्म जगाया, मेरे स्वप्न स्वप्न को मत्वं, तिवं, गुन्दरम् बोमा— मुमरो बयों मोहेगी तेरी भुवनमोहती माया ?

मरी हो सामा में ज्योतित तेरे चौद नितारे,

मृदत को हैने ही दान दिए मनना उत्तियारे,

पावर को व्यानका दी है, मानर को महराई—

मुम्मे ही करना-त्रत निक्त गए सपन करारे,

हैने ही उमें दिन जुनों की घोड तुने मीपी घी—

पर कम मान करेगी मुक्तों तेरी कंपन-सामा है

मेरी मामा का मनात नामीत सुरत में सुनितः,
युक्या, तेर त्रीम त्रीम में मेरा जीवन सुनारितः,
क्या, तेर त्रीम त्रीम में मेरा जीवन सुनारितः,
क्यान प्रतिकार प्राप्ता की त्रेसान् सोहित् युक्या, तेर जन्म जन्म की श्रीमां काही विवितः,
महित् कहतुं सीत्र सीत् के साह्य सम्हाद हो सामा त

होता कारा कावार कर,-व्यक्तिकाल साथिते,

बर पापा ते हिरायणा की, नाउप वस वासीते,

का पृद्धे प्रतिकेश वावकरणा देवस कराति
को रामा करते वार की बार कार साथिते ना पर बर नार्थिक काराकार साथिते

एक दुर्घटना की है चाह-

बहुत लम्बी जीवन की राह। एक दुर्घटना की है चाह। चला तो संग न कोई बाँह. रुका तो मिलीन झोतल छाँह बहुत सोचा, पर बनी न बात सह न पाता मस्तक भाषात लीट कर जाने कान उपाय जिन्दगी सरिता का पर्याय हमा जीवन जैसे निरुपाय न जाना जीने का ग्रभिप्राय कहाँ जाना है, मुभे न जान पन्य का ही इतना बहसान चला भाषा है इतनी दूर किन्तू घर धक कर चकनावृर कहीं बुद्ध मिल जाये विश्राम जैल, घ्रस्पताल, पागल धान सभ्यता के ये बाधादीय निम्महायो के ग्राधिक समीप रग्ए। मानवता के विद्वाम हरेगे निःचय मेरा त्राम

× × × प्रस्पतालों की सज्जा जान पृष्य, दीच्या, परिचयां मान हह रहित, पर ब्याकुल आणा हुन के मही यहां भी धारण हुन का पनीभून पाकार देयों है हाहाबार विदन्त में बोसिल यह मन

जेल का जीवन यन्त्र समान शयन, भोजन, श्रम मे भ्रवसान गरिगत ही मानव की पहिचान निराला इसका वर्ण विधान प्रिट के चागे बस दीवार ¹ लीह मम चेनन का शृंग।र जहाँ भय, सशय का व्यापार चला करता नित नये प्रकार प्रेम क्हनाना है धडयन्त्र, बारम-मुख भूल यहाँ का मन्त्र एकरमता में कृष्ठित मन कह उठा लाघों परिवर्तन पागलां की दुनिया हो भिन्न व्यक्ति में है समस्टि विविद्यन न धपना घीर पराया जान न मुग्त-दुग्र ने वेगी पहिचान तिरोहित यहाँ भेद का भाव विस्तृतन का मन में भलगाव भुनाने धावा था सन्ताप नही रहने देने चुपपाप मुने बेमुधियों में है प्यार यहां करने इमका उपचार म्लानि से स्याकुल-विच्युत मन कह उटा माद्यो परिवर्तन वहीं बाक्रें बग क्या उपाय चेतना है जैसे हर-प्राय लगाडुँ वयों न ग्रानिसो दौर **क्सिनिए क्ट्रै** व्यर्थे पद्यतात्र

वर्ग चिर शान्ति, विगत प्रवसाद गमी मिट जाने दुग्व विपाद बद चने नरमा स्वय उम धीर धीतमा चत्र मंजिल का होत निन या स्वर रैना धनमेन न पानी भूनिया जिनहीं मैन 'मनो । यह मेज गरी, स्म्यान मले से महना एक विधान उने नीज देवा कुम्बाद में माने जो माने मार मती प्राप्ती का करी प्रदेश प्राप्त के बाते का यह देश" प्रता होते. होता समितान एम यह जीवन का बाकान कौत भोत्या यह विभाग Ret um be geiftein erie wer en en en en en P-P 2" 4 12 27 28 2 121 nene yn ynverein M' 891 2 1 1171 FEE 277 And the gud said had the same of the state of era de de deserva de la compansión de la

गीत

शास्त्रिवात हमारा

पता नहीं कीतमी पड़ी धी-मेरे बीत कि जब जनमें थे. बचान में घब तक बेनारे साम-सकारे सीते गामे

नावर उम दिन गावम हो धो-याना भंधेरे में मिलती है. या फिर जनती योगहरी धी-धाने बेमी ही जाती है।

यता नहीं, यह बुरी पत्ती घी-मापद योद्या याम मही भी. मात्रन में मों मंद्र होते-में पामन, मान भिमीत यामे।

जिस्ते तमीज मती चानी ही-हे मजिल वह जा वृत्ते हैं हम जहह दिन की घड़ हो-व महिल वह जा वृत्त्ते हैं।

्रतिमा भरता सम्मान्तर है। भीते प्राप्तता की समाव है बीमात जता प्रतास करता हुए का बामा प्रतास है। प्रो० प्रकारा 'आतुर' महाराणा कानेज, उदयपुर एक बूँद अमृत की सुभे: पिपासा है,

प्यासाँ है, इमिनिये पुकारा करता है। व पतवार लहर में सो जाये,

जाने कब पतवार लहर में यो जाये. मरघट जले न कब मन के विश्वामी का?

जाने किस क्षरण मुर्का जाये प्राण कृसुम, जाने कर खुट जाय, काफिला सामो का ?

नि कर लुट जाय, काफिला कामो का ? जाने किस क्षमा नीद सपन को ग्रा आये ?

भगना जाने किस क्षण स्वय विगर जाये ? जाने किस क्षण प्रवरा जाये नयन-महिर.

जान किंग क्षण प्यरा जाय नयन-माहर, प्यामा है. इमलिये निहारा करता है। एक बूँद, ब्रमून की मुभै पिपासा है।

प्यामा है, इमिलमे पुनारा करना है।

चलने-चलने मिले न जाने कब मंजिल ? किसे पक्षा, मजिल नक चरमा न चल पासे

किस पता, साजन नक परेशा ने पता पाय किसे पता, कह कीराये मन की ममता इतने किस क्षमा मन की सुरमा छन जाये।

जाने कब श्रुंबार ध्रस्थिकर हो जाये? मन को करुण पुकार द्वारय ने यो जाये।

जाने किस पत्रभर का भीता रूप सूट ने, रूपात्र जिन्दभी मेवारा करता है।

एक यूंद, समृत की मुभे विपासा है, प्यामा है, इमलिये पुकारा करता है।

ष्यामा

प्यामा हु, इमालब युवारा करता हा ध्यान-प्रतिष्वनियों की राहो पर स्तर का पंगी,

जाने बब यक बर दलद सा गुसमुद्र हो जाये ? जाने बब सीमान्त-स्थन की परिधि साथ कर, मेरे मन का राज्जेंस, पिर कभी न धाये ।

जाने क्य पथ पर अधियारा छा जाये ? किम पना, कल सुबह किरगाहम देख न पाये ?

जाने किस बदनी का दुवडा चरित्रके ते, रह-रह बदना ऐसे दुगरा करता है। एक दूर समृत को सुने जिलासा है.

ह, दरनिये पुरास करता है।

हास तुमने वखेरा

७ श्री विप्णु सन्ना हान तमने बसेरा तनिक सा मधुर.

नांद ने पी लिया मुस्कराने संगी

गात ए कर तुम्हारा गिली पाँदनी, गीत मुनकर तुम्हारे बनी रागनी, कोविन्ता ने वहीं भून में मुन निवे ग्यर, बनो कंठ की भाग्य में बहु पनी,

रीन मंगीत को सीन की धार में, रह गया तट विचारा ठगा का ठगा ।"

कारम के मुंज की तुम धमर गन्य हो। भार के ताल में हो कमल सी लिपी। गीप की कल्पना की धुने प्रेरणा लेपनी यह क्लान है जिसे तुम सिपी।

> एक्ट के बेट बोनिक विनिधित हैं। सुद्र धनपुति विसरी सत्राने समा ।****

बाद मुमको किया यो किसी प्याप्त में, इमान निर्माण का को कि काइटम बना, बागान जिस ज्यान के सदल में हुया, का की काल को बा गई सुदेशा,

> दर्शना का गुराबसर जिसे सित गया. भक्त वन वरदना गुनगुधने गया !"

सर्गुति इत्र ना निसर की पत्नी, क्षण तेका चढ़ा ना उत्राप्ता हुसा, कृष संकृत्यद्वा ते असे नीद जब कृषका कर देसा > दिसंद्व की बहुसा,

> काज की कान की अनीताह की है। को कहें कीत कहें निवार मार्ग

कार प्रदेश क्षेत्रक क्षेत्रक का साहुर कार प्रदेश क्षेत्रक क्षेत्रक का साहुर

"त्योंहार के पल"

थी चन्द्रकुमार 'मुकुमार'

त्योहार मधन प्रमराई का, बजना केवल शहनाई का, मासों में मोरम धोल गया---फ्रोका कुछ ऐसा साया था पुरवाई का।

मप्रदेशि सपने सजा रही हैं सभवाह ।
नयनों मे पुस्ता जाता है काजल हग का—
यो गीत तुम्हारे मेरे सब नक सम्बद्धाः।
माकर कोई कोयल घुपके व कानो मे—
यह बोल गाँ है जीवन को परिभाषा में।
"दो पुम्बन सौर मिलन को प्यामी पनषट पर—
यह गागर सभी ह्योई भोगो सामान्यों।"
नो तुमने भी लजवन्ती पनक उटाई है—
यह निर्मिष् गीत को गरिसा में मिल साया है।
रन कानो कजरारी सलकरों को सुस सुमनग रहा पबन सामूर होकर बोराया है।

यह जीवन की क्षराभगुरता मुस्कानो मे-

नामो यह हाय तुम्हारा, लिखदूंगीन नया~ यह मेहदी रची हमेली फूल मूंघ लेगे। केदल दो प्रशार लिखे घौर फिर उलॐ गए~ दोनो पागल थे जैसे कूल गूंध लेगे।

> देर मूल वगारो वाई वा, मिलता भर या परछाई वा, यो विर−तृष्णा सेवर वोई— वेवटिया सामां या वेदल पहुनाई वा।

यह चाद उत्तमता बादन की मनुहारों मे-यह मदिरा पीकर म्रामा है वातान कही ? यह म्रांस मिचोनी बादतिया की मुरमुट मे पर तुम हो जाने क्यो मब तक भी पान नहीं ?

यह फिरकोई बोला है विहस दूर नेकिन-ऐसा नगता है जैसे प्रभी प्रकेता है। 'पीऊ' 'पीऊ' की टेर दर्द के कप्टों से-लगता जीवन भर प्रसारों से सेला है।

थायल हिरणी केनयनों ने फिर देला है~ धाजाय न कोई पारिधि फिर मूनेपन में। दे जाय न कोई ऐसो पीर सहन मीटी~ धुन जायन विपंसीरा केफिरननमधान में।

इन गीतो की सोगन्य तुम्हारी किस्मृति नै मेरे जोवत की स्मृतियों को देगा है। हरताल छन्द सब जैसे मेरा सपता है-पर मेरे गीत, तुम्हारे स्वर में एका है।

या जुटना सदा इकार्ट का, घट जाना पुनः दहार्द का, सच जीवन को गोपूती नक-इसना साथा है सरना मदा इन्टार्ट का !

"यूँ ही प्यास जीत जाती है" • श्री मंगल सक्सेना •

बोर्ट निजना हो बहुनाए मा कोई भी ना भारताए

> पूरी दिवस पुत्रर जाता है एँ ही रात बीत जानी है।

मुषियां गाप नहीं देती हैं, विर मीमार मही देती हैं मार भरा दिन सी दाता है. पान धमानी की नाया है, कोने बांद सो होते हैं हेर-चेंस कर मोतु कोहे है।

मात्रे सांच शिवति होते भी दालों से विस्ता को है

> उंद्राहर स्टब्स अलाहरू इ.स. १० मान असे 🎉

AAT & E. C.A. L. L.

मलकों का हर नता पराय. मेरे मान सरीवर से मन ! सेरे हंस पुगेगे जन बन !!

नैकिन क्तिना ही महुनाई ट्रुल में भर गुग ने बौरार्क

> पुँही दिया हुपन गारा सुँ ही योग भीत जाते हैं।

भावता का गरकर गरह उस पर लगा हुमा है पररा कोई इब नहीं पाता है रोति-नीति में बंध प्राता है चर बगोरनी माप एगी प्ताम बमानी सप्तर पूर्णी,

विकित शास्त्रपु है यह येता ^{लेज—देत} का कम गावेस

> वें ही हुए। हार अभारी में ही बहुत होने प्राप्त है।

मांग मत वरदान • प्रो॰ रखनीत •

खोजता जा, हार मत हिम्मत कमी मिल जायगा इंसान ? कर प्रतीक्षा, सितम सह. पर पत्थरों में मौग मत बरदान ।

जिन्दगी को मत भ्रमो मे बाल मावरण को छोड, बस्तु सभाल सत्य को मत स्वप्न मे फुंठला मत फमानो में हकोकन टाल

कर समर्पण देकर के ध्राराध्य, मन बन, जान कर ध्रजान, सोजता जा, हार मन हिम्मन कभी मिल जायना इसान ।

देख इन कठ-भुतलियो को देख धर्म जिनका मानना बादेश बाठ के तन में दवे शायद कही हो बिमी ब्यक्तित्व के ध्रवदीय

इमित्र बेहोरा कही को लगा धादाज, कर धाह्मान, स्पेत्रना जा, हार सन हिम्सन कभी मिल जायगा इसान ।

'गीत '

श्री गंगाराम 'पधिक'

चाहे जितना दर्द जमाना दे गुक्तको-फिर भी जैमा था-वैमा-का-वेमा है! तन का घोला तो हर रोज बदलता है, पर मन की तमबीर नहीं बदली जाती; जोने के लालच मे, भरते के डर-मे-घरमानो की पीर नहीं बदली जाती,

मत दो मेरा साथ-धकेला चलने दो-तुम क्या समझोगे-में क्या है, कैसा है?

काली राते भीर कटीनी राते हैं, लेकिन मजिल तो जानी पहणानी है. भूल समझतो भाई है दुनियाँ जिससो– कदम–चदम पर बाल वही दोहरानी है,

नूषानों में सहना-सेरी बादत है-बाते बाने बस का नवा-संदेगा है! बातमान में मेरा बोर्ड मेल नहीं, बाद-मिनारों में किए बड़ी मन बहुमाउँ: माटों के करण-करण में भी सहबाई है-टमको धनदेखा करने कों मुख्याई.

गामों का गौरम है-एक नरी-ना है !

प्राण तुम लौटे नहीं हो

—धीमती शादा गुपा

प्राण! तुम मीटे नहीं हो-में हजीने नयन मेरे-मेर पर उठ मुझ समें है।

दुम नहीं हो पास मेरे-ग्रांच सा सब नृह स्था है। पात सीवा सीत सन ना-पास बायन सा जगा है।

> भीट मामी प्राप्त मेरे-भीत को मात्राज दे हो। बुत जिले बेगुम क्ष्मी माज ऐसा साज दे दो। पार्टी गुम गीरे तारी जो-गुरू मार्गेर माज मेरे-साज पर सा हुन सा है। में हों। स्टूज मेरे-मान पर पर मह स्वेहै।

बाद शिवन की मान उद्देश बान प्रत्न प्राप्त जाताद के प्राप्त तवा प्रतिकृत संद्राप्त बाल कर बोल्स स्ट्राप्ट के

> त्रव पर कर में काई? है-यह रेलीवर हे तार बहा। इंडार के बार रेट्रान प्रोटे-राजा के बार बहा।

"प्राण तुम"

--श्री दयाकृष्ण 'विजय'

पतक में छियालूँ, हृदय में बसालूँ, ग्राग्द प्राप्त मुझ, स्वष्ण में भी मिलो तो। तुम्हें खोजते जन्म हारे अनेका, कहां तक कहो स्वांत के पग पखालूँ। चरणा भी यके उच्च की सीडियोग पर, कहों तक डगर को छुहालूँ, निहालूँ। तुम्हें विश्व, करुएग-मुमन कह रहा है, पक्षा चमन किन्तु बीरान मेरा? तुमन से बचालूँ,

क्षार को हटालू, पगर बोह को डाल पर तुम खिलो तो ? पगर प्राग्त तुम स्वय्य मे भी मिलो तो ?

(?)

यकी प्रंपुलियां, तार द्योते पड़े है, पुत्रा स्तेह भी, प्रारती में बचा जो, कंपा कंठ है, सांतुष्मों को अद्यो है, कुनाऊं तुम्हें किन दक्षों में बतायी। क्ष्मी रूप के गाद के भी संदेते, लगत किन्तु नुममें नगी है ह्टीनी। उपा को मनालूं, निता को सजालूं, पगर तुम मिनन के दुधारे बनो तो है

घगर शास तुम स्वयन में भी मिली नी हैं

"मुझको मेरे सिरजन पर ऋभिमान है"

• श्री वीर सक्सेना •

तुन्हे गर्व है सपने छितिया रूप पर,
सुफ्रको मेरे दरपन पर सिमान है;
इतनी कच्ची नीद नहीं मोता है मैं,
पैरो के हिस्की माहट में जगा जाड़ें,
में वह बादल नहीं, इन्द्र के इंगित पर,
तज कर सपना महन्य सपने सग जाड़ें,
तुम को सपना महन्य वसने सग जाड़ें,
तुम को सपना महन्य वसने सग जाड़ें,
सुफ्रको मेरे बचपन पर समिमान है;

तुम संद्या के घर पहुनाई करते हो,
में उगते मूरज को धर्म्य नहाता है,
तुम संदित कर देते जिन प्रतिमार्ग को,
में उनको गिहासन पर बिटनाता है,
तुम श्रदा को धर्मातत करके गुज हो,
तुम श्रदा को धरमानित करके गुज हो,
तुम श्रदा को धरमानित करके गुज हो,
सुक्रको मेरी धर्मन पर धरिमान है,

तुम बनते को पुकरे उनने बिन्हों पर, में बनने को नई सक्तरें सीच रहा; साम लगाते किरते तुम कुनवारी में-में इसको सामू के कर में मीच रहा, तुम गरिमा गाने हो सदा पुरानन की-सम्बों मेरे सिरकन पर समिमान है.

धूल सनाती है सबको ही प्यार की, उसे सम्ब कहते जो इसे दुराता है, यहां की माना जाता है सन्यासे, जो सबके मन का विकास दुराता है, सुध ध्यमच्या कहते मेरी कमनी की, समझी इस मीते पत पर ध्रमान है!

प्राण तुम लौटे नहीं हो

मारा। तुम नीई नहीं हो-—थीम हडीमें नयम मेरे-मूब मार्ग हो बाग सेहे-शर पर इड मुह गये है। राय मानव कर मा १। दार होता होते हत का-कोते बालक भा अभा है। कोड़ बाबो जाम हेरे-मीत को भागत है थी। गुन जिमें बेगुष बम् मे पात्र तेमा गात्र दे दो। याम । तुम भी सभी हो-रार गरीरे पात्र वरे-मात्र पर या कर गरे है। ह हिंदे अपन मेरmin times at still 1888 शह पर रह मह गरेह। ere ne bir bitt bette ! A 1 . W. A. A. A. A. A. A. A. A. ting de tief dant ! पत्र पर पत्र स सहरे है. at the but be acti He But langue the state and 1. C. T. T. T. S.

एक कहानी

लो कहता है एक कहानी, शायद तुम्हे पसन्द भा जाये, मुभे बहुत घच्छी लगती है तिनका-तिनका पकड़ घोंच में यमो धभी ही मये नीड़ के नए चुजन का नया-नया संतोष मिला था। षीर ग्रचानक, कूर हवाके षातो प्रतिधातो ने चाहा पक्षी की याचा-प्रभिलावा घौर नये निर्माली की क्षमना की तहम-महस कर डाले। किन्त् नोड का सजग सिपाही एक एक निवक्त ला-लाकर नये स्वन की बलिवेदी पर फिर जा बैटा फिर भंभाने उदा दिया निम्मीम गगन मे

एक एक तिनके को नन्हे पंछी की महती गुरुता का गहरा, बहुत बहुन गहरा उपहाम उद्याने । ਸੀਰ । बावला पंछी फिर तैयार हो गया। बाध शीश पर कफन म्जन की प्रसच पीर सहने की। (भीर) नाम ने भीके फिर बावे दहराने क्या पुरानो । (दुहाराई भी) विम्न स्क्रम का पुल मदा विलता ही पाया। धीर बचा चलती ही घाई. चनी जा रही, । शायद मुम्हे पमन्द सा आये मुने बहुत मच्दी मगती है

री विरामाध मचदेव

"में अपनी दिल्ली का अकवर"

^{बहुने} को पतनी मारना का एक एक बसर पढ़ डाला वेक्नि घव तक गम्भ न बावा में नावर हैं या कि पनावर

हुए दिन हमी मोज में बीने वासिर विमने मुन्दे परा है हैंग दिन भटना हमी भरम में धीती का बचार बहा है

विस पर दिशे हुई है पूर्वा धारी होत यह कोंदे से साई दोष मानः बन्ते में सही जिल्लामा कर पहुँच सुदाई

the stan the stime El & Silve me stra force & Troperer we seem Bary Jeans States

** 781 3 87 881 3 To be your war son F- 1 - 1 - 1 - 1 Server of the Assault

मंचा प्रमा वर्षन बर्भ काह सारे कर बैचन एक बाबद (ग्या) ितने भीत पत्र भर द

• 4

गैर रही यात्राज गहर पर हें इ. रहा है। सब्द हिनास विषयं रेषो ८ई हे वेरो बड़ी होग खाचा है छाता

त्रता को बेटके मध्य मध धवर-हो महताम मुरह•ह तिक यह एका आ है जा mer frag er fire freez

mera de me gulee y an de de las weers transport to the first to Face to a graye

एक कहानी

लो कहता है एक कहानी, शायद सुम्हें पसन्द झा जाये, मुभे बहुत घच्छो सगती है तिनका-तिनका पकड चोच में मभी-मभी ही नये सीड के मए स्जन का नया-नया संतोप मिला चा । भीर भ्रवानक, करू हवा के षातों प्रतियातों ने चाहा पशी की मासा-धभिलाया भौर नमें निर्माणी की क्षमना की तहस-नहस बाद डाले। किन्तु नोड का सजग सिपाही एक एक निनका ला-लाकर नये सुजन की बलिवेदी पर पिर का बैटा फिर अंभाने उद्या दिया

निस्सीम गगन मे

एक एक तिनके को नन्हे पंछी की महती गुरुता का गहरा, बहुत बहुत गहरा उपहाम उद्याने। मीत । बावला पंछी फिर तैयार हो गया। बाध चीदा पर कफन सजन की प्रसव पीर सहने की। (ग्रीर) नाम के मोके किर बाये दुहराने क्षा पुरानो । (दुहाराई भी) विन्त्र सबन का गुल मदा मिलता ही मामा । धौर क्या चलती हो माई. चर्ना जा रहे. शायद मुम्हे पमन्द था जाये

मुने बहुत घच्छी नगती है

धी विश्वनाय मचदेव

" में ऐसा दीप जलाता हूं."

इंट रामगोपान दार्मा 'दिनेश'

मुम दीप जनाते रोजः रोज बुक्त जाते हैं। मैंऐसा दीप जनाता हुँ, जो सौधी में भी जना करे।

विश्वास नहीं सुमस्ये यथ परः
तुमशे मजित का जान गरि ।
हर तामा में रक जाते हो।
गुरु को कभी तुरान नहीं ।
ऐसा प्रमा कतात्र है।
जिसपर भिजा भी बात करें,
ऐसा दोन जाता है,
जा दीने में भी जाता करें।

त्म भ्रताण्यस्य वर्धः भ्रास्तरस्य स्वयंत्रः है। स्वास्तरस्य स्वयंत्रः है। स्वयंत्रस्य स्वयंत्रस्य स्वयंत्रस्य स्वयंत्रस्य स्वयंत्रस्य

है सालि पुर बहु दला है। विकास प्रदेश कर साल साल साल ह

4 800 1 E 80 80.

नागर को नीमा भी निगते. चरतो को बांधन पार्ट है। जिस एक दोर को दिस्य स्थिति। नीज़ार सोक में सार्ट है।

में समको नेह लुझाई. जो परदेशों का भगा को श में ऐसा कीए जगागा है. जो स्रोजीय से से जना की

जार व कर प्रशित बना परिश्व पुर जर भरता व शरी मुख्य जेर बोत परिश्व पुरिश्व को सरक्षण करकमा परिवर्ति

क्षण द्वार अवस्थार सुख्या ग्रेड अध्यक्षत्रका स्टेड प्रस्ताहरण

्राच्या क्षा करा । संद्राहारीकी क्षा करा की

रूमानी चाँद

प्रो० 'शलभ'

विचारों के नजे में चूर ! खोजे हुये नये मूत्र के उन्माद मे खोया सा. नई ध्वनि, मये धायामों की धासक्ति का मारा सा, नये धजन-शिल्प की बीधियों में, प्रवसादमयी प्रमादकता मे प्रमत्तः

उस एंग्लो केयोलिक चर्च के संभाते फाटक मे घपनी इस जनरी जमीन की झनेकानेक बाचिक

यत्रसाम्रों के धनव्भ, प्रजाने गीतों की मधुरीली, किसी एकान्त क्लांत युवा साध्वी के हृदय की गूँज से भूमना हुया **बुद्ध म**च्छा सा देख रहा है। पाममान की ज्यामिती की उदाम-मोली पुस्तक के गोलाकार फैले हुए

परते के मुद्रद कोने पर, एक जेट पपनी दुम की घुँ घारी वैसिल से

एर लम्बा, किन्तु सीधी पुँए वी रेखा मीचना जा रहा है.

उनके भावरी छोर पर बुछ लटक रहा है. रूज वा चौद है ! 'ह्रदिया चौद-वेमे हो ?' मुन कर पह—चौका वह। वाने क्यो हवा को हस्की परत पर र्रेस-र्नेस इतराया वह ।

हाँ, जी । तुम माजकल तो 'हलदिया' ही दीखते ! हालांकि देशे हैं तुम्हारे दो चित्र धौर-

श्रयवार में छते थे:

ग्रच्छे येन बरेये।

किन्तु, नुसंबंध भी इतने बेसबर हो ? र्नेनिन का युग नहीं, न्यूनिक का मुग है यह । परते जो उठ रही--उनको तुम उठने दो, नाच रही भावरियां-उनको तुम नमने दो, उभरेगा चित्र तो—होगा ही रूप स्पष्ट, मुलेगा भेद फिर नेरे यथार्थ का.

निवात नग्न । नि पटा उपन विचारों को उद्धन निगाही की

उठी प्रीय उत्तर नी-कुछ नही

दिनीया का चाँद नहीं, जेड नहीं,

बुद्ध नहीः धुँए की रेग्या वह

वाजनी बनायण नी फैन चरी दिब-दिब के दर्गत छोगें तस,

धधरार । मोचता है—मचमुच यब भी चौर मण्डर है। बीत बीर रीत युग के मपनी में सीवा है! धनीन धीर धारत को बचवानी लोरियों ने उसे में हबीया है। ऐसा एडडेन्बरम वह.

धव भी रूमानी है।

मनर्

मेरे हृदय ने मुझ से कहा-....

• • थी जनाईन राव नापर

शक्त मृत्ती में ही में जान उठा बीद मेरे हृत्य ने मुम्म में कहा--"बीदे हूर वर्षे धीर को हूर हो है है हुए को बीद करते हूर कभी ज करें ?" मेरे हृत्य ने मुक्स से कहा---"को हूर बहिक कारण है दि सदिव जावता महिमाशन हो। मूर्व किराही के समान जावत, पृथ्वी धीर बाबात में दिवर धीर है हुए पने सेवों के समान बहुत वर्ते ।

संदोशनी हमा ने पोजन मार मुख्य कोडों से में जाय-जाय उन्हां और शिरानों के कनश्र के एक माना हमा सेरा हम्म सुभने नह उन्हां—"जने हुए मधिक जामें भीर मधिक जाया से मीहक कारा रें। बारत ने मध्यन्य को स्था नर ने मान्य के मध्यन्य को स्था नरने नारे।" जात को नती से गरी मानिया हुए हो को बन मेरे हुए से मुख्य से कार्य—मधिकाधिक जाया होने जो ने सहास्त्रा के नवार कार्य रें। नमान मध्यावार पाइ माने, नमान निज्ञां पर सामत करें, उसे सीट मणी ने त्राय ना सूर्य के मणा बारे करें।"

हरू अला के बंद के कोरी नारेंगी किया हुए ए जुद्ध से जल्ला है ज्यार की स्वार पार में कारण का करते हैं। यू में इसे कारण देण लगा है और बल्पा की नहर अब हो रहे हैं। बार मीर अंद बद्धा के यू भा करते हैं मेर बल्प पार रिल्लाय और टिल्लूप डाल्प से बार रहे हैं ह

करर दुर्द नंद में बन राग है। जिन मुद्द करन बागू बुद्दा रूग है। इस्तु के ब्राप्त करानी है। इस बन्दे में बादन पूर्व करियों मूठ बुद्दा गा है। जबाग मुद्द गुन्दर रूग है। ईसर दुद्दा बुद्द में पर रूग है। मुद्र बाद के पत्र बीर बदेर करने गुन्दर करा है। ईशिय औद पद्म मुद्र बोद रूग है। बेसी दुद्दे करदम की बाद के। हो पर प्रवाद करिये।

⁻वह मेरी है भारत माता

~श्री मेघराज 'सुहुल'

मधु में भरा जहां युग-यौवन, ज्योति किरण में न्हाया जीवन, दिया-दिशा में जज़ला-जज़ला जिसका शतदल सा ख़िलता मन, पुलक्ति सस्मित चकित विश्व यह, जिमकी गरिमा को है गाता, जिसकी योदी में दिशि-दिशि को, संस्कृतियों का मन सहराता,

वह मेरी है भारत-माता।

जहाँ घजन धाकार ने रहा, जहाँ मनुजता मनुज पा रहा, जहाँ पाम्य मुकुमार प्राएम्बन, नई फमल के गील गा रहा, जो परतो जल-स्नावन पूरित, जो परती नित दास्य द्यामला, जो परतो उन्युक्त विजयिनी, अभियिक्ता युग-युग की गाया.

वह मेरी है भारत-माना।

दोपिशका सी सदा प्रज्वातित, स्वर-प्रक्षर में जो नित मंतित, प्राकर्पेश के मध्यविन्दु सी, घपवादों ने कभी न विपत, जहाँ सेंतुलन कभी न दिगता, जहाँ सोक मन कभी न वित्ता, जहाँ सलीना हृदय लहरता, जहाँ मुक्ति विदयान विकाना,

वह भेरो है भारत माना ! जहीं घोस के बंजन मे भी. रम जाती सदियों की पिरकन, जहीं प्यास के सुरक होठ पर, जुरियों गडा भूमतर धानी, होंटों पर ने ज्यार-सिन्धु का, जो धर्मि-रिक्स क्षेत्र महत्त्व प्राप्त भारोोक्ट्रनाम जहाँ रस-रामा, सह-यन्तिक वही मुक्तान,

वह मेरी है भारत-माना !

जहाँ मदा उन्नेष सजग हैं, युवा उमेंगे राह दिशानी, जहाँ पिना करे साधना, सुबन-वानियां मुद्दावर पानी, जहाँ नया माहित्य इषक मददूरों वो दर्गन मरसाना, जहाँ नया मानव प्रहरी बन, युग-रक्षा वा सप्ट उटाना,

वह मेरी है भारत-माता।

गीत

🕶 श्री युद्धिप्रकाश पारीक 🕶

मार मेन्या पाम को भरोडी कामिल भागे रै. एमा-एमर-एम बोहा बाजै. बसरघाँ मो बस गाउँ रै। मोगै। यो पाटवा पैनी ऊप-मी उन्हेंर पीरी मोड-जवार. घोम-तरा ना-मा परेव ना मोर्चा में करने निस्तार गुरत-शिरगु-मा हाय हंग बरा, जिर योने चुम जाने रै. नव्या हुवा मुत्ररगु-मो धरा को भार गरो निगरभावे रै। मोर्पे। ध्यामा मोर-परीयो बा-मा उठै जिर टावरिया कुरू ती बिजनी-की नरम बनावी जिमहाबा में बरे न पूर । भैग-बाशी बगार गुगावार दूव बरगारे रे. भार मनाव-रेट वेबला-गाँगडा गिल-गिल बाबे रेशमोपी। कामी काला पट भीत में हारघी-धीरते मती गेट. यग्र-पर्यान्यो या धमके से यह शिवती रोज्य की बेट्र । होती बती भूम ने फॉबर शिन-पैनार बवारे है. नदा नाह वा वेद-नुपाद के जगह नाह हो जाते हैं। माधे बार्ड होटो में रातृशीको बोटी को-मी पश्चाक चान, सहर जादा राष्ट्री के बागार लाहे उत्तारी घा है जास । राण-पाण-मी मात्र बौद्धना प्रमाननी प्रस्ति है, री में देल ह राज्य बाल हा में बी हम मातारे में र ए में euri eicer auf auf aufem mit einen fer it nie प्रति राष्ट्र प्राप्त कारण के प्रशास आहे प्रणाहरण क्र रा करेर बार करता पारत का दिन्द्र पार्ट है. mer gran o er e gefent 2 un bier bert bin bie مروبها والإجافية بدوار وادوارها بدائه tive the grange garage grant to be agreed a

बिरह गीत

श्री चन्द्रकुमार 'सुकुमार'

टरामरा बाजे टोकराजी, गएा मएा गाडी जाय, कामरागारी सी सिरागारी, बैठी फीला खाय।

> बेह्या भागे ऋालर भूमे नौगर बाग्यां जाय, पाछी डडती मांटो, हाळी। सन्देसी पठवाय। को'जे बादळ सा बादीला घरा सांवता भाय, सासरिये री नीव निबोळी पीपळ नै पुजवाय।।

भायर बाजे, काजळ लाजे, रुत पाछी मुड जाय, क्यां ने देर करो परदेशी, झासुडा पुछवाय।

> नेशा मा साविश्यो वसत्यो, पसको बमायो नीर, हिनड़े बसगी सगन हठीसा, सपरो बसगी पीर। सजब कर्यो स्रो कर उपारो, ते बेटी सगदीर, स्याव बढी सुळके पादोमी, हाती सागे सीर॥

मैंदी राचे, कागद बाचे, सुपनों दिन ढळ जाय, राह्यूं जाने हियो बावळी बेरी, घोळ्यूं घाय।

> तपता बीते ताबधो त्री, गळनां बीने रान, सांक संवारे पतक बिद्धाई, निरायट निरायट बान । हिचक्या सूंभर धावे द्वानी में दिन गारी रान, मोरवारी जासीर सुटावे नेएग से बरमार ॥

नाया कांपे हिवडी हांपे. हिचनीळां लुळ जाय. जोगरए बरएगी सेज नमुमल, बास्या नीट न बार । मब भी बेहोंगी में हैं, महा निद्रा में हैं किन्तु जीवन के द्वामी के उत्तर-कार में उसमा पड़ा है। मन्यकार की जड़वा में हैं किन्तु मृत्यु की मार्चकामों में मुरा। में कान ते रहा है. मृत्यु की कानी निद्या में निवदा हुमा। में जीवन में हैं किन्तु मन्दर पूलना में माहन। में जीवन चौर मृत्यु के संबोग में हैं। जड़ता चौर नेता के संदर्भ पर है। में मृत्यु की परदार्द में हैं चौर जीवन की मानिस पामा में भी। मैं जीवन की क्यांगा में भी है चौर प्रवासा की मनिस उत्तवागों में भी।

ना है स्रोर बिस सोर नहीं ? जान से समय स्थान से ! प्रशास में सा संगार में ! भानि में या विभानि में !! पीना में है समया जहता से ! प्राचीन है मा निर्मार में शा निर्मार में सा निर्मार में सानि द्वारा में समाया हुमा महत्व है। मैंने माने शानिक ने की सामां में को सामां में समया हुमा महत्व है। मैंने माने शानिक ने की सामां में को समय स्था है। वेदार दिखाम की कार्यान मिता पर मैंने जोवन की सामा जो उत्सा है। मृत्यु की जीवन से जोड़ने को प्रशास में सामां गत्व पर से हमा है। प्रकाश सी स्थान की सीमा से समया हमा है। प्रकाश सी स्थान की सीमा से समया हमा है, से बच्चा भी कार्यान से सीमा से स्थान भी हमा से हमा है। में हमाया के है सीर विशास से भी । मैं भी में ही में हमाया से सी हमाया से भी ।

में सहदान न विश्वास काना है। बीट नीटवार से जान मानता है। दिन्दु विश्वास मेर पोयन ने बातान बालवार में हिन्दुन तरा है। बीट नार विशास मानी की समादि में साथा हुए। है। ये कार्य ताल कार्या में अद्योग है। वे नित्त कार्या के बातान घीतार वाचार कर घर्णियाना और परित्त संस्थात में दे जितिया को तब भीता नारा परितास कर बादान संस्थान । वे ने बाद से ब्युटियर कार्य विद्यान घीता नी किया

रीजर मा में बना है धीर जना करेंगि साम्यवन्त माना प्रवाद वाहा में भिनानों में बार रहें द्वार न भा माना माना माना है माने दर्श माने हैं है धीर देशमें तरी है करता भी, रहेंगी द्वार मने गोंचे प्रवाद प्रवाद माना माना महत्त्व प्रवाद किता प्रवास है

र्षा कृष्टे जा इस राज्यात का जानू जा जा इंडिस क्षा हुए जी कराई के जी है। इंड्रों कर का जा का जा का हाई हुए का जा कर का जा का का का का जा का जा की स्थापी का का जा कि महर का जाने के जी हमाने के जानत की है।

"रूप छवि"

• श्री पुरुपोत्तम 'उत्तम'

वेने माप का चरण नत्य मनोक्तक बाने तिरंगे की छत्र छावा प्राप्त करना ही है, भीर उसके निग् माप जन दिन, समाज हिन तथा राष्ट्र हिंत की दुहाई देने मे नही वकते । ज्यांही घारको बिना पेगे की स्कृत भीर बिना किराए का बहुवा मित्रा कि याथ का बनना हिन ही सर्वोधिर रह लाता है । खुनागे के समय रखे मार पपने करनावे पर हाथ पनारे कई बार देस तकते हैं पर बगा सवाव कि बाद से इनके दर पर भनेत पहले काने के उपरान्त भी भाष इनके दर्भन कर सकें।

भाग जन नेता, किसान नेता, सजहूर नेता, नोक नायक तथा जन नायक सादि उपाधियों के जनक हैं। मात्र को जातियाद में सरून जकता है जीवन चुनाव के समय बौट मौर बेटी जाति बाने को हो देने के मात्र पूरे हिमायती, बन जाने है। येने भी साथ हर नाभ बाचे काम के जिए सपनी ही जाति वायों को प्राथमिकना देने हैं।

पुरानना पयवा बढ़ीबाद को बाप वनक प्रस्त वसी बरने, इस ही निल् पारने सामानादा की स्त्रीक जागीरदारी और जनीदारी को समाप्त कर दिया है। यद देश से बीर्ड प्रसिद्धान रहने वाना नहीं है। वह तक कि पारने प्रयोग सामानादा की सी-बंध से या व्याप्त दिनतारी है जा कर नाम की नाम कर या के से सी सी वा बहुत सारने कता दिना है। यह नाम कर या के सी सी देश वा बहुत सारने कता दिना है पर है। वेसे विमान से वर्ष से पैसे सेने वा बहुत सारने कता दिना है पर है पर है। वेसे विमान से वर्ष से पैसे सेने वा बहुत सारने कता दिना है पर है पर है। विमान की सी की सार की सीर्थ में की पर प्राप्त वह भी मही होड़ वाने । वयंत्रि प्रार को सीर्थ में है। यह से सी मही ही वह से सीर्थ में सीर्थ में

माप दिनहुन निस्सूट, मोह रहिन एवं निरित्त है। निरित्त पार्टी के पार, नगर-निराय की सप्ताना, किया पीएए की प्रमुखना, पंचायत समिति की प्रमुखना और विधान समा स्वयं नोक समा की सरपता है किया स्वयं के सा विपक्त रहना ही प्रमुखना के दें। महिना बहुत्ता के स्वाप्त क्षेत्र के स्वयं के स

सरि बाप करता द्वारा कुतायों से दुष्या दिए जाते हैं, तो जबार बच्चारा बोर्ड, जारत नेवर मेसा, त्यार विदास सकत, सारत टील बोल की स्वित्तरी कारवता सबस करेल दिवसारत का कारते विद्यु केसर ही रहते हैं। ऐसे ही बद्धिता कि नवस तेतु सार जीवर वार्ती, हमारी का बेरान नुर्वित करते है सौर साह सबस में हमें सारण तर सब्ती जीवर तीता दास नीवा सा तृत्वित कीना से त्यार तुत्व कर

साँझ का रंग

- विस्तामर गुन -

मान की सोम्म का रंग सीवते प्रकृति का विकेश उदान वा-भूत गया बहु स्थानक प्रवाद की रंगोन सामी का माहीत । मान उपकी मृतिका के गितहरों की पूरि बाते बात गमा होगा है.

नुष्य उसर गाए है। यात्र उसरा ने नतास योग स्टेश्ट मीत पर्दे हैं। यात्र उसरे यहनूत रेशों ने दूपन प्रश्न पर्दे हैं। यात्र उसरे नोस्स हाथ सरनाता स्टेडें

कस्बे के बस स्ट्रैण्ड पर

- मागीरव भार्य =

यों यों कोई उत्तरा कोई पर पता गर्मा। शिमी के जारने पर कोई चेहरा निय उठा वनियों की भी भिष्ट एकदम गुनजार हो वडी धाम से गड़ा सांगे वाता जम्हाई में चड बैडा बहुत बहुत फिर जाग उही। शियों के जाने पर सहरू पर बेत्रहाशा धन होश्ती हुई दर भाग जाती है यग धीर वभी-वभी दी द्यांने शत्य मे देवची पर जाती है।

को है। बार्य में ही कुछ बन को साम्य के ब्रान्यक के दिशीयल बरेन मुजी व बनवाद वरते है। बार्य में ही तुम्त प्राप्त भा बाज जब जबका की बीचा केवाद हुए बन नवा कर नहीं है। बार्य हनवर में पीनी सरा कर बार्या प्राप्त की बार्य पुत्र बार्य में नवार दिश्त है।

संपार हो बार पार में भी हो। बार प्रपार हिस्साई देगा है हा बार दिन ये माही है स्वापार में मी बन से बार हो राग के पार कर प्राप्त के दे का पार होगे का पहुँ और कुरकर को बुनाई में में भी बारी प्रभागे में भी रिशो का विशो का पर रिकार में किए हैं। इससे रेगा हुए की करार में कर बांध है कि गोर देशन रेगा है कि पार का में में है का पाद महत्त्वा को महीशही महा मी पार कर को है। बना में देव से मार्ग कार्य में हैं। कार्य कार्य कर कराय को गायी मारा बीर मुग्ही साथ में में मार्ग में

कार करायों का निकार कुछ कार कहा कर केर हैं। क्षेत्र करी हैं हुए वार्ति के राजित हो हुए के को दान करते हैं जा कहा कार सरवारों कार से कार आपने को सामे करते हैं। हैं हो हुए के सामे करते कार कार के समान करते हैं।

रतना का रूमाल

थी मनोहर वर्मा

रतना मेरी नौकशनी है।

रतना ने बताया कि उसका पति वनके है ।

रतना सौर मेरी पत्नी युवा हैं। इस उसर हैं, पर मेरी पत्नी के मुकाबने वह काफी दुवनों, गुण्क सौर उदासीन है।

रतना धावर्षक जहर है, पर मुख्यर नहीं। भौन्दर्यकिमें वहां आये ऐसी कोई चीज उससे

नहीं है! रतना सीधी है, नेक है, गरीब है। मेरे बलावा एक मीर यर ना काम भी उसने भेज रखा है।

मेरी पत्नी धीर रतना ''ब्रूबी दुख पैतों की जरूरत है।''

भाज तो पांच तारील ही है रतना " ""तेरे पति को भी तो तनला मिनी होगी " "" ?

नितनोक तो सनक्षा निनती है बहुजी******* भरे! क्यों ? तेरा पति कही नधाती नही

मर ! नयाँ ? तेरा पति नही नया तो नही नरना, पूमा वो नही खेलवा ······ ?

नहीं बहुनों। साम बीड़ी ना शीव है बस े या पिर सच्छे वपडे पहनते का।

तो भी क्या हो रतना, सवा तो रच्या भना गर ही दिन में कैत पुत्र गया है और मेरी तो नह भी नवम में नहीं धाना रतना, दिन तुम तुन दो और हो, सदा में रूपये महीने की सामर है किए भी हु इसों के मोडे-करनन भोजती है, रोटिया देना है। मेरे उनको भी तो गवा को के करीब ही विक्ती है। पर बहुजी, भेरे वो तो बुन सत्तर मोर पांच हो नाने हैं। उसमें भी दस-यन्द्रह रपया महोना क्षानर में चाय-पानी का खर्च हो जाता है यार दोन्तों में। दस-पान की बीडी-सिगरेट जल जाती है। श्रीम-

दम-पाव की बीडी-निगरेट जल जाती है। बीच-पच्चीस वाहर महीने बुद के निये करदा ने धाने है। मैं दो घरो का काम नहीं वर्त बहुती, तो फिर महीने घर लाजें क्या? महिन सुद्धा भी कहें रतना, मुफेती कुछ बाव

भड़, तूनुद्रभावत रतना, मुभंती बुद्ध दाप में वाला नजर आना है। याती तेरापति जरूर कोईनशावरताहै या किर रपया ववाकर जमा वरताहोगा? '''प्यर्जिह वया?

बात तो येरी भी नमफ में नहीं बाली बहुजी, पर हा, दतना जरूर है कि मै नाग तो नहीं करने ब्रोर न ही बही जमा करने हैं। पर यह जरूर कहने है कि एवं दोस्त को उनने ब्याह के निये पांच मान को एयी दिनाये में, उननी दिगन और ब्याह देने

शा क्यय दिनाय च, उनका क्या चार स्थान देन है। और यह दोस्त सर भी नया बनाते हैं बरूजी '''। बडी सनीब बान है ''' ''' | क्यि देनर से हैं

तेस ब्यादमी ?

हर, वे बना रहे में वि सं बन्न सह सह सह, दर हर, वे बना रहे में वि सं बन्न करा रामार है—जेना किया है कि सह बना से किया हो की स्वाद में किया हो की साम कर है किया है किया

देते हैं, वह के देवबों कुछी ने दिन तुने रामार

दिलावर नाउंग्या ।

यग्यामामा दिनने हूँ ह

देस, पीप बहुकी 1

राता ने स्वाउन में गाँव कर रंगा एक सोटा गमात निकास भीर स्वये उसमें बांध्वे गयी-

मरे तुनगीरा निवात सेती हैतरा, कमात गरी----

सर तो यो ही मीन रही हुब्यूबी, शोवती सम्बोधियर मीन मूंतो घोडा सोव का कान '' क्या है यसिता है मैंने कमरे से बोल करों ही

कुत्र नहीं यह को इसका, क्षणा का नमात्र है। है। करीक्षा निकालता सीख को है। …

संचीर जसन—

्युं युं दराज-दरीय संग्यश्य वर रणता, क्या सी रमारी रणा कर 1

হী। পুঠা ৰাপায়ে দ্বিটি আৰু ইচা ৰাখ্ট ই প্ৰায় দিলৈ ৰাপৰ কাৰ দাৰ্থক কাই ৰাজ্য । বাই পালেই ইচাপালুৰ ব্যৱস্থা হাই লাখ্ট পিক কাম্টি ইচাপিক। ৰাজ লাখান

हरता करा कि दिएक जह जाएक हो है हुए पिट्टिया कहा जारे की समामा हा जाएक जै ग करवा के हैं जिस हाच क्या दिएए प्रथमित के पिट्टिया के जारे जारी के जारे दिहा मान्युद को दिहा भारता कि है करता के हुए जा के कार्य के हा नहां प्रोप्त कुछा के देख जा के कार्य कार्य के हा नहां देखा है जा कर प्रस्ता है कहा को कार्य कर हमा जारे हैं जा कर प्रस्ता है कर को कार्य कर हमा जारे हैं जारे प्रस्ता है कर

4" * E # . # 4" ## # "so gro gro gr

नेते हो-न्यों सोडी र दो-चार बाग कर वेरे हो। समम्मान्यों से इस बड़ी तह जैने-वैरे की वेरी हुं-----

तूसो समनुष पदनी है से रता। सन्सा, मुत्तो । एक बात पूर्व है तुन्हें वेरे मोगन्य है, सही-मही बताना ।

पूरा न, एक बना दम बार पूरा !

तुनो सबक की भोति है दो दणाः तुरे हैं है कणारा नरी का बत सारी दणक वाता भगा। "है एक नस्त्री सांग को ककर तूरक अस्तर्य को अन्तर्था या दो देश पड़ेगा ही """

यर मेरी लागी रच्ये भीर प्रथम गावा नहीं। विराह प्रथम विराहण की ती तुर्वी स्थास

राणा, वृज्योत्स्तारी बहु वीही बाहे हैं जैंगी हैं है जू एक बात बात कि साम है है गा देशने गाता बद को मैं तुत्री हिंगी हरायाओं के बातों बाहो हूं हे सामोद सी सवाबन नहीं गर्थ करते हरता हुए हैं गाता हुए साम प्रवहत बाहे की हैं है

निक सार्वे हुन्द नेवाने बहुदी नावा से पण है। समाराय सुर न बराये नव बहुदी नागेन्द्रा भी के समारा बच्चे नार्वे नार्वे हुनी नागेन्द्रा भी के समारा बच्चे नार्वे नार्वे हुन ना चीच की सारा बच्चे हुन समार नहीं समारा पण भी हैं।

त्रकात्रका (काला वाकान का है है। सकारतान कर सकर करा करा करा है। दोस्त है, बरसो बाद मिला है, साथ साथ, सिनेमा देखेंगे री...... ।

कभी मुक्तेभी ****** ।

हाहो...... धदके जरूर..... । वतक घौर वलके--

यह सामने जो मा रहा है न *** **** ।

नौन जगन ?

हा, इसका सनाम करने का स्टाइल देखना।

जनम ने दो उंगती सलाट के सामने साकर पूनियर प्रकाउन्टेंट को सलाम किया भीर कुछ वहा। भव यह 'भ्रपतम-व्यवम सिस्टम्' की तरफ देवेगा------

जगन ने देला भीर दोनों सिस्टर्स ने से एक ने उने इसारे से बलाया !

मद देलना, यह हम लोगो की छोर कैसा गर्व में देवेला।

जगन ने बुख से बँठे नीरस कनकों की छोर उड़ती हुई गर्व भरी हिंह फेंबी। सडकी ने एक फारत जगन को पकड़ा ही।

मब यह कोई पतिका या किताब इनसे लेगा ।

यान ने एक फिल्मी पत्रिका जन सहिवयों में में पित्र करती हुई रिष्ट सब क्योर वानता हुया बन दिया । सरकाम-बरनम स्विट्स्म ध्यपेन सार एवा-दो रिताद सा कोई पत्रिका मादि कर जानी है चौर उनमें पेटे दो पेटे को यह जमन में आता है, देन प्रकार सेटे हो में है को होटे देता है। वह बार तो रिताद को बान से सवादे २ ही मुमना रहेगा और पोर्टी देर बार ज्यों की त्यों कोड़ा जारेगा ।

यह है हो हैईसम !

रा, हैरसम तो है ही पर 'एवटर' भी बहुत

ऊंचा है यह । मुबह जब घोष्टिस घारा है, तब देयो इसकी घात । सिल्कन द्रार्ट, बूचन पेंट, काचा घरमा घोर पमनमाती साईकित । बस यहां दक्तर माकर धपने वे कपडे कोचकर रख देगा घोर घनने सही क्ष्य ने माजायेगा।

बल्हा, मैंने सो कभी ध्यान ही नहीं दिया, सार स्वदा ऊंधा गवटर है।

तुम रनकी हुँनेज देशी कमान है। एक ने एक तानकर । हमारी तुम्हारी दुननी हिम्मत नहीं जो बंदी एक भी हुँच बनवातेंं। मारवाती नभीरे नो जुतियों से नेकर पेसावरी, लोकर, परंग, निर्मात पुरी चपन वर्षरह कई जोडे सो जूने हैं इसके पाग।

बन्दर ! तुमने सूब स्टेडी किया हमे । स्टेडी करने की बात ही है बार, धारकर्य होना है कि इतने क्य रायों में यह सब 'नवाबी टाउ' क्षेत्रे 'किटेन' करता होगा ?

बस पार्ट दारम ?

नहीं करता है, मैंने पूछा था। भीर मना यह है कि बाइफ भी है इनके।

at month man I

भीर तारीक यह वि विश्वर एक नहीं 'मिन' वाला। उनने भी एक भीर सना'''''' ?

को बया ?

बिल शो में, जिस क्वास में सानम-भाषम सिस्टम् जाएंगी उसी शो में, उभी क्वास में, उन्ही के साम-माम हवरन मौड़ा होते।

सगर यह सब बार्ने तुन्हें कीने मातून ? देशों से सारिश है मैंने !

बदा सत्तवह है

बंद बंधी देने एक्टन, निर्नेश के तिए उनस

ी है तो रक-दो दरया सम्मे ने जाता है और र में मारी दात = •••

E TTT

प्रमाद १ " प्राद मन दिये 'प्रदर', देव पंटा हो स्क्री मीट सोडे

द्वारता । हो न । है ।

त्तर घीर जगन---

साथ बन्ने बाद जतन बहें निम्तत गर्दे, बतत शीर बाया पहारत पतने को हमा हि, सहस क्षति हो एक सरशास्त्री ने अपने की सामाय । अदन शारी हुए कोता । नरशानी अप कुला, सभी ता^{रर}

ात्म क्षी-म् जात स्म, **र**दर का अ

ं भरत है। चंदी ती सुरवाद व नाय, जायद नार-को के बाब ना धीर सरपाओं वे रख हात से रिका कम्मर ६ रेस जान भेर बर्ग सबर विद्या इक्रो करतु दारा या सह । मैं तें दु साथ व restry " t

- प्रथम में बग्गरणी हंगी के मान्य बरावर ग्राहर t bene bire fem bet beterft, at Biet ngerings a in fest a few miss ?

anglan alltim Ch. Son by Ed gir se et faug u bit in bier en wint eine ?

Sur fant e berifte mes mit er se my myr., i'r grara a Erire mi ca fine and an all fall gagti te. the agree or the made of each दान के ही प्रत्या के अंक कार कार बाका र हुआ । बाका रव नहर बस दुश्य हुआ अंक हुई का न

बुझती चिनगारी

भी भागीरप भागीर के

नगर के एक कोने में <u> निर्म</u>न सरक हरिस टिमटिमार्रे लेक्ष पीर्ड के प्रशास में तोत बैंडे गनारे को बारे है धमारा की यना न पी 🤾 ।

बहुत कुछ एक सी बारे सुमदर्श है एक हो जगा जिल्हा हर एक सार्ट यर शायद यं ही युगरपी रहेगी बारर माने से परी ही बैमीत सर अप्रेपी जैसे कोई शाम से इसे विशासी शास में बारर शास वर्णने है er far att-utt इस-इस असी रे 1

a ste wet t ne E & feure da dine. e + * + 11 +

une & Bammarn feriet. beir f. C. det meile Byt Hin, t.d. te die alle al. कार दह जरा कहा रहित खड़ा है भी हर हा प्र⁸र merer er gent were er der eite m Fam un fam mi fament : et mit 65

एक सफर

श्री जुगमन्दिर तायल —

जिन्दगी !

बहुत बार सोचा कि भ्रालिए यह जिल्ह्यी है वया ? जब सांफ दल चली होती है धीर बाजारी में बहत-पहल बढ़ जाती है और घो केसो में बिजली की रोशनी में साढ़ी, बनाउज, पेन्ट, बुरार्ट, जूते पहने निर्झींद मूर्तिया मुम्बरा उठती हैं, जब रेडियो भीर लाउडस्पीकरो द्वारा वितने ही स्वरो से कान भर उठते हैं भीर राह तामा-रिक्शा, मोटर, टैक्सी से भर उठती है, जब कीम स्नो, लैंबण्डर की वितनी ही तरह की गन्धों से नाक अर उठती है भौर कितने ही चमकीले सिल्दन या पारदर्शी नार्लोन के बपड़ों से घालें घर उठती हैं, तब तब सनायास ही मन मे न जाने क्यो विपाद पुर जाता है. उस चीर-छरटि में, उस बहन-पहल में न जाने कैसा सकेलापन मन की बाटने लगता है। न जाने मन में क्यों यह सवाल उठ जाता है कि मालिर यह जिन्दगी है बया ?

बहुत थी तावारि दिवाग ने जनता है ! """
कैंग जैंथा था तावारी होता ने जनता है ! ""
हैंग रोधारी में दिवने ही विवासल ""एको,
हुतार और वर्द की वदा ""वताब की
विवासनीय आपूर्विक व्यास्ता ""वताब की
विवासनीय आपूर्विक व्यास्ता ""वताब की
वर्षातीय आपूर्विक वेता की
वारा की का
वाराता "पूर्विक अविषय के विये औत्तर
का
वारा "" निज्ञा तारिकायों का जिय माजुव
वर्षात "" मिलासक वीर पुरिक्शाव हावदा,
धार्ति और स्वास्ता वहता-बीवता थीर,
हुत्त कर, रार, देखी, रिक्सी धोर देवत, """

हूबानो से चिन्ताते रेडियो घोर साउड्डरपोकरः सेस्स धैनों की यात्रिक मुस्कानें, ''बाइये स क्या सेवा करें धारकी ? घोर जाने के ब चने बाने हैं साले परेसान करने।''''''' जिन्दपी हैं हैं

या, 'हुद घोतिय सर । सर, झात व शूट्टी दे दोजिये, मुक्ते बाय है तर झार यू मो देविय सावर बराय टूढे तिन्तर वराम क सर बा बान बर्गत । तुम्बी का प्रक स्थाप है देख की सरम सोन्दा विद्यार्थ क सावा सीट्य । रम नी होने हैं पूर्वरह, हैनन कहता, सर्मह ! "नारम-स्टेश मेर क्षान

सप्रजा, विश्वनम्बा, कविता ''''' ादौर किर स्टान

क्षमा । गुरुश माहेब मुक्त देव रिशाइव ही रही

है 🖔 पप्पतित जो संपन्ना यह कीट का काल

नरा रहिया है " मानुर माहब बन का समसार पता सापने ? सिनगानिह ने ऐतियन रिकार नामन क्या है किए "" हुएट कर का रिकार पता रहा ? कागुर भीव को करेगी गुरी चौचती ? बगु परेन ने कागन कर रिसा "सार दिसन ! "सारात किया है बोरसार रिसा "सार दिसन ! "सारात किया है बोरसार

तर करहे में बहा मना मामा मामा मामी है भैने पीठ एतक को मी तुमार्च के बुगार्म कि मना मा मामा जिल्लाने के प्रतास के स्वास के स्व

एर घोर विष । सहर-सहर, भारत-मार्ड । राष्ट्रीया भी घेट्रीया विकास की एक्स्ट्रिस चा र/: है। पारचे पर पार है। साहब का बाग-सर मुश्योतिय सर । पुत्रभोतिय सर साहित्य रेगो के बार : विशास गुला की खलायी : दिन पूजा, बर पाइम करदरेड वर ही । नहीं की । बरो ३ बरो लही की ३ के लही लुबचा आहला बन्त । बन्दर, सर्वे करो, करना वहरहा द्रवर्गक है राष्ट्रक और न ह हिस्साह काम रेगा है। हा गई। ही मानेका चार्चा समी सरामा है - दिर्गाय काम्य हा ११ है -रहरेक्टा करण । चरेर । हंक सार विरक्षिको देश काकार, अहरतीयमूह बो बोह सुर बीपा बेंबर बामा क्षेत्र है के अबस क्षाप्तक अन्त E F Tet te Farty grave grave at में हैं । मुख्य मेर बंगही स्थापिता की पर पूर्व क्षान्त्र THE E TE E . TO REFERE बन्दो दो दि १० - कन्दो दो चराहरा

ৰাৰ্থৰ জন্মাৰ । এই বিভাগ টুট ৰাুই ৰ মানুধ বা বিভাগ বহু নাৰ্থা নাই উল্লেখ্য বিভাগ কৰে টুট বিভাগ কৰা টুট ৰাম্প্ৰ বিভাগ কৰা কৰা টুলুক টুটা में निरंपकट कर मैठ बाता है। कमरे के नव दरबाने बन्द कर मेता है। नाइट भी मात्री करता। सार्गबन्द कर नेता है कि मद्वर मुमरो नहींदीने। वेदर संपेशा वेदर संपेश हो बन

पर सवाय मेदा थीता नही होत्या शिक्सारी है जिल्ली बवा है ? यह स्वरित्तात स्वीद सर्वेद की दुनियां । ये बम बोली कितारों । ये द्वारी हु ठा, बेबत बुठित । दिन स्वीद दिवान को उगरी बुता की नातित । तिहास दम तोहती देवारी जिल्ली जेते तभी हुई मुद्दी हो जो दिनी स्मार्थी के स्वरात से बीदे-बीदे सुनदद निजीत हो दर मान बन्द दक्त दिन्दीन सिदासों का साद की हिर्दें।

सा, बात को मान नहीं, महोता था महिता नहीं, हर-जीय थारे नहीं देवत कुछ को हुए कर हिता गा है जि हर कर कहें हैं कुछ नहीं, नव्यक्ति है देवत हैं। नुष्टा नहीं, नव्यक्ति है देवत हैं। नुष्टा नहीं, नव्यक्ति है के का कि निवाद है। निवाद के हिता समझ में दूर है जाता कर है। है के का कि हिता समझ के हिता समझ की हिता समझ के हिता समझ के हिता समझ के हिता समझ के हिता समझ का हिता समझ ह

सन्दर्भ कार्य नवस्य द्वा बाला है वर्ग है सन्दर्भ दिल्ला कर क्षा स्थान वर्ष दें गई, अर्थ सन्दर्भ हैं।

---- 3 Applicate 4" 41 14"

जनवरी का एक दिन । विज्ञेष दिन नहीं था। सीधागा सामान्य दिन । शिशिर की दोपहर मीर मनमातो पुनी पुर। जयपुर की सहन-महत्त वरकरार की।
होने से सरा हुमा एक भिन्न के साथ वन-स्टैंग्ड को
मीर पुनवा चना पा रहा था। अपने का काराव्य
के एक भिन्न जो रात साथ चलने का बादा कर
मुन्ह मनेने ही चने गये थे। स्टैंग्ड पर पहुन कर
भिन की विदा कर दिया नुख जायो भने ही।
नवत स्तवार करता होगा 'चला जाऊंना बोडी
देर में।

'नहीं। मैं फार्मेलिटी से यहीन नहीं करता। जानते हो' 'प्रक्या' भित्र चल'दिये थे। फिर मुडकर बोले 'प्रव वब मा रहे हो बिनु ? अल्टी लीटकर यह विस्ता भी मंतिय रूप से तम कर भी डावटरेट वा।'

''बाहता सो मैं भी हूं पर सवान खुट्टी का है न। वोतिस कक्ष'सा इसी महिने झाने की-------''

क्त जाने में देर थी। दिन्द लेकर लामान पन, बाहर पूर में बा लड़ा हुमा। बड़ बाभी बानों थी पर भीरे-भीर भारती पही। टाइस हुमा। हर्न हुना के नीट पर जाकर बैठ गया। देसा, पान ही एक नवबी बाकर बैठ गयी है, ऊट के पूरद रंग के बेस्टर में बंदी हुई सामारण लड़्नी।

सब भवी और आरत के अुताबिक जुव बैटा ऐरा। पर्र-पर्रवर्ष सब चलती रही। मुख इत्युताने को मन बर उटा। गोट कुक निवाल दुव वीलामी निल्ला रहा। रहेच्छ धाया। योच वितिद रक बर बस किर चन हो। मैं किर काने में इस गया। योमे से बुत्युताता रहा ऐसे विस्तर्य हैं हो बर बुत्युतार इसी रहे विभी वो मुने गही। सब ने एक पुमाव निवासी में हम्बे से बने दररा बुर संभव नया।

िर स्टेसन mागमाचा । बन कवी । सहसा

उनने पूछा "धाप नया ब्रतवर जा रहे हैं ?"

"हां। धौर धात भी"

"मैं भी, हां"

बस फिर चल दी भौर में फिर मपनी मुनप्रना-हट में हुबा रहा। उसने भूछा ''भागको तिसने का सौक है ?''

"हो । यो ही कुछ, बोडा सा"

वह फिर चुप हो गयो। मैंने कॉरी जैर में रखनो। प्यान उचट गया था। पूछा "माप क्या सलवर ही रहती हैं?"

"हां। धाप ?"

"दिल्ली" कुछ कर कर वननाया "जयपुर दोस्तों से मिनने प्राया था। धावा ट्रीन से या सीर जाउना बन से। सोवा कुछ वैराइटी रहेगी।"

बाहर बुध धौर रेत के टीने उन्टी दिया मे भागे जारहे ये और मुरत घोरे २ पहाड के पीछे उतरताजा रहाया। यन नाने भीर पनार पार करती बड़ी जा रही थी। सबाइयां मन में निकत गई थी और मन बीती बानो की दनिया में की गया द्या। एक के बाद एक भरण दिख्यी बार्वे सन के बटल पर उन्नरी बा रही थी। जीवन ! एक मूचा वीपल का पता, तीज हवा ने जिमे तीक्चर गून्य बाराय में निराधार भरतने की छोड़ दिया ही। श्वेता । श्रदेशरात ।! बच्चत की पत्तियां बाद धाई 'शिवना धरेना बार में !" यन बार-बार रोहराना रहा-"वितता धरेना धात्र सें ! वितता घरेना धार में रू' बहने की नाते-सिने सब है, दोग्य हैं, परिचर भी बहुत है पर बहुने को हो तो है, मन की छनिनी के स्वर उनके स्वर से बुख धनय है। बाहर के उन सम्बन्धी ना प्रमाय सन तक नहीं जाता। सन उतन निस्मेंग है। "" उनको ब्रोर देना । वह बाहर देव रही थी, पर वेषन इटिहो बाहर है ऐना नना।

बन मनोत्रपुर की नहीं पह कर ही भी है राज इन करी थी और मार्थेश अधिवास भी दें ने पह रहा का 8 बूल बार क्या है कि गोम का कर सीरोत्र पंछाले के बाहत से ब्राह्म कर उहात है पर मारण तर्माय मार्थेश बाहत कर रुगा है है सुनार्थ दिया केवल महें एक्टियाल्य है। शीद का सारार्थ निष्ठ भागे बह कर हैंगा हुए सामाण्य

सामृत्यं का रहा बाँ । बारता-नहार ने मेल बारता बहा रहेंगा। बाँ देना-महार मिति इस ती है। हात दर्भ बहुन में दुवाने सुदार है है। रात्रा भी रात्रा की बहुन में दुवाने सुदार है है। रात्रा भी रात्रा का स्वास्त के हो। विद्या है। सी दार निकास का दार , बाद ती है, भाग तराह कर हाता है।

413

त्र बंगान पर प्रापन बैट बंद (बाद वीट कें इ.स. ६ वर ११ के देने द्वार त्राव की वीटी के बर बहुद को कार्य पुरत्य (ब्राह्म को वट ब.स. व. करते वें हुई वह ब्रट्टा ट्राने कार्य पुराव पर रहा देश हैं ... क्वारा दारह कहरर ही यह दुर हो रही।

'हो, बहिये'

'तुत सुतादने न । वही सही नो झा बोरे देर रहने लिस रहे थे। मन होता है थो ही दी मुनने----- वह किर झाषा बात वह वर दी हो गई।

उत्तर नही दिया। धीरे २ दुवद्रानी का करण क्या। दो ही पंतियां बोनी पाया मा रि वर्ग श हार्न पुरासी दिया। बार कर क्या 'क्येंने वर्ग क्यानी है ।'

हिन्द चर्य-चर्य-चर्यहर में नार भर से । पा नहीं मह बा बेरे-पार पह जुह नया था। वात हैं। बहु दूद देश बरे सलवारि नहीं नय ही। बी। हुरे पण्यात मी मन सदुधन कर रहा था। बाहर बील चुट जुरत बा सीद बन बी रोगों ही गो केर हो बी। कम में भी हाइबर में सारति तुर्थर के ति पाइट सारत कर सभी थी। धावतार मीर नमानि।

करिर स्मान्यद्द स्मान्य कुनास्सम्भ प्रवृत्त । कुन्द अवीव सी साम्य कृष्टै और सहस्य कर्ष के स्टेड बुन्दर प्रवृत्त कर बेर्टर सोस्य होने वर्गा। विश्वी में कुम्य, यशे आई बडा हा स्वरूप रिप्ती हैर सर्था है

्रक्ता र साहदा हैन्द्रम है उन्तर है। ता

क्ष के उपन कर बन्दर का नरा वा है

नर प्रपने काम में मनन थे। किसी ने फिर पूछा "वितनी देर लोगी मई ?"

'माधेक घंटा', उत्तर मिला।

कुछ समय बाद कहा "चोडा धूम बायें"

कुछ न बोतकर उसने पैर मागे बडा दिये। बति पहे। इस पीछे रह गयी थी। पास ही पेडियो ना एक कंचा सा देर पदा था। पातन ही बही शब्द के गया। बढ़ी था पात मा बती था बीड

हुप रह बोली ''धापने सह अपूरी छोड़ दी घी''
पहा, 'लामोसी में आवाज बू'जेगी हो सण्छा नहीं लगेगा'

'भीरे से ही। नहीं तो सहने दें, बाप न चाहें तो'।

बीरे-बीरे दुनपुनाना चुक किया । किर धीरे में मुनाया "जब कुमने वर्द किया है तो में ही पीर मूल सिरा जब दुनने चुन्न काना है तो तीर जी में हैं हो पीर मुनाया में पार के हुनने चुन्न काना है तो तीर जी में हैं हो चूना बनोकि में हो तो दुक्तारा हाम दिया है बढ़ा में है पात्ती के व्याप्त के नीर अपकर प्रकिट में हैं पात्ती के व्याप्त के नीर अपकर प्रकिट में हैं पात्ती के व्याप्त के नीर पर पर प्रकिट में हैं पात्ती के व्याप्त के नीर पर पर प्रकिट में हैं पात्ती के व्याप्त हो जाता है कोर पाह करती नहीं में एक बार बढ़ तीर मन को भेद देता है तो जुर करती नहीं। एक बार बढ़ तीर मन को भेद देता है तो जुर करती नहीं। एक बार बढ़ तीर मन को भेद देता है तो

मृत बहा ही करता है और आह करती नहीं।"

कुतकर कुर हो रहीं। दूर में हस्ती आसारें आ
ररी यो बना बी समारियों नी। हम कुप-मान बैठे रेरें। मन दी पत्ते कुतती जा रही यी—
देवें कमन के हम । मन में मुद्य प्रता सा सा

करता या जो पूचना को, सालीपन को समारत वर
ररा या जो पूचना को, सालीपन को समारत वर
ररा या के पूचना मा, किला बड़ायें ही सीरियों पर
रा या में मून समा, किला बड़ायें ही सीरियों पर
रा यो में मन समा, किला बड़ायें ही सीरियों पर
रा यो में मन समा, किला बड़ायें ही सीरियों पर
रा यो में मन समा, किला बड़ायें ही सीरियों पर
सा सा में मन समा, किला बड़ायें ही सीरियों पर

हल्कादबाव महसून करता था। बैठे रहे। बोई मही बोला।'''' कोई नहीं बोना ''''''। धीरे मे कहा 'क्रापका नाम नहीं पूंछूंगा पर सम्बोधन ''''

'रहने हें' घोषे स्वर मे उत्तर मिला।

"हां, जरूरत नहीं है उसकी, वयोकि सम्बी-धन तो दूर रहने पर ही काम घाता है।"

जाना कि उसने कींथे पर सिर टिका दिया है। कहा, ''तबियन होती है कि सापका कुछ परि-

वय खात्रं, पर नहीं, पूर्वाग नहीं। घगना भी नहीं हूं गा और सायद घारा कानना भी नहीं। बाहेंगी। इस सर्चा का सन्वय्य पूर्वं ने नहीं ओहंगा, यह भी कांधिया नहीं वर्ष-या कि तर में हमारा खुड़े। यह धरने ने पूर्वं है। यह विश्ववात ना शाण-जब भेग विश्ववात है सुमने, यह पानत्वर का शाण-जब हमने धरान ही एक हमरे का नेक्ट्र धनुमन विशा है क्लिंग बाहरी नारण में नहीं, मन के धारोग में। यह विश्ववात का शाण धरने में पूर्वं में। पूर्व भीर

क्रितनी ही देर शुगोग रहे।

पर की इसे बावरयकता नही"

हुँग ब्यायत प्रमीत होते हो । तुम्हें विश्वास की स्वत-वेना mitted il & ! करनी थी, पुग में भीर मुक्ते दूसरा । राज परिवर्तन । कृत्य की शोध करनी है। जीवन की दर्भवश्-त्वार्दे हार्च । बात्सी ब्रविकारण---बर्वहर में दूर रहना है।

(बारत के राज का स्वर)

विद्यारं वसीपरे, वहीं सिंखु है सुचु का हिंगरा शोर जीवन । एक को मुन्तु हुमरे का प्रान

बाराम बर्गी है। जीवन । बुनु । बुनु म जीवन । बिरशासारी शुक्तमा । तुरहारे समुद्राम में सेदा

मानी धाराच कर दिया है, महीच्या । द्यांच्या-पृत्यात्र क्या कर रहे है। स लो

हैर के स्वरूपण से हैं। सेरा बीहन सी साउने हंग्यन as asalas b िटार्च-पानेवरे । मेरे मेची वर की पानरान

द्या ह्या का कर एक बेडा है, क्षेत्र प्रसान कार्य अंत माथ करने के निर्दे जाना हुनेना, जागीवाच की जहां,

وشيقايستوياء چا فيقط ا

तिहारी - राम्यु की बत्रका में केश कारी श्रेकते er bein ber atiffet and Griftlif & bibli

fad telline day ! قديده ما (ود عملوه) في الاساع، قدونم

g auf ber bemenn fer beim gen fegan And the sty by the manufacture and . भारत १ माकण्यां पृति हे द्वारा घर साम्रहसूर्णम् ه إن جامَ عزد ، فاله - هذا أن أن عندسته عند الله عز حا

t mange from grown a man sof g हिता का पात्रकाहरू के रोहरू के कुछ हो। यह कुछ

Translegal toward rea

"Firegar on Fd dem outle

बन्नोधरा—देश. वं एक प्रतक हैन मनोहर मामाः उम प्रतय से शंह होरर शं रहे हैं, धार्च । बातक सभी गोरा है इपने : बादना करें।

विद्यार्थ-। वहन हो दर्भवता- दर्शावर बंदेह से हुए जाना बारना हूं से, जीवन बरना की धुरी में दूर मध्य मार्ग पर । यान विप

मा मेरा विश्वास ब्याह हो उठा है। साल-वियानिक होने बार जीवन में हरकर विशीण । का संदुषरात करता सार्थना भीर तुम करे वरोती ।

(मिळार्च प्रत्यात करते हैं, जनका कार बंद होता है। संबद्ध के बीचे क्योंन क्यायमा कोती । श्रेरण के बाबाइ एक सान्ति वितेती, सारका سسه فمرثته المايامة

(222 9FEFF#) auffert -- nu farm alter ut fier & पुष्टारे बहरोत के मुख्य के इचरणु शरमूर के जार च्य मध्य तेन भी है जो हमारे मनपण का देवत रेट सरी सम्बर्ध ह

रेडडल-संबाह्मपु तह में सगह बार के चेता काहता हुनी भी शेवतुत् भी, प्रश्ना का रित San andike

grania-gata' at. an ; Had 8, नवरवषु के हैंद्रांश मूच अवत कृत्व क्रांत है रहें हैं। are the merca of the ne with all में सब बन्युवर्शेंदर कर उत्तर व बारा नुवर व

4 44" AA &15 4-11 \$1 ٠.

देवदत—तो मेरामंत्र है युवराज, तुम सम्राट पद प्रहेण करली। मजातरात्रु---परस्तु यह विश्वासथात होगा।

पिटुओं से विमुक्त होकर विस नरक में स्थान

बनाऊंगा, मही जानता राजकुमार ।

दैवदत--तब छोड दी इस धरती के मुल--मौन्दर्य की ग्रासा । महाराज विस्वसार गौतन निदार्ष के प्रति धार्कावत होते जाते हैं। हमें सिद्धार्थ को राजगृह प्रवेश से शोकना होगा । उसने भेरै धालेट कामपहरए। कर कपिलवस्तु के संधाराम में मुफे परमानित कियाया। मैं उसे द्याति से न रहने इंगा। मेरी प्रतिज्ञा वठोर है।

भजातराषु-यपेष्ट, राजकुमार, इस कंटक को पयभ्रष्ट करना ही सभीष्ट है। सेनका ने विस्वासित ना तर नष्ट किया वा और मनध की सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी धन्दरानी रम्मा का रूप धारल कर सिद्धार्थ को । देवदत्त की भारमा को जिससे तृष्टित सिले वहीं कर्म मुने भी प्रिय है।

रम्मा---निस्सन्देह राजकुमार, मेरा सीम्दर्य, मेश नृत्य तपस्या भंग कर सकता है।

देवदतः---मिन, उपकृष हुमा हूं

देश्हत-नह देखो, युवराज झजातरात्रु, बृक्ष के नीने विदार्थ समाधि लगाहर बैठा है। हमे यही ने धराया ना प्रश्लोकन करना अवित है। प्रास पास दिध्य-समुद्र है वहीं। विसी की होंग्र न पक्र जाय १४ पर।

(हुद स्थियों का स्वर सुनाई देता है)

दमातराषु-देवदत, यह धप्सरा-मुंब वैसा । पनी टींप है। सिटार्थ का भंटा-पोट सभी हुया ^{काहा} है। तपस्ती भीर नासी ! अन्छा थालव्ड है ।

एष:----पुबाता, तुम्हारा दाम्यस्य जीवन कल-

दावी हवा है। पुत्र-लाम मिला है, तुम्हें। प्रचीना कर हैं। स्वाता-(सिद्धार्थ के निकट जाकर) मुफे

सुकृतो का फल मिले।

सिदार्य---कौन है, अने । तम्हारे धागभन का हेत्।

राधा-देवता, मेरी स्वामिनी को पुत्र-नाभ हमा है। क्लब्ब शिरणा ने मार्कायत होकर बती भाई है।

मुजाता-देव, मापका प्रताप मुफलदायक हथा है। यह है मेरी चिर वाधित साधना। बान का घाशीर्वाट प्रदान करें।

राधा-धीर यहना करें, देवता यह मृश्वादिष्ट शीर ।

सिद्धार्य—देवी। यह बालक वैना भीर यह शीर। हा, निरशन रहकर भी भानन्द की प्राप्ति न हुई। इस प्रकार इस देह को ही विगनित कर प्रैगा तो मार्व बधुश रह जायेगा, शरीर की शा करती होगी । तभी वह समर्थ होगा और साथे बड़ेगा सपने भार्य पर, देशी । मगतमय जीवन ही मुन्हारा, यूप १ तम मीति हो बादम मी।

सुवाता -- देव-वार्गी ने उपहुत निया है । राषा ·· ··· पायम a ert.

तिहार्य-देवी, उदर वे विश्वाम से कुछ पहुंचा वर्ग है।

राधा—दहरत कीविन्द्र देशना । महीमान्य हमारे ।

सिद्धार्थ-अन्त, मैं देवता नहीं हु एक माधारन सनुष्य से अग्न पुन्न नही--(शोर-पान करके) बितना सम्बाद् है यह पारन ।

तुम स्वरित होते हो । तुम्हें विश्वास की सारावस्ताहे।

। सम्म परिवर्तन ।

यतोषश-यपरिये बार्च । बारबी प्रतिकाशयाः---

(बारत के गान का क्यर)

निवार्य---वरीवरे, रही प्राप्तु है हुन्दु का हुना क्षीर जीवन (एक को मृत्यु हुमरे का आग्न प्राप्ता करते हैं। जीवन (मृत्यु हुम्युला जीवन) विकास्त्री श्रीता (मृत्युले सुद्धाप के लेस माने ध्यास्त्र कर दिया है, स्वीवस्त्र)

सार्थिया---पुरशंत्र बया बंद करे हैं। मैं तहे देव के सार्थाय में हु। मेरा जीवन की सार्थे वंशिव पर राज्यात है।

रिवार-परिवर्ष । वेहें केचे वर की बाददान पर ह्या का वह पार कुचाहै, मुख्य बायन बार्य पर-माप करते के निदे बादा होगा, बार्यावाद की बाद गार कीर हम्यू स हॉन किये ह

\$11.441 WELL EL SALES 1

निवार्षे परिणु की समाप ने देश मार्थ होत्ते बाहरात मान्यशाहरण मानु नुप्रश्री है, नुप्रश् देशका बाल्या करें

हर्ग हर्गाम्म (स्वरम्भीक) है तो क्षम्बर्ग करता में वर्ग हुए। अरमाप्तक बर करता है है वर्ग कर्म कुर है को वर्ग है है। देरे क्षमा के त्यांच्या कर्म करता है नवस्थानी हो ने क्षमाना कर त्यांच्या करता करिया है नवस्थानी हर क्षमान कर्मा के ती कर का मान बर्ग है हर्गा क्षमान कर्मा के ता करता कर मान बर्ग है हर्गा क्षमान कर्मा कर्म हर्ग है।

ेरहराम नरहाँ करता दिल्हा सामा के कार के दिला है कर तक हा है कहारा कर्णाट वरनी बी, युग में घोर मुक्ते दूसरा मार्ग हुंका मत्त्र की योग वरनी है। जीवन घोर मुखु वे वर्षहर से दूर रहना है।

मयोपरा--देड, में एवं प्रतब देश रही हूं। मनोटर प्रामाय तम प्रवय में शंह होवर मेटरर हा वहे हैं, धार्च । बातवा हामी होगा है हमने बीवर ही बाहतर हुएँ।

निवार्य-स्वारण हो बरोबरा- बरोबरा की बंधेंद्र से दूर बारा बारणा हूं में, बीवत की बरा की पूरी से दूर बारा बारणा हूं में, बीवत की बराज की पूरी से दूर साथ मार्ग पर। बराज जियाना मा सेरा दिरहान प्रवच हो उठा है। सर्ग-धान विपालत होने बारे जीवत से हरबर निर्वाण मार्ग वा प्रतुपारण बराश बाउँना धीर नुष की शा बरोवी।

(मिजार्थ प्रस्थान करते हैं, जनका कर मंद हो गई है। ध्रमकार के पीर्दे ज्योनि जानमार गोगी। मैनम के परचार एक सामित किनेयों, सामार गानित, सरोपरेगा गानित

(इत्रद्र करिवर्गत)

साजाराषु-अस देवरण बीवत घर दिया है तुरदादे सहयोग से सुध्य व तरभु पानतृत है वीत गार सम्बद्ध देश भी है जा सम्बद्ध सहयाग को देवता वह सम्बद्ध सम्बद्ध है

अवाजानु—देवपुण, क्षा बक्ष र प्राप्ते की नवववजु करेंद्रण मुद्र प्रीप्त कृत्य कांग्रेस होता है। कीन इंदन काराया को लीत के कर चीनते की आपके का जुब नीता हुए हारता करता करते की यो पर्याचन करते नारत है। देवरत-ती मेरा मंत्र है युवराज, तुम सम्राट पर प्रहण करतो।

सजातशत्र परन्तु यह विश्वासमात होगा। पिर्भी में विमुक्त होकर किस नरक में स्थान बनाऊंगा, नहीं जानता राजकुमार।

देवरत--तब खोड दो इस घरती के मुत-सीन्यं की पासा । यहाराज बिम्बसार गीतम निवारं के ग्रीत पारुपित होते जाते हैं। हमे सिद्धार्थ की राजपृद्ध प्रदेश से रोक्ना होगा। उचने मेरे झालेट का स्वाइटा कर करिनवस्तु के संधाराम से मुफे प्रभावतित दिया था। मैं चने शांति से न रहने हैंगा। मेरी प्रतिज्ञा कठोर है।

धनातपतु-परेष्ट्र, राजकुनार, स्म चंटक की रषकट्टकरना ही सभीट है। नेतका ने विश्वाभित्र रा तर नट किया या घोर मनाय की सर्थे अंक्ष मुन्दरी सन्दर्भारी रामा का रूप धारण कर निद्धार्थ हो। देरस्त की सारमा की निममे मुस्ति मिने यही कर्म मुक्ते भी तिक्र की

विक्तां अब हा पत्था---निस्तन्देह राजकुमार, मेरा सीन्दर्य, मेरा दृख तपस्या भंग कर सकता है।

देवदत्त-मित्र, उपहत्त हुमा हूं

देवस्य-पह देशो, युवराम झजावराजु, मुख के से सिकार्य झालि स्वास्तर बैठा है। हमें यही से स्वाचा वा अप्लोबन बरना जीवत है। सास बात रिय-कृष्ट्र हैं परें। विभी की हिंग वा बार से बात रेव पर।

(मुद स्थियों 📰 स्वर मुनाई देता है)

यहात्राजु-देवस्त, यह बप्तरा-मुंड बँता । यो टेंड हैं (मिटार्प का मंदा-चोड सभी हुटा बता है। तरस्वी सौर नारी ! सन्दर्श पासका है।

राष:--पुत्राता, नुम्हारा दाम्पत्य जीवन कल-

दावी हुवा है। पुत्र-नाम मिला है, सुन्हें | प्रचैना कर लें !

सुजाता----(सिटार्घके निकट जाकर) मुफे सुक्रतो काफन मिले।

मिदार्थ—कौन है, भन्ते । तुम्हारे मागभन का हेत्।

राषा—देवता, मेरी स्वामिनी की पुत-नाम हुमा है। कर्तव्य प्रेरणा से भ्राकायित होकर क्ती बाई है।

मुजाता—देव, मापका प्रतार मुफलदायक हुमा है। यह है मेरी विर वाधित साधना। बापक को माधीवींद प्रदान करें।

राधाः—प्रीर ग्रहना करें, देवता यह मुग्वादिष्ट शीर।

सिद्धार्थ—देवी। यह बानक बेता ' घोर यह शीर। हा, निरसन रहकर भी घानन की प्राप्ति न हुई। इस भक्तार इस देह को ही विगमित कर दूंगा तो मार्थ प्रयूप स्वाचिता, गरीर की रशा करनी होगी। तभी वर समर्थ होगा घीर घामे बड़ेगा घरने धार्य देवी। शंग क्या बोकन हो नुष्हारा, सूत क तक कीर्ति हो बावक की

सुत्राता — देव-वागी ने उपहुत्त निया है। राषा

निद्धार्थ—देवी, उद्दर में विख्याल में बुध पहुंचा महीं है।

शक्त-प्रहरण कीश्विद्ध देवता । प्रशिक्षाप्य हमारे।

सिदार्थ-अन्ते, बैदेवता नहीं हु एक नावारण सबुद्ध से सिद्ध पुच्च नहीं--(क्षीर-पान करके) वित्तता सुरवाद है यह पारत । (बाद हरी पर मुनाई देना है)

मिदार्थ का एक शिष्य । (भडक)—भडक यह क्या । पुरदेव का पत्रत । कामदेश के कमनीय बार्गों में बिद्ध हो गये ।

२ शिष्य कोहिन्य-ऐमें युक्त और तपस्वी के

साय रहने पर हम भी बन्धवित ही जायेंगे।
शिक्ष्य-चनो, चनें बांचन । हमें महीं नहीं

एता । पुत्राम—सामा ६ देवता, स्वामी प्राप्तिस वर रहे हीते ।

निदार्य-प्रमु नुस्तार बार्य संगतमय नरेणा (ग्रामन) सब मैं शास का नाशाकार करोगा गामाय की शोध से देह का बाव सना शीमाणावटिन

ण मण की शोध में देह का दाव लगा बूंबाणणकरित दारमा, कटोर माधना में करनत्व कर्ममा; साथ, मही मेरा हुई संक्रा है।

(दूस दूसी वर)

देशरम---गम्भा मध्यपुत ग्लासकी समाधि में सीत होता चारता है।

समान्यासय राष्ट्रजार, याथ देवेंदे वेदा बापुर्व ।

(मार्ग को तेल धर्म है जन्म अवस्तवस्त् तक

बरणर संभा हात अरुण है है

रेश्वराच्यार इत्यान कोन करो हक्ष्यां व्यक्ति हुन्। दी प्रति के कांग्रह दर्गामुक्त कुर्य अप्र स्थान करा है के स्थापन रेजायन हो स्थान है ह

Tete -me e fterer taner get gut.

स्रोद्यं पर तुम्हारा नर्शन प्राप्ति है । उन्हों विमोह नहीं है तुन्हें ।

रम्मा—सम्बुनार ! में धुर नारी हूं रूप से मनुत्र को बृत्ति परिवर्तित को जा महर्ती है बिन्तु यह प्रवृतिको !

देवदता---एक समय युवरात्र निवार्ष को वर्षे घरा नारी के सीन्दर्य में दिसोहित कर विश्व ना मेरे घरा करती तुन्हारा यह बालिक मी-दर्य ताले निवार्ष का सामन दिया देवता------

(संगीत ध्वति के साथ धर्ती शर्ती, श्रमा का वर्ति

प्रारम्ब होता है)

मिद्धार्थं का स्पर—

भारपान है नामरेन, में तुप्तारी भीना को पूर भारता हूं तुप्तें विचय बनोरन होता गोना। गी भीर भा गी पर दिस्य भान की है में। बेरी तारपा नकोर है है

(संयोग धीर नृप कार तीय क्रोति है)

यह कार्ट्साम व्यक्ति---नुवराज ह धोर को जन कडोर मागा है हुनिग जन्म क्रायर मात्र है है

(वर्गन वर्गर)

तिहारी-यह सलद स्पार मुद्र बाहुल वा

स्टूडान् वर्षेत्र च्या सर्वताः है र वर्षानाः सन्दर्भ हेत्र

ल है हैं - हिन्दुर्व्य क्लावनदान पन बन्न दिवा है है। १ व

(अन्य अक्त वर्षात्र का काव वर्षा

मिद्धार्थ— रूप, धोवन, धी, सम्पत्ति पुरप, नारी सब पंजन हैं…… स्पिर कुछ भी नही, केवल एक मैं प्रदिग हूं " केवल मैं स्पिर हैं।

मट्टहास स्वर-धीर बाज राहुल का विमोह भी नहीं है तुम्हें ?

सिदार्थ---नहीं है, यह सब पार्थिव रूप है**** भाष्यात्मिक रूप मुक्ते ज्ञात हो चुका है ।

(सहसा बीएम ध्वति सुनाई देती है।) मट्टहाम स्वर-में राग अंकृत वरू गा।

(वीणा संकृत होती है " पर उसका बन्तिम मोड पर तार द्रव्य जाता है । ध्वीन मन्द से मन्दतर होनी हुई छुन्त हो जाती है ।)

सिदार्थ—वन्य है, मैं समक्ष गया इस रहस्य रो, म वर्ति सिविल, म वर्ति कडोर, मध्यम । केवल रुप्यम, मध्यम मार्ग का बाध्यय लेला होगा चुके । यहाँ प्रवृत्ति और निवृत्ति के मध्यम एक सम्बृत्ति है। योग वीर भोग के बीच का साम्य मिना है मुक्ते

देवदस----डठो, रम्मा | बर्से | सिद्धार्थ पर नोई प्रविनार नहीं नर सनता वह प्रतिजित है, अबेय है ------(प्रति दूर जाते हुये) चलो, सीट बर्से |----

देवरत---मित्र प्रजातवात्रु, सिद्धार्थ एक प्रसाधा-ए द्यावी है। उन्होंने काम, क्रोप, सद, लोब, मेंह, सता, रूप्णा, रति-दांब, प्रवृत्ति पर दिजय-काप्त दिया है------दे जयत का करवाण करेंगे। करें---हम भी कतवर उनका प्राचीवार्द प्राप्त करें।

निदार्थ —बोधिसत्व उठ, जन **** जन

(संगीत)

सिदार्थ—देवदस, बाबो बन्यु ।

देवश्त — मुक्ते क्षमा कर दे भगवन् । प्रतिहिंगा की भावना ने मुक्ते उन्तत क्षम ने गिराकर पतित कर दिया था। भेने ही धावके नगर-अमन्य के समय बृद्ध, रोगी, मुखक भीर संन्यासी को भेकर बाधा उपस्थित की थी यब मैं भागकी सरगा हु ""

सिद्धार्थ---वठो देवदस, तुम्हारी धर्म गति हो ****** वे निमित्त ही सो साधक हुए मेरी साधना में ।

रम्मा—मेरा अपराध क्षमा हो देव ! सिद्धार्थ—तुम कौन ! मैं नही पहचानता भन्ते !

रम्मा—देव, मुझे इम बीवन से पूणा हो बनी है ---- बुद की धरण आई हं। धर्म की दीशा मिले मुझे।

सिदार्य-निस्सन्देह समुवित पश्चानात ने हृदय मन्यन कर निया है तुमनेतुम प्रधिका-रिएी होपुन्हें निनेगा सुन्हारा भाग।

रम्भा-उपरुत विया है देव ने ।

(भ्रपार जन समूह की व्यक्ति मुनाई देनी है जो निरन्तर बड़ती ही जाती है)

जन समूह-समिताय की गय हो ****** की नम कुद की जय ******

बुद्धं दाराएं गण्यामि । धरमं दारागं गण्यामि ॥ सर्व दारागं गण्यामि ॥।

(धीरे-धीरे स्वर मन्द होता है)

(श्रव परिवर्गन)

व्यविद्वारी-दास्त्रसम् ! दुवराव प्यार रहे है। उनके सार धार बन-समूह भी है।

गदीरन-प्रयाज निवार्ष मा रहे हैं, प्रजारती ! प्रवारती ! राता तुमते, निदार्य का शहे हैं, बहां है बारर गान, मामी बुमार तुम्हे वियु-दर्गन का माम बरायें। यायो क्यानी मारेश्वरी में बड़ी उनका बटा गुराय मोट याया है।

(पार्च ना नशर घोरे-धोरे निनट झानर 1 \$ 1518 Sept

रबर-बुद्ध' धाराने राज्यांव

बार्य रास्तुं सक्तुन्ति सर्व दारमां रक्यपृति

एदोरर--यादी मेरे दशाव ! यह बाजदुर मुन्तारा क्यापात कर पार है । वरिष्यातु के बुवराज को राज्य को शोध में राष्ट्रतीपुत्र होते पर क्यार्ट E rer 2 :

विद्वारी-अस्तुतान्त्र तथात्त्र का असल क्षेत्र बुद्ध विशालन का बर्गकराती है ।

मुद्रापुर-पिदार्थ, यह बदा हे तुरहे बु रवदरेश me eben fint bureb!

रिहार्यक्रमानवासम् कर वह दिशास्त्र वह क्राप्ति है। बर्ट देशका नाम्या है। १४ मा मान्यामा बार बार क्षेत्र के देव पुर से काल लगा है है आपर टैबल् कर बन्द करह बन इस इस इस देशा है।

मुद्रापन जुनगत्र र सुद्धे बरेशप्रशत् बर ** * * * * * * *

रिक्रम व्यक्तकात्रक केर अन्तर ^करीक अन्तर मी है। इनके जनक करिएटल्या का करियान है। हो, महाराज ! विका मिने। मारू भी त्या मार भी भिशा व हेंदी ?

प्रजानती-मेरेलान, मांने मनी बानर की बभी निरास बिसा है ?

प्रतिहारी-पत्र धारि गुरासित, गुरगणि मोजन सीम नामी।

युक्तीरन-राष्ट्रक, यह रहे तुम्हारे दिना विवार्क । राट्न-दिनुधी प्राप्ताम ।

निदार्य-सपूत्र, तुत्र भी कृष शेते।

राहुन-मै तो बारशर दुव हूं। रिप्ने पुने यातीर्वार शीविये ।

मिद्धार्थ-व्यवस्थु बाहुबन्नामम्बद्धारो अला नजो है ? योट् ! याची सट्टर जाती, देती ! जिला को -- ब्रियुच नुष्ट्रादे झार झारा है, बराविसा !

बराधिश-देश मेरे यात क्या शेव शा है। मैं सह एक में: पर पुणी है।

विकारी-व्यापास स्थाप प्रशंतिय है। है त्यान्योत्ता से बिसा बारण हूं र देवी १ ही दार ""

बशाबरा-स्टार्थ तुव भी प्रत्य करा ना सार्वे टिक्टी में ब्यारा राव माता तुम सरिवाति हैं। Jug-m Riet tibet

राष्ट्रवान्दी केश स्थितार विते ।

रिक्षां-मानवा सम्बद्धाः वाप्रामि है। हम्बूड अर्जिंड र दर वह केश राग बाग 🗥 🖰

इन्द्र क्षण बन्द दिन। ga beg-magen migela e migela it कर्णामुद्रा जनमार की रहे हैं र कार्या

**** रेर्डिक्ट के दिस्ति है है

पुढोधन--सिदार्च, यह वया धनर्च -- राहुन बानक है उसके मिश्रमावक तुम महीं रहे । सिदार्थ--पयेष्ट महाराज । भविष्य मे बिना

ममिमातक की इच्छा के, दीशा न दूँगा। यशोधरा-मुक्ते दीक्षा मिले ।

गुदोधन-यह बया देस रहा हूं ! सर्वनाध का पथ ।

सिदार्थ - ममला मोह का त्याग करें राजन्।

कत्य, धर्म नापावन ही जीवन का निर्वाह पद मदान करता है।

थिनि—तपागत की लग । बुद्धं सरएं

धुढोधन-तब पुत्र, मुक्ते भी भपने संग में लें।

नन्द-छन्दक--जय हो देव ।

^{भाषोद्योग} देश में ब्याप्त वेकारी, अद[्]वेकारी दूर करने में समर्थ हैं यामोद्योगी वस्तुएँ ऋपनाकर ग्रामीण भारत को

सुदृढ़ बनाइये

राजस्थान में तेल घाणी उद्योग व ऐसे ही अन्य हजारों परिवारों को रोजी देकर शुद्ध वस्तुएँ उपलब्ध कराते हैं।

प्रत्येक खादी एवं ग्रामोद्योग भण्डार पर उपलब्ध हैं

राजस्थान खादी तथा ग्रामोघोग बोर्ड द्वारा प्रमारित

सिद्धार्थ-व्यवेष्ट राजन् । मरे कौन बान्ध नस्य चंदक, तुम वहां छिपे थे ? नन्द-नया वर्ष्ट देव । यह इश्य, यह व्यय

देखी नहीं जाती - **** छन्दक---ध्वरात्र भव तो हमे छोड्कर न जायें सिद्धार्थ---न्म दोनों माना मेरे पास, तुम्हे

सन्मार्ग का. अपनी अमून्य निधि का दान हुंगा। तथागत के मध्यम मार्ग पर झालड़ होतर जीवन का भानन्द प्राप्त करना है तुम्हे ।

जनसमूह-तथायत की जय । भगवान बढरेव की जय।

समवेत स्वर मे--बढ़ गरए। गन्छामि । धम्मं दारएं गच्छामि ॥

सर्थ दारगां गण्दामि ॥

पिंजड़े का पंछी

भी दुर्गास्त शर्मा

क्रेंबर शीर माण्डाशी है। दिवार के सभी प्रमाण करने हैं। बारात के टल्साने के लिये सम्बद्ध बारान गुर । उनने भोजनार्थ बहुरही वश्चिमी, रंगभरे मिन्हाल एवं होतल वेद पहर्च, हात के रिये मन पान्य काहे व बाय ग्रेंट । नारही के रिये भी का बाढ़े के बेहर, हुव्य के रिया के रिये नकर नक्ता। इत्राग्ध का प्रशास की ही, बरां में हो, यही चात्र के विचाद क्षेत्र का रियम मा रहती पर यहना अधितन हम हैन्दर भी मारित भी भारत चन तरर दा दिल्ल हिट भी मसरदा में हर करते में नगदश कोई ध नर नही प्राथ पा रण में । जुनी प्राप्ती बीबी कार्यने बाई । राष्ट्र में प्राप्ती बीची में और इस सरवाद में दिवार fend an fent meine meb mitte bei einer तुरा तो बच्चा बच्चमा बुद्दी, चाह आई हि इ बाबु के दिशार के मुकार हुए बुरह के लुहे अर्थनहर्वे ब्राप्तारक का अन्य बाहित पह करता। अपना व काइका हुआ हुई के वर्ष के के हैंगू tre ibr ber er et mie ge fagureund un einer bera frau berauft ber ber Mit Cimparitet ift fam fine gemingene # fang argame migerat abe megiger 4 f 4 f 4 f 5 1 4 974 98728 8 10 भाग्नेह का नो इनके मानवादिक्काल will and and \$ d a wage fire y we et it en ertifet get gen ben bereit Burna da Tator (Angrada e ispar A HIL Fatura se a regrésie l'extres e

चडा बच्चो ने जिए भी तो बाड़ि वाहित । याहै तीन सम्बद्धा हे सहता था। सब में बंगे ताशे जिसका विकाइ या सामग्र १६,१६ वर्ग भी माहुकी थी है

राषु एक बारताते का कारानी था, पुरे एक मात्वरवदनार दर कर गोतरे दरा धारे ने बार करी चारीत वारे मित्र माते में तिरु मात बारित रावे कोट ६ बाली; ६ प्राणी, बारीत कारे और गुरुवार संघी के मार्ग मी मीर वर्णिको को साध्ययकातः न वर्णायां विश्वनीया मार्थित कर कारण सुबद हिंदा बरण का र प्रश्ने बच्चा ने विष्ट सीर रवर की अधिश करते ला देहें हो ब ये, बादा ने क्यों जा रेंग घीड लगा सरवर की सारी का धारण रेग्या नहीं है। वर्तन चीलन के बार्ड देश बर में प्राता कर अभीत कर दण जाते । पार्ट देवभार करता वैभि कें के अभी जल्लाकों को तक सवाब की मार्ग वेद : लाव को निका सरकार है। यह सपनशान वी रक पूर्वेदर सर्वता बतासूर जाग-स्टाबत पर् बर्ट बर्ट देवर चेट चल पार्ट र कार्य राज्य की है सरार की दानक क्षाप्त तो कवी हरून नाम रेंदर्व के सम्बंध कीर क्या करने कर के संस्थित mer gem fere unnig fic mir nien er Bear greet zet eine batiere त्रक हुइन्ने अर्रिक केन्द्र विकास का उन्हें प्रीप हरक ब्रांडिक्ट इह से बाव राव कर अरा है ेर अंदेर में ने बर मारई बार 4 र दे र र (प *र* with the world be fort that

एक दिन में चार बार खाता है तो ४० रुपये पाने बामा एक दिन मे क्रियना। किन्तु उससे हिसाब म बैठता वह पून: धपने दिमागी विटेमिनो में जोर संगाता, मैंनेजर साहब के परिवार में भी तो वही ६ प्राणी है उनको झामद के धन्यजस्यि भी है फिर ? विन्तु फिर भी हिसाब व होता। एक बार उसने वहीं मलबार मे पढाचा ''नई डेहली के राजमहत्वी **भीर गरीब** मजदूरी की भीपडियो में जो विषमता है वह स्वतंत्र भारत में एक दिन भी नही टिक सकती, राष्ट्रियता गांधी।" वह बार-बार इन शब्दों को दोहराता, सोचता, ^{उनका} मन मस्तिष्क पर सवार हो जाता घोडे की तरह खुने मैदान में सरपट दौड लगाता, एक आब माता दूसरा जाता । सगिएत लहु रें उसके गंभीर इत्य सागर में उठती, झापस में टकराती, चकना-🧗 होती, उन्नति का लाभ वा कोई रास्ता ^महीं, बच्चो की सिक्षा के लिये कोई सहारा नहीं, ^{बहु} भपने उन मासूम बच्चो का जीवन कैने बनाये ! ⁴रावरे**? प्रयो**भाव के बारुए। उसकी स्वयं की ही नहीं उसके बच्चों का अविषय भी गहन अधिकार में परिपूर्ण या भपनी सतान के प्रति उसना मोह मंथता, स्नेह सावाद सबे दिलाई देते। वभी सीवता उसने इत बच्चो की जन्म ही क्यों दिया। हिन्तु वह तो परिवार नियोजन के साधनों से धन-निक्र या भनः भव कर्मा यह उन्हें धपने पर बोक्स मीनता को कभी समाज पर, तो कभी देश पर। कभी हेन्द्रे बरदान समभता, तो कभी सभिनाव । उसने बनामार की पूर्ति के लिये भिन्न २ उपाय सोचे परन्तु ^{सरवना} नहीं मिली । सहेबाजी की, भाग्य ने भोता दिया, जन-तर विये उसके सन से अक्ति ^{को हदा}किनी प्रकल लहरें भक्तोरे लेनी, नयको में निर्मेर मनीम मेग में उसके ईंग्ट देवना के ^{बरल}ो पर बहने समने निन्तुफिर भी दिमागी

श्रासमान पर छाये रहने माने भगवान ने उस गरीज राष्ट्र की एक नही मुनी। शायद उसका अगवान भी पूंजीपति हो गया या। दिन दिमान साल साथ काम नहीं कर या रहे थे। नमा करे, परेशान था।

राग की बीबी जब-तब भन की समस्या के उप रूप धारण करने पर विसी सम्य पडौगी के यहां मजदरी कर लेती, कभी माटा पीस देती, तो कभी उनके बड़ां चौका-दर्लन कर धाती कभी उधार ही लाकर काम चला लेली। कभी ऐसा भी प्रत्यर झा जाला कि जब अपने मनान में रहने वाले भाउयों को दिखाने के लिये चुन्हें में भाग गुनगा कर ही अपनी फकीरी हानन गुगने की मौर ग्रवनी ग्रावरू को बताने की कोशिश करती। राम जब कभी कारलाने में लौटना, उसकी बौमती सदैव हंबते हुए उमना स्थापत करती, कभी कोई माग पेश करने का विचार नहीं, सीजने बा बोई प्रश्न नहीं, वह भवने पति भी मनबृरियों से अजी-माति परिवित थी। वह भी सोवनी इस समाज में जनके परिवार ना नया मूच्य है ? समाज क लिये इनका पश्चित मिश्रतात है प्रचन उसके जैसे अनेक निर्धन परिवासी के निर्दे समाज स्वयं ही एक समियात बना हमा है। खबात की रीति भीर प्रवामी के नाम पर गरीको ना बलिदान हो तब बरदान ती वह मान नहीं सबनों। यंगेंड को मुल, चैन झौर धानम्द बटा ? धानग्द के जिए मंतान, मंतान के निए विवाह, विवाह के नियं समात्र और समात्र हें निये पैसर, लोग करते हैं, दिकार एक मामादिक रोग को मनौदेशानिक छौपनि है। दिन्दु दिवार के निदेवना। पैने के निये समायः। दिन्हे पण देशा नहीं उनकी कोई सत्याजिक नियान नहीं उनके निवेसमात्र में बोर्ट स्पान नहीं। बीवन की

प्रचेर ममस्या का ममायात चैने में है। बही सब रामु मौर योगा दोनो सोच रहे थे। इंचारो ने एक एक पैने को दाया से पत्रहते की कीरिया की मा रिम्मु मना पैना भीर रहे, नश्मी उनुस शन्ति यो है। मानिर तुस न तुस को बरना ही था। राष्ट्र के पाप बाद का और कोई करिया न या, सित्रम की बास्त्रनी नरी, इस दव में चराणी को रिरक्त तो क्या इताम इक्सम के काम पर भी जुल नहीं मिन पाला। बाब स्टिबन की भारती नीके गे नहीं, उत्तर ही उत्तर विजयी में तारों में जरती है। गधेव शब की जान पर भावती थी। वोर्टमरिस्ट कार्यकरी के स्थि समय नहीं। बादा ६ दते से शांत के बाद की सरे तर मोगू के बेंच भी तरत शिवता बहुता । बिनी बिन के बना , शांब दें दिशाह खनाहा बारी राष्ट्र की शमास से बान बुन्द केंद्र सई। प्रश्नु रिक्ता बचाना भी भी बोर्ड हेंगी संख नहीं। इचर प्रथमें बहर में इच्ही स्पेश्व मारी, यूचर प्राची नवस्थात के दीना से करवान मही। प्रश्चा र्रावर बनार जार न नाहि केले के दिखान के fet ar erre mie ar darem : unur wirte grei wirt gir mie mife un fee E fails at it give goet at gent मारता, सामलारे कोट बाहुका की जीवारे हिंदा दिया दिया ere mein greife feifar meige uran; e fer dinerri big ere an dan gereit mene aletan er eter Cerenene रिकार बन ने बंध संबद्ध कर हैंद्या है जनसम्बद्ध e erri b' et er bee reter ar: fated than the same of feety of the ett tri g? s'afa

र रक्ष है वारी कार विश्वको जूर जूल वर्ड को सी हरात का किया कराने जूल राज्य का

वधीन की सन्ह से ऊ'चा उड़ने के कारण मारे धार में हो लीत रहते हैं, इपे रूप म सपाने हैं. परन रिस्ता चनाश भी थी एक बना है मा: मामे बाजाय हीर परिधन के पायात राय की शिया चताने से स्टता सिनी । यह भी माता हिरावे का रिक्स नेकर राज की कौराते पर गया ही प्राप्त बाहार नेवाडा, नवारी की पुगवारे की कीशा बरना दिन्तु इस क्षेत्र में भी शो पनिगाणी कोई कप न यो । एक तका हो गया, दिर भर काम अरता दलार में, सारी रात्र इलवार बरना बीरने पर सवारी का व वेंगे की मानित और पैवा पेर की लाजिर । दलार बाजा, तथित बरान्य में रागा, प्रशासी में काम करता । एक दिर तो प्रमाहे सप्टनर धैनेबर ने उठे बड़ी सारी द्या शिता दी धीर पर दिया यदि काम ठीक नहीं करेगा, तो नोवरी से निकाण दिया जायणा ॥ दियाण पाण् के हृश्य के हुए है ने हरे दार । यह चकर से घर सारार सीर सांत की दिश्या नेवट चन्न दिया । किमी सवादी की मान में इ.सन्द्रस चरे का प्राचा है। एनकी दिस्पी करी बील कुर नई हा, कावना बरण हुया कि कार्र बरकर कुर्नेत्वत क्षी अर्थ । दिनका वह शिकार इन्दर्शरम अर वे सर कृष् सरमण हो। अन्त अनीप इस इप्रतिसाद कर जाते. बाद अधाव में आणा मनको के काह का यह यह यह तो हुई कर वर्ष तेया है marte fritigeren ft. freit geit ginge क्रांच के कार्य के कार के विश्व की स्था pus feir as de per tere et et, et

\$ 1.24 \$ 4 \$ 4 1.4 \$ 1.5 \$

#'3 4'E F 1

4 & 4 A ...

कर्ते कर है। जब बैंटरच तर रे बन रेत है। सब

रंजन ने इन्हान की तीन भील तक ले जाने की मजदूरी सिर्फ तीन द्याने !

रामू ने उस पुनारने बाने व्यक्ति के मुख को देवा, जो विज्ञती के साम्ये के नीचे जरू था पूजा था, जह तो उसना बही बारायाने वाला में जर था। वह ते उसना बही वह साम्य की भी भारतीया के स्पार्थ के साम्ये के साम्य

मोहन भी एक मध्यभवर्शीय माता पिता की मन्त्रान एवं उनकी समस्त साशा, समिनायाओं का ^{कैन्द्र} बिन्दुया। बड़ाही कठोर परिश्रमी युवक था। डमने बी. ए. पास विया और फिर अपने पिता के रंघों से बुख बोफ भार हल्ला करने हेतु लौकरी की तनारा की । बढ़ी २ मनीतिया बोली, संकल्प किये । प्रापैना पत्र देते २ थक गया किन्तुसारे दक्तरीं की सार धानने के परचात भी उमें बड़ी जगह न मिल मधी। वह विचार किया, करता वह इस विकास के 💯 में भी धविकसित एवं वैकार या। उसके पास ^{पूनिवर्सि}टीका प्रमाण पत्र तो याकिन्तु इस युग मे मरी तो सपैष्ट नहीं, इसमें भी ऊपर चाहिये किसी भीमनाय 💵 बरद हस्त, सिफारिया जी उसके पास मीनही। इसके समाव में भूले मरी समाज चुप देंगा, सरवार के कानों पर पू नहीं रेंगने की। री, परिभारम हत्या करने के प्रयास में विकल हुए दो सरकार का मोटा कातून उसके कोमल करी का रिपार करने में देर नहीं करेगा। विजनी सुन्दर ष्यस्या है। यहा साने और मरने ना अधिनार रही, मधिवार बेचन सङ्घने बा है, छटपटाने वा है। कभी सोधना काता। यह मुक्त से मुक्ती होता, कभी सोधना किसी विद्याल भरन में उत्तरों महि वही सुनराल होती, कभी धोनता यदि उमना पिता एक तेता होता। इसी प्रकार कड़नी ना चक्कर लयाने दिन. महीने धीर वर्ष निकल गये। उनके यिदा परनोव निकार गये, माता विभवा ही गई धीर वह स्वय धनाय। धालिर कुछ ने बुछ तो क्याल हो या। छत: उक्षने परने भाषी वार्यकल पर विचार किया। धीर जैसे सैसे कई धेये धरनाने के बाद धन्त से उनने रिक्ता चराना ही प्रारंक्त कर दिया। एका निका चा ही, होसियार या। यत: दिखा पुरित्य का मन्त्री वन गया।

कुछ ही दिनों में रामू बौर मोहन संस्के मित्र बन गये। मोहन राष्ट्र को अपने रिक्ती की संवारियों दिलवा देता भौर इसी प्रकार उनको घन्य सहायना भी करता रहता। विल्यु अधिक परिश्रम करने गे राम् बारे अधिक अस्वस्य हो गया, वह पहुन ही लासी भीर ब्वरसे पीड़ित या। कुछ दिनों मे ही खासी के साथ शून भी माने सगा। पहिने सी उसने इस सबकी परवाह न की। वह परवाह भी वया और वैसे वरता। इतने पैने वहां में जो मगना उचित इनाव करा भक्ता, बाहर जनवायु परि-वर्तन के हेतु जा सकता। यकायक उनकी दशा लताब हुई धीर ब्रापनी नीशरी एवं मनदूरी दोती। ने ही मननारा सेना वड़ा । मोहन ने उमनी बरेष्ट्र नेता सुखुषा भी की, धौषधि भी दिनाई किन्तु करून देर हो चुनी थी, उमे टी. बी. का प्रलिय दौर अन रहा या । रामू ने प्रानी पुत्रों के दिशाह की निवि शायिक कारणों से पहिने ही टान दी थीं। सब ती इन नवीन परिस्थितियों ने नहकी बानी की भी हम नावन्थ से पुनविचार वरने पर सत्रवृर कर दिया सौर उन्होंने एवं दिन सम्बन्ध विच्देर को मुचना दे ही दी। 🗎 क्षेत्र पृष्ठ मैतालीम पर बह कीन की कहां रहती की मैं नहीं जानजा। ने पो देखा है भीद सेवा हाय सामी देगा है कि एतमी बहुत भिक्त परिवित हैं। दिन सम्बन्ध में, हों भीद को ! इन मानी का चलद में नहीं दें का। देशाभी बहां में, मैंने केवत साव जो देखा बगा।

जा नुष्टर साम की, मैं और इंजे हिनी हुए । इंजी दूर नहरंग । माने मिल के नाम जम मेहिर एरिन को जोरे की मजदूर किया गया । मैं न माजूम इंजे ट्रिप्टार्टन युग्त और निवक्त गया । में न माजूम इंजे ट्रिप्टार्टन युग्त में माज की हुए हुए में इंजे की माज में में माज की नाम की निवास के हिन्द हुए चोड बार्डन पर प्राप्त करने जा हुटे में

টি এল জালাভি জাণুভিত কালে বলট নিশ্বতি জালাভ বলাই ভাগি কা सहित्यों ऐसी भी नहीं थी हुए साहारण भीर सम्मान हे साहरण में रहनर भी हती थीगान में मन्दिर में सान्या रही थी, हहीं में बर भी बीते सबल्यन बरवन मेरी हिंदू उस भीर साहरित ही समीत हुए !!!

दियोरी मानुनिक बंग में मन्दिन माने वाने को पुरानवा संभात कर पत्ते हुए, सीरिया पत्र दी यो। मानी मानना को साथ नार्डियो में नार्डिय दिरायेए, संबद गर्डि, संबद नार्डियो नार्डिय कर माने होटे भाई को प्रेयारी तक्षेत्र माने तरेड़ के साथ दिरायों यो से बक्या था, साथित पत्र दें यो। नार्डिया में माने एक सरको पुत्र में राष्ट्र नार्डियो कर माना गुत्र कर प्राप्ती मान देंगा में प्राप्त में मुझ केर दिया। पुत्र से देंगा में स्थान में

में भोज बार नह निराद विकार परित है दरहा रोचवा ना बिसी कर बहु जा दियार में स्थाप दिना साराहरण में साथ पर्दा हार्गीर प्रश्ने भारत दिना साराहरण में साथ प्रदेशन पर्दा में भारत दिना नामना पार्टीस वीदर पर है और बार्ग में प्रदेश साथ नामना पार्टीस वीदर पर है और बार्ग में प्रदेश साथ है प्रदेश राष्ट्र नार्व है यारत में पर पर साथानि न्यानी मानवार्ग साथ है

किर यह पहरा किस पर १ वह पहरा है हमारी नैति-रतापर, मुक्ते वे नौजवान दील पडे जो मीचे स्वडे पुरन कर रहे थे, धौर वे सहित्यों जो श्रपने द्पटटे नो हटा और बार-बार हुँक कर अपने यौवन का उभारदिला रही थी। यह पहरा था उन पर। नैभी विडम्बना है हमारी संस्कृति का पुनीत स्थान, वहा हमारे पूर्वज सारे दुख: मूल जाते थे जो यान्ति का केन्द्र था अहां इनना भ्रष्टाचार क्यो ? न्या हम इतने गिर खुके हैं ?

वह मंदिर मे प्रदेश पा गई दूसरे द्वार से ओ रित्रयों के निए या। मैं बिनादर्शन ही औट पडा। बहर सीग मेरी मोर देख रहेचे। किन्तु मेरी करणादी, विसे फुरसत यी कि "वह यह देले कि में दिना दर्शन क्यो लीट यहा हूँ। दया है यह भारतीय पर्दा प्रया की व पुरुष प्रधान समाज की कि मैं किमी सहितिनि का हिन्द बिन्दुन बना। मेरे जैमे और भी बहुत थे। हां, यदि में लड़की होता नी घराय सीमी की निमाहें मुक्त पर पडती। दोरी देर बाद वह दर्शन वर लोट रही थी। हुम⁴न या मेरा ध्यान उसकी छोर छाक्ष्यित न होता किन्तु मैंने देखा कि वह सीडी पर बैठे मिनारियों को प्रसाद बाट कही की स्वय उनके पास बार। भीग, जब भिलारी मागता है तब भी प्रसार नहीं देते चिन्तु इतमें वही एक ऐसी थी। बोदन सबसे विविश्व थी।

सीडी समाप्त हो गयी। संदिर की पाथ सी रीड़ी धौर में फिर नीचे था; उसके आई ने प्रसाद ^{मीता} किन्तु भद प्रमाद बहा बा बोली ^कन सुमने प्रताद साया न सैने * * प्रमाद तो खनम हो गया ।" ^{वित्रा होटा} - उत्तर था। विन्तु वितरी सरनता में घरा भोता उत्तर। यह चल दों सीर में देखता रा, बाबता रहा। बचा बन्तर है इसमें और उनमें। क्ता बारण है इस भेद का। अन्तर ने उत्तर दिया

नेवल वातावरण का धमर। इनके धर मे जैनी बातें होती हैं. जैसा बातानरल इनके पडीस का है, जो बात मित्रों व सहेलियों में होती है, वहीं तो भीराती हैं ये। इन्ही बोफिन विवासे में पासे धोर हप्टि उठाई । सारा वातावरण फिर ज्यों कारयो था। उसके होने ने यान होने से कोई शन्तर नहीं। केवल मैंने उने देखा, बम """

0

विजरे का पंछी

शेष पैतामीश का

रामु पर विपति का दूसरा पहाड हुटा । वह नया करे। उसकी हालत भीर भी गिर गई। उसके मरने के बाद उसकी गृहस्थी का क्या बनेगा ? वह बाहता या, धपनी लड़नी का हाथ मोहन के हाथों में सीप दे। उमे मोहन पर भरीमा था, उमकी मृत्यु के बाई मोहन उसकी गृहस्थी को भी संभार नेगा। इन प्रकार लडको देकर यदि ऐना सदका निर्म सके ती वह बाति से सर सदेगा। दिल्लु इतना पहने 📶 साहस नहीं या । एक दिन अब उनकी दता घायान ही गम्भीर ही गई, बहुलाहड, चंदराहड, उनके मुल पर भावन रही थी, मोहन भी बहा मौपपि दे एत था, रामू के बोबी बर्ध्व सभी वहां थे, रामू ने मोहन के बानों में बारने मन का बोम्प उद्देश दिया । मोहन भी न नहीं कर सका। राष्ट्र वे पृंह पर एक पल ने निये धार्याधिक गांति सीर संशोध को बाबा चमकी और दिनीन हो गई । जीवन में पायों थीं उसन समस्तना, मसानित, तहरत, पर बदाबित बावस्मित सचनता ने उसकी किर दल्दित बाद्या का पूर्ण कर उनके सर्देव २ के समात सन को बिद सानि के सामीय ये मुला दियाचा।

महा दलह जिस्से की मृत्य भी है बाद्या हो, दार दिव र स्वयं में उत्तर होत मकरो है जिल्ली । जिल्ली जीव है । والمراجع المراجع المرا tan atia as atal &. ! त्रेल के करार करूर, \$4. \$544 \$ 415 44 \$13 44 ; الدمار و ١٠١٤ هذا لمما أدعيك في هذا عدد طعا هام. حال، خاط يا عط ألباءٍ خاء

atampt and the Be an dell' at Charle by w ي د خلفته څکا پاکستان کي د tin bi ba c do sidios be a fine som te er som, the and group. en a beier an dife samp to b Color de provide delegar de 3 Property of the same P' & TH THE A THE ET BUTE ! eras commercia

इत्र पर व्यार किने, हंग्मी बरार बानो पुरार मिने, जीर उनराधी क जीत दक्ताची सप मजरी है। एक या दोता हैरोबर प्रश्न मकते है। बेंसे मुमानिया मही है हुए मोगान क नेक्टिन यो० इसपूर कीर द्रारिक पूर्व योर कव्ये पत्त का कुछ ब्याह रूपो। रक जायो, संगर कही त्यार की संग्राहित लाने सरस्य र से । बीप के व जिल को तथा हा तो थी। बार रचा नवीं भी रात्र है। मन, वामरीका, वीन, मोर कई मुक्ता का त्यां का शंत है । धन्द हर यार बारा, नीत समहोता ने बताई की । उत्ता कर, बीर बनरीशहरू हैं, दिल्लाने वह भी दिए। भारत सम्बद्धा हुन एसन एन बहु। उत्थान है संदित बहराया सप MATER IS MA WAS A SALE LINES Ly ma at by the died by the bit

सराबारण के ने सब है शहर, विमान्त protes and 41 Sall R. Leal to \$1, 4.1 teres & Martine. बन्त है। क्ष बचर हर है। क्षांत्र _{कार करण} हा क्षा के से देन पूर

त्र का बाला वर्षे के वर्ष कर कर है। was an earner as women from the fit चर्च र महर्त ह दार रस ,

22 4 444 25 51 345 W 5 * C! ** #*# \$;

अर्वाचीन-साहित्य

• एक समीक्षा

"वंत्री नाद कवित्त रम, मरम राग, रति-नंग । अनपृद्हे वृद्हे, तिरे, जे पृद्हे मद अंग "

बिटारो '

रपा-माहित्य	(t)
शार देशगत्र उपाध्यार	
भारती की धारतो (कविता) भी पर्यापक 'दिनेक'	(A)
नरानी-माहित्य थी मानकद गोरवादी 'प्रनद'	(x)
गहादी-साहित्य	(1:)
रा= समजारा 'सर्रेन्द्र'	
प्राची तो हुवैसी ही (बवित्र) भी बच्चान निर्देशकात्र	(41)
मीति-माहिष्य	(11)
धी पादेग्यास 'सम्बेट'	
महोत्त्र-महीरू	(43)
योग सक्त विसीत सर्वा	
प्लारे विरावे दूरे युग्ते (वर्षवण्ड)	(11)
An Sales Alex	
1 maintenant	(+1)
Tre and Manage	
Ater (445m)	(1+)
of gram cation	
anterpara to t	4897
A 448 C S S S S S S S S S S S S S S S S S S	
\$20 K. No.	126
the state of the s	
माध्या ६ वन कर्ण रूप्त सुर्वेत सर्वत्राव्यक्षात	{1s.
को बनाव ल "३१।	

कथा साहित्य

हा० देवराज उपाध्याय, ७००७३, हिन्दी विभाग, महाराजा व क्षेत्र, २००३

स्वित्य स्वयं में महत्य प्रवशः महित्ययं मान समें यार्थ का भाव प्रवश्य वर्तमान है चीर हमें हारा जात के जीको को रासासक पुत्र में बीप में में तर कि जात के जीको को रासासक पुत्र में बीप में में महाता मिननी भी है, पर वास्तव में देवन व्यक्ति की स्वतंत्रना की घोषणा है। व्यक्ति सत्तन में प्रवृत्त ही इमनिये होना है कि कहों न वहीं उपमें लड़क है, वह जीकन ने प्रवाह में स्वतं मान नहीं पानों का नहीं पाना, पातः बह प्रवाह को है स्वता बाहना है। वास्तव में देवता जाय तो महत्य की मर्थक किया है। वास्तव में देवता जाय तो महत्य की मर्थक किया है। वास्तव में देवता जाय तो महत्य की मर्थक किया है। वास्तव में प्रवृत्ति का किया है। वास्तव में प्रवृत्ति का किया होता, लागा, चीपा, उठमा, बेठमा सब हुती कामन-व्यापन के प्रवृत्ति की सक्ता है। वास्तव में स्वत्ति के बही प्रवित्ता का स्वता की सक्ता की सक्ता वही प्रवित्ता का स्वता की स्वत

विजा वेह भाग-अवासन या आस्माजिय्यति वे विजा वेहिल अवाह पर बहुने हुए मानव वे इस, इसल-अवन जैसी जैविक नवा महत्वजान दिस्सो के इस, बाहुरी भागानी म उदाक शिक्षित्रक के इस जनने वस्थान क्य में सम्बद्ध नहीं रेसो विजी बचा के इस जुन के उदाहा भी जहीं रेसो विजी माहित्र के इस, माहित्य के इस्से भी उसने वहीं, जिननी माहित्य के एए धंग उत्यन्ता के सार अवनार-पाविनयों में सार अवंत्राद की रेसा है विजा के इस्तु जनसेमस्पूर्त में वहां रेसो हो अवनार-पाविनयों में सार अवंत्राद की रेसा हमनार-पाविनयों में सार अवंत्राद के विजा के स्वा "राज्ये सारं बसुषा वगुषायामिय पुरं पूरे सीधव ।
सीधे तन्य तन्त्रे वराह्ननात्रहर्ण्यस्य ।।"
धर्मात्र दाज्य से सार तरत्र पृत्यी है, पृत्यी से तगर,
नगर से भी प्रहल, महत्व से भी पर्नेण धीर पत्रण में भी एक सित सर्वेस्त मुत्रसी । उसी तरह कहा जा सकता है कि जगत से सार पदार्थ जीवन, जीवन से प्रीक्षव्यक्ति, धिमस्यिक से धान्माधिन्यानि, धारमाध्यक्ति भी क्ला-साहित्य, साहित्य से भी उपन्यास ।

वहायर उपन्यास के संदर्भ में सार घनें नार कारूपक बाधा गया। इसना उद्देश्य इतनाही कहना है कि उपन्याम भाग शहानी मात्र नरी रह गुवा है, बुख मनौरंजक घटनाओं का तारतस्य उत-स्थित कर देना ही नहीं रह गया परला वह नैनार के व्यक्तित्व, उमडी बालरिश बेदना, हननन, मंदन तथा बाग्रोजन का नर्दभेष्ठ सापत है। बहुत दिनो तक बना वे तेव में धतुरूति art as an imitation बाने विद्याल की नृती बीरती रही, नीय कना में बाद्य वस्तु की प्रधानना मोनने क्हे, विभी दिश्य तथा विज्ञान प्राप्तिक एरव-अवर के सफन विज्ञान में ही बना का सापट्य माना प्राप्त रहा । परन्तु मात्र कता मे मिशमिन को प्रधानना स्वीहत हो चुनी है। बना धनुन्ति नहीं, प्रीप्रव्यक्ति है, expression है। इसमें बाद्य करन प्रधान नहीं, प्रधानना है धर्मिय्यन्ति की। यदि यह कोई प्रदन् बरे वि विसकी यभिष्यति नी मान्य उनर 🖟 कृति के हृदयस्य आत्रों की, घर्वाष्ट्र कि के सारम-श्वकप की, जो विसी भी चीत्र की धपने नापन के

रा में बता में मनाहे हैं। स्मीतिहे बहा महा है 'महिरानार गाहिए से बहा है।' यदि मह बात दीए है हि माहिरानार माहिरा से बचा है गो इस्ता गारी बदा प्रमान बदा गाहिरा है। यह बहि बे बता 'प महत्ताह थे ध्यार ही दिविद्'' को सादर करवा बता महत्ताह थे ध्यार ही दिविद्'' को सादर करवा बता माद ब गा जो हम महा बता है है वर देन बाहा में हम मदो बाहा का क्यार्ड दो बना। व जाने बहि बार्ड महत्ताह में है बुद्द हिम्म गाराबित्र साद बर बरा गा है किसते मह amplichten का गाए बरव एम बो मी हो है।

नरानाधर्मसर शिक्षद्र न दूर से सरव बार्गा पागयो में माँ। नेतर के शामिए में हैं, रत्नरी केना से हैं। इस बाद प्रत्यान से बह बात रैनरे को भाग्त करी काले कि उसके दिव्यादित पात्रा का बारशा बारात् का नामः का का ना विश्व रणा है सा रहें, तत्त्वार क बार के विन्ते धान नारी का नग हु-न्तित तुषा है बच्चा असा की देल मार बार रण गई है । फानाई हमारे नियु हिस्स मागव की महा है। हिस्ति न कारतुल जाह दुल्हश्च र र प्रशास्त्र तीय सर ६ सर सार्वा हाई हु सह माजीब eine der afreifer ab nicht, auf ab abs बारता है । हार अहरी बाज कर रणा कहा हुए ter court tar at en en en fir तरा क्षा अ रेक्ट तीयह काड (उर का का हर्रा fe en High & had faire donn sonat yes hand an मिल्के इंडिक्स सम्बद्ध के उपाद । अनुस्तार-

Apple of the regular man according to the control of the control o

ele kendin gramiti

को बर् भागता है कि सर्भे एक ही करी गया। स्ट गया है केंग्रा कर्गी। Flanbert ने करा कि मै नुस नरी about nothing पर एक एक निजना बाहता है और बोर्स में क्या शा^{रिता} के त्रता music वे करता पारम्भ क्या शिव्य परि की कुछ भी प्रयान्ता लगे है। संगीत के संगीते कुछ बर्च भन्ने ही दिन र जार परायु वर्ष प्रधी नीई धर्चन भी दिवारे मो कार्द हार्ति संग । एए पर्ना दूसरी व्यक्ति से स्थित कर एक हो गई है भीर कार पर कर सम्मेदा, विभारत बहुत ही किहते रंगाणु ए छ देखार यर यन हुया है। जरनामी में भी हम रूपे eer wi high temperature fullen beri भारते है कियो सारापुर र, विशोध करो था है, पहि कपूत बरपू, वर बरपू मा बादर में मान्ता करते हैं प्रथम प्रमुख्य कर स्थारी प्रतिभाषि के साम से गर्म कर, और टेंपूरक स्टब्स्स 🎚 बाद कर युप्त मार्गीः अदात कर देश कार्थित आपाप करा के मरे क्टेंबर दिवय है । सर्गार मा बाई मी ब हो तुमार ११ लहीं, कर मुख्य करी रा १८४० है। एक देशा है, देखा हम देल्ले हैं। यस में हैर बर्डू के मोरा मंत्र को grege greg met, mitter abig greiten 4 f है देश सरकार स्टार भी जनता रा सुहारा अपन्त है विकास चार व दिए काना चारार वा चरा रेंडला चर्च को जार है जब राजाय वार्ष 2 - 1 7 10 9 60 E 1

व्याप्त कृष्ण प्रश्निक व्याप के हैं कृष्ण के हैं कृष्ण के है के लग्न कर है के लग्न के के ल

पर हम राजस्यान के द्यापुनिक कथा साहित्य को देमें।

इपर दम पन्द्रह वर्षी के बन्दर राजस्थान से जो क्याकार हमारे सामने झाये हैं उनमे दो तरह में उल्लेवनीय हैं-परिमाण की होष्ट में तया ग्रुए नी हिं हो। वे हैं डा॰ शागेय राघत तया श्री गारतेन्द्र शर्मा चन्द्र । इधर के नवीदित कथाकारी मैचद्र ने प्रपूर्व लगन, साहस, पर्यवसाय तथा र्योतमा का परिकास दिया है तया हर तरह के प्रयोग में काम निया है। उदाहरण के निये एक उपन्याम में उन्होंने झाल्म-कयानक शैली में काम निया है। इसरे उपन्याम को बायरोनुमा बौनी मे िना गया है। सर्व समर्थ होनी की प्रधानता तो कित के सारे क्या-माहित्य में बाज भी है। वटनी में भी उसकी बहुतायत हो ग्रीर वे ग्रामक-वैवक् हो तो इसमे धाइचर्य ही थया? राजस्थान निरासी होने के कारए। यहा के लोगों के एन-महन के ढंग में, विचार-पढ़ित में तथा नावनामो ने इनका प्रगाद परिचय है। विद्येषनः ^{पत} युग के राजा-महाराजाओं के जिलास तथा भित्रपूर्ण जीवन को इन्होंने बहुत समीप ने देखा र घौर उन्हें भपनी रचनामां का माधार बताया है।

सरी रम लेकक का छुछ है, साथ ही बोच भी है। है में बहूँ बोच ही है छुछ नहीं। मेरा सदा है है है एन नहीं। मेरा सदा है है है रह दिस्तास रहा है कि लेकक को बच्चे-दिस में भीवन पदने उत्तर विद्यास बरना गरिंदे। यदि नेवक ऐम विषय को मेनता है जो ऐंदे। यदि नेवक ऐम विषय को मेनता है जो ऐंदे। यदि नेवक एम विद्या को मता है जो ऐंदे। यदि नेवक एम जिल्ला है जिनमें जनता वा राम-विदाश में क्या हम होंगे पानद उत्तर हो स्वत्ता वो कि स्वत्ता को स्वत्ता की स्वत्ता को स्वत्ता की स्वत्ता है तो स्वत्ता हम स्वत्ता है तो स्वत्ता हम स्वत्ता है तो स्वत्ता की स्वत्ता हम स्वत्ता स्वत्ता हम स्वत्ता हम स्वत्ता हम स्वत्ता हम स्वत्ता हम स्वत्ता स्वत्ता हम स्वत्ता हम स्वत्ता हम स्वत्ता हम स्वत्ता हम स्वत्ता स्वत्ता हम स्वत्ता हम स्वत्ता हम स्वत्ता हम स्वत्ता हम स्वत्ता स

दूनरी धोर पाठक में रसप्राहिता की दाक्ति मंत्रस्य होती हैं। दोनों में सस्ती भावुकता से मोह उत्पन्न होता है।

डा० रागेय राधव से इस प्रवृत्ति से सर्वधा मुक्ति ही हो गई हो यह बात नहीं। परन्तु इतना श्रवस्य है कि उनके कथा-साहित्य में विकास के तत्व सौजद है। वे दनिया को भार्स नीम कर देखना चाहने हैं। यो तो ग्राने मुद कर देवने मे कम दिलानाई नहीं पडना, बल्कि ज्यादा ही दील पडताहै। परन्तु धाल मुंद कर देना जाय या लोल कर इसमें देखने की किया की ही प्रधानना है। प्रश्नयह है कि लेखक ने वहा तक देखा है. कहा तक subject ने object को पाग्ममान् किया है। डा॰ समेय समय की इपर की पुन्तको में 'कब तक पुरारू'' उल्लेपनीय है। इसमें नड-नटिनियों के जीवन को बाधार ने रूप में प्रत्या किया गया है और उन पर महानुभूति को हिन्द दी गई है। भाग तह ने उपेक्षित व्यक्ति भी साहित्य में स्थान पाने जमे हैं । यह प्रमाण हिन्दी क्या-माहित्य में बीसवी नदी के तृतीय दशर में श्यच्टनया प्रारम्भ हो गया है। उस प्रयोग में यह उपन्यास एक नया कदम है। बूंकि यहा पर एक ब्रह्मते विषय को निया गया है मनः सेना की भारमीयता, उनके भाग्यनम्य की मात्रा भी उमाने मगी है। इसीलिये पुलार वा महत्र मेरी इंदि मे

अधिक है।

श्री विजयदान देवा की क्हानियों का मैं
श्री विजयदान देवा की क्हानियों से गढ़क की
आग है, ऐसी फुटकार है सानो नवाज की
विज्ञानियों से जात कर नाव कर देवी। दे
यवनी आगायदुर्जन को काम्यादुर्जन की भी भीत
हों। बढ़ेंदि कर करने हैं।
आगायदाना की करान्यर कर म की जीत देवा

उप्तर में तीन कपूर्य-भारवाद योग्यामी, हर्माना वार्ती में किन्य वार्मी में सिम्मिना प्राप्ती से पीना एक उप्तथान-सरम्य विश्वान-मी पाष्टु-निर्मा हुने परने में सिमी सी। बायुनिक सर्व-स्वाती मोत्रम्य बन्या परिपृत्ति हुना है। परम्य सिमी स्वाप्त्र हुमा उमी कार मा तिर्मात से सम्बन्ध तो मानवा हुमा उमी कार मा तिर्मात है। सम्बन्ध तो मानवा माने र पर देवा हो तो सम्बन्ध हुमा उप्तर्भ मानवाद स्वाप्त्र मानवाद स्वाप्त स्वाप्त्र मानवाद स्वाप्त्र मानवाद स्वाप्त्र मानवाद स्वाप्त्र स्वा

हरे बार नेगा चालिए हिंगाचार लिही कता नगरित्य की समित्रिय संबंधी पुर्वेगवर्गीय नाया मारापार्री दान मही दे शबद है । ऐपिशांग्या लंदा र्यानीत्रीर प्राप्त विकाला के कारण प्राक्ती प्रीपन का प्रमुख हारर शक्तिय होते का बाहतर*ाही* रिया है। मार पर एक बाराबार के शार प्रमुख्यांतर का गर है या प्रमाण बीविदाह में बन परार्थिया गा है। गुर्वान्त सेव 🎚 ली दिर भी बह नरह नरहा था गए हैं, पहरती ह में अन्तर होते. समाह अन्तर अन्तर श्वर हरन्तु है चूर antem at an after at 12 to de enter करि के अपना है। इता हातनी हर्यान के साम मते फरणा जगाजापर वर दश्री झराह इतन् nere f mierem er ein dien an an berf gen arre fine jua milie de defeng an grein pra fenge B., ern gu fingenne gran ब्राहरू में रापन रेंग कर खीर पर में क्षांप्रका है।

मारती की आरती

थी परभेत्रत "दिरेक "

नेरे प्रकास ने मेरन में,
प्राव्य-स्मान में भीत जो।
सक्तत के सुगत उदीजों में,
निधेय सुधा ने नगा मरे,
भारातन सुगत निगर्बो पर,
सम्मान सुगत निगर्बो पर,
सम्मान सुगत निगर्बो पर,

दिने भोने गुणमा सुष पर। संपर्वातिल, सौ सौ सूर्व उपै ।

तिरे बमनो में घरणों में इब्म वे शास्त्रत पात्र मिते हिलाह समीम मुदाग गिरे, नोमें समीम जनजात्र गिरें।

ब्दर्मेयर कर सह दात्रज्ञेस जिल्लाही सदिनी याच भर भी।

तिया बीत्या के ताथ में जोक्त-समीच धारण भरे बाली के प्राप्त बार्ग में, करिए-कापन के प्राप्त में।

द्यापुरिया व स्वाप पर्नीयाम स्विप के विषयापार गाँउ

> तर पदलन का हु वरे सम्बद्ध के लग्द देवने सूर्य वर सम्बद्धान्याचित्र में सुरुद्धान्याच्यान्त्राम दूरिक

चुन्त्रपुष्णुवार अहं जीरोत्रण्यः अक्षत्र के स्थापन सहस्र नित्र

कहानी साहित्य

थी भालचन्द्र गोस्वामी प्रग्रर, राजन्यान विवान समा, प्रजपुर

कहानीका नाम द्याने ही मुक्तमे एक बजीव मपनीनापन भर जाता है। ऐसा लयता है मानो हुर विमी विजन प्रदेश से मोटनी हुई गायों के गने में बंधी पटियों के स्वर रिग्ए- रिग्गाने हुए वायुमंडन गर तैरदे बने जाफ्हे हैं। इस कुटिया के डार सक वहा नोई एक हल्के दीपक की टिमटिबाहट मे माने कभी न माने वाले प्रेमी की प्रतीक्षा कर रहा है, उने मानूम है कि वह नहीं बाएगा। फिर भी रमने भनुष्य मन का कोई कोना रह–रह कर कराह बन्ता है भौर इस प्रमम्भव कन्यना में ही मुख प्राप्त ^करता है कि शायद मा जाए। इस दर्द का प्रतिनिधित्व करने बानी पात्राएं है, सोनानी जो माने बार दक्षों को छोड़ कर उस इनानकी शारेत:र के नाम भाग गई, वह निनविया जिसके रारण बाद उनका यशस्त्री पनि जैन के सीकची में है, इन्छ बरुत्म बामां की वह ईमरी जिसकी बरातों ही उसका समिनाप हो गई थी, सीर ऐसे निपने ही प्रक्रियन, धगण्य व्यक्तित्व जो काल के नाय में सभा जाने हैं और रह जानी है उनकी ^{ब्}रानी । विस्तु इस दर्द का धमनी प्रतिनिधित्व बन्ती है एक सम्पूर्ण काव्य किया जिसे हम कहानी हरें है। हरानी जिसे हम बार-बार शब्दों के भारीर में बॉप कर रखना काहने हैं, जिल्लु जिलकी रता को मर्यादित नहीं निया जा सकता, बहानी निष् वरानी दर्शन के किनाने ही लेखक तस्त्र, प्रकार करिके पेरे से परिमाधित करने की कोशिय करने िमी उनके मर्भको इतमित्वं नहीं कर सकते, ^{रा क}रानी जो केदन कही जाने के लिए हैं। इस

वेदनामधी की धशिधानिक प्रभान की अञ्चला ने की जिसके मर जाने पर किसी ने भी जसका नाम मैते की बावश्यकता नहीं समग्री । युनेशी की स्नेह-नरम होरों ने की । जिसने कभी कुछ कहाबाकिन्द्र बाद मे वह भी खप हो गई। प्रेमसन्द की धानन्दी ने की जो धाज भी यही सोनती रहती होगी कि जाने कब धाकान्त उस पर बरस पडे और उमनी करी-कराई बङ्घन की घोषणा घर में मिन जाये। गरबन्द की दीदियां, जेनेन्द्र की मुनीसाघी, मरमूरि की माधवियो और होक्मपियर की भाकिनियामी का धनवरत कम जो धाना है **धौर चना जाना** है. श्रीर दीपदी के कठिल बत और समय के ऊपर जब आगवतकी धून जम जाती है और उसके एक प्रश्न पर रखी हुई बासूरी के रन्छ जब भर जाने हैं भीर उसके स्वर निरालने बन्द हो जाने है। संमार की सर्वेष्टेट बहानियां में १०० बहानियां में से वस से कम १० वहातियों ये इसी प्रकार का दर्र मिलेगा, पीडा मिलेगी वो भावती नहीं है, समूर है जो, गुनगुनाती है, जो वर्मशती है मोर पहती है, भो मेरे स्वामियों, मुके एक कोने में ही नहीं डान देना विन्तु निर्वामित मन करना । कोई मोत-विड्री जब बड़े सहक अपने नए बच्चे की घोसने की गरमाई में छोड़ कर रोटी-पानी के निए निकन जाती है, उस समय उसके खोटे बच्चे के मन मे क्षामुक्तर के निष्धानी मा से बिल्हने 📺 दर्द होता है, वही दर्द, हमारी बहाती का गाय्यत दर्द है। कामी सबने से पूर्व समितृत की साविती तमन्तापर जब धरिकार का नाता नता दिया

भाग है घोर का जिस मूर्ग चुटन के बारना देश सोट देखें है उस चुटन का नाम ही कमती है।

भीर पर एम शराती की गीज में मैं निकरण हाँ तर एमें जाए-जार शीम के दम भिद्रत की रिपारिका सामना करना परता है, जिसे माम होर पर हाय हो। जिल्ला और जिल्ले पात है वे की साक्षण देते हैं। सभी दर्द की बाहि से परिचित्र होते हुए की हमारे बहानी लेवह उसने प्रमानित तरी हो पति का उपना भार परा नरी रह गर्ने। गर्ने श्री यह बीडा गर ऐसी बद्रास, बार-कार्रीबारियवारी है की क्रीतरण कमित कीर नार्गित होती हाती है बीट दिने कोई भी हुए। में संगोदार मारे बारण विषय की प्रतिप्र करती रण्ये है, सालित में भी। धार्ली हैं कही ती। मुने भी जन्म विनेति, भी बाजी है, यदि सेती महा [श्रमणाया ने तथे प्रशास का कोट सिमी अपने ≠ केरी क्षाशांद सर कर गुर्द तथा शाहरण संगाह हरिया का पूर्व सर्वेष घट्टा की क्या पर दे का kinala pal siri b i

केरी मेंद्रों बहु प्रशासक है जिस प्रवर्धी आपानी कर सम्बद्धा मुग्त प्रमानिक मानक परिवरणाय हैं। है पूर्व जाएन कर का प्रशासक के लिए जाएन प्रशासक के लिए प्रवर्ध के प्रवर्ध के किए कर साम प्रवर्ध के किए के मानक के प्रवर्ध के मानक के मानक के मानक के प्रवर्ध के मानक क

मुजाता, पुरस्कार, रेबीन, कोर की लगों ऐसी की नहानिया जो कस्ती नहीं जाती हैं।

मनी बहानों यह नहीं है निर्मेण कर मार्ग रिम्मय से अर जामें जैने ति बुनेर ने बना है, या जिने पा बर इस बार बहु गर्न । बनारी कोई सर्वेग या बारोगर बाले ह नहीं है। घनरी पार्टी बो पार बर पुरा बर्ने-पुत्रों बा बा सर्थ हैंगा धीर बर ने पार बरानों ने मार्ग को तीन सम्पार्थ में पारत को बार्गी करानी नुमा बर पूरण है, बा बीरी नार्य अपनी बरादी की घार से पुर पर जाता है जो एए लागे घार, एक सई प्रमान, एक नीवन पार्टी, पुरा नार्थ मुन, जीने दिनी ने तिनोदाहर कर दिया है।

राजनवार में ऐहे करा दिवार हिलारे हैं वी वार जिलारियम की कहा से मार्थियह है। यह मह है हि जम बगुत हुए भी नहर भी दान का की दीखा पा महते हैं हिंदू पर नहां को बगा लार्थियम का उद्देश नाहात की मांगार्थीय मार्थियम पार्था महिला होता अपने पांगार्थीय मार्था मार्था महिलार है। महाराह में करार्थ को पार्था हु हुएंग होता की है हहा है। मार्था हो हुए महार्थ के हुए को है हहा कार्या के मार्था मार्थ हुए हिंदा है। मार्थ्य कार्य कार्य कार्य का मार्थ है। हुए मार्थ कार्य कार्य कार्य हुए की मार्थ है। हुए मार्थ कार्य कार्य हुए कार्य मार्थ हुए कार्य कार्य कार्य हुए कार्य मार्थ है। मार्थ कार्य हुए कार्य हुए हुए हुए कार्य कार्य हुए कार्य कार्य हुए हुए हुए कार्य कार्य हुए कार्य कार्य कार्य हुए हुए हुए हुए कार्य कार्य हुए हुए स्वार मार्य हुए हुए हुए हुए हुए हुए हुए हुए

्रवेण कुण्याकर प्राप्त कहें कहें प्रदेश प्राप्त के एक जाहरवाद का की निवाद प्रकार आधार है प्रकार है करण्यात प्रदेशना की कहार और पत्त का प्रकार कर की दिवस प्रस्तान के पान भी हिंदी के प्रतेर पाठक के मन-पटन पर प्रचारत मान में दिवामां है धीर मदा मदा के गिए रहेंगी। यह सही है कि उम भगवा को पदि-क्तित्वों में व्यस्त होता, पात्र की धरेदार धिंग्य सरा M परोक्ति उन दिनों निरस्ते पादणे देशे नारी हानन थी जहां पेटक भी प्रमाणित होना है। किनु जहां दिनों पाडु कवा बाद के लेकां भे, विस्ती मजमेर के जलादीनाक्रमाद दीग्य, मान, इस्तुर के जजादीनाक्रमाद दीग्य, मान, इस्तुर के जजादीनाक्रमाद दीग्य, मान, इस्तुर के जजादीनाक्रमाद धीर निरकत के पाया थी पात्र पात्र के जजनारावाल कास भी रामी इस्त स्कार के हिल्लु प्रचलनान जोगी है। वितर्ग नेत्रकर प्रमुद्द ए। ये सभी महाराज्य पात्र

इव न हुम निज्ञ हो लेरे हैं। इनके मे नामरजी भै रोव तीन दर्वन रहानिया बताई जाती हैं नियते में रून भी सरस्वती में निकजी हैं। माइयार समेना से महामां, निजयद, बरनवार, इंगीया के पूर, दिगन-थ्या बादि कहानी संग्रह भीर दिग्यु सम्बाग्य जोगी वा भी 'बहु' नाम में गुरु रहानी महर निरुग है।

मी हमारे बीच में हैं और इनमें से कुछ भाज जी

यों हुमेरी यों वे बार राजनवान के संवर में रियों की मिरो की गौरतामिक निया है गो वह है रेंग धीन पास्त बीर यह भी कोई नियुद्ध सर्वाण में बार जो कि रहनी मानुसी या पितुसी की भी पास्तान के बाहर है बचांग पुरस्तों के जब्द मान के वह ने गोग महंदर नहीं देने। इस मुक्क राजार है निर्मे हैंग बहुता संबद निरम्म पुरे है, किने प्रमुख पुरे का प्रमुख मुक्त गो, के परिवार, प्राथीन युवानी नहामिना रोंग के परिवार, प्राथीन युवानी कहामिना का स्वार है नाम में पुरे भी मानुस हैं। दूरारे पार ने नाम में पुरे भी मानुस हैं। दूरारे राजा करामों ने हुए ही वर्ष हुए स्थित मारतीय स्थाति प्राप्त की है। बार संमेप सापन मुस्य कर से एन्योपोनोजिस्ट है यद्यवि इस्टें प्रवति-वादी व्यक्ति माना जाता है।

प्रस्तित्त मंग्रहों की मांचे वर्षों की जाए नो ग्राम नेवकों में हमें यादवेन्द्र धानों कर, मुमेरिमेंह् दहसा, बंदीभाव बादव, सरनामित धान्या मारि ग्रामि का नाम नेता होगा। बीकानेद नामी कर का तित्र हम तमेंच प्रमुक्त नक्तर कहते हैं, नेवकात नामक एक कहती मंग्रह निकन ही चुका है, भीर बरफ की समाधि नामक एक कहानी गग्रह के बारे में राजक्यान के एक सुख्य मानिक ने चुकाई १११० में प्रकारित हो चुकते को पोग्यण को ची दिन्तु खांडे तीन साच बाद दिगाबद १६६० ही पार्यों है।

चया है। नेवदान में राजस्वान के लोहगीतों घोर लोह कवाओं पर प्राथारित कुछ कहानिया है पनः क्या-सक के बीत के रूप में चन्द्रर वी मधिक परिश्रम करने की सावस्थरना नहीं पत्री है, हा, नेपरान बहानी में नेवक इतिहास व एक बतान पुष्ट को प्रकाश में यापा है दिसमें राला हुन्मा ने मरदार राव नरवड ने रवा को पान नेव दिए में। वरिमाण और धवक वरिश्रम कदर की माहिएर नाधना की विशेषता है, जो कम ने क्कामे देशते वो मिनती है, हिन्तु उन पर वाग्तरित बातापराग के विवरणों की बिना जाने केंग्र कमाना के साधार पर चित्रण करने का जो बागेर मनाया जाता है बह मही है। भीर यह भी नहीं है कि परिमाण ग्रीर गुण् बहुत कम तिल्हों में एक माप देवते की मिनते हैं। दिन्तु यह भी मूठ नहीं है कि रिच्य दर चमक है जो रगड में पैदा होती ही है, जैमा कि चटर की नवीनतम प्रकाशित कराती 'मगता मार वह भे देवने को मिननो है। ये दरि बानो क्या पृति में सिरापर जर महें तो उनने व इसारे तियु गुज बिहर है।

मुदेग निष्ट रहागा, जो कहन ने मारी है, का एक कहानी कहन हो मार्ट नाम में निक्का का निर्में हरकी सार्थिक कबनाए पानी हैं। इतका ऐक परिशाहत सिन्दुक है और कवा में ईमान्सारी भी है। उस में पीना के सिन्दु सामान उपने हैं किए कमा के मार्टमाद पीनाक को भी मार्ग्य देशा हमारी एक परमास करते हैं।

संगीतार साथ भी तुव तिनाते हैं। विचारे होसन राजा जाती अस्त ११४० में गांग जा दिस्स करीड एड दर्भ कार्गियां हैं। तेतन का प्रमार ही दर्भ द्वार और चेंच, गांव बीर हागा ही दर्भ दान का दर्भ हाली आगा ही हैं। हा का का किया दिस्स का देनने का बिजा हैं। हा का का के से दे कार्गिक हिल्ला के हाथी दे जा का का के से दे कार्गिक हिल्ला के हाथी दे जा का का के से दे कार्गिक कर हा है। है देशे हा हा हा का का का का के साहक है।

स्थान प्रकृतिक के नाम सामुक्त ने स्व स्थान स्थान कर कर कर कर के स्व स्थान कर स्था कर स्थान स्थान कर स

ित विभिन्ने स्वाधित है क्षेत्र के केटिया स्वाधित स्वा

मारिय की स्थित न्योहिंद कर मारे हैं। मेदन के नाम पर कारतात स्थित का मारी का गार, केर सेंग हुमार भीत का भी एक कारी मंतर केर सेंग हुमार भीत का भी एक कारी मंतर केर मिलिय है स्थित हुमें हुन्ते रिवारिक के मिलिय हुम भी नाते हैं। हरिया का के प्रधानिक के मारिया हुम भी नाते हैं। हरिया का के प्रधानिक में हुम से मार्थ में का मार्थ में मार्थ मार्थ है। का मार्थ में मार्थ मार्थ है। का मार्थ में मार्थ मार्थ है। का मार्थ मार्थ मार्थ में मार्थ मार्थ है। का मार्थ मार्थ

वाण नेपारों तेत्वहों को कार्राया का लय नवन बाणारीण नाम से भी रिवार ना निसर्व नारी कम्पन संपदार्थी के बाद चार करगोहा। वी कार्याया कर्याण वृद्दे हैं। इसी बाग रूप लय निसर्वे कर्याया कर्याण क्षेत्र हैं । इसी बाग रूप लया

Trad square district at 100 F

क्लिं पत्र-पत्रिकामों में ऋरपूर निक्ती हैं ऐसे लेखक मौमाग्यस्य राजस्थान मे दो दर्जन मे अधिक है। इतमे मुख्य रूप में उल्लेखनीय है जर्यासह एस राठोड, इप्ए। बल्नम शर्मा, अगरीश माधुर कमन, भावार्थं सबै, गंगापर शुक्त भादि । कालस्थान के ^कहोतीनारों से से सभी कषाकार आगे की पंक्ति से मैं हो हैं। जयसिंह एम. राठौड भपनी हाम्य रम की रितियों के कारण इनने बदनाम हैं कि इनकी गम्भीर बहानियों की सोग भूला देते हैं। समय है कि इतका संबह बही से निकले। गंगाधर गुक्त की न्हानियों पर एक भोर रेडियो टैकनिक का प्रभाव रै दूमरी धार सो हेनरी की बाकस्मिक कीर बजस्था-ित भन वानी पढ़ित का जो बाजकन इनना मनानोत्पादक नहीं रहा है। जगदीश मायुर कमन रे सन्दर एक मानुक हृदय है और उस भानुवता ना स्वार पाठको को चलाने को ये बानुर रहने हैं। पारंक को यह बहम होने लगता है कि इनकी हितियाँ का किम स्थल में इनके व्यक्तिगत जीवन को हुनकोरिकत स्मेह संबन्ता में मिन्न किया जाय। ^{एकोने} राजस्थान की बात परस्परा को नवीन रूप में प्रमुत विया है और इसी दौनी से निर्वा गई 'पर प्रभाता घर कू'वा' इनकी प्रबद्धी रचना मानी रोती । मानार्थं मर्वे मुख्य रूप से एक कानम राता नपु नवामा के पंडित हैं सौर बोड़े ही में करते दशम और भीवकार हीन आर्थ वास्त्री मे ति पोर तात को बहुत सी बाते कह जाने है। क्षा कर पूर्व देश है किन्यु समु कथाओं व मत रह की एक मंग्रह निक्म मी स्वासन है है। यात एक उत्तुद लेखक हैं और अपनी रिक्षा क्षेत्र प्रस्टेशन्त को निजनीयन क्यानको के रेंगे क्षेत्र का स्वादी मून्य बनाना बाहते हैं। त्रिक्ता प्रमाण क्षेत्र कही उत्तहा मा स्रोवा भार हे यो लग स्विर न यह वर दूसरों की

प्रकृत में निवर रानते का धावही है। कई न्यां वर पाठकां में धादवा की कभी के कारण में धादकरता में धादक गुर जाते हैं जब कि उन्हीं रायं पर ये क्या बन रहता चीरते है। धादक्यता रूप बार वी है कि ये कर्जवार के दुख धीया नितर धार्य । दनकी रचना धीयों में गमाधर मुनन की ही नरह बुदुहल को धादक्यता में धीयक महन्त्र दिखा जाता है। वैसे उनना धीन्य तो स्कृतमीय है।

राजस्थान के श्रत्य वहानीकारों में पुराने में बे के देवनारायम्य आयोगा, विजयशाम देशा. रामेन्द्र मिह मोनक्टी, मोहनशप जिज्ञामु, श्री गोगाप मानार्थ, गनापतिनात प्रोहित मादि है। नई पीडी के बहुत में लेवक प्रपत्ती छाप तेजी में राजस्थान के माहित्विक जीवन पर स्थापित करने जा रहे हैं मोर उन सब की वर्षा करना न सन्भव है न मावस्पतः । किन्तु राभ चरण महेन्द्र, रामबुमार मोसा, मनोहर बर्मा, प्रकाशचन्द्र पाटती, रागजीत, पुगमन्दिर तायन, परमेश्वर म्हमिया परेश, मुधीन्द्र नेमास्त्र, भगवानहत गोस्वामी, मुग्री विभन वैद, अगरीस रनक, डा॰ राजहुमारी कीन, ग्रेम बहाइर सब्सेना, प्रकाश जैन, मनमोहिनी, गया प्रमाप माधुर, हिमकर नेगी, शमनिवास गार, ज्ञान भारित्न, अंगन सक्तेता, रात्नि वर्मा, गार्या वाप्सेंव, राजानन्द, एम. लान, नश्मण 'मीमिम' मारि धरेक्षाहृत नए बहानीकारों के नाम प्रस्य निषे बा सकते हैं।

राजस्थान में मुख यम्द्र मगामार जैने नाम, परदेशी, बन्हेंयाचान सोमा सादि राजस्थान में निम् परदेशी हो नये हैं, प्रायंता रज्हा क्वासिय • उस्टूच्ट कोर्ट मा है।

एकांकी साहित्य

हा • रामनरण महेन्द्र राम त., थी. एक. थी., मॉर्जनॉट लार्थण, वर्षण

र्गे से से भारत में स्थित स्थाप को स्थि में से भारत में स्थित स्थित जा नरता है। !-ना त्यापी गारिय यो राजन्यात के नायवासे ने राज्यानी मापा में निर्मित विद्या है। इस बर्ग में गर्ने थी गुर्वशाला पारीत, प्रो» योहिन्य सात मापुर, रोभाराज जायर, बैजनाद दशार, शारायण दल भीमाधी बादि ताल्यहार क्षेत्र सामहोती। रग को ने राज्यपान आप की लागा नामाधिक, पारिवास्ति, राजनैतिर धीर दामील समस्यामी को विचित्र निया है। हर्ने गारित्य से राजस्थान की ৰপন্নাত বিশ্ববি, তলকী ভাতর লমনবাতী, ব্যবি मान के नरण और मुखर की बेउटा कार्य हुई है। ब्राप्टिक राज्यपारी अन-बीवन तथा समाह भी तीकी सारोपण की है। राजन्यारी आया स 'नतरे के कारण यह को हिएए-क्यर की हरित में रण्याचार की चेत्रम को हमारिय काया है। बीभा प्राणमा प्राचीत तथा धार्यीत्व शावनवार दश ر ۾ پيروا منتج ۾ ادم

gitt af braute a ge einentel at 2 mit af mit at mit

राठौर, प्रेमपन्द विजय वर्गीय, नश्य एगार मारा-बत्त, कृष्याबन्तम समी, मनीरर प्रभातर, मे^{ल्ला}न बेंदर, चौर डा॰ नरनाम निर् शर्मा 'घण्ण' इयादि मान्यहार स्थित वारोनगीय है। इप नान्यरार धारदंदिमा रेरियो मारर ने गिए दिशीय कप से रेडियों एकोडियों की रचा कर है है बॉर जिल पर्यंत सर त्यां भी मिरी है। रेरिय गुडरेडरेडाहो में वर्ष भी गुड, बार रेंडड, मंगायगर मापुर, शनिय स्थीर, मरासीर विरय, मुप्त हेमेज, धीमारी बाला चुता, बीर बलार बाल बोपशा दे रहे हैं। बीरि सन्दों के शेष य थी सराज्य प्रमाहर, गुरुत भीर समताहर र पार वर्तिया का कार्य राजनरीय है। इस्ते सीराज्य बाद बारेंड उत्पाती युवर तत्वारीत्रार धारी रत मान समय समय वर प्रकृतित या प्रकृति करे क्टोड़ेड इस बर्प वे वासम्बाद बाल क म^{ारास} शया अरुत्त करे समाराधा की मृत्तीन ने नार धीर देण का समय कर स देखा है। दनका तेप प्रदेशक क्षेत्र होटाकाम विरुष्त है । हुन्द नामावारों ने नेकरीक के बीर कार प्रदेश रिया है। ऐसे हर मेरी व प्रीकारपीवपुर की अब सारावा अपर अब असरपीरारी अवन्त्रं स्ट नियान्त्र स्टेन प्रमाण हो। प्रमाण विष् हुरेंग्व हर सम्बन्धा कर प्रार्थित के त्राव त्रव कर रहे हैं।

विकार स्थान का श्रीताल सारकालक का की तक स्थान विकास साथकारक स्थान का प्रतास का देशा है त्या तथा प्रशासनक कुत्र के स्थीन श्री का है तो भग सन्दर्भ के कुत्र के प्रतास के कुत्र की तथा की तथा की तथा साथक के प्रतास के प्रतास की तथा की तथा की तथा

विशेष प्रिय रहे हैं। यहां संदीप से हम उनका उल्लेख-मात्र कर रहे हैं।

मामाजिक द्वाति, बारोजना, ब्यंध्य के दोप मे मर्वेत्री सम्मूदयान सक्तेना सवा गोविन्दनान मायुर को प्रतिनिधि एवांविकार मानाजा सकताहै। भी॰ गोविन्दनान मायुर ने विषय तथा भाषा दोनो हो राजस्यानी चुने हैं। उनके साहित्य मे राजस्यान काने समार्व रूप में बना हुमा है । राजस्थान के बन-बीदन, मारवाडी समाज की समस्याएं रुदि-गरिता, प्रवर्तिन जीर्स-चीर्म परम्पराएं, राजस्थानी शहरों ना जीवन, नाव बानों के साव बनाचारपूर्ण धारार, निर्र्यक गौक, दाराबन्धोरी, गोपस चाहि नितान्त बास्तविक मत्यता मे प्रकट किए है। यर जीवन में घाने वाली घट्यतों की सच्ची मती ही है। उनके "हरिजन" नाटक में प्रामीएते री रदिवादिता है, दी "बानविधवा" में नगर निशनियों भीर जानीय पंचायतों के सडे-गुले न्याय रा तल्ह्य उपस्थित किया गया है । धैनी हास्य भीर धंयपूर्ण है। इनके डारा हम राजस्थान की र्षेत्राएं सौर विसमनाएं स्पष्ट देल सकते हैं। भी सम्बद्ध्यान सबसेना ने सबसे अधिक सामाजिक लांगी निवे हैं। इनके "विजया और वास्त्ती" हे थाए एकाकियों में समाज के ऐसे सिष्ट पर धोरेबाक व्यक्तियों का व्यक्तिएमक वित्रमण है, जो ^{रन हरू} और ममुद्रत समाज में सब की धार्खी में हैं। रातकर उस्त भीर मान्य न्यान वाथे हुए हैं। रर जो बस्पुनः समाज के लिए अभिन्ताप है।

शिक्त और भारकृतिक क्षेत्र में पुराने बादशों की बार्तीय शर्कति का विकाग पर्याप्त रूप में हो गा है। इस रोप में मध्येमा जी ने प्रचुरता में निसा ा उनके १-६ सबह मायन की वौरात्मिक और रिरानीन सम्बनि के विगुद्ध चित्र है।

िंगि^{मिक} सेत्र में श्री स्रोकारनाय दिनकर

की सेवाएं विरस्मरणीय रहेगी। उन्होंने इतिहास को जीने जागने रूप मे प्रस्तृत किया है। यत तत्र बायुनिक राजनैतिक विभार धाराघो प्रीर पाज की समस्यामो का भी समावेध किया गया है। ऐतिहा-सिक तथ्यों की पूर्णरूप ने रक्षा करते हुए सेवक ने भारतीय संस्कृति को धपने सब मे प्राकृष्क रूप मे रखा है। प्रो० रामप्रसाद विपाठी ने धपने एकाकिया के विषय राजस्यान के इतिहास के निए हैं बीर ऐसे चरित्रों को जभारा है जिन पर सभी तक किसी एकाकीकार ने कुछ नहीं निला है। श्री नारायण दल श्रीमानी ने राजस्थानी भाषामां कानीदाम, भूमर, बसोक इत्यादि एकाकी निले है जो बनीत के उन्जरन क्षणों की भंकार है, भौर साथ ही इस समाज के कार्य कलापो की जीति वायती तमवीरें भी हैं।

राजनैतिक दीत्र में कुछ कम कार्य हुमा है। इनमे

सक्तेना जी का कार्य उल्लेखनीय है। श्रीमानी जी के दो एकाकी "हाड" और "धरती का देशना" भी उल्लेखनीय है। "धरती के देवता" उन मिनिः स्टरो पर छीटा कशी है, जो बोट लेने समय जनना में बड़े-बड़े बायदे करने हैं, पर ठोम मेदा कुछ भी नहीं करते। इस एकाकी में स्वादी पत्पर हुइय नेतायो पर व्यंग वित्र वीवकर उनकी दुर्वननामो की भोर संदेत दिया गया है। मक्सेनाची दा एवाकी संग्रह "नेहरू के बाद" राजनीति के बाह्याद्रम्बर का पर्शकास करना है।

ब्रामीम् विषयो की नेक्क की एकाकीकाण (जैसे श्री देवीचरुग, वैद्यनाथ पंतार) ने सन्दे एकाकी जिले हैं। देवीबरल जी का "प्रव मन्द्रन", वेकारी का दुनाज, "किसान के धामू", "पंचायत में महबोव'' इत्यादि एकाकी अवस्थान के प्रामीत जगत् से हमारा परिचय कराते है। थीमत हमार तया बैजनाव पंबार ने राजम्बार के रामीला की बासी दी है। पैदार जो का 'प्राराण' मान

आयो तो हुवैलो री

भी कन्पाप्तित राज

मीनी तो हबेची पत्र

माई तो हुवैनी हिचकी दोग्यो तो हवैसी मानी रियदा र धेड़ छेड़े.

मादो नो हवैनो री-रोई न रोई।

हीरा पर भीता गानां बार्राळयां मु बनळाता गुरिया से स्थाय स्थाता

तिरापड पायात मग्जूनातां इनको तो हुवैसी गागर मुनरी तो हुवैनी मायरा गरवरिया से मोरा मोरा,

मांदरी भी हुवैली शेल्बीई न बोई। तारा न सर्व राजा

भवरा से भोजी बाचा र्वाळयो मु नेत्र दिसाची कीयम है बाहा गांची

हाई को हुवैभी राहा नायों तो हुवैसी धरनी

बार्क वाप के माहित मरवार बीर मनना की mgnag,

fine, a ga fi utilb dine ar ben bes मालक क्रार्ट महा धरायलाहः सहबुद्द मा १४४० द where he had not be to be become as hade grant g antw dien bines ann bat & i wite team de size de a fee estante e et etropere per et alle gre dise e a til å å aji ko kira çeme \$1 telle र करे प्राप्त संस्ता है और है पुरुष पर्वत

क माना रै मारामां. दायों तो हुयेती री-नीई में सीई।

सावरा री भरिया मारी पानां री महिनां मंदी यार्थ से बहिया धारी मोत्र री महिमा मारी

भीग्रो तो हरेनी बाब 'व मुनो मो सादी दाता भायों तो हुने ही सी-कोई म को

यांश मूं यमा युरागा गोनै में भरम रहा। रियळ्ड सी हंगी उपाप हुम हुम मधरा शाराता धर्मी तो हुईनी मैन्से

घोती सा हुनेता रोश्तर दरपणि रे यमका स्थापना उद्यमधी की हरेगों रोन्सोर्ट स कोई। anun merdi fent & feit uftere Dem

कल्प है। विकास सामग्रीका अवन होना साम Leifen big gieg gibt cier unter ficht क्षत करते हातात है जिस की प्रत के निर्देश मन्तुया वांत्र कारत को तिक झतुमता वर बत पर ता जानत ेट पर है । यो शामांक ब्रान्ड साम् के में रक दम समारा

ब्राब्द सम्बद्ध है। हन्दर होता स पून बूपान है। En sere merer e de la actio art Free Free ere are genre er ame

भारतकार संक्षात्र के अपनी कारणकार से द्वार ने THE REPORTS OF A PERSON

गीति साहित्य

श्री राघेरमाम कौशिक 'श्रघीर'

हिंदो माहित्य के इतिहाम में रावस्थान के सैनि बाय का स्वान मुर्गशन है। सारिकान में चारण दियों ने तालानीन स्थिति में प्रेरित होकर मंगर, मिक मौर बीरलापूर्ण तथा मोरा प्रमृति, मक दियों ने सिक विदयक गीत निवकर हिंदी में पीन महार को समूद किया है। मोरों को स्पर्शनी में हिंदी के बतियों को ही प्रान्त है नी कह मनिया है।

एतसारी (शिंगन) और पिगल (सनभाग)
पेते साथामें से राज्याम के नित नाया—हर्जन
रो दें। इसे संदर्भ में हुम इस ताया का उन्हेंनेल
रो दें। इसे संदर्भ में हुम इस ताया का उन्हेंनेल
रा भी भागन नहीं समग्रीन कि नर्जभान प्रधरात्र मोशिंतक हिंगी राजस्थान के प्रधारिकता न
पुतर भी प्रवीचन नहीं रही। राजस्थान के
प्रभाव मांत्र नहीं रही। राजस्थान के
पूर्व मीत नाया स्वीचेत्रस्थ ताया मुख्योकन
सी सी (वर्षभाव प्रदर्भ) के सम्भव नहीं, केवन
नर्ग सी सी (वर्षभाव प्रदर्भ) के साहित्यक हिंगी
हे ती ही हरादि वर्षभी के विषय है।

भीत भंत भारत है तर्वा का बात वा बात है। भीत हैं। बोत हैं जितने हमें बीतकारों की रक्तायें भिता से मर्दी। रहीं के बाबार पर उपरोक्त प्यां में टियात समते हुए पर्यवेश्वालु के साथ ही निवाद मा मामा दिया है।

देर-जर विनशे हुई शामधी का वजन धीय रे होण रनता है। फिर भी हमने मरसक चेष्टा रे हैं हरपुक्त कवि विस्मृत नहीं विन्ये आये। उद्दर्शद में महमूर्ण कृतिया उपनस्थ न होने

के कारण जनका सर्वाभीए। विस्तेषण प्रतृत करता सामर्प्य के बाहर है। तवाकवित वर्षवेशण हैं। क्षोक्षित है इसमें प्रविक्त का दावा हम करने भी नहीं।

कानक्य को हिन्दि से प्रतान नारावण पुरोहित राजस्थान को पीति वरत्यरा से प्रथम स्थान के स्थिकरारी है। डिकेशे कार्यान इतिबुत्तात्मक सीधी से निल्ने साथके गीन ऐतिहामिक हिंदु में महत्यपूर्ण हैं। 'रसमयी' नामक सबह के मितिरिक्त भारकी अन्य रक्तामें भी प्रकाशित हुँह हैं। व्यक्तित्य मनु-मृतियां की परिवार्णाक से मध्यान का गहरा रंग है। सरी-कही राष्ट्रीयना भीर समाज-नृपार का हर भी निश्चत होता है।

जैसे-वैसे हिन्दी साम्य नाव्य आगा के कन में प्रयन्ति होती यह राजस्थानों के नित्र भी हिन्दी गीतकारों की चित्र में ब्रा बेठे। यह सार्वात्तक प्रवाद के कारण नहीं व्यक्ति पुण चेतना ने होरित्र होत्तर हो साम्यत हो सार्वा में निर्माद बोर केपराज 'तुन्तर' इनके प्रयानीय हैं। नगाँव डा० नृपीय, स्वर्णीय की चार्यत्तक मुक्ति मौती तथा गन्नेतानार 'तानार' तालवान के पहने केते के हिन्दी गीतकार हो हो नित्रा की प्रवाद कराय, प्रवाह बीर प्रवाद राजस्थान के किन्दा कराय को प्राप्त है। प्रतिवधानी करी क्लूप: हिन्दा बीर को प्राप्त है। प्रतिवधानी करी क्लूप: हिन्दा बीर दाक्षित्त यह होता होता की स्वाद के स्वादानार दाक्षात्त्र यह स्वादानार के स्वादानार स्वादानार स्वादानार स्वादानार के स्वादानार

इंडगींव डा॰ सुबेल्ड के गोठ परिमाधित बारा

ति में मानुष्य जाएसा का मेरेस मंत्रारे हुए है।
स्मित्रक मोत मानाकारी दिवान से बहुते जही
हर्ग के पहुँचे मेरेस स्मित्रक से बहुते जही
हर्ग के पहुँचे जाएस से माने करते के हैं। स्वत्रकार काल मे भी बहुत जब मान्य का प्रतिक्रिक करते हैं। करतीय हो। बहुते का प्रतिक्रिक करते हैं। करतीय हो। बहुते का हर्ग के स्वत्रक करि में हिस्ति हो। हर्ग के स्वाप्त में मानाकार कि जाती हो मेरेस बहुदे के प्राप्त काल माने काल सो हर्ग करते हैं। हर्ग के स्वत्रक के स्वत्रक करता हर्ग करते हैं।

सेपसम 'सुरुष' 'उन्नेद', के प्रकारण के दरबाद (एरी गोल्यांग में रिने जा नवते 🧗 बैने मारापारी व वर्षि है। रिप्प बी हॉर्स से 'सुर्ब' क गाँउ गरे गाँ। बाहा संश्रद ही अबी हुई है हिन्दू स्टब्स्न में सन्दर्भ है, *करिन्दरि सन* बाह धी। प्रशासम्मानी राष्ट्रमा स्टार की राज्यान कुलाएकर अपेट 'क्षपाल करमार्थकर्या को हिंददेशन कहे हर् माना १६ प्रणालाई वि दिल्ही मार्ची तर वह दिवृत्र करण विद्यासमा है- साब मा है बह बहा सारे ung bin gebnichtt fin Rid gebil, m ंटर हरे में पर अवसार दिलपड़ जाराई है। डिवेड ton an analie an tieteren fint gin g ? ga han minim minim tanba in min sa र र अपन है। मन एक्ष निरम्दन स्टेन क्षेत्र अन्तिस्त का मार्गाणकर्मा के जेरी कर कुदार अरु नेप्तर । fts fram ton, & desire we and H And the first of the first of the first mit algra in the fire week \$1. Tely ate kjek koles kon kon jemore a ang traine According to a second रकार क्षेत्र ने जीवक एकी क्षत्र करणी क्षत्र के

धनी है। बारित गायह के का में 'मुहुव' क्सारीय है। 'पीपी का क्यार' जैसी रचनाथों में मार्थाकर दिवसत्ताओं के पति सत्ता हिट्टोग का भी सभार स्टीत

हर्गीय सनुत्र में सिन्दर का करि हूं, मेरे शीन विरानन " जैसे योगी के योगा है। पायरण का जुद्देश जागी शिरोत्ता है। करू नांचा शोरवायी बारे शायरोंगे के लिए तर्वेच बार मिटे बादेंगे । जब्देशी के वधारणारी गीन की तर्वित जी मेरिकेटें।

युल्पनि बाद घरशसी, त्रान कार्रेगासात जरर', हा॰ सरमायदिन शर्या घरण नाय मार्चरी बोर कमपानर 'कमर' ने गीत भी द^{्या} रिरो प्रकार में मार्थ । शांत सरव के दी अवदर 'पूप प्रयोग लंबक 'सम्मा के कारो' प्रकारित हुए हैं। इत्रस करे बरोलां के साम्य और भी अवन्तिर हैं। सर्वे कहिना का बोर्टिक बरारव हो। सरह है मेंग्रं से की प्रशांत कर बाता है। गिला बीत कानुक्षणा अप्रांती सम्माती ने तप्नात प्रार्मि विद्या है । इंट क्षणता के मीना में बल्ला की हिन्दरन बर्धन योग्टेर बाल हिन्दरी है। सारश हत है ज्यस्त की १ असमान बाद सर्वाती दीरवृत्तास्त्रता स सबस्य मद है। 'मणदी हैं स समापन के परवाई क्षीर कर्ज्यक्ष के कि ती के ती क्षण कर देवकी व्यक्ती के हैं। सन्दर की सन्दर्भ दूबकी कुंबद है। इन साहाना करी द्वार क्रमणे हु क्रमणा क्रम प्रथम सीचा स्थास स्थित क्ष बाद है। है। एक नाथ करनावर परका अपनी इंडकर का शररनार्थाय कुल्य है। तरह समूर्या है mini Minten. Blinear Rat Minterint d. रण कर देश वर बदश हैं। दिल्**दा**र है To Ben Bure de al per bus by हैं। सम्बार्ग क्षत्र क्षत्राहरण दृश्वणी हो

शहून निवे सहस्वोद्देषाटन करने हैं । घाष्यान्त्र की धोर मुक्ते हैं।

हिरी पीतिकात्म के मयान राजस्थान के रेनापों को भी प्रमानित करने रहे हैं। छात्मावादी कीतों के परवार वस्त्र न की सहजाता, भंदन की स्वत्रता देश के प्रमातिवादी भनिवान रेपास्पति के करियों को भी भवते रंग में पे ही निया । यजन्त्र इनका प्रभाव नशित शिहे।

नई पीत्री में ज्ञान भारित्व, रामनाय 'रमराहर', मनोहर प्रमाकर, जनदीश चतुर्वेदी, रानोतान भारताज 'राकेश', तारा प्रकाश जोशी, माग्र पान्र, जयसिंह 'नीरज' ब्रीर मूलचन्द्र पार है। ज्ञान मारिलन के दो मीन संग्रह 'ज्वार' भैर भाराम रूपुम' प्रकाशित हुए हैं। 'ब्राकार्य र्भि के गीत व्यक्तियरक है। 'जिंदगी से व्यार', गुवार वा गृपार' मादि माज्ञा-निराक्षा के गीती में क्षण तारा' जैने हैस्लिक सीट्यर्थ के स्वर भी र्यापन है। वैने 'मधुसाला में' के शीत सुन्दर हैं भी दल हो उमर' जैमे । किन्तु कव्य की पुनरां-रि इतिही है। नगता है बच्चन की 'मधुशाना' ग्निकेरणाही। मन्ततः यह ती कहा ही जा मना (कि हान के गीत गीत (Lyrio) हैं ले पर्व में। उनमें मंत्री हुई भाषा, बोधगम्यता, रिनेनना भीर प्रवाह है। कमनाकर के गीत रिण भीर रूप्य दोनो हिंगुरोग्गो मे प्रशंसनीय हैं। ^{रानु व}ही-वही मुफियाना सन्दात्र खटवने संगती गामा गारभी उर्देशी और मुती हुई और भी हैतन बहुता। सनेश और ओसी ने भी भीति निवे हैं। जोगी के गीनों में मौलिकता

ोरी साह स्पष्ट दिसाई देता है। मूनवन्द्र

ित स्मृत पास्य में उपमा भुनने में माहिर हैं।

विजय निर्वोध सपने हास्त्यगीतों के कारण स्मररणीय हैं। बेमे बजन तो है नहीं गीतों में । प्रयम कवि धोर फिर चक्कार बुनियानी यवार्य की घोर मुके हैं 'वानना में दूर जार्ड नो निक्क केंसे ?'' इनके बीन बारबसान में हो नहीं आरत वर्ष में मुंजे हैं। जीवन के प्रति इनका एक विशिष्ट रिष्टियोण है। यपने मान धोर मुख्य हैं। ''गुरामा बारिल'' तवा अन्य मुक्कार स्वनामां के द्वार इस्ति स्वने धात्र को सिडहर्स्त ''वेरोडी कार" प्रमाणित हिन्दा है।

हा० रागेव राजव सर्वतीमुती प्रतिमा के धरी है। उनके गीतों के पर्ववेक्षण घीर प्रत्याकन के निए तो एवक निवस्य घरिटात है। डा० रामान्य डिवारों ने प्रवन्य-प्रणेता होने हुए भी गीत निवे है किन्द्रे सामान्यतः उचनकीट का कहा जा साता है, किन्तु गेवता घीर प्रमागीनित की कांगे सवाती है। थी पूनवन्य पान्येय ह्यावासरी मिला सवाती है। थी पूनवन्य पान्येय ह्यावासरी मिला स्वान से प्रमावित होकर है घरीने गीतों में स्वान ने सके हैं। स्वतिन्य प्रदुष्तियों के कर्र ज्याव ने सके से मेरों है। भाषा का निवार प्रसानीय है।

बां करिया, परसेन्द्रर द्विरेल, बिरंमीर जोगी।
'तरांब' बीर हरिराल काचार्य जो रिट्मी में मीन
'तिस्तेब' बीर हरिराल काचार्य जो रिट्मी में मीन
'तिस्ते हैं। हरिराल काचार्य जो रिट्मी में मीन
'के स्वर दव नये हैं। दिराक में मेंन 'तिमार्था' हैं।
'के स्वर दव नये हैं। दिराक में मेंन 'तिमार्था' हैं।
'के स्वर हैं। कास्त्रय हैं हैं। व्येवन की पनुद्धे'
'तिसार्था से प्रतिस्तर होगर यह तुम्मरों में प्रतिक्रित हो
'तर्था से प्रतिस्तर होगर यह तुम्मरों में प्रतिक्रात हो
का तो प्रत्न ही नहीं उठना। प्रतास नाया है रेल
'तोन। बाचार्थ के बोन मचुर है। दिन्न स्वरता से
पोर होसाल नहीं, दुस्तरी पीडी को बान दुर्साई वा
परि हैं। हैसा तुस मनगा है।

्तृत्वारां के तीर्थ में पाना और चीरा का सामून नागवात है। एक चीर जाने करण तब सा तर्र है दिसाना सार, हुएने वर तर्राहे तथा सानुत हुए कर तब तसाव में बाँचार कुमार्थ नाशास्त्री भीत वर्ष नाशा की बाँच सारा करण तर्राहार करण है तथा पर सान दिए हैं। जा कुए बस तुरहार की गान कुमार्ग की तृत्व की बान्या है। का है दिहा है तथा दे तथा जा बार की जनक त्राहोंनक कहि करण दे एन हैं।

क्षणा व गरी । व्यवस्था को प्राप्तवस्थी क्षेत्र रेग में दोना वर्षे के प्राप्त क्षण के हे अन्ववस्थ वृष्यार क्षण क्षण के अन्यक क्षण के हे अन्ववस्थ के रेग व कर्म में रेगन क्षण के हैं।

And the many of the properties of the parties of the following the following of the followi

सारिका "समावा" को 'बारगे ने नाव'
मार 'में मार्जना पाता" योग पुराहै। तर्वे विद्यों से मारा करण, बीर तर्वेश, तरारण मार्जुद 'जिस्टिये' के नाम जिल्ला भागे है। तरें के योग मीरिक्स को थीर जान भी भाग कर निगार नहीं पात्रकें। जिल्ला भीर करण गर करें नहीं सम्मासिक गील्वारों का स्तु है। काल में ममें गर 'भारगी,' सामान्यार 'जाती' नवा त्रीरण मोरी 'मारगी,' सामान्यार 'जाती' नवा त्रीरण मोरी हो 'पात्रम' के तीव वहीं मुराही। पात्रम' करी

करिमित्रों से सारत नागरें। (सर मन) सारिको गोर्डी, नगुण्या जिलु रेना कर्ण, राज्यारी गिरहरी (सर कीत) सीर पुण करेतरें।

मी भी रिया है।

शनन्दा बारागीय-प्रधार को पान आशी है। यागा दिन्य मान मध्ये पर बेगी है। मारशे में नागार कारत शब्द आहे पर बेगी है। मारशे में नागार कारत है अब्दा आहे रहार भी पर हैं। विश्वताल मिन देश आहे आहे हों में भी भी गा प्रभाव मान स्थान है। मुन्यू को स्थान गो में अब्दिक प्रदृत्तिको सुन्यु को स्थान गो में

क्षण्य । इत् दूध रेलवर्षे दर प्रमुख्ये हैं कि उपवादनक के संप्रकार क्लान गण अनुदोशों हैं वरि अञ्चल हुँदरनार हैं और सारगार के उर्गाद की उपापल हुँदरनार हैं अपास स्थान

en e filt den de strift delt die tite die minische strate die die Territan die de Strift die des deue de des sidd in terden gewenne die des sidd in terden gewenne die des sidd in

समीक्षा-साहित्य

थी नवसकियोर सर्मा, हिन्दी व्याकथाता, महाराजा संस्कृत कालेज, जयदर

हिरी-मनीक्षा मे शाजस्थान का योगदान गीरान में ही धारम्भ ही जाता है। रीति-कान महाराजा जनवन्तरिष्ठ में साहित्य के विद्यार्थी मी-पानि परिवित हैं। साधुनिक हिन्दी-समीक्षा री रित्राय दुख दमाब्दियों तक ही मीमित है, निम्रमधीयभी राजन्यान से ऐसे समीक्षक हुए ितना मनित्व हिमानय-मा ऊँबा भौर हिन्द-नगरमा गहरा भने ही न हो, पर जिन्होंने प्रपेनी करता ने नवी दिशामी का उद्घाटन या संकेत प्पतिया है। उनके प्रयास महान् बाहे न हो, र महित्य की प्रमति के लिए महत्वपूर्ण अवस्य है। प्रमान नेव में प्रकाशित उपनब्ध िर्मा व प्राचार पर राजस्थान के समीक्षा कार्य र्ग स्थलन कारेबा प्रस्तुत करने का प्रयास है, भारी प्रभाद या अपरिवय से रिमी लब्ध 1 - १ विश्व पदवा उदीवमान प्रतिमा ने महत्व-

पूर्ण वा माधारण घो कार्ष का उन्नेत करना पूर बार नो शन्तव हैं, बयोकि वह महा माने को मुमारने को तत्पर बोर नयी जानकारों को उन्दुक हैं। वेस से यहपुरस्क निरोध हो होणेलु के सप्तास्य गया है, सत. यह नेवय मुननास्यक समोक्षारण कहीं। सैने सपने हरिहरोग से किसी कृति का मूल्यास्त नहीं किया है।

ऐतिहासिक पवेषस्ता:-डा॰ हजारी प्रमाद डिवेदी के मनुसार ऐतिहासिक कारणों में प्रादि-कान का हिन्दी-साहित्य सध्य देश में तुर्राधन न रह मका । राजस्थान और गुजरान के मंदेशाइत निरापद होने से यही हमे कुछ प्रधिक प्रामालिक कृतियाँ भिजती है। इस प्रमय मे जैन-सण्डारो भे संदित मामग्री उन्तेलनीय है। इसमें दो मन नहीं हो सकते कि इस कार्य को यहाँ के शिडाइ जितने ग्रविकारपूर्ण दंग में कर सहते हैं, घण प्रान्तों के नहीं। यहां के पश्चिमों ने घरने इस बस्भीर उत्तरदायित्व का निर्दाह प्रायन्त सफरना ने क्या है। इन विद्वानों ने यहाँ उपवाद मानदी की ह्यानवीन कर हिन्दी-साहित्य के बाधशाराूर्ण आरम्म पर बहुत प्रशास झारा है, जिनहा महन माया-विज्ञान, इतिहास, बाध्य-वर्गा वे विशास एव परण्यरा सभी हरियों से हैं। इनेकी शीबी के कारण सब यह मान निया गया है कि हिन्दी की इतिहास राजस्यानी भाषा के उद्भव और रिशान में गुरू होता है।

स्वर्गीय मौरीदांकर हीराचन्द्र घोमा.

न्वर्गीय परस्याती, स्वर्गीय स्थामनदान जी, तो र सारण गुर्मा (भाव कह दिन्दी दिस्त रियाण्य में), संगासम मोना, अट्टर सम्मेग्द, स्रिस्तान मारिया, करिसाब मोन्सिस, मुनि-वित्र-विदय, मगरप्यद नाट्या, नामी नसेसम साम, सा मोगोजाज मेनास्मि, पर मास्यस्यन सामी, सा नर्गामाजाज गहुज, सो पैननुस्थाम मही विद्याल के कार्य में स्थित संगास महीजाजाज

'राज्यपानी भाषा भौर माहित .--मार मा बार घरिटर ती है कि मनिजार में जो मार पत्र घोर घरधी का है, वही धारि-कार में रारापानी मापा रा है। प्राप्ता शार्राण बनेश t'unt ft bemugn! ?, me feift & fegte साम पूरे मनाराण के एएका अध्ययन सम प्रत है। रण बालाज व पुरावारी शासाची विद्याल का को " Afretifer संगद कारण्य है, बदा'र प्राप्त Dare mer ber me mere ebenge" genreife दर्भक करना दरना। इत रिम्म स सर्व करन ইছ≠ হাৰ হামিয়া ৰাজ্যত ব্যবসাত টাঃ ভূচি err a an itel felia ar matte a an mat मार्थाः कार्ते । पूर्वातपूर्वभागाः स्टब्स्टरी ह्यूत ६ र मार्जनमा हे रेशमा दिया, बाब हार गार रेग की घरान करेंगा नहें पूर्व हुआ छात ** ** ****** * * ** ** ** ** ***** gent took a representative specimen REPORTS A POST A TO THE RESTRESS AS tion a disposit of the energy to severe etti ²e y ent 9 m ceres \$1 रिन्त को प्रकार हुए पूर्व छ हाई बनको है। इ.स. १९ १० वर्ष वर्ष एक दूर्वेग्राहर अ

THE RESERVE OF STREET

मौर पुराने बाहो का का की बाध-गुण उज्ञार है। स्थामी नरीसम दान वे सामान वे प्रापीत-माहित्य के ब्रध्यपत के शहरत में ही नार्व तिया है। प्रायोशिय शामी को भागा सम्बन्ध में बाज उनहां बन ही मान्त संबन्ध आन है (ग्रांसिक रक्ता है)। बनुते प्रमुख्यानुष ने उनके विरीप्ता से कार्य तिया है और या भी बार पर्ने हैं। साथगढ़ात के नातथीली, बालगत मादि पर नहामीती की रच गार्ने साति पतार के पानी भी ने बी । इपर बन्त सम्मने प्राप्त की दल प्रशास में नहें बाता है (वृत्योगताणी सर वयका योग कर) । शुरु मोतीया र में ग्रंपिय के कारों ने लिया के माध्या की बात में दुनिया को गुल्याता है, बीम रहेत कार्यो, मुमग शाना बादि वर प्रत्न बानाव को जी पासी तक ब्रान्त प्रत्या है । प्रान्त पाना बान रानातान के दिए र दिए इं स्पृति ह के दूरिरान कर अधिरहार ब्दाह ब्देश ब्दाहा संवात्त करते का प्रशास हिन्दी है, बच्चीर उन्बर्ध बहुत का बद्दार राज अबन विक्र क्षा बुद्दे हैं बार हर बुद्धार है है। है क्षपत्र अन्तरह ६ अन्त कत्त्रेपूर ह्यात सहात । र गु यन कुर्य कर ब्राज रेक्प्यू है जुर दश्यों के जनार है abareter merere de feet nich auf fi बुर बहरहरूनो । कराहरा यह रेड्ड काष करा कार me maide mag bientg fieng fiebt al क्षांद्रशास्त्र संस्था हे पुत्रमा सहारत् का प्रवीत कर्रत संगत पर मुज्य दशाला जाता मार्ग है । राज्य र रहा के रिकेश हैं। तरक पता राहे की में "पॉ gre or \$ % year great mr # \$ र्गरुद्धकर क्रोजल्ला करका जरुरा के भूर गाउँ 金工工工会 鐵金 優 化 化甲甲烷甲基甲基甲基甲基 an en man # , \$ er de me or in Piet क्ट इट प्राज्य कर स्थाप प्रस्तात्त्र कार्यात्त्र के प्राप्त

निमरा हुमा है।"³ झात्र कर ये राजस्यानी तोतीतियों के मूत प्रभित्रायों घर कार्य कर रहे हैं, ^क रम सम्बन्ध में अनेके झनेक लेगा 'राष्ट्र-आरती' मारि पत्रितामो मे प्रकाशित हो चुके हैं। द्याः मोनीलाल गुप्त ने 'मल्य वी हिन्दी-मेवा' गोर्पक मे राजग्यान के पूर्वी-ग्रंचन की साहित्य-मारता पर भन्द्या प्रसाग हाता है। इस सन्य के मागन में प्रनेक प्रजात कवियों और काव्यों का भाषनेगा। इस प्रकार के बाध्ययन एक बहुन र्गमतरेको भी हमारे मामने रखते हैं, जिसकी मीर मात्र हिंदी विद्वानी का ध्यान नही जाता भौरितनदी डा॰ नगेन्द्र ने एक बार चर्चाभी की री। हम माहित्यिक स्तर की स्रोज-बीन के विना में प्राचीन कृतियों के पीछे दीवाने हैं, साम्प्रदायिक ल्यों के पीछे भी बादले हैं, जबकि भाजकी ^{ब्र्न}पूर्ण इतियों को भी मनाहिस्यिक कहने से नहीं पूर्व। रावस्यानी विद्वानों को सूठी बद्यनिप्सा लात कर बास्त्रविक महत्व के पूराने ग्रन्थों का ही कारन करना बाहिए, जिनको साहित्य के इतिहास दे एका का सके।

पत्रसान में भाषा—वैज्ञानिक झध्ययन बहुत नेन सा है। बा॰ सरनाम सिंह दार्मा 'शहरण' परन्यानी भाषा पर एक ग्रंब तैयार कर रहे हैं भी शैनीराम सालस ने राजस्यानी भाषा पर सो शैनीराम सालस ने राजस्यानी भाषा पर सो सेना है।

नमृति भीर परम्परा के जीवन्त परिक्षान के नौर साहित्य का अध्ययन आत्मत धनिवामें है कि 'कम की नियावट घटडों के विद्यास में पर्प रोसोंक्नों फिरनी है, बाग़ी का उच्चारण धाने घाडक्ष में स्वार्ध को स्वार्ध को साथ मिना है। "प नरोत्तम स्वार्धी थीर राती लटमीकुमारी प्रधावत की बोह मोता थर रणताएँ उत्तरम है। कोहारायांनी पर डाल नहर की इतियाँ है। पर इन दिना में महत्वपूर्ण थीणहान जोपपुर की 'परम्परा' शीर उद्यपुर के सीध-मस्थान के प्रधानां का है। पर हर समय नोह-माहिल की रट भी कन सतानाह करते हैं। उपमे धपने वर्तमान के प्रति हम उदान वनने हैं।

प्राचीन हिन्दी साहित्य .- उदगरुर गोप-सस्यान न कुछ समय पहले पृथ्वीरात रासो पर भिन्न-भिन्न समय पर भिन्न-भिन्न विद्वानी द्वारा निन्दे हुए तेवों का संकवन निकाना है। जिसमें रामो पर ब्रद तक हुए कार्यको विकासमान यति पर ऐति - हासिक प्रकाश पडता है। इत रागेय राधव ने पुट गोरवनात्र पर मधिनिवन्ध निला है। यद्यपि मह ग्रंच सभी प्रकाश में नहीं शाया है°, विन्तु से पर के अन्य गंथों में गोरलनाय की वर्ता नो पत्तर इसके महत्वपूर्ण होने का धनुमान होना है धीर हां। राग्य राघव जैसी समर्थ प्रतिभा में इमने विपरीत सम्भावना हो भी नहीं सक्ती। हा॰ सरनामः सिह शर्मी अरुए। के 'संस्कृत साहित्य का रिन्दी पर प्रभाव' विषय को लेकर लिले यए प्रविनिकय के महत्व का उल्लेख एक स्थान पर डा॰ पीरेन्द्र वर्मा ने किया था, यह ग्रंच प्रकाशित भी रूपा था, विन्तु भावतन दुष्पाप्य है । 'विशिष्टाई वित्र' मीन दर्शन' नाम वे डा॰ घरण में यंथ में एव ब्राच्याय में हिन्दी के भक्ति-माहित्व रा विशिष्टी। है तिक मिक्त की प्रक्रभूमि में मृत्र विवेषत है।

[.] रे. हे दा० देवराज चपाच्याय का प्रजमेर सिम्मीजियम में पठित नेस-प्रारावधीय राजस्थानी समालीचना ।' ४ डा० सहल के सेलक के नाम एक पत्र के मनुगार । रे रोतर गोठारों के एक सेख से चद्धत । ६. हिन्दी के स्वीहत बॉप्य-प्रबंध के मनुगार ।

'नवीराम्' विदेशत' सिहते दिनो ही प्रमारित हथा है, जिल्ही विद्वारों ने मूरिन्हिर प्रारंग की है। बरीर मानिय के विविध पत्नी पर विविध रिप्राणों ने ममीर और मौतिक कार्य किया है, पर एकं गाय नदीर के मिद्रान्त, माचना, योग, मन्ति भीर शाम पर विचार शरने बानी यह पहनी महान-पूर्ण कृति है। या॰ चन्ता वयोद की नामानिक बेल्ला को ही प्रस्त मानों हैं और इनकी मन्दि को यगी से भारित स्वीराप्ते हैं। बार धन्य ने स्वीर गारिय के मानस्यासारी पानु पर सिन्यर मे विवार विधा है। एक्टी स्थापनायों पर हम विवाद बार रावादे हैं ही विद्यारी धाएए और उनमें हैं, यर मार बारा है कि "रिहार रेपात में इस इंद का दिवारे में भागि थम दिया है और उनने की बारणी नमुद होते। याणा ते कि लिया याजावणा नाजिय मे क्षण का शामान होता की शिक्षणायों स्टा मुचिया बाहि सहस्य बाहर इत पुरुष की बिरेग्य ।'' देश करते के बादा दें। इस कर कर है रे हि सा चचना हिन्दी की अपूर्वि से बान देने नारी ब्रीर रेग्यर बर्ने बार ची प्रशास समने बार्ग है । ह

अगुद्ध शारित्यु-विश्वी-अन्तर्क के जानतीय स्थापन के उर्वत्वेच उद्योगि प्रास्त्राह्य प्राप्तृत्वा स्वरूप के १ प्रणाद की अगुज्य-अन्तर्भा पर उपयो पूराम कार्त इत की बचता हुए की हेन्यद्व साम प्राप्ताह के बातन है जाने अग्ने अग्नेत्व दिस्स महिलाई के बातन के स्वरूप के बात अग्नेत्व साम पर बात पुरार्व सामन्त्री हिलाई की स्वरूप के प्राप्ताह मूलाई है जिलाई की निर्माण कार्याम के प्राप्ताह मूलाई है जिलाई की निर्माण कार्याम्य के प्राप्ताह मां अग्नेत्व विश्वाद स्वरूप कार्याम्य के प्राप्ताह मां अग्नेत्व विश्वाद स्वरूप के स्वरूप में

बां रामधरण प्रोग्द का रि.गे. लगे हिया के बहुधर धीर दिशान का धीरीनाथ प्रकारण हो चुका है। दणके शियान का है कि हम्द शक्यांक के एक्फोकारों को बी म्लग रिया यस है। यह बीच एक शंकरणायक कि है।

e d'grae en trasant ta

५. रोहरो से प्रश्नुस के इपल कहीत. तक विश्वपत पर दिएडू

रखे बानी परम्परा में मिन्न जीविन धीर महित्य र्पतमा द्वारा प्रशीत दन्यो पर मनोजैज्ञानिक प्रभाव भी मूक्त और करने वानी एक विदिष्ट धीसिम बी भीर इसने एक नई मध्ययन दिशा का प्रवर्तन विया। हा॰ लहमीमायर याच्योंस के शब्दों मे 'हिरी धानीको सवा विद्वानी ने हिन्दी उपन्याम मै प्रस्थित बाह्य जीवन की मोमांमा तो की यी, निनुधनर्भन का स्वरूप दर्शन धनो तक बबूस रो परा वा । प्रस्तुत प्रबंध में हा॰ देवराज उपाध्याय ने को बन्द् मे प्रदेश करने का सफल एवं साधनी⊸ पूर्वभ्याम दिया है।" 'कबा के सत्व' भी एक प्रशार में इसी पन्त की पूरवः पूरणका है, जिसमें इरोगीय उरन्यामां के मूतन प्रयोगी, चेतनाप्रवाही शरा, मनीदेशानिक उपन्यामी की विशेषतामी और हिनी हे नदीनतम प्रमिद्ध उपन्यासी का अध्ययन निगरगहै। 'विचारों के प्रवाह' से भी कुछ ष्पान गया-साहित्य से सम्बन्धित है। 'साहित्य पीर सहित्यकार' उनकी नवीनतम इति है, जिस र माने वर्ता होनी। ऐतिहासिक उपन्यास पर गर (र मृत महत्वपूर्ण मध्याय है, जिसमे िराष्ट्र धीर उपन्यास की परम्पर-निर्भरना का ष्यान मर्रमानए घरातनो पर किया गया है। रिपे केम की मूमिकामी का 'उपन्यास-कला' के गर हे उन्होंने पनुताद दिया है, जी ग्रेस मे अेजे ^{को ने} देगार है। डा॰ उपाध्याय के ब्रानीयक रेरे एउ मुत्रमे बहा अभियोग यह लगाते हैं कि रेतेने रीवन का जो मनुष्य के सभी प्रयत्नो और र पाँचा पन्तिम सान्य है, ग्रस्तीकृत कर मनी-कित्रों ही साच्य मान निया है। 'दर ससन र. ह्याप्तार ने माधुनिक मनोविज्ञान के साहित्य ^{ए ग्}रूरम्य विस्तृत्यम् का कार्यं साने साने ^{र क्र}ेश्वां परशोह दिया है, उनका प्रयत्न ^१ पाहे कि वे यह बतावें कि निम सीमा तक

मनोदेबानिक प्रकृतियों से प्राप्तृतिक बचा-माहित्य ग्राजानत है, इसमें श्रायक का दारा वे नहीं करते। वे तो पपडण्डी बनाने वाले हैं, बाकी बाम पाने बाले लोगों के निए हैं। फिर भी यह निश्चित हैं कि मनोबेजानिक शनिवाद वन पर हारी हैं।

भी आनचन्द्र गोस्वाधी के बहानी-नर्सन को राजस्यान साहित्य सकारमी ने एक हनार रायों से पुरक्त किया है। कहानी के सामनीय प्रध्यक्त किया है। कहानी के सामनीय प्रध्यक्त किया है। कहानी के सामनीय प्रध्यक्त किया है। प्रध्यक्त किया है। प्रध्यक्त के सहन्त परिश्रम किया है। प्रध्यक्ति हैं, पर कारों की नहिंद्याओं का बहुत कम परिश्रम रात हीत से भिनता है। ही, तरण-परिश्रम सामध्यक्त है। ही, तरण-परिश्रम से प्रध्यक्त है। कहाने परिश्रम किया में सामार्थ हैं। काफी एक्स भी मोहननात्र जिता भी हैं स्थानकाती पर एक परिश्रम सम्मार्थ कुनता किता हो थी।
सिद्धान्त निकती थी।
सिद्धान्त प्रीरंग समीदार्ग-हिन्दी सामधान

की विविध प्रवृत्तियों के प्रतिनिधि समीक्षण हमारे यहाँ बहुत कम हैं। यह बात एक तरह में धन्त्री भी है भीर बुरी भी। भव्दी इमरित् कि यर हमारे पक्षधर नहीं होने का प्रमाण है मौर बुरी इसलिए कि यह अध्ययन की उन दिलाओं में हमारी ग्रक्षमता का प्रतीक भी हो सक्ती है। पर यहां धशमता की बात नहीं है, ऐपे समीक्षक नम हैं जी हैं वे बहुत समर्थ और प्रभारशानी हैं। प्रगनि-द्यीन बानीचना के हर-पुरूप डा. हागेय राघर हमारे बीय मे हैं। इस प्रथम थेली के सप्ती-साहित्यवार की भारतियों प्रतिमा भी प्रथम थें गी को है, जिसका निदर्शन 'प्रगतिशीत साहिय के मानदण्ड", 'समीक्षा और घारमी', 'यशर्व गीर युग', 'वाय्य-वन भीर सास्त' मारि इतिसं करती हैं। प्रगतिगीवता ही दा॰ रागेप वे बनुमार साहित्य मी श्रेष्टता की क्मीडी है, "प्रमर्जितीत

गहित्य ही महुप्त की ज्वयात्रा की गौरश्याती गामा है, जिसमें जीवन का गाया ही। उसके समाव मीन्दर्व का मापार होता है।" बाक संगेद समय मानियं की कार्यक्रमता के हामी है, मानियं पर पार्टी का मोक्स उन्हें में जुर नहीं । वृत्तित समाव-गार्गायता की उपरांते गरीव निया की है। पर तुरुगीराम पर प्रतरह रुध्यितीमा भी कम र्गरीर्मी नरी है। वे नुष्योदान को इसीजिए संगद देते हैं कि मूत्रपी में मुस्तिय बाब्धारणबाद का रिराप शिया, प्रशास वह प्रतिक्रियासारी वे धीर गामनी बाराने की पुरुवांत्वा की कामण मारी में । है रीमा बारी शमय प्रमा सर्वतिथेय की मेबाँदाप कर देर हैं, जो सभी धकर-कृतिया की रक्याची में कथाहेत है चीर हिर कड़ीर का नेवर प्रशिवासर का मुन्ती में बाद वादि करी बहा या नवण वि वर्तत ने बारणवार का रिशाव रिया है बा मुख्यी को श्री कामण अना ती बाग का नवा हि बढीर की बडीश बाल ब इत्वरल पर प्रवास्थिता सरिव है। बहर बागर वे प्रावरण पर व्यव्यव्यक्त बान है भी दिहारी प्रणाश बढ़ कड़ि हार । लुकरी mil mine bates & miem feinte Angenia dig ty \$? Are dead and theirid e sere uten & beer gfebr an bent tinne bie mate miere fer \$1 mile क्षान्यामक्ष्मा की प्रश्वेत संभावत templik someter de besteres mi wird fe wie beifigin ? gant wirter Efe and were a foret higginist हैं हरिया कुन के देख्य बारश के बीर बार बंद राज रामा है कवर्ड के लाँ है जे रूप बार a war a were to be a better to be रे. सहें प्रस्ति की के नाही की लग्न की है।

विचारत है, पर क्षितारी तरी, मार्थ भी ऐतिया ने नवन उनने तिए प्रान घीर प^{ित्}प नहीं है। भी इसका जोती ने सन्ते में मार्ग वैज्ञानित बाबोनना के प्रतिकत्तव बाक प्राप्त्यार है। इंडा॰ उपाध्याय के बार्ध का प्रभाग करा-साहित्य के बानार्वत हो बचा है। बाधी विक्री रिक्षे ही अहिन्य बीर सान्तिकार्र का पराणन हवा है । बत्तीरिवाद का बादर पूर्वत बता ह्या है । इस दृष्टि में शा गाएगा ने मार्गात वे सम्बन्ध में महेता मी रहा परत प्रशाह है, दिन सदकी चर्च ग्राम संश्वद नहीं है। वे भारते हैं हि सारित्य से इस बृति की सरी इसरे। इति बोक्यूमी हो नवती है, बता गान्त दिवासी में हम मारायण हो शको है। श्रीपार की हैंडी है दिश्योज दक्षेत्र करकारित का मोति है. क्रमेरा की सराह प्र^{त्}रता स सताते त्यांता 41771

कारणीय नावादिक विधिवाँ को मा गय से सार्गाप का बादायर ब्रोद सार्गाप के मा गय से सार्गाप का बादायर ब्रोद सार्गाप के मा गय से का बादायर ब्रोद सार्गाप के मा क्या विधिवाँ का माणका-विधान व्यक्त का बादायर दिस्सी का माणका-विधान व्यक्त का माणका-विधान व्यक्त का माणका-विधान का माणका-विधान का माणका-विधान का सार्गाप का माणका-विधान का माणका-विधान

तं, मुदरम् पर मर्पिनिबन्धं सभी प्रकाशित नहीं ग है, यद्यपि उसके बहुत में ग्रंदा प्रतिप्ठित स्पतिरामो में निकल मुकेहैं। डा० तिवारी महिला की मास्त्राचता का मून 'समास्त्रमात' ो माना है। प्रंय के प्रतासनान्तर ही उनकी र स्थापना में पूरी तरह परिचित होना सम्भव । इा॰ तितारी बहुत विद्वान् हैं, पर उनती ाग बहुत जटिन, दुर्वोध ग्रीर धक्षम है। डा॰ 'हैगारात सहर का 'निवेचन' दुष्प्राप्य है । यानोपना के पद पर' उल्लेटच हुनि है। डा० लानिन्ह घरना की भागरा ने 'सिदान्त भौर मीश'नाम में महत्वपूर्ण पुस्तक सभी-सभी ^{नाहित} हुई है। भी नन्द चनुर्वेदी एक भ्रष्ययन-ीत माहित्यकार है, उनकी पुस्तकें भी मुद्रशान्तर्गत । विभिन्न मैमिनारो भौर उपनिषदो मे उनके भारतानी व्यक्तित्व का परिचय मिला है, इतित्व में जाद सभी बाकी है।

गेंदरूर में दो नयी पीढ़ी के प्रतिमाशीन भीर मनस्त्री समीक्षकों की कृतियों का प्रकाशन शि है। थी विजयदान देवा की 'साहित्य भीर ^{हनार'} श्री कोमल कोठारी की साहित्य संगीत ^{दी(क्}त)' ना सर्वत्र मादर हुमा है। श्रीदेवा ना सहिन्य-मेना ना मादर्स बहुन ऊरंचा है, ने माने मगद नो पेट की खुराक किसी भी की मत रे ही बताना चाहते। उन पर बॉडवैन का गार है, पर पपने स्वतंत्र विचार भी है। भी गोतन कोठारी ने हवारीप्रमादजी पर प्या निवा है। हिन्दी की माज की अशस्तिपरक रा धुनरतात्री पद्धति में मुक्त होकर । पर उननी िरोमह चिन्नया न केवन झान्त हैं, सपित ित्यूर्ण माँ हैं। 'बागुमह की धात्मकथा' रा नेतर रही गई एक बात मुक्ते बडी पसन्द र्प हि हम यह तो गर्व में कहते हैं कि हमारे उपान्यामचारों पर धमुक-धमुक विदेशी कनाकारों का प्रभाव है पर यह किला नहीं करते कि वाचिदान, दण्डो, बाल्य धादि का भी पुख प्रभाव हो। दोनों लेनकों ने तोर-भीतों का बन्या धप्यन किया है। पर इनका राज्यमानों में म भाग्यराविदना की भीमा तक पहुँचा हुना है। राजत सार-वत का भी इस मन्वन्य में नाम निया जा सकता है।

हिन्दी के शोध-प्रबंधी का स्तर प्राप्त एम कदर गिर गया है कि पी० एव० हो० में दिहता प्रीर प्रध्ययन का दूर का भी नगाव नहीं रह गया है। इनमें मिनता है केवन संकतन, वर्गीकरण भीर उदरण या बेदों में तेकर प्राप्त तक दिमी दिश्य पर जो तिल्ला गया उसकी परिगणता। हो भी, इस कारण सभी प्रधितिवयों के प्रति उरोशा ठीक नहीं है।

राजस्थान के शोधक्तीमों ने यहां या बाहर के विश्वविद्यालयों में धनेक विषयों पर उपाधि ली है, सबका उल्लेख यहासम्भव नही है, बुग्र नाम गिनाना ही पर्याप्त होगा, डा॰ राजेन्द्र त्रोगी, डा॰ जनदीश जोगी, डा॰ घन्डाशकर नागर, डा॰ यतीन्द्र, डा॰ शिरपुरी, डा॰ माधुरी, डा॰ हरीसंकर शर्मा हरीश, डा॰ प्रमुनारायण महत्त्व, डा॰ गायत्री, डा॰ धवर भीर मूची लम्बीहै। ब्रथ्यापकीय बानोचना प्रवाकी नक्त्री बहुत है। इस दिशा मे रामनान सावन का नाम उम्लेख है। प्राध्यापनो के प्रतिस्थित भी पूर्ववन्त पाण्डे वी भी परिचयात्मक समीक्षा-इतिया है। इस प्रकार की बातोवना एक सीमा ने प्रशास होने पर स्त्रतंत्र और स्वस्य-समीक्षा की प्रपति के निए यानक बन जानी है। द्वानोपयोगी बानो-चना की ग्रंथिकता हमारी किन्तर ग्रसमनाका की भी परिवादत है। माधारणु दा महत्त्रपूर्ण

प्रविश्वामां में दिन्हें सेव निवार हो है उनमें सार , नाइंगि, नीर , मानार, बीपा, गर्भीकों, सबस, नीर पहुँगों, पारीस मार्थ के साम एक पास पार का को है, जुन में नाम पार कमें पूर पार है। मेंडियों वर भी बीपा मार्थ की पूर पार है। मेंडियों वर भी बीपा मार्थ किया है। भी पारेताम दिमारी, भी सित्तामां मानाया गांधी, विस्तुबाद नावद मार्थ की पार है। पर एवं मिनावर पास पीरी बावर्ग नामा है।

धार्यन्तर कवि धीर कारय-का रिमा में रा राज्याचे कार्य अनुष्य क्षा है । 'कामायावे दर हार वापार्थित का हाद दर्शन स्थारित है। से मुक्तित । राहति चा रिहाह है-देशिक स्पृति च के ममत् । इत दादार कारापार्ग क देविह शाला का धाररा कार हा शास्त्रीय देश अस्तार दिया en haber interior e ein ieinimb nite. नाव राष्ट्राच्या राष्ट्रका भी आपने, दिल्पी गाप मार्ग हर हरात्म होत्र बुद्ध त्य है । हर ह हर र देश Land barbarrite fart, ob it it it it fall dit ega wife it ben mi at aud gat je da mie Jegr fen im eft eg marm u. fatt få HERTE TO PERSON OF THE SAME SAME my on proceeding and a to proceed ence or vision error of the sine er na frændage end er neam er in til e A LO STOPLETOR FOR TO THE ATTENT g gga r terny ferri y line (41-11-444-5-5-5- 24 72 6 5 e teg open væresteer.

पर कोई सम्बद्धी दृष्टि सर तर पारा में ती सामाई है।

द्यभाव :--राजावार ने संयोगा-साण्यि हे सरी सुरशास के लिए जा जमरी है कि रच मारी धमारी को पैत ही करीतार का है। बात में द्वा है कि बाच रिन्दी चार्चे की तुरुक्त में हमाग्र का मीता है देदी चार सामों का उका वाले में सी होत्तर है ने हमरहे सार्व वर्षि बागु वर है तर सावदार है व वर्गस्तिराती बागोपा-गा का अध्यानी दबरण का कोप्त है। पूरापी गीरी दा देग कारे वें पंताकृत बचा सर रे हैं है। इन इन बार बच्डें के भी पह लईर पीची औं ने दोनों है तेनी कोई बबार दिनों है, जिसे विकार का बाद प्राप्त के रूपाल्या बाप भाषाभगेता व सार्थिता सहमहरकर वह की सर ३ % माने हें पा सर पर हिबाहर करण राष्ट्रवित सर्वाहरित कह पारतगाहर हो लक्षा है। यदि हर देख दोन लगान दुनारर नर नर त्य हर्षभग्रह द्वारी व कार सं भागा प्रताप कर प्रार्थ emplent girt etrigt eine b कत दुर्ग, इ. इ. प्रिक्ट मा हर शब्द सह तह

कुर्यान नहा हुए के नाइन अदि का निर्मा नहीं का निर्मा नहीं प्रमाण कर के का निर्मा कर कर है दूरान है दूरान है हुए कर है का निर्मा निर्म निर्मा निर्म निर्मा निर्म निर्मा न

है। नेपको में चन्दा लेक्ट सहकारी बाधार पर पर निवानने की प्रया इसर हिन्दी से लुख पनप वही रे, पर रुपमें गुरबन्दी, माम्प्रदायिकता और मस्ती मानिमातवा पूछ बड़े नामों की वजह में बड़ा श्वार प्राप्त बान है। यदि यह कार्य ईमानदारी मे में में बहुत स्तुत्व है, पर इस व्यावसायिक युग में प्तातियों के पत्रों की प्रतिस्पर्धी से इनका धर्धिक ^{मन्द्र} तक **प**रना संगद मही। 'लहर' उल्लेखनीय प्तिहा है, पर राजस्यानी प्रतिमा के विकास बी भैर प्यान देना उनका लडब मही है। शाजस्वानी रिनमा का पन्तदन तभी संभव है जबकि ऐसे पत्री रा प्रशास हो, जिनमे प्रादेशिकता भीर भनाउँ-ियताका सामजस्य किया जाए । पत्र प्रादेशिक नि पर्व में ही कि परने प्रदेश के नाहित्यकारी की रो प्रमुख स्थान हैं, और धन्तहेंबीय इस बर्थ में ि तमें इस मात्रा में देशान्तरों का श्रेष्ठ साहित्य भी भान पाते । इसी से गति और भेयम, चेतना ^{दे}र मनार, प्रगति भौर संस्कृति का वह समन्वय ीं मना है वो सम्पूर्ण जीवन है।" श्री संगय मनेना के प्रश्लों से मजसेर से निकता 'स्थाय' (गितानी एक, १६६०) इस दिया में पहला मगानीय प्रस्त्य है ६

िय निम्न वर्षों में राजकर राजस्थान के मानीक्षा में रह में में सम्मन निमा मान है, वह स्थिक देवते मुक्ता देने की मुविधा की हरिट में । ऐमा कार में कि क्या साहित्य के सम्मेता की काम्य कार के कि क्या साहित्य के सम्मेता की काम्य कार के में में निमा निमा है है कि सम्म कार कर में की मानाई हमाने ही है कि सम्म कार में मोता निमा निवीदाट क्या की सोट का स्थानक की सिमेद गति की के कारण का भी बाती है, सम दिशा में निमेदमा के

माने समकी देन विभिष्ट हो भी सकती है। किन्तु कोई समीक्षक भनेक दिसाधों में समान रूप से भी भ्रषिकार रन्य सकता है। एक ही भ्रंत्र में साहित्य के विविध रूपों का विभिन्न इंस्टियों से भी ध्ययपन होता है। इन पक्तियों के लेखक का प्रयत्न भ्रधिक से अधिक सूचनाके सग्रहका है। मग्रपि शोरा सुचना श्रेष्ठह निर्श्वक है, पर सार्वक की द्वाट क निए सार्थक-निरर्थक जैसी भी हो, सामग्री का सच्य जरूरी है। इस संचय से उच्चस्तर के कार्य को अपन करना सीर महत्व देना विद्वानों का कार्य है। येरा प्रयास यदि उनके सामने कुछ विचारगीय मामग्री स्व सके तो ग्रही मेरी सकनता है। इस सेख मे जिन भागोषको की धर्च माई है, उनके बभावात्मक पक्ष (निगेटिव साइड) पर मैंने मौन ही धारण करना उचित समझा है। मेरी इंटि में मंत्री ता राजन्यान के साहित्यकारों के सामने मही स्थिति है कि वे बंगने को महसूस करें, प्रसर्टेन करें, ब्रात्मानोयन की चर्चा का ब्रवमर बाए इस योग्य वनें। या मैंने हमारे प्रभावी की सोर संवेत स्तरम किया है, उस इतियो पर एक-दो तथा में प्रविक का व्यय नहीं हुआ है, जिनहां महत्व साधारत है। बाज नये मधीसको की प्राचीन साहित्य के प्रति भवज्ञा और उदामीनना की हरिट एक बर्न बरे मतरे के बिन्दु पर पहुंच गई है। ग्राप्ती परम्परा मी देल बिना धारे बढाता रूमी भी समय नहीं है, प्राचीन कृतियाँ हमारे पतुभव को विगान करनी है जीवन के बीध की बदानों है और क्राप्त संस्कारों का संवर्धन करती है। धनः मैंने प्राचीन साहित्य पर हुए कार्य दा साहर में उच्ने व विमा है , इसके मईबा शिपरीन बाराणा दुख प्राक्षणा की

है, जो हिन्दी माहित्य को छापासार के माप ममान

प्रदेश के भारमने पद से उद्धृत

कर देरे हैं। मैंने ममीरत ने जये पातामां घीर नहीं प्रीतमाधी ना नगरन हिन्दा है। निजु दी-चार मेगों ने प्राधार पर ही जायोजीय नर देना परण मार्ग मेरी नगरी नशर्मा हत मुख्यांच्या ने निर्मुख प्रणाल प्रोरीला है।

शमील ने प्रीत तुन भागता हरिएकोगा शिल्हे भार धरों से लियी सालिए में चै ताल जा रहा है। प्राचे स्वाप्ताचा राजार को राष्ट्राय महारचे की प्रशृत पतारी मानियात्रको संक्षेत्र घर कर गर्द है। माणात की माश्वर का कर के परिणा के पीले रैनाप कुला। की प्राप्ता जिल्हा पूर्व की ही बहा है । बुण बारोपरो की महीलील पर बाबोल उदित है, यर बारायम क रियापन यस के बाबोर्ड के मना धीर प्रदिश्त कराज धीर धाली हर्वे रणया की क्षापुर्व बारने व देएता हो ब्रान्टिश्य कर्यु मार्ग है ह शानिक मा दिवाल अधील का मा देला है और महील्य का विकास अर्थाल्य की स्थित करा धाव र्षे कर्णा गरेवारा का अपन्तु का बानक के प्रवास मेरी दिल्लीरे कर्ष कर्ष्ट्रक हाई द्वीरूप एन्स्ट्रे हान्ते met minn b mittige after auftre gint et Rimiteren befeine glente febinft ten til ett til be begrene be bediet miller ब्रुंग ब्राम् है पर हा ब्राम्प के हर दर्भ ब्राम्पिय Filmer digas de Gantaine Managang, agent Ann, has Apade & the Rey Some Ship

उसड़े विखे हटे पते कर्वन्द भीख, इसर

उनाहे बिराने दुरे दशकारी पूर्य स्टर रहे हैं हम **27777: 1** बाग्याएं लि बारे हैं यार्थ से ही भएत गए, नदी सरे मरने हैं दीशरों में द्वारा बर ' देश में दो हम बीलरे है विचार है है भाग कानो 🗸 १ इब स्वरूप है, ब ग्राप है धवा है मोहा में 73.72 (204.2 RESTAURTS OF enternit i fd ++ 2, @ cat 2 grug mit stop it it mit die wied ge gieren dare ?

निवन्धकार

योः नरेन्द्र भानायन् रुम.रः., ना. राम, रिलर्च श्कॉलर हिन्दी-विभाग गवर्नमेंट काहेज, बुंदी (राज)

(रियान को रन्तमां भाटी में पूर बीर मंत्र त का नत्तर धीर लंजकी गर्भात वाले करे हैं। वी में बमा-बंगा मृष्टि बहित काश्वानुकों की गिर्फि काम पूंजती है तो माहित्य, संगीत बीर तभा कापूरी के साथ संश्वी भी है। राजन्यान-मेंद्रिये बार पत से माध्यम में बीटो में मर-किंत्री के पर पत से माध्यम में बीटो में माध्यम में किंत्र, काल, क्लिन, पीडी, पट्टावनी, बचाबनी, भेजा भी के एवं से उनके गोरम की रसा मेंद्री है तेर्यों सत्तमी में राजस्थान-या की स्थान किंदिकन कर में पत सक्त बनी बा रही है। हो हिर्मों सत्तमी से पाजस्थान-या की किंद्री साथ पत्तिकी विषय मध्य की बिया किंद्री की बद्दा पत्तम है।

सं्तरनार में राजस्थान का साहित्यकार

न्या देव से यारी बढ़ा है। जी में बाया तो

का बजी प्रकार हैं है। जी में बाया तो

का बजी प्रकार हैं है। जी में बाया तो

का बजी प्रकार हैं है। जी में बाया तो

का बजी है। इस होट से

किस का में किस का में बिस है। हिंदी में

का सो।

का सी।

िक्त वर्गीतरसाः—

गान्ता मा प्रदुट निक्चणकार वर्तमार्व-रेटिने ने दर्शना एवं पवित सभी विषयो रेटिने के दर्शना एवं पवित सभी विषयो-के कि हिंद ने हम राजस्वान के समस्त रेटिने हम राजस्वान के समस्त कि हैं। विश्व वर्गों में विश्वाचित कर

- (१) द्वेषगात्मक विवन्ध ।
 - (२) द्वारोचनात्मक निबन्ध ।
 - (३) मानात्मक निवन्ध ।
 - (८) हाम्य-ध्यंप्यात्मक निवस्थ ।
 - (१) जीवनी-सम्बन्धी सस्मरहणस्मक निबन्ध ।
 - (६) यात्रा साहि स्फुट विषय। सब हम प्रत्येक वर्गका क्रमरा. वर्णन करॅंगे।
- (१) गवेपमात्मक निबन्ध :-

राजस्थान में पुण और परिमाण की दृष्टि में जिवनकारों का यही सबने मसक वर्ग हैं। राज-स्थान की भारित-करफारा शानीदियों से नदी घा रही हैं। मैकडो सहान करन सम्पादित होकर प्रकाश साथे हैं। इसोचे हम्मिलित पन्न पन्न भी भूकारों में बन्दों पढ़े खराटा रहे हैं और लाजे प्रवद दीमहों के उपजीव्य वन कुके हैं। प्रका सार्टिन व्यक्तरों का प्यान इस मोर नाय भी राज़्ती परनी साथ का नदमीन निक्मो के कम में साहित-व्यक्तरों सामने रखा। इन निक्मो को हम निक्न उदकारी में बांट सकते हैं—

उत्तवा म बाट वर्गत है।

है , लोड-महिल्य सम्बन्धी निक्यः -राज्ञवानी
सोड-साहित्य विषित्, विसान धौर विस्तृत है।
उत्तये कथा, गीत, राम धारि घर धन्न मण्डार
है। भी धारण्य नाहर्त, नरोतन्दाम राम्में,
धौर सुर्वकरण गारिक ने राज्ञयानी-मोनो वर
सम्बे निक्य निले हैं। बर्ग्यानान महत्र ने
'राज्ञयानी-कहानता' धौर 'नोर-नवामी मे पूर

मीसराय', सरीहर दार्या ने 'नीत-क्यामी मे गामा, नग राष', रीन्यात घोना घीर मारीम मादूर 'रमन' ने 'रायन्दान की द्वीतिहा र्षार्थियाती, रास्त्र गारम्बत्र घीर प्रपुत्तान्याः घण्डात ने 'त्रारम्यारी सौतित देवात्रात', नरेन्द्र भागारण ने 'राजानानी वेतिकामा', गीशराम वर्म कीर करेंग्र भारतरत ने 'सामस्वाती दर-गोगाः।' यर बच्चे कारतानुत्री विकास स्ति विश्तित चीवर से लोकपुत्र से सुन्तर विविध बन-राम्यः यर प्ररागः शता है। पुरतोत्तव नार मगरिया में पामपानी नारियनचा घोट वाद्या पर निवाप रिधे हैं तो नाराज्यातिक आही ने 'रमगरा' ने विशेषात्र) की मूदिकायों के द्वारा राशकारी लागित की बाज्या का की दर्व जिलाश है। बाध्यस्य बार्या ब्रीट संप्रदार नारण ने 'माननारित्य' का बाहर हिया है ता बहरीयग्रह रापरिया कीर स्परीधर प्रयाग लाग कार्यया से रमा रा है। राज्यसार की-'बाजायार भारते, ter-aterit, 'getti, 'ere-tifest', 'ttertel' कार्य काम क्षेत्रकारी होता हुळ रियालकार या tter pariment de dan biol sei à ?

I girşim alle mey masili fesique menemler, is allelem girere alle mes masiler, avende estat fesi es

(२) धानोननात्मर निबन्धः-

इस कोर्ट के जियाचार प्राप्तकर करें ने सम्मास्त करें हैं। जारें कभी काम्यान रिवामी का कार्य करना समा है तो कभी एक रिवामी के सावार पर काम्यान समीता का विकेशन कभी-कभी परीजीरवीनी रिक्य तिमार दिलापियें का कार्य समय भी कराय प्रकार है। इस कीर में इस क्यें के तीन रिकास दिने मा सकते हैं—

5 Mighant lein ruthig my stat -

1 2 4 54

स्विध्यान वर्ष निवाद हो के बाद पूर्ण और पां स्वाप्त के प्रदिश्य को देव से देशों को निवाद रिद्यम बार्थ में हैं इस देविया की देविया को मिर्ग स्विद्या को प्रयुक्तिक स्वेद दिश्य की देविया जात मही क्षणी कारण की सदे हैं के बार के देविया जात मही स्वार अर्थ कर्म के स्वीर्थ स्वाप्त के स्वाप्त कर से स्वाप्त क्षण क्षण के स्वाप्त कर के स्वाप्त करा है रिद्यम कि सुन्दित के स्वाप्त के स्वाप्त करा है है से पिर्माण क्षण कार क्षणिय के साम के सेन सिम्माण क्षण के स्वाप्त करा है सेन स्वाप्त के स्वाप्त करा करा है कि स्वाप्त करा है सेन सिम्माण क्षण के सेन सिम्माण की है है हिस्स देवियान की स्वाप्त की स्वाप्त करा है सेन स्वाप्त की स्वाप्त करा है स्वाप्त की स्वाप्त करा है स्वाप्त करा है स्वाप्त की स्वाप्त करा है सेन स्वाप्त की स्वाप्त करा है स्वाप्त की स्वाप्त करा है स्वाप्त की स्वाप्त की स्वाप्त करा है स्वाप्त की स्वाप्त की स्वाप्त करा है स्वाप्त की स ्ता ६। भवत् वा भागाता व ज्यादित त्यां से प्रोत्माहन दिया पर धारित-नद्रमाद्रमा देलता पांत तोह दिया । माहित्यक परिवार्ग्या वेषद्रमत बारण, मधुरा प्रवाद धवतात्र, तुल निरत्तावर, नरेफ मातावत, जयदीय 'बनकः', स्मिह 'तीहरू', नवन विसोर, दा० महेन्द्र धार्दि विस्प्रप्रसातिन होने रहते हैं।

परीशोतयोगी निबन्धः

प्रस्त धारोपना-देव से कई निवस्य हिन्दी गिर्माणों को हिए में सरकर निवस ज नहें । उनसे प्रवित्त रहाने के साधार पर इति-रेन्स प्रवित्त सर्वों के साधार पर इति-रेन्स की बनेशा सर्वाप्त की वानती है। इत्तरा निवस्त में बनेशा हो की स्वार्ध है । है । देवा जो के कारणों के स्वार्ध है । देवा जो के कारणों के स्वार्ध है । देवा जो के कारणों के स्वार्ध के

परेगामक वर्ग के निकण्कारों की भावा गर-गर होंगे हैं भीर उससे नाद-दिव्यिएयों की गरा-एर्ज़े हैं। कही-कहीं तो प्रारंभ में एकाथ एर्ज़ के भीर्ताल निकण का सारा कलेवर मूल-पाठ के प्रारंग है। अरायकार नाहरा और प्रारंग के अरायकार नाहरा और की पर्मालाकर वर्ग के निकण्कारों से भावा गरित्य, विदेश की पालि और समीक्षक की नाहित्य, विदेश की पालि और समीक्षक की नाहित्य, विदेश की परिशोधमेगी निक्यों भारता में दर्जन हों परिशोधमेगी निक्यों भारता में दर्जन हों परिशोधमेगी निक्यों भारता में दर्जन हों परिशोधमेगी निक्यों भारता में दर्जन वर्ग के स्वारंग स्

(?) मानारमक निबन्ध लिखने वाला वर्ग-र निक्यों के मनार्गत हृदय की प्रवानता क के कारण हम गरकाम्य को भी सम्मिनित करवा । द्रण नगांद के जनगांदर में जनांदरपर में जांदरपर में अपादेश हैं हो इट्रोने नगंभग एक हंगर नगंदरपर निष्टे हैं वो दिक्षित साहित्यर-जित्रामां में प्रमादित हुए हैं। एमझ्च्या जिलीमुल ने दो दर्जन प्रवक्ताय निर्मेदनरिती के 'जनगर', 'युक्तापन', 'पुक्तापन', 'पुक्तापन', 'पुक्तापन', 'पुक्तापन', 'पुक्तापन', 'पुक्तापन', 'पुक्तापन', 'पुक्तापन', पुक्तापन', पुक्तापन', पुक्तापन', पुक्तापन', पुक्तापन', पुक्तापन', पुक्तापन', पुक्तापन', पुक्तापन', पुक्तापन' रेष्ट्र वा 'जम्मुकि' ऐसे ही संबद हैं। सेवद हैं। सेवद हैं। सेवद विकास विकास विकास हैं।

(४) हास्य-व्यंग्यात्मक निबन्धं

हिन्दी-साहित्य में हास्य हामाधी र पनाधी ही वदी कसी है। यह में ती किर मी हास्य-एम नी किवानों कहिन-सामेतनों में बातों मारे के निये सिक्षी जाती रही है पर पण में ऐसे प्रधाप हुन कम हुए हैं। अनवर के सिमुक्त बतुर्वेदी में ऐसे जिसकों से प्रधिक सफरता जात तो है। 'बो में प्रधा करका ऐसा ही विक्या है। यान निकणकारों में एएजीत, हिक्य सिक्षी संपन समना धारि के नाम निये जा सकते हैं।

(५) जीवनी सस्वन्धी संस्मरणारमक निवाध हिन्दी-माहित्य ये महान क्षिणे की जीवकी के बारे से मत्र भी जामाशित्ता कर दाता कोई नहीं कर सरता। ऐसी स्थिति से एम प्रीर दिगेश प्रत्यक्तीत होना धारप्यक है। भीवरात प्रश्नीत्या ने 'नक्कार' में दिज्यांसहसी 'पविच' सम्बन्धी निक्स्य क्षत्राधित करावे हैं। प्रत्य सारक्ष्य धीर बा॰ हरेता के 'क्षा' से, बा॰ मरेंद्र के 'पेंड गीविन्ददान' धीर 'जुल सम्पत्ताध अवाधे' पर त्या नरेता महेन्द्र भागावत्य के 'देशैना' सामर्थ, 'पविचाय मोहर्योस्स धीर 'परोजवरान स्वामे पर 'दिक हिन्दुमान' में परेंग करान क्षाचे पर 'देशिक हिन्दुमान' में पेंड हिन्दुमान' स्वामें पर 'देशिक हिन्दुमान' में पेंड हिन्दुमान' C - James J.

धनित वेदना है, मुभे सीर यो तुम, मुनो दर्दना भाग तुम को नहीं है।

जनमं में मरगा में मुने गूब परिचय,

हुएय की नई घीट कोई नपन दी।

सुने गई गाँव उपाती बराते.

यताची नहीं भीर कोई जनन यो।।

इने रहेड हो नुम, इने स्हेनना मत्र. मरी हिम गियर है, जो धब नर गता है।।

र्यागत रापना है. सुधे सीव दें। तुम,

दुरादराप्य तर दात तुमकी नहीं है।।

बहुद नाम हुई यहत नो शुना है। मही एक या जो कि धवतक चता है।

बमादीय जो था. उमे क्या बुम्ममा.

धमर ज्योगि में है, सुमारी समारी।

बनाची मधी धाँभियों को निमन्तरण,

समज्ञानिक सह जी जसा कर सुधने.

विसो सीर को बोद घाराती वर्ग है?

उड़ा ही नहीं बल मीते में निगी.

हमा बेस की मोड कापाती क्या है? न देखें क्यी का हुदा भर गाउँ,

नान बार का काम तुपको संगित्रै।।

र्था वैनाम 'स्मिरी'

मनिड है मिड़ी तो मिहाची मिराची ॥

साहित्यकार ??

श्रो रामनिवास 'शाह'

सिरार ममात वा मजनक है। ममात के सिराम माति सार्थिक माति माति सार्थिक में जो स्थान नार्यावर में जो स्थान जिस होती में सिराम है कि कुरों में मंदन नर, हम के रही में, हम के पट पर स्रवित कर होते हैं कर होते के सिराम है। वर कुल के सात्री की स्थान में सार्थिक मात्री है सिरा, सार्वेदना सीर कराना के सार्थीक है सिरा, सार्वेदना सीर कराना के सार्थीक सार्थीक सार्थीक सिराम है सिरा, सार्थीक सार्थीक सार्थीक सीराम है सिराम होता हमा स्थान, स्रवित सीराभित जनकरी हो सार्थीक सार्थीक सीराम सार्थीक सीराम सीराम सार्थीक सीराम सीराम सार्थीक सीराम सीराम सीराम सार्थीक सीराम सीराम सार्थीक सीराम सीराम सार्थीक सीराम सीराम सार्थीक सीराम सीराम

की में यह प्रस्त भी उपस्थित होता है कि

पा गरिन्तार यही करता है, या इसमें कुछ

पैक में उसा दारिन है? भेने धान के सुम ने

पितार के धनान सामाय-जन में इनद प्राणी
कि गीरान सो बनो करना सनेक प्राणी
कि गीरान सो बनो करना सनेक प्राणियों को

पर्नेत करना है। किर भी प्रस्त उपस्थित ही

रैसा है किया जैने ममान के मानस का
पीता है कि पत्रा जो सम्मान में दिलती
है। करा है कि पत्रा जो सम्मान में दिलती
है। करा है में समें पर्ना जो सम्मान में दिलती
है। करा सो में समें पर्ना जो देलता

प्रस्ता के समें समें में भी समें में सम

धार शाहिएकार वर्षा के क्षाएंगे में व्यक्ति र गर और बना के माम पर मत्य की व्यक्तिक दे गे हैं दे बानार में मतिष्टिन करने का बायह गाहिसाई देगा, दमके मागे कुछ नहीं। बाने का में स्वीत्वार में दिये नहीं है, ऐमर वह कहना है.

बहता हो है, करना नहीं। उसके जाने या पनजाने में नममण उन्धूर्णक सभी प्रश्न उसके कृतितर में परिमधिन होने है, चाहे वहाँ व्यक्ति हो प्रयान समुदाय ।
भेरी धपनी मान्यता है कि वह मुस्म इटटा भी है और स्वप्न इटटा भी है प्रमुख्य इटटा भी हिम्म करें एक दुसन के साथ सिटन करना हुमा जब को धपने स्वप्न इटटा है कि कह ने जाना है और उन्हों ने देश होंगी में के उसके साथ सिटन करना हुमा जब को धपने स्वप्न इटटा के कान के जाना है और उन्हों ने देश हाणों में उने साल्य-विमोद कर, स्वप्न की साथ में परिवर्गन स्वप्न के साल्य-विमोद कर, स्वप्न की साथ में परिवर्गन सरले की मान्य-भूमि में सा सहा करता है।

साहित्यकार इसे स्वीकार नहीं करता है कि उसका कोई दायित्व है। वह इसमे विदता है। यह स्वामाविक भी है। सुदन मे रत रहने हुये **दा**यित्य का निर्दाह करते रहने पर भी उसमें जो माग की जाती रही है, स्मरण दिनाते रहने की जो परिपारी बर पढ़ी है उससे वह बीज गया है। उमे धोप होंग है उस इपए मबोदृति पर को निरंत्तर प्रान करने रहने पर भी यह नहीं कहती कि हमें शुजन में बुध प्राप्त हुया है। बल्कि बराबर उसने मारे मीर मार करती रहती है। मातिर साहित्यनार भी तो प्राणी है कुं कता ही जाता है इस इतानता पर धौर ता बर देता है कि भेरा कोई दायित्य नहीं है। मही प्रिने किया उमधी वर्तों से पूर्ण उभार के नाव प्रशिध्यन होनी है, दिन्तु सुबत दे क्षणी में सुध्य दे मानम में बैठा शिव संत्री दिवारों को वीधे हरेल उमर भाता है भीर तब स्थनः ही माहियशार वे वृतिन में "मंगन" भा विशालना है। प्रज्यूत्र कर से नेन सुमन में ग्रंथ । इसी विदे साहित्यकार समिनदर्ग है। बापुनिक काल के उत्तरार्व से महिन्द जनक गरियसर का क्षेत्रत विसेश कर्ता का दिस्स ा है। यर करने शिरलार बाता दल है कि निमकार का बर्गालगर कोर हिन्द गुरू दूसरे के ला है सा समिल १ स्मीत सीर सुबर से संदर लग क्यों में कारियकार को देनते का घाउट बार के दुर में एक सरम्बद्धी दिवस है। कृति को परमों, कुरिन्तर के स्मीतन्त् जीवत में जी क्रमा मार बर ही। जाना कृत्यानन सिद्धुकर्मीः

शा दीवादर होता । क्यों और केंग्रे के दे प्राप्त तकाएक इस बारता के शामने मा पर्यातन होते हैं। क्या मर्गानप्तार के वर्णालाण प्रोप्तर कर्त, ब्राह्मित के इंड्राजिल र न्यतायां कीर प्रजाहां का, तथात्र के साथ कीर स्पृत्र के साथ में रहते हुए सा अपनियन संपूर्णन्य कृति है, बर्गनाय संदर में जो संगोत्ति वह प्रशास सामा है सीत हरिया की साथ सीत पूर्णारे वर्गारम्म व्यवस्था जी वर्गारम् वर्णाम् हर्णाः है पूर्ण पूरात विद्या और प्राण्डिएमा के प्रवाद In that anythink him about & 3 sele double field ge Rift meint wir wir fie fe ein sen fie ermet an mir eit 3 for mir tete mit عليم والمرابع والمعالم والمرابع المرابع المحاصد R Richt ba Rane be Gent & ! al dete Ren & to be and demand by they doding down by Ren find Rading ift, find gibt alf mit may the to have the fire and the fire

131 हो इस के थी रह को स्वटन सरी है।

the & State Strong training by and the total to make the two it had to be give a very de title At he do hear where go

स्राप्त है दि सायत की दाला क्षेट्र की जबार के नृति बाने देनी । जनने बाहार को नगर हरी होने देती । कहा की प्रवेशन माहरित है सुरक का स्मीतर्ग वीका हम जाना है सीर नह का स्था क्षे नरी श्रीपता । जो बदर बता दो हतो है देवता तो जो बुल्हीचे वा झ्य दे देता है।

वर्ग बारे बार एक कार कार होता है कि लाज्यार भी मुख्य है और सवान मारति इन्स्टियोर नात्माचे अपने मान है। स्थल है ल्ड बसर्रास्त्यं के दि समुद्र में शुक्र है, स्वावाधिक ही है कि उसने भी हो । बन्ते भेर देशन बारे है कि वर बारे बारणे नावाच प्रा ते प्रान्त शत है। है कोर लंद ग्राथितर है कि जर जाने प्रोपन में कुन्तु केंद्रमण को स्रोता की। यह सर्भी वाला है हैं। मामाण पर प्रान्त बार की, प्रो कीलात है है ज्याना सम्प (१०१) कार्य के बर्गत के समान हरते ले बर्ब के सर्वत्रपुरुष है। लंब बर सारी क्रीमा दोर बाबार की सामुग्न करना है। अने ा । निवरित के समाज थी पुण्यों, इसने क्यांकल से मुंद व्हें न न व्हें सन्त करें सन भी नरामर्गास ही है। लह सूप्त कर्ण क्लमी है जिल्लाहरी करी जाती करें कृत्य हैं की बारी कारित है से हैंग कर कार्य ह क्षेत्र स्टिब सामात्र है ह क्षण के उर नकार की कुनार की पन्य भी संग कु साह संयुर्ग की अनगर सगावृत्त की न

के द दर्भ के लिए हो है पर है कर ह क्षाचा उसे हतान मन है 3 प्राप्त है बता बानपह है. Cours & a wert minget . Eine es mit . Ganet सरे कुराक हो बना है का बद तद से नव है दर कार प्रदर्ग हैं। सरकी प्राप्त वर्णा से से से राज्य क्षेत्रका के वाचित्रका भागात प्राप्त प्राप्त है was the form in that the H . I do को हो देवे अवन हुई स्ट बर से पान ।

र्रोतात द्वा को हुए अमुल विमेपनायें घोर में है। क्या कर्मन, तुक्रक्म और हपक्ष्मे । जीवन की स्वभार एक्सीने में ब्राम हुमा है बैसे बदनाम है बैसा है, बैर दो भी ही, साहित्य भी इसके म्यादत के हुक नहीं है। यदि यह कड़े तो भीर ज्युक होगा कि चाहित्य का आगण तो निरंतायों की अमुल बीडास्वनी है।

वाहिष्यक शिरोह इस बुध में काफी ''बदनामं'' पूरे रा बाइव हो मनी बुक में नहीं है, अधिद हैं। पारेपा कि अध्या और आदों के भी संग्री देना पंत्र कींवर होगा, इन गिरोही का अधान और केंग्र कर होगा, इन गिरोही का अधान और केंग्र कर होगा, इन गिरोही का अधान और पंत्र कें भी बाहिए के साथ का अंग्र अंग्र केंग्र के सार हम थी सिक्स रहे हैं। इसी शहन है स्वार हो सार का साहिष्यकार विजय याता रिनेता है।

वर तोर पत्र, जिन पर जिन्सिका ही शुरूवम भी हिंदेहरें के हेंसकरमें का माधिपराय है, सहसे में दे क्योज हैं। इतके प्रवास से साहित्य के मेंदर के प्रजाति मीड तम रही है कि भाव के एक दा माहित्य के साय को पहचान ने में काफी रिया है रहें हैं। इस धावरण में वह पहचान ही नहीं पाना कि वह किमें देवता मानकर माराधन करें। विमें सरम्बती का बरदपुत्र माने भौर उर्ग प्रमाद बहुला करें।

स्वार्यको भीडभाड भौर प्रवासको धका~ येन ये उडी हुई गर्दसमद नथ मण्डन की मान्छा~ दित कर लेती है। क्या की कालि गई के भावरण में घोमत्त्र हो जाती है। जिस प्रकार कोहरा मूर्य की प्रकास किएएं। को स्पष्ट नहीं होने देता अमी प्रकार यह गर्दे साहित्य के साथ स्त्रक्रप के प्रांगे मा उसकी कास्ति से जन के परिश्व में दाया जगरिवन करती है। सुजक और पाठक के बीच का यह बादरण उस भ्रम के समान है जिसे दर्चन के क्षेत्र में साथा का बात्यत माना यया है । बाडम्बरियो की यह ब्रातिश्-कापिनिकों की भाति साधारण जन की भारवर्षे चिति भी कर देती है और भयभीत भी। किन्तु बाडम्बर क्षत्य का धासन ग्रहण नहीं कर सकता, वह स्वाई नही होता, समय के साथ अगर को उठी हुई गर्द उसी सन पर आगिरती है जहां से बह उठी वी, भीर तब साहित्व का पुँजीभूत सत्य धरनी पूर्ण कान्ति के साथ स्पष्ट हो समग्र जनमानम की शानोक्ति कर देता है, जन उस मानोक में माने ब्रापको पहचान, धारम विभोर हो जाना है मौर तद वह हतज्ञ भाव से प्रकाश के जनक का स्तरन करता ह्या उसके दर्शन के निये नाराधित हो उठता है विल्तु सब तक साहित्यकार सामा मे साध्य का रूप प्राप्त कर लेता है अभी साधारण बाकाक्षामो है। निर्नित उपना ध्यतिहर यह घरेशा नहीं करता कि समाज उसे बुध दे । मेरी धानी हिंछ से साहित्यकार का यही स्वरूप है और मैं उमी की बाराधना करता हैं।

मुफ्त की वात

भी परंदुत्त वास्त्रीय

मूर्यक है सुर स्वाप्त-देश्वाद के बाद बाद बहु पा मार्ग में कि बादी पाना किए पी है को मार्ग है। मिंदर इसाई दुर्गा वार्ट प्रेमें पूर्व दो मार्ग है पाना वस बुद की पा की स बार पर कर दें। पर पोर्ग है अहा मार्ग है। बार पर कर है। पर पोर्ग है अहा मार्ग है। बार पर कर व ह स्वार है। बार पा प्रेम की स बार पर कर व ह स्वार है। बार पा प्रेम स बार पर कर व ह स्वार कर की स्वार पर प्रेम की बार पर कर व ह स्वार कर की स्वार पर प्रेम की

or the time week drawn to the contioning the time of the time of the contioning the time of the time of the contioning the continue of the time of the contioning time of the time of the continue of the time of the time of the continue of the time of the time of the continue of the time of time o

तमे न किल्पो रंग योगा । योग हो, बार सा नेक्टनमा ये बार हवारी वर सी है, दिसा रं नेक्टनमा ये बार हवारी वर सी है, दिसा रं नो विर होने से मुल्ता ।

केश-संस्था देश कर हुए। धीर क्षणार है जो नारी मार जार में दिना रिमी मेर थार है वास जान है। सुनि हे रिपी भी पुनरे जीर में बर् दुना क्षेत्र शकार नही नाता नाना। इर बारमी, क्रिके वर्गाती भी जार या शाका है, कोई भी बारा बीरार में, बारा है या लेगा, वर्षे हो या कीरण, बुझ हो या जारा स्थार हो बातरेक प्रवेशिको वा नांगा शिक्ष वालुर्व, अस को वा स्थितम् सारित अवा आरहर, परित्य हो या गुप्ता आरत्तर हो स कररणी वन्त्रेंनी हो वर्र कार्तासन वनवना क्ष्रिक की यह शती वा शत्र वा अध्योत कुलाने कर सर्वन के संस्थित हैं तन्त्र तरि स्वतार क्रमणा है ६ व्यक्तिय क्रमण्डे स्टब्स १४ झार ... marrate der Harry Leaf et in f Lete Ra क्ष अपन्न कार्यक रूपन तथा प्रतिस्थिति पर da. ; to man & f with an Millin as रेट्टेंड प अन्यन्त में समा अपना है। इस यह मैं Many Mark Mats for all main for at Al. mercent the fee of their E is 41 acres \$ 1 सार्वाट कर पूर्व प्रतास रेंग सर्व कर्ड भूगत असरण है? gre de groß er fo gentet åt entet år i t ande a canal also di da die an Wint & Rid & HE SIL , Carl

सएर यह कोई दिकाल की बाल जाती है। सब मेत एर्न्नर की मताह देने उद्योग-इन सलाहों की मानते या न सानते की नकती पूरी दिलालकात धेर पूरा वर्षकार होगा। सालग्लान भी तो नीरर भी। सनाह देने किरते हैं-बाहे कोई भाने या तसते।

क्लि तरह रिमी पार्टी या दल में नुछ दक्षिण-रंगे, बुब स्वयन्त्री नुष्म मध्यम मार्गी और नुष्म रेगे, ने मोरे हुमा नरने हैं जगी तरह मनानारों ने रह में भी नार ये गियां रणी जा नरनी हैं। दुष्तीम ने रित्तता रिन्तों के नार थेद मिनाये रैन्तम, मध्यम, गीन, समु। इसी सामार पर नार होनों के भी नार मेद किये जा सनने हैं।

देनम मनाहदारों की श्रेष्णी में उनको रखा ग स्त्राहै जो वैचारे भाराम-बुनियो पर बैठ कर, यांने पू'द कर मौर कान बन्द कर, आपएगी, प्रस्तों, रक्तव्यों मादि के द्वारा भव को नेक-^{5राह} बॉटने फिरने हैं। इनकी कथनी और करनी में छता ही मन्तर होता है जितना बाकास मौर गार में। मसनत, ये जनता की सलाह देते हैं हि रेत्नवेरों में पुजारा करो मगर लुद बानीधान रेशो में एते हैं। कम-सनस्वाह वानों को पेट परशृशि बाबने का उपदेश देते हैं पर लुद श्रदी-बढी रण्याहं भौर मन दमूच करने हैं। तीसरे दर्जे के कारियों को दौरी या पांचकी मीजना तक लगार करने की मनाह देते हैं, पर खुद हवाई रात्रा में, मोटरों में भीर रैल के सैसूनों से सफर रितं है। बाहर मध-निर्देश का प्रचार करते हैं, पर में दें हर जाम के जाम खानी कर देते हैं हेर्ग हर भी पारमा बने रहने हैं। क्योकि--

र्त है पीक्ट मुकरना पारसाई के निए

^{म क्रे} बाबार पीता है वही बदनाम है।

दतेज प्रधा के मिनाफ मेनगर माहते हैं, पर साने बेटे के हिनाह में पुण्योग रहेज की सम्बी रहमे द्वारा जाते हैं। दिस्ततारोग को माजियां मुनाहे हैं, मिनित प्रताय मा परीय हुए में दिस्तत देने वानो की धाव-अगत और हिमायत करते हैं। धन्न की कमी और भुश्यमी पर माठ-गाठ मानू बहु। कर दावले और पाटिया उड़ाते हैं। धन्य-वजन कर प्रदेशिया करके दोरों व समारोहों से माखों स्पर्या पूर्व में बानने हैं। जुर के धार कज में लटके हुए होने पर भी थन धीर सत्ता का मोह नहीं धोडां स्पार कुमरों की जीन की सालम्बुधान और स्पार का उपरेश होते हैं। इत तरह नुनचीहान की मन कम बक्त नवार की पीरमाया को पूरी तरह सार्थक करते हैं।

मध्यम दर्जे के सचाहकारों की वैक्सिय गर् है कि ये सनाहकार बनाये या नियुक्त किये जाने है। वह भी ठोक-पीट कर नहीं, बेल्क बडी एग्यन के नाय। ऐसे सलाहकार उन नोगों में ने छाड़े जाते है जो या सो विशेषक माने जाने हैं या जिल्हें किन्ही कारणो से होने ने लगाना जरूरी होता है ताकि वे शोर न मवायें। इन मनाहनारी के निए तरह-तरह के मनाहकार मण्डन या समितियों मा जान-कमीशन कायम किये जार्न हैं। समजन पैसे थानों की तोद क्यों फून जानी है और इत दोनों में श्या प्रत्योत्याश्रय सम्बन्ध है ६ दर मोन गरियों में कूडा क्यो फेंबते है, या तीर्यामन नामरावर है भयवा हानिकारक या बटेरवाजी पतंगवाणी गाहि का राष्ट्रीय जीवन में क्या पहल है इतका वना लगाने के लिए जाच कमीशन दिशाये जा महरे है, और इनकी निकारियों पर समन दिस तरह किया जागहम पर राग देने के विष् मनाहरार मण्डन बनाये वा सकते हैं। इन मशहकारों में बाता की जाती है कि देश भर के दौरे करें सीर

इन बहारे करने बकारे के करावा हो हैं। यात्राधी की हुम जान करें या दार्जिय क्यांनों की बैट कर बादें। जाए जायें कर कारितवारी जो ब्यांड में निकडी करते हैं।

मपुर्थिएति के इस समाहराधी की राग जा राण्या है जिल्ला अविदा क्षणामः होत्य है-जूसने हो पार्की बंगाया। वस वहां या सामा विस्ते बराया, को र बोर्ड प्रस्ता है और स दे बगारे हैं । सामन बार कोई बारबी बीबा कराने के हुए ही दिए बाद सर बाद तो बार करेंदे हमने री पाने के बना था विकास बसान कुछ रहर हीपाही। घीरण्य सत्ते वाले के परिवार को बीचे की काणी लागी रहत जिल जाए ही बन् देते हमते हो परिकास का निकीया करा लेगा चाँगा । बार्व बाग्रीमा देव ही जावशो दे दश्हे कार्र कोरे लिए एए आहे होते हैं। सामन सन्हि हर मण्डी बाबुडि बाल के के लोग बन्हें बाहे का भीव प्राणकाण काले हैं। बहतेगा हल्की मर राम कीनी कामाकाका दुर्वरागका सक ही epiten anny & at it apart & all & wi का बड़ा ही करी जा करणा है। इसके स्टार ही

स्तान है के कार संसाद के लेगा केंग्रा करें करते हैं के कार संसाद के लेगा केंग्रा करें

يمثر فينج سمت عقوين فيلي فد فينج لكنج है। इतिया का कोई सामा ऐसा अर्थ हिस्से करे में देशर में संशाहार संशाहत है हरें। हा क्षेत्रे पर क्षणा देहे के लिए बारे चार एर्ड कर है। महरू शियों की नाकों का विचार को नो दे मीर दुम में मरावर वाजिए गर नारे राजनायां के बारे में गराई देते बने जादेते । महारह ऐसी होसी बार्गित करान की सार्गित इस नार की जन्मी वारिए रहेड में बरा-नया बीचे होगे क्षांत्र--इंग्री पूरी मूची बारफो बना बेते। बन्त बात पानी महारो पर बयर करते की शिवान अधी रायों तो यह बारका पूर्व है। कोई बीजार पर बाय तो ये सरात्री हो बारे बात प्रान्त का वैद्याबा ह्रणीय की निकारित करने का नैक्ती मुग्ने ब्राप्ति बना देते । अते ही दूनशी बन्ता की गुनकर सहीह केवारा चार सारे पर मानाराही जार या राजने जरकार इस समानेत में पर बात वि रिकार क्षेत्र करा हवाब कराया पाप ।

सुने घावर से एक्पण सन्त भारी में सुने कारी में विकास है से हुआता है गर्मकों कारों के अपने में सुना मनकों कारों के अपने में सुना मनके मार्गिक को सुनास के जारहेशाहर स

- and street and

Bert etern bir et bi

unt uremen gret unt nur ...

जनसामान्य, साहित्यकार और हिन्दी साहित्य

दयाकृष्ण विजय

अनीति, धर्षशास्त्र, समाज शास्त्र धादि पर निन्ने धनेको मोट-मोटे ग्रंथ माहित्य वी कोटि मे मही माने । साहित्य मानव जीवन की समग्रना की य्यास्या है। साहित्यबार शब्दम्मनो का मानी भौर जीवन के रगो का विनेश हैं। वह एक सबेदनशीन प्रारगी है। उसकी मान्यानमृति उसकी मिश्चिति मे बिन्तार पाती है। यही भारमानुमृति बाहे भंवेदन हो भवना सहजानुसूति, ब्रावेग क्रवेग हो भवना चारागा. रप स्पिते माध्यम ने माहित्य की नजा प्राप्त गरती है। भाहित्य के सजन से जहां नाहित्यकार की प्रतिभा प्रमुख है, बहाँ हम उनने व्यक्तित्व, देश कान. बानावश्या से प्राप्त बरकार उसके मामाजिक महान्ध समा साम्बानीत ऐतिहाशिक परिपेश्य को नहीं छता मत्ते । माहित्यकार इसी प्रतिभा कम्पन्ना के कारण मन्य जन भी सुनता में पृद्ध विशिष्ट हुग्तु सार्युक्त व्यक्ति है। इस बारल इस पर समाज-दावित्व भी विशेष हो जाता है। इत्तरा होते हुए भी लाहित्यकार धाने भागाजिक परियेश के सांबय मानव सम्बन्धा की मोरता नहीं है। वह समात्र वा एवं घटन ही है। मनुपूर्त की शमना कुछ कम अधिक नदमें ही होती है, लेकिन ब्रक्षियति सामर्थं, वह एव ब्राप्ते में विशिष्ट एए। है, ईडबरीय देन हैं । यहाँ वर्तन-व्यक्ति सामध्ये पहि का शपनायन है।

साहित्य रचना के ये हो मीन दश होते हैं। जबक भाव पत्र (दनुर्देन), दिनीय कम्प्ता चया (व्हिन्द्री) नदा मुनीय कमा पत्र (दक्षियामिन)। साहित्यकार की कम्प्ता के पत्रम कामनद्दर सदेव साह क कमा की सम्बाद के पत्रम कामनद्दर सदेव साह क कमा की सिहार्य मामाराज्यर परस्थित पर पुत्रम् हुग्यू नवते हुए अपने मंगनमय पर-नाप घोटने पतने हैं। यही पर बात सनेदन को मनाई, निनन्त को गहराई तथा प्रसिव्यक्ति की गहरना र कारण वन-कत से क्ष्ट-नर हो जारे हैं। इसी गरनातुमूनि को साधारणीवरण कह सार्च हैं।

इस बढ़ी भूमिता के बाद दूसरा प्रान, जो धात नमी बानावीं की बृद्धि बनोटी बना हमा है, यह है सहित्यकार बता निये, किसके निये निये निया वयो तिने । गाहिन्यकार 'बता निये 'बा उत्तर नेपन यक्षर साव नहीं है उसे यह प्रक्रिया की भी भी भी है, जिसमें 'हिसहा दिये' तथा 'दया' के जाउर भी रण्डे है । प्रश्न यह उपनिश्च होता है सि माहित्यकार नमा≾ की बाद पर निश्ता≯ घररा नातिगार।र घरन साहित्य के साध्यम से समाप्र में मान प्रातिक कराता है। मैं यह सम्भाता है हि दुई दीता है। बहना में सन्दार है। क्शीनकार प्राप्ति में दत्ता माने बद्ध जाना है कि बह साहित्य व बता का माद बतने के निवे विकास कर देता है। भीरकभी समाज कटिएल सरकाशे की कटायों में प्राप्ते की इतना बहुत ह्या हर है है है या निष्टेरन सा प्रमुख राजे बलना है कि उने बाज म ने दिनी प्रवश्च बर्तिमानम की बोज कर उसके में है बान का रिश्त हाना तरना है। बड़ी डबड मन्सिटन, राज मर्ने का स्थानी अफिल्हार है। यह बेगा, देल्पर प्रतार है।

ब्रदेव ह्या वी ब्रासी तथ भार तारी है बह तर बाद तव नदा गरेज नेवर भारत है। दमा बारण कारियकार वांग्री की तथ भेगी बारा में



नैतिनतावादी बहेगा जन्म ने सभी समान हैं 'जन्मने जायते शुद्रा'। सबको उन्तर्तिका समान घवसर सबाक नाके बदनते हुए रूपो में हमें समाज के परिवर्तनों के ही कारण हष्टिगत होने हैं। मिनना चाहिये। विशिष्ट वहीं है जो बृद्धि से श्रीष्ठ है, युए। सम्पन्न है । हिन्दी साहित्य के घादि कान से लेकर भाज तक यदि हम देलें तो लगेगा, कभी भी विमी विव मैं यह मानता हुँ कि साहित्यकार की इप्टि राजनीति, समाज एवं दर्शन की धारणामी की नै युग वाएती से भिन्न स्वर नही गाया। बन्दिनी नहीं होनी चाहिये। शाहित्यकार एक सामा-हिन्दी साहित्य के भाविर्मात कान को ही लीजिये, जिक प्राणी भी है, राजनैतिक भी है, दार्घनिक जिमे साहित्य मे बीरगाया बान वहा जाता है, भी है तथा मैतिनताबादी भी । हाँ, हो सबता है, ऐसा समय बा, जब विदेशी बाक्रमण बहा तेजी राजनीतिज्ञ उसकी भावूकतावन उसे भपनी थें गुरी ने उत्तरी भारत पर हो रहे थे। भारत मे नुपालक मे नही रखना हो, दार्गीनक उसकी सामारिकता से राज्य स्वतन्त्रा ही वी । समात्र रशा का सम्प्रणी उद्दिग्न हो नवा नैतिबताबादी उसके मोन्दर्व तथा दाधित्व उन्हीं पर था, इमनिये देश रशा के निये बाम वित्रएों में व्यक्ति हो नाक भी निवोदना ऐसे सुपतियों की ही प्रोत्साहित करना समाज धर्म हो, तो भी वदि वी घरनी बारमा के नाशान्तार या । दानचा नहीं थीं । व्यक्ति का वंगोगान न होक्द **वी धतुमूर्ति की उपवादरया मे निला नाहित्य भनाज** भरपूर्ण समाज के गौरव की विकशायित की। बज को दिया मेंबेत देता ही है। इतना में घशस्य निमन्देह युग पर्य का स्वर सा । भाव के अनुपातिक स्वीनार नरुँगा निभाहित्यनार ने इसी सभाव ना धानन में, हो नवता है, तत्नादीन एक्सेबारमक एक धाँग होने से उसकी धानिव्यक्ति भी समाज के राज स्वरम्या, इसे धरपती लगती हो, परल्य गमाज स्तर में भिन्न नहीं हो सकती। बल्कि यह बड़ा जाए कि रूप में मंबिध्यित नुप की बार गाया, क्या ग्रेष गुर्मार्थ साहित्य नत्तानीन समाज रियति वा प्रतिबिम्ब होता समाज की अमृतियों में उदाव, अनुना तथा गर्दान है तो चुटिन होगी। इसनिये हर समय यह बहना का संवार नहीं करती ? जिर क्यों भात हम भी छ कि साहित्यकार मानिदर्शी है, युग निर्माता है, युव व्यक्तियों की जीवनियाँ निकते हैं, क्यों उनके क्रिक प्रदर्शन है, सही नहीं होता । हो, बभी साहित्यकार बारने बादन कमी में लगाते हैं। इंगरिये ही ला, वानिदर्शी है तो कभी दन निर्माता, कभी यद प्रद-कि उस व्यक्ति का परित्र समाज के नियं भारती र्शन है तो कभी साथ मनोरजनकारी। न्त्रका है । इमेर्निये शीर्थ वर्णन का कर बाधा, देए साहित्यकार सामान्य अन से एक ही बात से पर धार्य हुए सबार बी धार शामाना अनुनवि जाशून

सबनो मात्माम मानते हुए भी जीवन मुक्तो को

श्रेष्ठ तथा सांसारिकों को सामान्य समभेगा भौर

विशिष्ट है कि यह प्रकृति ने प्रतिशा नगरत्र तथा

पाणुपुत्र है। सेनारो उनकी नक्ष्मी है। सन्दर्श

समाज में पूर्यकु साहित्यकार का कोई बरितन्त्र नहीं

है। सामाजिक कारागी से ही साहित्यकार के हमे साहिय में मूत्र तथ्य भाव, अंस्पना तथा करा की घट-बढ देशने को मिनती है । ये परिस्थितियाँ ही,

साहित्यकार वया नियो, किसके निये लिखे तथा वयो

निसे, निर्धारित करती है। साहित्य मे भाव, बस्पना

बारने के निद्य बाबध्यम का । इसी प्रकार मन्त्रिकार

का माहित्व, बारने कार में जई दिया का रिपर्यं ह

बा, परबीय धर्मांव शासन से समाज गत संस्कृति पर प्रहार हो रहा बा । स्थियों की लाब, नवा देवान्य

की बन्ति सुरी जो छो की। स्वर राज्य से स्मय



नैतिवतावादी वहेगा जन्म में सभी समान है 'जन्मने लिने, निर्धारित करती है। साहित्य मे भाव, कल्पना तथा कना के बदनते हुए हुए। में हमें समाज के जायने शुद्धा'। सबको उन्नति का शमान भवसर परिवर्तनों के ही कारण दृष्टिगत होते हैं। मिलता चाहिये। विद्याप्ट वही है जो बुद्धि से श्रीष्ठ है, ग्रेग सम्पन्न है । हिन्दी साहित्य के ब्रादिकान से सेकर भाग तक यदि हम देखें तो लगेगा, कभी भी दिसी कवि मैं यह मानता हैं कि साहित्यकार की दृष्टि राजनीति, समाज एवं दर्शन की धारएगयो की ने युग वाएगी में भिन्न स्वर नहीं गाया। इन्दिनी नहीं होनी चाहिये। साहित्यकार एक सामा-हिन्दी साहित्य के पाविभाव कान को ही लीजिये. जिक प्राणी भी है, राजनैतिक भी है, दार्शनिक जिमे साहित्य मे वीरणाया भार वहा जाता है, भी है तथा मैतिकतावादी भी । हाँ, हो सकता है, ऐसा समय या, जब विदेशी धाक्रमण बहुत तेजी राजनीतिज्ञ उसकी भादकताका उमे घपनी थें ली ने उत्तरी मास्त पर हो रहे थे। शास्त मे नुपारमक मे नही एलना हो, दार्शनिक उसकी मासारिकता ने राज्य व्यवस्था ही थी । समात्र रक्षा ना सम्पूर्ण उद्दिग्न हो तथा नैतिशताबादी उनके मोन्दर्य तथा दायित्व उन्ही पर या, इमनिये देश रशा ने निये गाम चित्रामों से व्यक्ति हो नाम औ निमोदना ऐसे नपनियो की ही प्रोत्पाहिए करना समात्र धर्म हो, तो भी दवि दी भएनी बाल्मा ने साधान्दार था । दानना नही थी । स्पत्ति का प्रभोगान न होकर की धनुभृति की उच्चावरया में निन्ना साहित्य समाज सन्दर्भ समाज के गौरप की विश्वपापनि थी। बह मी दिया भनेत देता ही है। इतना मैं घदस्य निमन्देह युग धर्म का क्वर था। प्राप्त के अनुपारिक रवीबार शरु गा कि माहित्यकार के रमी समाज का शानर में, हो नश्ता है, सन्तादीय एक्सेबायक एक झाग होने से उसकी आधिव्यक्ति भी समाज के शब स्परस्या, हमे घटपडी लगती हो, परन्तु समाव स्तर में भिन्न नहीं हो सकती। बल्ति यह बहा जाए वि कप से मंबिष्टित गुप की यस गाना, गया शेष गरगुर्ग साहित्य तत्त्वातीन समाज रियति ना प्रतिबिम्ब होता नगरक की वसनियों से उदान, चेनना सना गर्वनि है तो प्रदिन होगी। इसनिये हर समय यह बहना बा शबार नहीं करती ? सिर क्यों बाज हम भीव्य वि साहित्यवार जातिवशी है, यूग निर्माता है, यब व्यक्तियों की बीर्यनियों रिवर्त है, क्यो उनके किस प्रदर्शन है, सही नहीं होता । ही, नभी नाहित्यनार धारने बादय समो में लगाते हैं। इमनिये ही ना कांनिदर्शी है तो कभी यह निर्माता, कभी पथ अद-कि उर्जन्मिक का परित्र समाज के दिये बाराँ र्धन है तो नभी मात्र मनोरंजनवारी। न्द्रकार है । धर्मानिये गोर्न बर्ग का कह काहर, देश साहित्यकार सामान्य जन से एक ही बात से पर बादे हुए सबद की बोर सामान्य अनुरक्षि आसूर विशिष्ट है कि यह प्रकृति से प्रतिभा सम्बद्ध तथा वरने के निर्दे ब्रास्ट्यक को । क्यों प्रकार अलिकार थाकृपुत्र है। लेल नो उसकी मध्यी है। अन्यका का महित्र, धरने कात में नई हिला का सिर्धार बा, परवीय बर्मांव शासन में समाज एवं संस्कृति पर समाज में पूरवृ साहित्यकार का कोई बन्तिल नहीं इगर हो रम बा । स्थित सी लाव, ल्या देशांगा

सबको प्रात्मांस मानते हुए भी जीवन युक्तों को

श्रेष्ठ तया सांसारिकों की सामान्य समक्षेत्रा और

है। सामाजिक कारतों से ही साहित्यकार में हमे साहित्य के मूत्र संबंद आहे, कल्पना नदा करा की घट-बड देलने को मिलती है । ये परिस्थितियों ही,

साहित्यकार बया निसे, किसके निये निसे तथा बयो

की बॉल सूरी जा गरी की। सहद राज्य के स्वा

निर्धेत नार्यों में सरबार एटामा सम्बद्ध सा सरी । एम रागा सीताओं समाज सौर अंबर्गित की दशहें सर्ग राजाओं यो । इस एटिज़ को देनिये—

'हानिये न हिन्सन, बिगानिये न हरि नाव, जाहि स्थि साथे साम, साहि विदि रहिये।

मार के बद्धिशरी प्राणिति हो। मागरशरी न्या कर पर हुम्छ देते, मेहित इत्रादिने धुने द्यारा में सिल्टी होता है, भीगर का विला बागात विकास सामा है, हो। बाज बारय ही कोई दल पाये । 'रारिट न शिम्पा निराणागरी या मागारारी का काका हो। सर्थ सकता । यर उत्ति बर बर सर सरपा है। किंग व्यक्तिय बड़ व्यवस्था है। बिगारिये ने करिश्या' खात्रा सभी च शंब्द्रीय सण बारी प्रेरिश कुर्मात्य की बाप घरेंगी। १९५ 'त क्रमार जिल्हा तथा जिल्हें का में नागुनाही सर्गनर्भा क्षता हो। इती बी है। वहाँ हिथि वहाँ काया गार काम की तराई हा संस्था हो राजाह की कोर बाहारात र ४० है, हिंदा दिया प्रशास की बाही है ब्राइसक मुरागरे बारक क्यारायक क्षत्र कर हरे युरे बारहर र त्रकारित वेशोद व्यक्तिका स्वतन्त्र क्षाप्तवन्त्र स्वयो । अस्त व्यक्तिका है क्रमुख्यांक प्राप्ति प्राप्तिक स्रोत्ते । एक द्वार प्राप्त at Kie een Bilen dan big bind gebile a green arma

क्षेत्रात की अन्यादिक वृक्ति कर अन्याद कार समूत्री कर यह अद्रक क्षणा कर ।

इस इंडिन्स में देवते हैं कि ला मरान, शक्ताता नशा निर्मा की बहुई गरेंग तम नहीं। के बहरता तथा बाका पर की परगीर गर, इंगरे बाका पाप्यतिमें की पुनाय ना लहें। मोत्रुप समा के विशेषा जैसे समाव का मिल्लिक मानूक मानवादी एवं अनग्याशका में भूत रोता। भारत क माध्यम में अधाव को ध्वर दिये मान करिको हत्त्वमः हो स्याः । को माधा दिनात्त्वा मने मुक्ते और र प्रशेष के इ.स. राष्ट्र में प्रमाण है है। क्षांत्र प्रत्ये का अधार का अन्य दर्देशात । प्राथ का धानार नेपण, प्रान्त व्यक्तिकात न खाउन मार्गर good wifege de problème. Biew. Witters at His अर्थ्यात्र अव कर्षात्र संस्तृतः अत्र वाहे । इसी metre green waren e e et k fir klar क्रमान का नामान अप कर दिए गरामा मार र क्षत्र के बेर कर के देव हैं। इस के देव हे वह है । विवाद with within a familiarly which at me कार्या के कार कर हमा जात व तक है तक and defende abreager bear being a fire हुन्त बक्ता तर हर हर र तरार र वर्षा है। का क्ष क्षील क्षाप्रकर की जर्मन कर करा करा प्रदेश कर खाइन इन्या क्षीरण (६० ५०) प्राप्त प्रदाः । कुष्टरीय , तम मा बेडन हिन्दू मन के पर है। पर द नवर्षेत्र द क्षण रण व्हासः अनुस्थान सम् बर में इंग्लंडर इंडर रंग रंग रंग की है। पर क देश प्रमुख्य कल *के रूप है जा*प है जात है

बंगान का बहा समाज, ऋषि दयानन्द का मार्थ रापि ऐतिहासिक परम्पराको इस कडी मे इस युग । भी भपना एक विशिष्ट ऐतिहासिक सहत्व है। समाज, विवेकानन्द का मा भारत के प्रति राष्ट्रीयता ना बढ़ै तबाद तथा वाधी का राजनीति मे ब्रवतरण इन तीनो कानो मे साहित्यनार ने सामान्य सब मिलाकर जन काति के सुचक थे। उस समय त को ही पर्मांघ राजनैतिक सकटो, विषदाघो से की जनवासी हिंदी साहित्य में 'मारत भारती' के रापा है। राजा-महाराजामां को बचा निया सो वंठो मे गुंजी। भारतेन्द्र युग हमारे सामाजिक, री प्रजा को बचा निया, एकतंत्रात्मक राज-मांग्रुतिक, राजनैतिक तथा साहित्यिक जागरण ना वस्थामे इमे यह मानवर चनना ही पडेगा। युग है। इमीनिए इसे हिंदी के भाष्तिक बान की कि लिये सत्कालीन युग हुच्छा कवियो ने काति के संज्ञा मिनी। इस भाष्टिक कान की बाली केयन रीक ऐमे महापुरुष बनाये, जिनमे सिहासन के पदा में ही नहीं यदा में भी उसी सबदता में मुमरित पे सहत धर्म ध्युत होने वाले राजवय ही प्रमा-हर्दे । इसके बाद का द्यायावाडी तथा रहम्यवाडी त महो; मामान्य जन भी सहज बाइप्ट हो घौर न्यर निस्तन्देह निरामा तथा ग्रन्तर हास्यर है। र्मभ्युत न हो । राम भौर इच्छा को दैव रूप मे परन्यु उसके पीछे भी बहुत सबन ऐतिहासिक पृथ्ठ-वापित करना भी इस ऐतिहासिक सन्दर्भ से सुके भूमि है। स्वार्थस्य संग्राम का नेपूला गांधी जी गधर्म ही दिलाई देना है। जैने बहिनागदियों के हापा में बायबा धौर भंगे की शासन बाद में भारत को कुछ सिवा कानि का वरवता हार उसमे माना माध्य पा यान मिनाहो, परस्तुदतना सदस्य मिनावि नहीं नका। बल्ता विश्व होश्य उसे बलाई सी निंड नी घौद्योगिक आति ने भारतदासिया का हा जाता पटा इसका कोई सामाजिक मृत्य न भी देशी साहित्य, दिदेशी भागाजिसना नवा दिदेशी हा तो भी ऐतिहासित मूच्य है धताय । सेतिन यह गति से बीझ ही परिचित करा दिया और हमी का भी नहीं कर सहने कि इस कार में शादशासी मनरिए रिगान या हि हममे जो एक निरासा भर वर्ददी हुई ही नहीं, प्रसाद के एतिहासिक नाइका के बाक्य 🛮 भीरे-भीरे समाप्त होते लगी। हमें बाहर भी शिवान तथा यात भारत यह मधुमय देश हमारा, पने सहयोगी दिलाई देने लगे । इसी क परिशास 'हियादि तृत शून पर' धादि धादि इमर उदा-क्षि, परतंत्रता से सुक्ति वो बोध बुद्ध एवं ही की हो, हरता है । सान होकर प्राम-प्राम में स्वतंत्रता की वित्रारी ट निवाली । परम्परा काल सामाजिक हाले मे दुनी नमय भारतीय राष्ट्रीय भारतीत्त की (दिगेष बर ब्रान्न्डिया को जिम रिवारपारा ने प्रापत मुन्दं परिवर्तन की साथ बढने लग्धे । लक्तवाध्यक षापूर्वीवादीसमात्र ध्यदस्या वे दर्देश दिलाई द्धत्यस्त द्वित वर वी मार्श्वादी विचार धारा। ने लगे। जननात्रिक सामाजिक चेननाका स्वर कम में जारतानी वे दिया हो मेराद मन-कार्ति नवा मर्देशाय या धारितार त्या धार्म धार्म स्पृटित **ट्रमा** । साहित्य ने भी करवट कड़की। दी और उस्का प्रभाव पहला भी सरेज ही था। हिस्य ने ऐतिहासिक विकास को इस परस्परा मे इसक कारता माहिए स प्राणिती की हो स प्रतित के स्थान पर जन स्वानंध्य की कार वर सर्देशरा व द्वदर्दवा स्मावनार्वसा । राष्ट्रीय स्व**र ग्रं**जा । बाह्यगुरादी थे का ने (¥)

विरोध मे जनमामान्य की श्रेष्टनाका स्वर प्राट हमा

साहित्य से माज कोई प्रेरिगा नहीं ले सकता

राधित में मुतिरिह्म । यर गर सामीसच्छि मो प्रियासी हो भी माना न्या सरहात है नाव सर ।

नागलमा में बाद बयदि इस नाह में बादे की बेद्द मंदिन है जाइया की पान्यू इस मार्गानाहे हैंस में पान्ती हुए मोदिनमा, जनसाथ मार्गे हैं में मार्गित प्रकार करते हैं मार्गित करते हुए मार्गित में मंदिन माहरू नालें में मार्ग्य नाते हैं पान्यों में प्रकार की में मार्ग्य नेता में निर्माण की होत स्वाह निर्मा भी मार्ग्य होते हुए पुनाह की मोदि नाह निर्माण में बेद नाहिल्या में हिए मार्ग्य मार्ग्य में मार्ग्य में मार्ग्य में मार्ग्य में मार्ग्य मार्ग्य मार्ग्य में मार्ग्य मार्ग्य मार्ग्य मार्ग्य मार्ग्य मार्ग्य में स्वाह मार्ग्य में स्वाह मार्ग्य मार्ग्य मार्ग्य मार्ग्य मार्ग्य मार्ग्य मार्ग्य मार्ग्य में मार्ग्य में मार्ग्य मार्य मार्ग्य प्रयोग करने के स्थान है। जिनमें कभी मानि का कर है तो कभी कार कुमामी का कर । कभी सामानिक पुर्वेतना पर स्थंत है तो कभी मानगीन कमामीरी पर कराये भी।। यर भी ऐतिशानिक मिलारिक एक हार है।

क्या मार्च हर्दर है।

क्या मार्च हर्दियान कर मिनार कर शिलार है।
ही चा हि स्थित मार्गिय महि में ही मार्गिय भवे
के चारत चारत्य कराहर कर है तथा प्रापे जन्मीयह मार्गिय कराहर कर है तथा प्रापे जन्मीयह मिन्छ हन है। बाह भी दश नवर्गावन मार्गिय की त्यों में बहरी हा हरे हैं-मेनाव की पात चे दशहर ही वार्गियहार बार्ग में पुरा कर की करवा है। बार्गियहार बार्ग या पा भी धार्मान चूरिक सार्गावहर क बाद में पूर्व दिवार है, वर स्थानन चारता में दशने हैं। है। वर्ग स

B. R. HERMAN & MOHATTA (India) PRIVATE Ltd.

JAIPUR

1 me 1 7 2715

com Expansion

PERSONAL PROPERTY OF TRANSPORTED BOTTON

HE IN BUTTER AND

4. ...

Agreets to

Parry & Co. Limited

1-37 248/5482 B 425

A THIA, IN CL. COMMISSE FOU

राष्ट्र यलद्यालो हो-बीद्धिक व द्यारोरिक रूप से-दसके लिए 'पुनकों'
का सर्वोद्धीण विकास-उत्पान जरुरी है।
इसी उद्देश्य को हिन्दगत कर हमारे राजस्थान में जहां विकास को प्रानेक महान्
योजनाएँ प्रारम्भ हुई हैं. स्कुल व कालेब सोने जा रहे हैं वही—
युवहों के द्यारोरिक विकास व उत्थान के लिए भी प्रयत्न किये जा रहे हैं—
राजस्थान क्रीड़ा परिषद्
RAJASTHAN SPORTS COUNCIL
शारीरिक उत्थान की दिशा में सतत् प्रयत्नशील है
अध्यक्ः—पुनमयन्द विरनोई (उस विद्यानको)

किसी भी राष्ट्र की प्रगति, उत्थान व विकास उसकी भावी संतानों पर निर्भर है।

्राय बहादुर राम प्रसाद राजगढ़िया तबस्थान मिनरत एएट को॰, हिन्द माइच लि॰ राजस्ताना कीरवोरियन लि॰ साहका साहनर्स वा एकसपोर्टर्स

राजपुताना कीरपोरीयन ति० माइका माइनर्स वा एक्सपोर्टर्स गप. है वर्षाणः । वस C २३ प्रजीवक वेड १३ देविकट्स स्टेट क

हाव . हैं द्वितित : जयपुर C २३ कृष्यीराज रोड़ १३ हैस्डिटन स्ट्रीट, कलहमा कोत में ४४६-२१४६ गार का पता : थार का पता : RAJTRADING. RAJGARHIA REWTOWN

सहयोगियों के प्रति दो शब्द एक्स गरमार गरिए साम्ये है होत गरिए गिरार र इसी मृति में सारिए सूम

हर यह राज्यात सा एक महास्था न हुनार बार्तित नेमिनार न उसकी स्मृति में प्रकारित मुग्त वैना ने मागर पर दिन जगतुमाधी का नगरीत त्रमें प्रकार हुमा है, तम उसके मागल मानाधी है मोर

टाने राज्योग की हम कभी भी मुद्दा मणि रूप है है। भी हंगरान पाहुबान, बीज दम्मीदार पैन्हीन रूप बीएगाँ, दानपान, भी नगुर मन गार,

त्तर बोधनाँ, राजनात, भी नापुर सर प्राप्त, भीरामधी मार्च नारः, भी शिरदास भेत, प्रणात्त्र लगानात्त्रित जसपूर, भी बारहात्त्र गर्था, बार टी. मी. जसपूर, भी लागावात्र जोगी, पर जिलागीय

नगानगरिका क्याहर, भी बारक्यमा समी, बार टी. मी. क्याहर, भी नगासकारा जोगी, उप निवासीय बेकसी, भी मृत्यासकार्य सनगान करियास दिने-स्थित जोगी जयहर, भी बनाइन निन्न जिल्लाक राम

मार्ट माप्तेम, बादि महानुमाहा से सरहा की मापित सामीर माप्त हुआ है। भी माप्तिक मित्रम, प्रवृत्तवर्गित हाता श्री सामित्र किसातम, भी सामुमात मामी, प्राप्तातन

भी मार्गातन सेना, प्रकृति हामान । दिस्स दिस्तान, भी संप्तात प्राप्त, प्राप्तान सम्पादन निप्ता दिस्ता चल्का, भीमानिस संपत्ति, प्रसारपालिक स्थानी स्टेनन्दर कोई न्यू, भीमति दिस्सा सर्वी प्रयासपालिक स्राह्मस

र रेत हारत रेकेची बहुब बहाब, की बोबार

मन भी घोमान, प्रवासामारन पुरासे माने होरर मेनेग्गरी क्यून ज्यापुर, भी नापूसान मानुर, प्यापा-भागत परवार हायर मेनेग्गरी क्यून ज्यापुर मारि मानुभागों में संन्या को ज्यापान नमारीन के मान

सर पर रखाः, पु^{र्}गार्थं व यन्त्र प्रातास्य सामार रा

मनदेश पान हुमा ।

भी दोतीबार कोजन्ति गौर भी भीरगार बैनास कियोंने मेथियर के सवारत ने दिने गार देवर शंचा बी बहुत बड़ी सथाया नो दुर दिया है।

भी विधित विज्ञारी साथों, भी धारणगरण अपूर्वेडी, भी मुद्रादिनाची साथों, भी जुनात देश धोद भी सारणसाम वर्धों का शांग्य सरावर्ग के सभी धारोपणी में जगारित पाल जीता रहा है। दय पर्य भी कार्योच्या की पालका वा साथ सभी कार्यों से

इन्डब बुर्जे लगारें करा है। विशेष पर भी महर दिहारी कर्मा का शुक्र देश के कार्ट में मंपर लगाग पर्दत्रे। इस सन्तर भी मनगानात नाता, भी द्वीं प्रकार स्थापन का स्थापनात करता, भी द्वीं

भरववता कोर वरिष्य में स्थाप भी ता और वार्यम को वरिष्य स्थापना वर स्थी आलात है। है। व वत्त-निगम

राजस्थान वित्त-निगम द्वारा उद्योगों की स्थापना व विकास के लिये

द्वारा उद्योगों को रेथापनी व विकास के लिय इंग्लिक संस्थानी के शहर की अपने मुस्सार

. है के ह्यार क्यों की है। क्षाप कर्य महादे महाहा था पायप्रभागा । वस्त्र परिवर्शने भी है। पी सुर ्वस्त ब्याक मी बर प्रतिभाव कर्यात महादेशक वाद वा स्थापनिक राष्ट्र तो है।

इ.सर ब्यान की बड़ प्राप्ति है के शिव है । बाहु सुबे ब्रुपन प्रदेशों के लिये

कार्यु गात्र कुटार अवस्थार व रागात्र क्षेत्र क्षणाच्या करणात्र शास्त्री पर अर्थ व्यागास्त्री संपारणा

त्रात्रकात अरक्षात्र के दिलारीताल था। यह ता तुर्गत प्राप्त का संक्रिकार परि हात्र नवा त्रहे ४४४ - कार्य एक आर्थ वज्रत के प्राप्त क्ष्यत्व प्रति के मिलाला लेकिन करें । ता है प्र

रासक्तरह राजस्यान निस्त निगम

with the grant and the control of the section of th



METER

IK

the flatpur bouse service meter is completely dust-proof, light and durable. We also manufacture copper confuctors, rods and strips, cachium copper confuctors & rods, arealical copper rods, brass rods and wires.

manufactured by:

THE JAIPUR METALS & ELECTRICALS LTD.

📺 JAIPUR - BAJASTHAN (INDIA) 🍱

दी जयपुर मिनरल डवलपमेंट सिएडीकेट (प्राइवेट) लिमिटेड



विश्व विष्या।—

'त्रिकोरा।' मार्का साप पाउडर

_

निर्माता एवं उत्पादक

मीतीमिह भीमिया का सस्ता

रहेंद्री बारत, रहपूर

तार-MAHALAXMI

फोन-मिल्स-३२ सिटी श्रॉफिस-४२, ४२ A

सुन्दर ओर टिकाऊ धोती, लट्टा, खादी, परमटा, टूल आदि के लिये प्रतिष्टित कपड़ा मिल ।

दी महालुदमी मिल्स, कम्पनी लिमिटेड

व्यावर (राजस्थान) भेनेजिंग शहरेक्टर

सेंठ पन्नालाल कोठारी

For Quality G. I. Barbed

- Wire, Tin Containers & Agricultural Implements

KINDLY CONTACT.

METAL UDYOG (P) Ltd.,

Office GULAB NIWAS III I Road, Jaipur Phone, 8488 Factory

8 & 11 B POUSTRUL ESTATE,

Name Scale (AIPLY).



mourpiley radio

Delights the home!

CO- CHIT

AUTHORISED DEALERS (No. 15)

I. M/s. Ramkumar Suraj Baksh Tripolya Bazar, JAIPUR

2. M/s. Ghiya's

m-452

ביו-לבש לא נינו על

गजन्यान की मदमे भावीन धीर भनिष्ठित कपड़ा मिल

दी कृष्णा मिल्स लिमिटेड

ट्या १ र

गत ७२ वर्षी में राजस्थान के और्थाशिक विकास में संतरन

मेट टाहरटाम सीवगत पाउंट जिल, स्पान

गडन्यान में महकारिता का व्यापक प्रतार मभी के लिए अवसर

र्रः श्राप्तः प्राप्तः वर्गीयपे । र्रः देशा प्राप्तः वे ठाउँको में बरना ववाव वीजिये ।

हरात मान पहिल्लामाध्या के पार नामान पर विकास स्थानी अनाति कर सही रिमान जीन साथ की नेवा महरूराये अभिति के सदस्य बनकर संपत्नी अनाति कर सही विद्यालयोगी उनके नियं से कार्य करेगी :---

हैं पीरों के बात भीर दूसरे सारे बन्धा को सब प्रकार के उपायों से बदाना देगी। हैं भेदी करते भीर देशकार बद्दाने के निए कर्ज को उचित व्यवस्था करेगी।

भ्या भरत बाद पदावार बदान क लिए कब का खावण व्यवस्था भरता की दिवाने का
 दिवाने का
 दल बनावा केता में जो पैदावार होती उसका पूरा-पूरा शोव क्लिंग की दिवाने का
 यान करेती।

मेरी पी जरूरी बोर्ड, बीने मुखरे बीज, सार झीर उर्वरर, झब्दो बेरी के घोजार घीर मर्थाने, रिपाने का प्रवण करेगी। मही क्यों, स्वार नार्खा में सहकारी जावना बड़ी घोर लोग-बायों ने सहकारी काज करो के दर्योह सील कर वारोबार करने ने सफनता दिखाई तो सब बबह के कामी की भी

सहराधि वरोह ने हिन्सा जाने नतेगा।

वह सभय भी इन प्राम नंदा सहदारी श्रीवित के कास-भान के बहुते २ था सहता है वह
वह सभय भी इन प्राम नंदा सहदारी श्रीवित के कास-भान के बहुते २ था सहता है वह
सह गाद के प्रनारों, धराहिजों, विराशितों, रोगियों, विषयामी, वृटों, कार्तिकां, पर
सारा सोगों प्रारित सब की सार-सम्मान का जी जूरा काल सपने हाल से सोगों जा सारे हाले

षण्ट भोगो प्रादि सब बी सार-सम्बान का जी पूरा बाब प्रवन हाय जिला है। सारे दावों प्रेयमर्पा की वक्रक की बोजें जैसे :- नेन, बाकुन, दिवासवार्ध व्यक्ति बीवों को सारे दावों ये हामिन किया जा सदेगा । वह प्रामीण समुदाय की व्यक्तिक उन्तति के सारे वागों वे पददवार होगी।

सबको भनाई — घापको भनाई राजस्थान सरकार द्वारा प्रमारित With best compliments from :-

Man Industrial Corporation Limited,

JAIPUR

- The first and only Re-Rollers in India for Special Profile Sections for Steel Doors, Windows and Sashes;
 - · Also Fabricators of Steel Doors, Windows and Sashes;
 - · Also Rollers of M. S. Bars, Rods and Light Tees; .
 - Galvanizing and Forging Work our speciality:

राजस्थान हस्तकला का केन्द्र है स्थानी कला के न मूने खरीद कर ग्रपने घरों को सशोभित की जिए गृह उद्योगों को पोत्साहन दीजिए थी दांत के खिलोंने 🍪 नीले व सफेद पाटरी के सामान ताल व नगीनों के कंगन 💮 🕸 आकर्षक नमृने की दरियां वंधाई व छपाई के स्कार्फ 🐵 सांगानेरी रंगाई व छपाई के जोधपुर की बनी शीतल जल वस्त्र इत्यादि
 की मारियां
 छ उदयपुर के मुन्दर लकड़ी के खिलोंने चन्दन की लकड़ी के खिलोंने अ जयपुर की कशीदा की हुई ^{® रंगीन} एवं वंधेज की साड़ियां ज्तियां व जूते 🏶 लकड़ी एवं खस की बनी बस्तुऐं व चूड़ 🏶 क्लापूर्ण सामान 💮 कोटा के मुन्दर डारिय भत्येक सरकारी विक्रय-केन्द्र पर प्राप्त

राजस्थानी हरूतकला के नमूने अन्तरिष्ट्रीय

भदर्शनियों में भी ख्याति प्राप्त कर नुके हैं

हैंते. एम्पोरीयम त्राज्यान हैंडीकार्य एप्पीरीयम

दिन्नी। जयपुर, जीवपुर व उपपर